इकाई 1 लेखांकन सिद्धान्त की प्रकृति, क्षेत्र एवं भूमिका

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 लेखांकन का अर्थ
1.3 लेखांकन प्रक्रिया
1.4 लेखांकन के सिद्धान्त
1.5 लेखांकन सिद्धांत की परिभाषा
1.6 लेखांकन की प्रकृति
1.7 वर्गीकरण
1.8 व्यवसाय की भाषा
1.9 लेखांकन सिद्धान्त बनाम लेखांकन व्यवहार
1.10 लेखांकन सिद्वान्त और लेखांकन व्यवहार के मध्य सम्बन्ध
1.11 लेखांकन का क्षेत्र
1.12 लेखांकन के लाभ
1.13 वित्तीय लेखांकन के कार्य
1.14 'सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों' (गैप) का अर्थ
1.15 सिद्धान्तों का लेखांकन
1.16 सारांश
1.17 शब्दावली
1.18 बोध परक प्रश्न
1.19 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.20 स्वपरख प्रश्न
1.21 सन्दर्भ पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि –

- लेखांकन की अवधारणा एवं प्रकृति की व्याख्या कर सकें।
- लेखांकन सिद्धान्त एवं लेखांकन व्यवहार में अन्तर कर सकें।
- लेखांकन के क्षेत्र एवं लाभों को समझ सकें।
- लेखांकन सिद्धान्तों को परिभाषित एवं उनका विवेचन कर सकें।
- 'सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों' को समझ सकें।

1.1 प्रस्तावना

प्रारम्भिक दिनों में व्यावसायिक संगठन एवं लेन–देन लघुस्तरीय एवं व्यवसाय के स्वामियों के द्वारा सरलता से प्रबन्धन करने योग्य होते थे। व्यवसायी लेन–देनों को याद कर स्मरण कर लिया करते थे। उन दिनों में लेखांकन का विकास वाहय पक्षकारों के साथ सम्बन्ध बनाने तथा सम्पतियों एवं दायित्वों को सूचीकृत करने की आवश्यकता के परिणामस्वरूप हुआ था । औधौगिक क्रान्ति एवं तकनीकी परिवर्तनों के

उद्भव से विपणन अवसरों में अभिवृद्धि हुई। उन दिनों में अधिकांश व्यावसायिक संस्थान वाह्य पक्षकारों के साथ लगातार लेन–देन करते थे। एक लेन–देन में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को मुद्रा अथवा मुद्रा के मूल्य (वस्तु एवं सेवाओं) का हस्तान्तरण होता है। इसके साथ ही वाह्य पक्षकारों के साथ लेन–देन में घटनाओं के मौद्रिक अभिलेख रखना भी आवश्यक होता है।

मनुष्य के लिए यह संभव नही है कि वह प्रत्येक लेन–देन को याद रख सके। अतः यह आवश्यक है कि वांछित वित्तीय सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए इन सभी लेन–देनों का उचित ढंग से अभिलेख रखा जाय । लेखांकन अभिलेख की सहायता से व्यवसायी एक दी हुई समयावधि के अन्त में व्यवसाय की लाभ अथवा हानि एवं वित्तीय स्थिति का निर्धारण कर सकता है तथा विभिन्न हितधारकों को व्यवसाय की गतिविधियों को सम्प्रेषित करने में समर्थ हो सकता है। इस कारण यह आवश्यक हो जाता है कि सभी लेन–देनों को समय–समय पर एक निश्चित प्रणाली के अन्तर्गत अभिलिखित किया जाय चाहे व्यवसाय संगठन किसी भी प्रारूप का हो।

लेखांकन सूचना प्रबन्ध एवं वाह्य अभिकरणों दोनो के लिए उपयोगी होती है। प्रबन्ध को इसकी आवश्यकता नियोजन, नियन्त्रण एवं निर्णयन के उद्धेश्य के लिए होती है। बैंको, लेनदारों इत्यादि वाह्य पक्षकारों को इस की आवश्यकता व्यवसाय की वित्तीय शोधनक्षमता को निर्धारण करने के लिए होती है और कर प्राधिकारी कर दायित्व की धनराशि निर्धारित करने के लिए इसका उपयोग करते है। वास्तव में लेखांकन न केवल व्यवसायिक संगठनों के लिए बल्कि गैर व्यावसायिक संगठनों जैसे स्कूल, कालेज, अस्पतालों, क्लबों इत्यादि के लिए भी आवश्यक है।

1.2 लेखांकन का अर्थ

अपने दैनिक जीवन में, हम अपने नैत्यिक कार्यक्षेत्र को प्रभावित करने वाले प्रायः ऐसी प्रत्येक विषय वस्तु का हिसाब रखते है, जिसे चाहे संख्याओं में मात्राकरण किया जा सके अथवा मौद्रिक मूल्य में व्यक्त किया जा सके। इन मात्राकरणों के 'हिसाब रखने अथवा' बताने या वर्णन करने का यह कार्य ही लेखांकन है। इस प्रकार यहाँ पर हमें यह ज्ञात हुआ है कि लेखांकन से प्रत्येक व्यक्ति परिचित है। व्यवसाय के प्रसंग में भी लेखांकन का अर्थ कमोबेश समानार्थी हैं। जिस प्रकार स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए हमें एक समान भाषा अथवा बोली की आवश्यकता होती है। वैसे ही लेखांकन का व्यवसाय की भाषा माना जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि लेखांकन व्यवसाय के लिए प्रचलित सामान्य मिश्रित भाषा (Lingua Franca) की भांति है। जैसे किसी भाषा में उनके अपने नियम एवं वाक्य विज्ञान निहित होते हैं। वही लेखांकन के लिए समान रूप में सत्य है, जिसकी अपनी अवधारणाऐं , सिद्धान्त एवं मान्यताऐं हैं। इन लेखांकन सिद्धान्तों की नियामक संस्थाऐं सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्त (GAAP), लेखांकन मानक, यू०एस०गैप इत्यादि है। भारतीय लेखांकन मानक, अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक आदि लेखांकन सिद्धान्त के आधार का निर्माण करते है तथा लेन–देनों को अभिलिखित करने वाली दोहरा लेखा पुस्तपालन पद्धति इस प्रणाली को व्यावहारिक आधार प्रदान करती है।

लेखांकन शब्द धीरे–धीरे क्रम में विकसित होकर व्यापक हुआ है। इसे हम एतिहासिक क्रम में अनुविन्यवस्थित निम्नांकित परिभाषाओं से समझा सकते है :

1. 1941 – अमेरिकन इन्सटीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक एकाउन्टेन्ट (ए०आई०सी०पी०ए०) ने लेखांकन को ' लेन–देनों एवं घटनाओं को , जो कम से कम अंशतः वित्तीय प्रकृति के हो, महत्वपूर्ण ढंग से एवं मौद्रिक रूप में अभिलिखित, वर्गीकृत एवं सारांकित करने तथा उनके परिणामों का निर्वचन करने की कला' के रूप में परिभाषित किया ।
2. 1966– अमेरिकन एकाउण्टिंग एसोसिएसन (ए०ए०ए०) ने लेखांकन को 'संसूचित निर्णयों को प्रदान करने के लिए आर्थिक सूचनाओं की पहचान, मापन एवं सम्प्रेषण करने की प्रक्रिया' के रूप में परिभाषित किया ।
3. 1970– अमेरिकन प्रिंसिपल्स बोर्ड (ए०पी०बी०) ने कहा– ' लेखांकन का कार्य आर्थिक इकाइयों के विषय में मुख्यतः वित्तीय प्रकृति की मात्रात्मक सूचनाओं को प्रदान करना है, जो आर्थिक निर्णय लेने में उपयोगी हो सके।'

1.3 लेखांकन प्रक्रिया

उपर्युक्त परिभाषाओं से हमें निम्नांकित कार्य प्राप्त होते है, जो मिलकर लेखांकन प्रक्रिया का निर्माण करते हैं, जिसका उल्लेख निम्नवत हैः

- **अभिलेखनः** लेखांकन की मूल आवश्यकता वित्तीय लेन–देनों को क्रमबद्ध ढंग से अभिलेखन से प्रारम्भ होती है, जिसमें वे रोजनामचे में प्रकट होते है। अभिलेखन के संबंध में महत्वपूर्ण प्रश्न है – क्या अभिलेखन करना है। कब अभिलेखन करना है। कैसे अभिलेखन करना है और किस मूल्य पर इसे अभिलिखित किया जाना है।
- **वर्गीकरण :** से आशय अभिलिखित सूचलाओं को सम्बन्धित समूहों में विवेकपूर्ण ढंग से है, जिससे अभिलेख उपयोगी हो सके। ऐसा वर्गीकरण खाताबही या लेजर कहलाता है, जहां सम्बन्धित मदें अंकित की जाती है। जैसे रोकड़ से सम्बन्धित समस्त लेन–देनों को रोकड बही में लिखा जाता है।
- **संक्षिप्तीकरणः** समस्त वित्तीय लेन–देनों के अभिलेखन एवं वर्गीकरण के पश्चात, अगला कदम उन्हें संक्षिप्त ढंग से सारांकित करना है, इस स्तर पर वित्तीय विवरण आते है जिन्हे हम तलपट से संक्षेपित करने है और तब आय विवरण के साथ–साथ स्थिति विवरण बनाते है।

1.4 लेखांकन के सिद्धान्त

मानव का प्रत्येक गतिविधि के पीछे कुछ कारण होता है। एक व्यक्ति बिना किसी सशक्त कारण के कुछ भी नही करता । वित्त और वित्तीयन मामलों में मनुष्य अतिरिक्त सावधानी बरतता है और इसी प्रकार वह बिना कारण कोई वित्तीय लेन–देन नही करता । चूंकि लेखांकन वित्तीय लेन–देनों से सम्बन्धित है। अतः प्रत्येक लेखांकन कार्य कारण पर आधारित होता है । लेखांकन सिद्धान्त सदैव एक निश्चित पद्धति के पीछे के तक की कारण सहित व्याख्या का प्रयास करते है। सामान्यतया स्वीकृति लेखांकन सिद्धान्तों को पूर्णतया परिवर्तित नही किया जा सकता है, क्योंकि वह व्यापक

रूप में सर्वमान्य होते है। किन्तु बदलते समाज और अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने हेतु सुधारा एवं पुनर्संरचित किया जा सकता है।
लेखांकन सिद्धान्त किसी लेखांकन समस्या के सामाधान के लिए वैज्ञानिक ढंग से सोचने की ओर संकेत करता है।
प्रो0 हैण्ड्रिकसन के अनुसार "लेखांकन सिद्धान्त को विस्तृत सिद्धान्तों के सम्मुच्चय के रूप तर्क संगत ज्ञान जो संदर्भ का ऐसा ढांचा प्रदान कर सकेए जिससे लेखांकन पद्धति का मूल्यांकन और नवीन पद्धतियों एवं प्रविधियों में विकास हो सके, की तरह परिभाषित किया जा सकता हैं।
वास्तविक जगत की लेखांकन समस्यओं का पूर्णतः समाधान करने के लिए एक लेखाकार के पास पर्याप्त सैद्वान्तिक ज्ञान से युक्त पर्याप्त व्यावहारिक अनुभव होना चाहिए। सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों, व्यापक रूप में प्रयुक्त प्रथाओं, परम्पराओं, सिद्धान्तों, कार्य पद्धतियों एंव मान्यताओं से लेखांकन सिद्धान्त निर्मित होता है। इस प्रकार एक तर्कयुक्त एंव स्वीकृत परिकल्पना, जिसे सर्वसम्मति प्राप्त हो, को लेखांकन सिद्धान्त कहा जा सकता है। जैसे अन्य सिद्धान्त सुदृढ़ एंव ठोस तर्क पर आधारित होता है। वैसे ही लेखांकन सिद्धान्त भी समान रूप से सुदृढ तर्क पर आधारित होता है। लेखांकन पद्धतियॉ घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। वह इतनी अधिक सम्बधित हैं कि उन्हें पृथक करना अत्यधिक कठिन हैं।

1.5 लेखांकन सिद्धांत की परिभाषा

वित्तीय सिद्धांतों के अध्ययन एवं प्रयोग में मान्यताओं, विधियों एवं संरचनाओं का उपयोग किया जाता है। लेखांकन सिद्धांत के अध्ययन में लेखांकन पद्धतियों के ऐतिहासिक आधारों के साथ ही उन तरीकों जिनमें लेखांकन पद्धतियां सत्यापित की गयी है और उन नियामक ढांचों में जोडी गयी हैं जो वित्तीय विवरणों एवं वित्तीय प्रतिवेदनों को शासित करती है, दोनों का पुनरावलोकन सम्मिलित है।

लेखांकन सिद्धांत एवं लेखांकन पद्धतियां पूर्णतया घनिष्ठ रूप में सम्बंधित है। यह इतनी अधिक परस्पर सम्बंधित है कि इन्हें पृथक करना अत्यधिक कठिन है। लेखांकन सिद्धांतों का विकास दैनिक लेखांकन पद्धतियों के अवलोकन, विश्लेषण, स्पष्टीकरण, जांच एवं आन्तरिक परीक्षण से हुआ है। यही नहीं, दूसरी ओर दैनिक लेखांकन पद्धतियों को लेखांकन के सर्वमान्य सिद्धांतों के सफलता पूर्वक प्रयोग के द्वारा व्यवहार में लाया जाता है। अर्थव्यवस्था में परिवर्तनों के कारण जिस प्रकार समाज में परिवर्तन होता है, वैसे ही किसी देश की सामाजिक आर्थिक संरचना में परिवर्तनों से लेखांकन पद्धतियों के ढांचे में परिवर्तन हो सकता है। यदि लेखांकन के ढांचे में परिवर्तन होता है, तो ऐसी स्थिति में संबंधित सिद्धांतों को भी परिवर्तित एवं सुधार करना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार, सिद्धांत को भी परिवर्तित करना आवश्यक हो जाता है।

अतः दोनों के मध्य संबंध सहकारी है, प्रतिस्पर्धात्मक नहीं। बिना यथोचित सैद्धांतिक ज्ञान के कोई भी पद्धति नहीं हो सकती है। साथ ही सिद्धांतों का प्रादुर्भाव सैद्धांतिक समस्याओं एवं कार्य पद्धतियों के निरंतर अवलोकन, विश्लेषण एवं गहन परीक्षण से होता है। इस प्रकार एक का अस्तित्व दूसरे के बिना संभव नहीं है। सिद्धांतों को वह स्तंभ माना जाता है कि जिन पर लेखांकन की सम्पूर्ण संरचना

स्थापित होती है। यदि लेखाकार को अपने लेखांकन कार्य का निर्वहन सफलतापूर्वक एवं कौशलपूर्वक करना है तो उसे स्वयं को पूर्ण सैद्धांतिक ज्ञान से सुसज्जित करना होगा । सैद्धांतिक ज्ञान से समुचित रूप में सुसज्जित हुए बिना कोई व्यक्ति लेखांकन के पेशे के विषय में सोच भी नहीं सकता है। यही नहीं, लेखांकन सिद्धांतों से दैनिक जीवन की उन लेखांकन समस्याओं के समाधान में सहायता मिलती है, जो लेखांकन के व्यवहारिक प्रयोग के दौरान उत्पन्न होती है। इस प्रकार लेखांकन सिद्धांत और लेखांकन व्यवहार घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं और उन्हें पृथक नहीं किया जा सकता है।

लेखांकन सिद्धांत को सीखने के कई लाभ हैं। इन्हें निम्नवत् व्यक्त किया जा सकता है:

1. लेखांकन सि़द्धांत के ज्ञान के द्वारा ही एक व्यक्ति लेखांकन पद्धतियों के पीछे के आधारभूत कारण का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
2. सिद्धांत को ज्ञान के पश्चात ही एक व्यक्ति जान सकता है कि व्यवहारिक लेखांकन कुछ डेबिट एवं क्रेडिट को जोड़ने मात्र की तरह अरूचिकर एवं नैत्यिक प्रकृति का नहीं है।
3. लेखांकन सि़द्धांत के ज्ञान से ही लेखाकार अपने कार्य को कौशल से त्रुटिरहित सम्पादित कर सकता है।
4. एक लेखाकार लेखांकन सि़द्धांत के पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करने के पश्चात न केवल अपने कार्य की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है बल्कि उन्हें अन्य को भी बेहतर ढंग से समझा सकता है।
5. व्यवहारिक लेखांकन की अनेक प्रक्रियाऐं हैं। सभी मामलों में केवल एक प्रक्रिया नहीं अपनायी जा सकती है। यदि लेखाकार को सिद्धांतों का सही ज्ञान है तो वह एक निश्चित मामले में उपयोग होने वाली सही प्रक्रिया का चयन कर सकता है।
6. एक उपक्रम की लेखांकन प्रणाली में कई त्रुटियां एवं दोष हो सकते हैं। यदि लेखाकार को लेखांकन सिद्धांत का पर्याप्त ज्ञान है तो वह इन्हें आसानी से जान सकता है एवं भावी रोकथाम हेतु प्रबंधकों को सुझाव दे सकता है।
7. आधुनिक युग का व्यवसाय बहुआयामी सामाजिक समस्याओं से ओत प्रोत है। अतः लेखांकन भी आजकल क्लिष्ट एवं व्यापक हो गया है। लेखांकन सिद्धांत का ज्ञान लेखाकार को वास्तविक जगत की लेखांकन समस्याओं के निदान में सहायक हो सकता है।
8. एक लेखाकार लेखांकन सिद्धांत का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेने पर प्रबंधन को प्रभावशाली ढंग से समुचित समय में समुचित सूचनाओं की आपूर्ति में आसानी से सहायता कर सकता है।
9. यदि लेखाकार को लेखांकन सिद्धांत की सही जानकारी हो तो सम्पत्तियों एवं दायित्वों का मूल्यांकन लगभग शुद्ध हो सकेगा।
10. व्यवसाय में रूचि रखने वाले विभिन्न व्यक्यिों एवं पक्षकारों जैसे सरकार, जनता, निवेशकर्ता, शोधकर्ता इत्यादि लेखांकन की जानकारी रखने वाले

लेखाकार पर बिना जानकारी रखने वाले लेखाकार से अधिक विश्वास करते हैं। यहां तक कि यदि एक सामान्य व्यक्ति को समुचित सैद्धांतिक ज्ञान एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर दिया जाये तो यह निश्चित है कि वह एक अच्छा लेखाकार सिद्ध होगा।

अतः बिना लेखांकन के सैद्धांतिक ज्ञान के एक व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता है। यह आज अनिवार्य हो गया है।

1.6 लेखांकन की प्रकृति

हम जानते हैं कि लेखांकन वित्तीय लेन–देनों के अभिलेखन तथा उपयुक्त व्यक्ति को संबंधित सूचना के प्रस्तुतीकरण की प्रणाली है। लेखांकन की आधारभूत विशेषताऐं निम्नवत् हैं:

1. **लेखांकन एक प्रकिया है–** एक प्रक्रिया उद्देश्य एवं लक्ष्य के अनुसार विशिष्ट कार्य को क्रमबद्ध ढंग से सम्पन्न कराने की विधि है। लेखांकन को एक प्रक्रिया इसलिये कहा जाता है क्योंकि यह वित्तीय सूचना के संकलन, प्रक्रियन एवं सम्प्रेषण के विशिष्ट कार्य को सम्पन्न करती है। ऐसा करने में यह निश्चित कदमेंा जैसे अभिलिखित समंकों का संकलन, वर्गीकरण संक्षिप्तीकरण, अंतिमीकरण एवं प्रतिवेदन का अनुसरण करती है।
2. **लेखांकन एक कला है–** लेखांकन वित्तीय समंकों के अभिलेखन वर्गीकरण, संक्षिप्तीकरण एवं अंतिमीकरण की कला है। कला शब्द किसी कार्य को सम्पन्न करने के तरीके को व्यक्त करता है। यह निर्धारित सृजनात्मक एवं कौशल को सम्मिलित करते हुए व्यवहारात्मक ज्ञान है जो हमें कतिपय विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है। लेखांकन निश्चित तकनीकों की एक प्रणालीगत विधि है और इसके उपयुक्त प्रयोग हेतु व्यवहारिक कौशल एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। अतः अपनी प्रकृति के अनुसार लेखांकन एक कला है।
3. **लेखांकन एक साधन है साध्य नहीं–** लेखांकन एक उपक्रम के वित्तीय परिणामों एवं स्थिति को ज्ञात करता है और साथ ही यह इस सूचना को इसके उपयोगकर्ताओं को सम्प्रेषित करता हैं। तब इस सूचना के आधार पर उपयोगकर्ता अपना स्वयं का निर्णय लेते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि केवल खातों का रखरखाव करना एक व्यक्ति या संस्था का प्राथमिक उद्देश्य हो सकता है। दूसरी ओर, मुख्य उद्देश्य को लेखांकन के द्वारा आपूर्ति की गयी वित्तीय सूचना के आधार पर निर्णय लेने के रूप में पहचाना गया है। इस प्रकार लेखांकन स्वयं में कोई उद्देश्य नहीं है। यह एक विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में सहायता करता है। अतः यह कहा जाता है कि लेखांकन साध्य प्राप्ति के लिये साधन है न कि स्वयं में एक साध्य है।
4. **लेखांकन वित्तीय सूचना और लेन–देनों में व्यवहार करता है–** लेखांकन वित्तीय लेन–देनों एवं समंकों के वर्गीकरण के पश्चात उनका अभिलेखन करता है और निर्धारित अवधि के लिये उनके परिणामों को उपयोगकर्ताओं को संसूचित करने हेतु अंतिम स्वरूप प्रदान करता है। अतः आरम्भ से अंत तक

प्रत्येक स्तर पर लेखांकन वित्तीय सूचना में व्यवहार करता है। केवल वित्तीय सूचना ही इसकी विषय सामग्री है। यह गैर वित्तीय पहलू की अमौद्रिक सूचना में व्यवहार नहीं करता है।

5. **लेखांकन एक सूचना प्रणाली है–** लेखांकन की पहचान सूचना के भण्डार गृह के रूप में इसकी विशेषता के कारण की जाती है। एक सेवा प्रकार्य के रूप में यह किसी संस्था की वित्तीय सूचनाओं का संकलन, प्रक्रियन एवं सम्प्रेषण करता है। ज्ञान की इस शाखा का प्रादुर्भाव विभिन्न हितकारक समूहों के द्वारा वांछित वित्तीय सूचना की आवश्यकता की पूर्ति के लिये हुआ है।

1.7 वर्गीकरण

यह कहा जाता है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती है। सिद्धांतों के विषय में भी यह समान रूप में सत्य है। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में भी विभिन्न प्रकार के सिद्धांत होते हैं। फिर भी सिद्धांतों के कतिपय प्रकारों का वर्णन निम्नवत् किया जा सकता है–

1. **वर्णनात्मक सिद्धांतः** इस प्रकार का लेखांकन सिद्धांत वर्णनात्मक दृष्टिकोण वाला है। यह हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन की घटनाओं के कारण और परिणाम की व्याख्या करता है। वर्णनात्मक लेखांकन सिद्धांत यह पूर्वानुमान लगाने में हमारी सहायता करता है कि किस प्रकार एक घटना को उस विशिष्ट घटना के घटित होने की व्याख्याओं के अध्ययन के आधार पर लेखांकन में माना जायेगा।
2. **सामाजिक व्यवहार लेखांकन सिद्धांतः** लेखांकन सिद्धांत प्रवचन की प्रकृति के प्रकार का है। इसका सम्बंध वर्तमान दैनिक परिघटना के प्रकाश में भावी क्रियाओं से है। समाज व्यवहार लेखांकन सिद्धांत उन संभावित सिद्धांतों का क्रमिक विकास करता है जो चालू पद्धतियों से स्वतंत्र हैं और भविष्य में महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान में सहायता करती है। अतः यह सिद्धांत सुझाव की प्रकृति के हैं।
3. **मूल्यांकनकारी लेखांकन सिद्धांतः** यह सिद्धांत जो हमें किसी वस्तु या घटना की गुणवत्ता एवं मात्रा अथवा गुणवत्तायुक्त मात्रा और मात्रात्मक गुणवत्ता के विषय में जानने में सहायता करता है, मूल्यांकनकारी लेखांकन सिद्धांत कहा जाता है । मूल्यांकनकारी लेखांकन सिद्धांत किसी घटना की गुणात्मक मात्रा का मापन भी करते हैं।
4. **सम्प्रेषक लेखांकनः** सिद्धांत कुछ ऐसे आधारभूत सिद्धांत हैं जो घटनाओं का सही पूर्वानुमान प्रदान करते हैं जिन्हें सम्प्रेषक सिद्धांत कहा जाता है। इस प्रकार हम किसी घटना का अनुमान लगा सकते हैं। यदि हमें संप्रेषक लेखांकन सिद्धांत की जानकारी है, सम्प्रेषक लेखांकन सिद्धांत से घटना का भावी पूर्वानुमान भी प्राप्त होता है।
5. **आगमनात्मक लेखांकन सिद्धांतः** लेखांकन सिद्धांत, जो भूतकालीन घटनाओं का परीक्षण एवं विश्लेषण करता है, आगमनात्मक लेखांकन सिद्धांत कहा

जाता है। यह सतत प्रयोग पर आधारित है और यह सूचित करता है कि भविष्य में समान घटनाऐं समान परिणाम देंगी।

6. **निगमनात्मक लेखांकन सिद्धांतः** लेखांकन सिद्धांत जो निगमन की विधि का अनुसरण कर तैयार किया जाता है, निगमनात्मक लेखांकन सिद्धांत कहा जाता है। यह हमें किसी विशिष्ट परिघटना के घटित होने के संबंध में भावी व्यवहार के मार्ग को प्रदर्शित करता है। निगमनात्मक लेखांकन सिद्धांत किसी विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामान्यतया निरूपित किया जाता है।

7. **सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतः** मूलभूत सिद्धांत जो सभी दशाओं में समान रूप से लागू किए और सभी के द्वारा अपनाए जा सकते हैं , सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धांत कहलाते हैं। यह सिद्धांत सामान्यतया भिन्न नहीं होते हैं और अधिकांश दशाओं में कमोबेश समान परिणाम उत्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त, अन्य सिद्धांत भी अस्तित्व में हैं। किन्तु ये दार्शनिक सिद्धांत हैं, और हमारे प्राचीन भारतीय दर्शन में पाए जाते हैं। लेखांकन में इन सिद्धांतों के विवेचन का कोई अवसर नही है।

1.8 व्यवसाय की भाषा

जिस प्रकार बिना भाषा के एक व्यक्ति की कोई उपयोगिता नही होती या जैसे मूक मनुष्य को स्पष्ट रूप में नही समझा जा सकता है। उसी प्रकार अपनी क्रियाओं के लेखों के बिना व्यवसाय भी अर्थहीन हो जाता है। एक भाषा उस भाषा समूह की लोगों की प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है। एक विकसित भाषा विकसित समाज को प्रतिबिंबित करती है। समाजार्थिक प्रगति सदैव इसकी भाषायी विकास पर निर्भर करती है।

दूसरे शब्दों, में मानवीय संस्कृति और आर्थिक क्रियाऐं सदैव उनके पोषण एवं प्रगति के लिये भाषा एवं साहित्य पर निर्भर करती है। एक व्यवसायिक इकाई की भी अपनी भाषा होती है जिसमें यह अपनी क्रियाओं की परिणामों को व्यक्त करती है। और यह भाषा लेखांकन है। इस भाषा अर्थात लेखांकन की सहायता से यह अपनी भावी योजनाऐं, कार्यक्रम एवं परियोजनाऐं तैयार करती हैं । व्यवसाय की भाषा अर्थात लेखांकन को प्रभावपूर्ण ढंग से वर्तमान क्रियाओं के विश्लेषणात्मक मूल्यांकन एवं विभिन्न हितधारक व्यक्तियों को परिणामों की जानकारी देने में भी उपयोग किया जाता है।

जिस प्रकार सूर्य की भाषा इसकी किरणें, फूल की भाषा, इसकी सुगंध और आकाशीय विद्युत की भाषा इसकी चमक होती है, वैसे ही व्यवसाय की भाषा लेखांकन है। जिस प्रकार एक मानव अपने विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है, वैसे ही व्यवसाय के परिणामों की अभिव्यक्ति लेखांकन की माध्यम से अंतिम लेखों के रूप में प्रतिवेदनों और विवरणों के साथ ही की जाती है। व्यवसाय की सफलता अथवा असफलता, लाभ अथवा हानि और दैनिक क्रियाओं अथवा लेन–देनों को तब जीवन प्राप्त होता है जब वह लेखों में रूपांतरित एवं अनुवादित होती है। व्यवसाय की भाषा लेखांकन से हमें लाभदायकता अथवा लाभार्जन क्षमता ज्ञात करने में सहायता मिलती

है। यही नहीं, लेखांकन की भाषा व्यवसाय की वित्तीय स्थायित्व, पूंजी संरचना की सुदृढता और आंतरिक मूल्य अथवा वास्तविक शुद्ध मूल्य को भी अभिव्यक्त करती है। एक उपक्रम की भावी सम्भावनाओं की स्पष्ट जानकारी प्रकाशित खातों से ज्ञात हो सकती है। वास्तव में समाज के समस्त हितधारक व्यक्ति जैसे देनदार, लेनदार निवेशकर्ता साहूकार बैंकर्स सरकार कर संग्रहणकर्ता अर्थशास्त्री, शोधकर्ता इत्यादि व्यवसाय की क्रियाओं को इसकी भाषा अर्थात लेखांकन से जान सकते हैं। इस प्रकार एक व्यक्ति लेखांकन की भाषा के माध्यम से व्यवसाय का पूर्ण सत्य एवं सही चित्र प्राप्त कर सकता है। वे इतने अधिक संबंधित हैं कि उन्हें पृथक करना अत्यधिक कठिन है। लेखांकन सिद्धांत का विकास नैत्यिक लेखांकन पद्धतियों के अवलोकन विश्लेषण व्याख्या, जांच एवं गहन निरीक्षण से हुआ है। साथ ही दूसरी ओर नैतिक लेखांकन पद्धतियों को सर्वमान्य सिद्धांतों के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। जैसे किसी देश की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के कारण समाज में परिवर्तन होता है। ठीक वैसे ही किसी देश की समाजार्थिक संरचना में परिवर्तन के कारण लेखांकन पद्धतियां भी परिवर्तित होती है। यदि लेखांकन की प्रवृत्तियों में परिवर्तन होता है तो सम्बंधित सिद्धांतों में भी परिवर्तन करना पडता है।

अतः दोनों के मध्य संबंध क्षतिपूरक है, प्रतिस्पर्धात्मक नहीं। विना समुचित सैद्धांतिक ज्ञान के कोई व्यवहार नहीं हो सकता। साथ ही सैद्धांतिक समस्याओं एवं कार्यपद्धतियों के सतत् अवलोकन विश्लेषण एवं परीक्षण से उत्पन्न होते हैं। अतः एक दूसरे के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता है। सिद्धांत वह स्तंभ है जिस पर लेखांकन का सम्पूर्ण ढांचा टिका रहता है। यदि लेखाकार को अपनी लेखांकन कार्य का निर्वहन सफलतापूर्वक एवं कौशलतापूर्वक करना है तो उसे पूर्ण सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करना होगा। एक व्यक्ति समुचित सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त किये बिना लेखांकन का पेशा अपनाने की सोच भी नहीं सकता है। यही नहीं, लेखांकन के व्यवहार के दौरान उत्पन्न होने वाले वास्तविक जगत की लेखांकन समस्याओं के समाधान में भी सिद्धांत सहायता करते हैं। अतः लेखांकन सिद्धांत एवं लेखांकन पद्धति घनिष्ठ रूप से इतना संबंधित है कि उन्हें पृथक नहीं किया जा सकता ।

1.9 लेखांकन सिद्धान्त वनाम लेखांकन व्यवहार

व्यावहारिक रूप में लेख़ांकन सिद्धान्त और लेख़ांकन व्यवहार में काई प्रतिद्धन्दिता नहीं है। एक दूसरे पर सदैव निर्भर है। लेखांकन का पेशा सदैव परम्पराओं, सिद्धान्तों एवं अन्य विभिन्न नियमों और विधियों जिन्हें सभी के द्धारा स्वीकार किया गया है, के द्धारा मार्गदर्शित एवं प्रभावित किया गया हैं। बिना सिद्धान्त के व्यवहार का अंगीकरण नही हो सकता हैं। फिर सिद्धान्त की कोई उपयोगिता ही नही हैं, जब उसका व्यवहार ही न हो। लेखांकन व्यवहार प्रथाओं, उपयोग एवं परम्पराओं जिन्हें सिद्धान्त कहा जाता हैं, के माध्यम से ही विकसित हुआ है।

इस प्रकार यह दोनो घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। किन्तु फिर भी इन दोनो के मध्य कुछ अन्तर हैं,जिन्हें निम्नवत वर्णित किया गया हैः

लेखांकन सिद्धान्त :

1ः एक सिद्धान्त का आशय है, एक निश्चित निदेशक सिद्धान्त।

2: सिद्धान्त को लेखांकन व्यवहारों के विश्लेषण के द्वारा निर्मित किया गया हैं।

3: लेखांकन सिद्धान्त सुदृढ़ तर्को पर आधारित हैं और इस प्रकार वह वैज्ञानिक हैं।

4: सिद्धान्त अपने आप में एक निश्चित समयावधि में व्यवसाय की वित्तीय स्थिति अथवा लाभ एवं हानि ज्ञात करने में सहायक नहीं हो सकते हैं।

5: लेख़ांकन सिद्धान्त को कभी भी अन्तरिक या वाहय सूचनाओं कें सम्प्रेषक का साधन नहीं समझा जा सकता हैं।

6: लेख़ांकन सिद्धान्त हमें व्यावहारिक लेखांकन की प्रगति में विशेषकर आधुनिक जटिल वित्तीय प्रणाली के दौर में उत्पन्न होने वाली जटिल समस्याओं के समाधान करने में सहायता करते हैं।

लेखांकन व्यवहार :

1: लेखांकन क्रियाओं के अभिलेखन और विश्लेषण के मार्ग में जो वास्तव में किया गया है, वह लेखांकन व्यवहार हैं।

2: लेखांकन व्यवहार लेखांकन सिद्धान्तों का उपयोग मात्र है।

3: लेखांकन व्यवहार के लिये यह आवश्यक नहीं हैं, कि वे तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक हों, क्योंकि पद्धति प्रचलित प्रथाओं, मानको और परम्पराओं पर निर्भर करती है।

4: लेखांकन व्यवहार व्यवसाय की लाभ या हानि एवं वर्तमान स्थिति की गणना के लिये बनायी जाती हैं।

5: लेखांकन व्यवहार विभिन्न हितधारक पक्षों तक विभिन्न सूचनाओं को पहुॅचाने का एक वैध माध्यम समझा जाता है।

6: परम्परागत विधि में लेखाकन व्यवहार किसी समस्या के समाधान करने में सक्षम नहीं हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि लेखांकन सिद्धान्त एवं लेखांकन व्यवहार परस्पर निर्भर एवं घनिष्ठ रूप से संबंधित है, एक को दूसरे का प्रतिस्थानापन्न नही समझा जा सकता है। क्योकि, सिद्धान्त को व्यवहार से पृथक नही किया जा सकता है, अतः व्यवहार सिद्धान्त का एक अभिन्न अंग है।

1.10 लेखांकन सिद्वान्त और लेखांकन व्यवहार के मध्य सम्बन्ध

मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे सदैव एक कारण होता है। बिना किसी सुदृढ कारण के एक मनुष्य कोई कार्य नही करता है। वित के सम्बन्ध मे अथवा वित्तीय प्रकरणों में एक व्यक्ति सदैव अधिक सावधान रहता है और इसी कारण वह वित्तीय लेन देनों को बिना किसी कारण के कभी नही करता है। जैसे लेखांकन वित्तीय लेन देनों में व्यवहार करता हैं वैसे ही प्रत्येक लेखांकन कार्य भी कारण पर आधारित होता हैं।

लेखांकन सिद्धान्त किसी विशिष्ट व्यवहार के पीछे के तर्क का कारण सहित व्याख्या करने का प्रयास करता हैं। सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्त पूर्णतया परिवर्तित नही किये जा सकते हैं, क्योंकि वह व्यापक एवं सार्वभौमिक रुप मे स्वीकृत होते हैं। किन्तु उनमें समाज एवं अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुसार संशोधन एवं सुधार

किया जा सकता है। लेखांकन सिद्धांत किसी लेखांकन समस्या के सामाधान के लिए वैज्ञानिक ढंग से सोचने की ओर संकेत करता है। प्रो0 हैण्ड्रिकसन के अनुसार "लेखांकन सिद्धान्त को विस्तृत सिद्धान्तो के सम्मुच्चय के रूप तर्क संगत ज्ञान, जो संदर्भ का ऐसा ढांचा प्रदान कर सके, जिससे लेखांकन व्यवहार का मूल्यांकन और नवीन व्यवहारों एवं प्रविधियों के रूप में विकास हो सके, की तरह परिभाषित किया जा सकता हैं। वास्तविक जगत की लेखांकन समस्याओं का पूर्णतः समाधान करने के लिए एक लेखांकार के पास पर्याप्त सैद्धान्तिक ज्ञान से युक्त पर्याप्त व्यावहारिक अनुभव होना चाहिए। सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों, व्यापक रूप में प्रयुक्त प्रथाओं, परम्पराओं ,सिद्धान्तों, कार्य पद्धतियों एंव मान्यताओं से लेखांकन सिद्धान्त निर्मित होता है। इस प्रकार एक तर्कयुक्त एंव स्वीकृत परिकल्पना, जिसे सर्वसम्मानित प्राप्त हो, को लेखांकन सिद्धान्त कहा जा सकता है। जैसे अन्य सिद्धान्त सुदृढ़ एंव ठोस तर्क पर आधारित होता है। वैसे ही लेखांकन सिद्धान्त भी समान रूप से सुदृढ तर्क पर आधारित होता है। लेख़ांकन सिद्धान्त एवं लेखांकन व्यवहार घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। वे इतने अधिक सम्बधित हैं कि उन्हें पृथक करना अत्यधिक कठिन हैं। लेखांकन सिद्धान्त का विकास नैत्यिक लेखांकन पद्धतियों के अवलोकन विश्लेषण, व्याख्या, जॉच एंव गहन निरीक्षण से हुआ है। साथ ही , दूसरी ओर , नैत्यिक लेखांकन व्यवहार को सर्वमान्य सिद्धान्तों के द्वारा सम्पन्न किया जाता हैं। जैसे किसी देश की अर्थव्यस्था में परिर्वतन के कारण समाज में परिवर्तन होता हैं। वैसे ही ठीक किसी देश की समाजार्थिक संरचना में परिवर्तनों के कारण लेखांकन व्यवहार भी परिवर्तित होता हैं।

यदि लेखांकन व्यवहार मे परिवर्तन होता हैं तो सम्बन्धित सिद्धान्तों में भी आवश्यक संशोधन एंव सुधार आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार सिद्धान्तों में भी परिवर्तन करना पड़ता हैं। अतः दोनों के मध्य सम्बन्ध क्षतिपूरक है, प्रतिस्पर्धात्मक नहीं। बिना समुचित सद्धान्तिक ज्ञान के कोई व्यवहार नही हो सकता है। साथ ही सिद्धान्त सैद्धान्तिक समस्याओं एंव कार्य व्यवहार के सतत अवलोकन, विश्लेषण एंव परीक्षण से उत्पन्न होता हैं। सिद्धान्त वह स्तम्भ है जिन पर लेखांकन का ढांचा टिका रहता हैं। यदि लेखांकार को अपने लेखांकन कार्य का निर्वहन सफलता पूर्वक एवं कौशलपूर्वक करना है, तो उसे पूर्ण सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करना होगा। एक व्यक्ति समुचित सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त किए बिना लेखांकन का पेशा अपनाने की सोच भी नही सकता है। यही नही लेखांकन के व्यवहार के दौरान उत्पन्न होने वाली वास्तविक जगत की लेखांकन समस्याओं के समाधान में भी सिद्धान्त सहायता करते हैं। अतः लेखांकन सिद्धान्त एंव लेखांकन व्यवहार घनिष्ठ रूप से इतनी संबंधित है कि उन्हें पृथक नहीं किया जा सकता है।

1.11 लेखांकन का क्षेत्र

लेखांकन की विषयवस्तु एवं प्रयोग क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। इसका उपयोग व्यावसायिक जगत तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज के सभी पेशों तक विस्तृत हैं। बल्कि समाज के सभी भागों और सभी पेशों तक विस्तृत हैं। आजकल, किसी भी सामाजिक संस्था और पेशेवर क्रिया, चाहे वह लाभ अर्जित करने वाली हो या नही , में वित्तीय लेन.देनों के घटित होने पर उनके अभिलेखन और संक्षिप्तीकरण करने तथा

एक निश्चित समयावधि के उपरान्त उनके शुद्ध परिणाम को ज्ञात करने की आवश्यकता होती हैं। इसके अतिरिक्त, इस सूचना के निर्वाचन एवं समुचित व्यक्तियों, तक उसे सम्प्रेषित करने की आवश्यकता भी होती हैं। केवल लेखांकन ही इन समस्याओं का समाधान करने में सहायक होता है।

आधुनिक समय में लेखांकन प्रणाली का उपयोग न केवल समस्त व्यावसायिक संस्थाओ में होता हैं बल्कि अनेक गैर व्यावसायिक संस्थाओ जैसे स्कूलों, कालेजों, चिकित्सालयों, न्यास क्लबों, सहकारी संस्थाओं और सरकारी एवं नगरपालिकाओं एवं पंचायतो के रूप में स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं में भी होता हैं। पेशेवर व्यक्ति जैसे चिकित्सकों, वकीलों, चार्टर्ड एकाउन्टेन्टों इत्यादि भी सही प्रकार की लेखांकन विधियों को अपनाते है। वास्तव में, लेखांकन विधियों का उपयोग उन सभी के द्वारा किया जाता है जो वित्तीय लेन देन की एक श्रंखला में सम्मिलित रहते हैं।

प्राचीन काल की अपेक्षा लेखाकन विषय सामग्री में हाल ही में बहुत परिवर्तन हुआ हैं। जैसे लेखांकन गतिशील विजय है। वैसे ही इसकी विषय वस्तु एवं प्रयोग क्षेत्र में भी समाजार्धिक परिवर्तनों की गति के अनुसार वृद्धि हुई हैं। परिणाम स्वरूप लेखांकन सिद्धान्तों एवं नीतियों के प्रयोग के नवीन क्षेत्रों में निरंतर शोध भी अवतरित हुआ हैं। राष्ट्रीय लेखांकन, मानवशक्ति लेखांकन और सामाजिक लेखांकन इत्यादि लेखांकन प्रणाली के अनुप्रयोग के नवीन क्षेत्रों के उदाहरण हैं।

लेखांकन सिद्धांत की भूमिकाः

लेखांकन पद्धतियों में सुधार करने, जटिल लेखांकन समस्याओं का समाधान करने तथा उपयोगी लेखांकन सिद्धान्त का निरूपण करने में लेखांकन सिद्धान्त का अत्यधिक उपयोगिता हैं। लेखांकन सिद्धान्त का व्यावहारिक महत्व अनेक विषयों में हैं। इनमें से कुछ निम्नवत् हैः

लेखांकन और प्रतिवेदन पद्धतियों पर लेखांकन सिद्धान्त का अत्यधिक मात्रा में प्रभाव हैं और इस प्रकार यह वाह्रय उपयोगकर्ताओं की सुचना की आवश्कता की पूर्ति करता हैं। वास्तव में लेखांकन सिद्धान्त चालू वित्तीय लेखांकन पद्धतियों के मूल्यांकन का ढांचा उपलब्ध कराता हैं।

नवीन व्यवहारों का विकास :

जब भी किसी नवीन लेखांकन पद्धति की आवश्यकता होती हैं, लेखांकन सिद्धान्त को उन परिस्थितियों में सर्वाधिक उपयुक्त कार्य पद्धतियों पर लेखाकार को मार्गदर्शन उपलब्ध कराना चाहिए। निगम प्रबन्धन एवं लेखांकन सिद्धान्त का ज्ञान होने के पश्चात लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकते हैं। बहुत से उपयोगकर्ता विशेषकर वाह्रय उपयोगकर्ता निवेश और अन्य निर्णय लेने मे लेखांकन सूचना का उपयोग करते हैं। इसी प्रकार एक कम्पनी के अशों के बाजार मूल्य, अंशों के मूल्य पर लेखांकन विधि का प्रभाव इत्यादि का विष्लेशण करने में भी लेखांकन सूचना उपयोर्गा हैं, दूसरे लेखांकन सिद्धान्त का साहित्य लेखांकन नीति निर्माताओं, जो लेखांकन सूचना को उपयोगी बनाने में रूचि रखते है, के लिए भी उपयुक्त हैं। लेखांकन सिद्धान्त नीति निर्माताओं को निहित मुद्दों से अवगत कराने तथा

विभिन्न सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों में सम्मिलित साम्यों को स्पष्ट करने में सहयता करता हैं।

लेखांकन के उद्देश्यः—

लेखांकन का उद्देश्य रूचि रखने वाले व्यक्तियों को जो संबंधित निर्णय लेकर निर्णयन में भाग लेते हैं, को आवश्यक सूचना प्रदान करना होता हैं। व्यवसाय में रूचि रखने वाले व्यक्तियों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः 1ः आन्तरिक उपयोगकर्ता एवं 2ः वाह्य उपयोगकर्ता। आन्तरिक उपयोगकर्ता वह होता हैं जो व्यवसाय का प्रबन्धन करता हैं। वाह्य उपयोगकर्ता आन्तरिक उपयोगकर्ताओं के अतिरिक्त हैं, जैसे—निवेशकर्ता, लेनदार, सरकार इत्यादि वाह्य उपयोगकर्ताओं के द्वारा वाछित सूचना लाभ एवं हानि खाते और तुलन पत्र के मध्यम से प्रदान की जाती है जब कि आन्तरिक उपयोगकर्ता वाछित सूचना व्यवसथा के अभिलेख से प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, लेखंाकन के मूख्य उद्देश्य निम्नवत् हैः

व्यवसाय का व्यवस्थित अभिलेख रखनाः

लेखंाकन समस्त वित्तीय लेन—देनो जैसे माल का क्रय और विक्रय नगद प्राप्तियॉ और नकद भुगतान आदि का व्यवस्थित अभिलेख रखता है। इस व्यवसाय की समस्त सम्पतियों एवं दायित्वों के अभिलेखन के लिए भी प्रयोग किया जाता है। लेखांकन के अभाव में मानव जाति के लिए व्यवसाय के लेन देनों को स्मरण रख सकना असंभव है।

व्यवसाय के लाभ अथवा हानि का निर्धारण करनाः

एक विशिष्ट अवधि के लिए व्यवसाय के लिए आय एवं व्ययों का उचित अभिलेख रखकर, लेखंाकन लाभ हानि खाता बनाकर व्यवसाय की लाभ या हानि के निर्धारण में सहायक होता हैं। लाभ हानि खाता रूचि रखने वालों पक्षों को एक विशिष्ट अवधि में व्यवसाय के द्वारा अर्जित लाभ व हानि का मूल्यांकन करने में सहायता करता हैं। यह प्रबन्ध को सुधारात्मक कदम उठाने में भी सहायता करता है। जबकि व्यवसाय आय प्रदायक या लाभदायक सिद्ध न हुआ हो। आय और व्ययों का उचित अभिलेख लाभ एवं हानि खाता तैयार करने तथा एक विशिष्ट अवधि के लिए शुद्ध संचालनात्मक परिणामों के निर्धारण में सहायता करते हैं।

व्यवसाय की वित्तीय स्थिति के निर्धारण में सहायक :

एक व्यवसायी भी एक विशिष्ट अवधि में व्यवसाय के संचालनात्मक परिणाम के अतिरिक्त व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को जानने में भी रूचि रखता हैं। दूसरें शब्दों में, वह यह जानना चाहता हैं कि वह कितने का स्वामी हैं और दूसरों को कितना देना है ? वह यह भी जानना चाहता हैं कि उसकी पूॅजी का क्या हुआ? क्या उसमें वृद्धि हुई या वह कम हुई अथवा पूर्ववत रही ? सम्पत्तियों और दायित्वों का व्यवस्थित अभिलेख तुलन पक्ष कहे जाने वाले स्थिति विवरण को तैयार करने में सहायता करता हैं। जो उपयुक्त प्रश्नों के सापेक्ष आवश्यक सूचना प्रदान करता है। तुलन—पक्ष व्यवसाय की वित्तीय शोधन क्षमता के निर्धारण के लिए बैरोमीटर की तरह कार्य करता हैं।

रूचि रखने वाले पक्षों को लेखांकन सूचना प्रदान करनाः

स्वामियों के अतिरिक्त, विभिन्न पक्ष लेखांकन सूचना में रूचि रखते हैं। ये बैंकर्स, लेनदार, कर–प्राधिकारी, संभावित निवेशकर्ता इत्यादि हैं। इन्हें ऐसी सूचना की आवश्यकता व्यवसाय की लाभदायकता और वित्तीय सुदृढता के मूल्यांकन के लिए होती हैं। लेखांकन सूचना उन्हें वार्षिक प्रतिवेदन के रूप में सम्प्रेषित की जाती हैं।

- व्यवसाय के उचित अभिलेख का रखरखाव करना।
- लाभ अथवा हानि की गणना करना ।
- वित्तीय स्थिति को प्रदर्शित करना ।
- व्यवसाय पर प्रभावी नियंत्रण रखना ।
- विभिन्न समूहों को सूचना उपलब्ध कराना ।

1.12 लेखांकन के लाभ

लेखांकन के लाभ इस प्रकार हैं:

<u>रेखाचित्र</u>

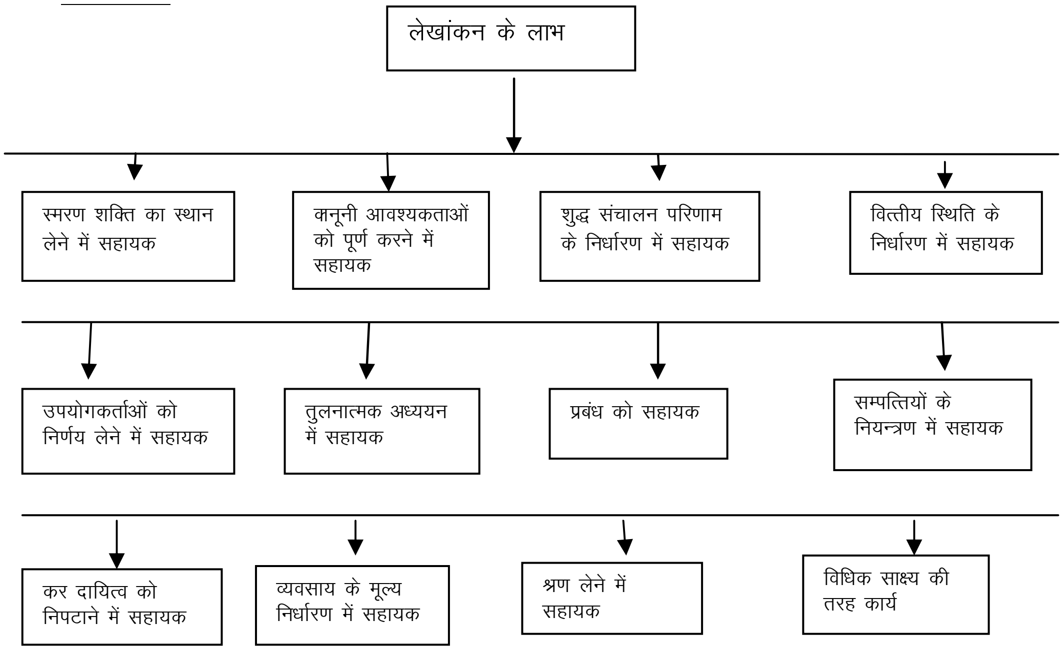

आइये, इन लाभों का एक–एक कर विवेचना करें।

1. **स्मरण शक्ति का स्थान लेने में सहायक :** लेखांकन वित्तीय लेन–देनों का पूर्ण अभिलेख रखने में मानवीय स्मरण शक्ति का स्थान लेने में सहायक होता है। मानवीय स्मरण शक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार सीमित है और लेखांकन की सीमा की विजय में सहायता प्रदान करता है।
2. **कानूनी अवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायकः** लेखांकन कानूनी अवश्यकताओं, जो किसी उद्यम के लिये लेखे रखना आवश्यक बनाती है, को पूर्ण करने में सहायक होती है। उदाहरणार्थ, कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 209 के अनुसार एक कम्पनी को उपार्जन पर लेखे की पुस्तकें रखना अनिवार्य है। आय कर अधिनियम की धरा 44AA के द्वारा निश्चित व्यक्तियों के लिये निर्धारित लेखा पुस्तकें रखना अनिवार्य किया गया है।

3. **संचालन के शुद्ध परिणामें के निर्धारण में सहायकः** लेखांकन आय विवरण को तैयार कर संचालन के शुद्ध परिणामों के निर्धारण की सुविधा प्रदान करता हैं।
4. **तुलनात्मक अध्ययन में सहायकः** लेखांकन तुलनात्मक अध्ययन में निम्नांकित चार प्रकार से सहायक करता हैः
   (1) समान समयावधि और समान फर्म के वास्तविक आंकड़ों की प्रमापित एवं बजटेड आंकड़ों से तुलना
   (2) समान फर्म के संबंध में एक समयावधि के वास्तविक आंकड़ों की दूसरी समयावधि से तुलना (आन्तरिक फर्म तुलना)
   (3) समान उधोग के अन्तर्गत एक फर्म के वास्तविक आकड़ों की प्रमाप फर्म से तुलना (अर्न्त फर्म तुलना)
   (4) फर्म से सम्बन्धित उधोग से फर्म के वास्तविक आकड़ों की तुलना (प्रवृति तुलना)

5 **प्रबंध की सहायताः** व्यावसायिक क्रियाओं के नियोजन एवं नियंत्रण तथा निर्णयन में लेखांकन प्रबंधं की सहायता करता है। उदाहरणार्थ, प्रक्षेपित रोकड़ प्रवाह विवरण प्रबन्ध को भावी प्रप्तियों एवं भुगतानों को ज्ञान करने तथा प्रत्याशित कोषो के अवशेष अथवा कमी के संबंध में निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता हैं।

6 **सम्पत्तियों के नियंत्रण में सहायकः** लेखांकन रोकड़ शेष, बैंक शेष, देनदार, स्थायी सम्पत्तियों, स्टाक आदि के संबंध में सूचना प्रदान कर सम्पत्तियों के नियंत्रण में सहायक करता हैं।

7 **कर दायित्व का निपटारा करने में सहायक**ः लेखांकन समुचित लेखा पुस्तकों के व्यवस्थित ढंग से रखरखाव के द्धारा प्राधिकारियों के साथ कर दायित्व के व्यवस्थापन अथवा निपटारा करने में सहायता करता हैं।

8 **व्यवसाय के मूल्य निर्धारण में सहायकः** लेखांकन व्यवसाय के किसी दूसरे संस्थान को हस्तान्तरण के समय मूल्य निर्धारण में सहायता करता हैं।

9 **ऋण लेने में सहायकः** ऐतिहासिक एवं प्रक्षेपित वित्तीय विवरण प्रदान कर लेखांकन ऋण लेने में सहायता करता हैं।

10 **विधिक साक्ष्य के रूप में कार्यः** व्यवस्थित ढ़ग से रखी गयी उचित लेखा पुस्तकें विवाद की स्थिति में विधिक साक्ष्य का कार्य करती हैं

लेखांकन की मुख्य सीमायें निम्नवत हैंः

1 **गुणात्मक तत्व की अवहेलनाः** चूँकि लेखांकन मौद्रिक मामलो तक ही सीमित हैं, अतः प्रबन्ध की गुणावत्त,श्रम एवं लोक सम्बन्ध की गुणावत्ता आदि, जैसे गुणात्मक तत्वों की अवहेलना हो जाती हैं।

2 **पक्षपात से मुक्त नहीः** अनेक स्थितियों में, लेखाकार को विभिन्न उपलब्ध विकल्पों में से एक विकल्प का चयन करना होता हैं, जैसे– ह्रास की विधि का चयन (यथा सरल रेखा विधि या क्रमांगत ह्रास विधि) रहतियें के मूल्याकन की विधि का चयन (यथा फीफो, लीफों इत्यादि) चूँकि व्यक्तिगत निर्णयों में वस्तुपरकता अपरिहार्य होती हैं, अतः वित्तीय विवरण भी पक्षपात से मुक्त नहीं

होते हैं, परिणामस्वरूप, वित्तीय विवरणों का विश्लेषण भी पक्षपात से मुक्त नहीं हो पाता।

3 **अनुमानित स्थिति और न कि वास्तविक स्थितिः** चूँकि वित्तीय विवरण समापन आधार की अपेक्षा चालू व्यवसाय आधार पर तैयार किए जाते हैं, अतः वे समयावधि के अनुमानित परिणाम बताते हैं न कि वास्तविक परिणाम क्योंकि वास्तविक परिणामों का ज्ञान तो उधम के समापन पर ही हो सकता हैं।

4 **ऐतिहासिक लागतों पर वित्तीय विवरण तैयार करने की दशा में मूल्य स्तर परिवर्तनों की अवहेलनाः** वित्तीय विवरणों को ऐतिहासिक लागतों पर तैयार करने पर, तुलन पत्र में दिखायें गये मूल्य से काफी अधिक होता है। ऐसे वित्तीय विवरणे के विश्लेषण से तब तक कोई सुद्रढ़ तुलनात्मक परिणाम प्राप्त नहीं होंगे जब तक मूल्य स्तर के परिवर्तनों को सम्मिलित नहीं किया जाता हैं।

5 **खिड़की प्रदर्शन का भय** : जब प्रबन्धन लाभ सम्पत्तियों और दायित्वों के कृत्रिम रूप से बढ़ाये अथवा कम किए गए गलत आकड़ों को प्रविष्ट करने का निर्णय लेता है, तब आय विवरण संचालन का सही एवं उचित चित्र प्रदान करने में असफल रहता हैं और तुलन पत्र उद्यम की वित्तीय स्थिति का सही एवं उचित चित्र प्रदर्शित करने में असफल रहता है।

चित्रः—लेखांकन प्रकिया

चरण—1	लेने—देनों की पहचान	
चरण—2	प्रारम्भिक लेखा पुस्तकों में लेने—देनों का अभिलेखन	उदाहरणार्थ लेने—देनों का रोकड.बही, कय बही आदि में अभिलेखन
चरण—3	खाताबही में खतौनी	प्रारंभिक लेखे की पुस्तकों में अभिलिखित समस्त लेन—देनो को संबंधित लेजर खातों में प्रविष्ट करना
चरण—4	तलपट को तैयार करना	तलपट खाते के साथ ही खाता बही में सभी खातों के शेषों का एक साराश है।
चरण—5	समायोजन प्रविष्टियॅा करना	विशेष समायोजन लेखा वह है जो ह्रास,उपार्जित आय एवं व्यय आदि से सम्बन्धित
चरण—6	समायोजन तलपट तैयार करना	समायोजित तलपट समायोजन लेखों के पश्चात् तैयार किया गया तलपट ही है
चरण—7	वित्तीय विवरणों को तैयार करना	समायोजित तलपट से लाभ एव हानि खाता, तुलना पक्ष, रोकड प्रवाह विवरण बनाये जाते हैं।

सामान्यतः लेखांकन को तीन विभिन्न शाखाओं में निम्नवत वर्गीकृत किया जा सकता हैं:

जैसा कि चित्र संख्या 2 में प्रदर्शित किया गया हैं :

चित्र संख्या 2

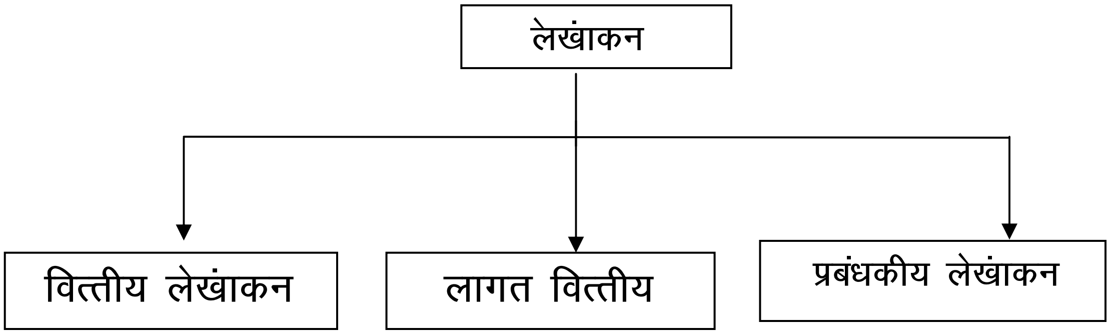

वित्तीय लेखांकनः

यह वित्तीय लेन –देना के अभिलेख, वर्गीकरण एवं संक्षिप्तीकरण से सम्बन्धित हैं, ताकि वित्तीय विवरणों जैसे आय विवरणों एवं स्थिति विवरण को तैयार किया जा सकें। अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ सर्टिफाइट पब्लिक एकाउन्टेन्ट्स ने वित्तीय लेखांकन को इस प्रकार परिभाषित किया गया है–

(वित्तीय लेखांकन) "मैद्रिक लेन–देनों और घटनाओं जो आंशिक रूप में वित्तीय प्रकृति की हो, के अभिलेखन वर्गीकरण एवं संक्षिप्तीकरण को महत्वपूर्ण रूप में प्रस्तुत करने की कला हैं। " लेखांकन व्यवसायिक इकाई की वित्तीय सूचनाओं को उसकी प्रगति में रूचि रखने वाले विभिन्न पक्षों को प्रभावपूर्ण रूप में सम्प्रेषित करने की भाषा हैं।

वित्तीय लेखांकन का उद्देश्य लाभदायकता को ज्ञात करना एवं व्यवसाय की वित्तीय स्थिति के विषय में सूचना प्रदान करना हैं। वित्तीय लेखांकन के दो महत्वपूर्ण विवरण आय एवं व्यय विवरण एवं आर्थिक चिट्ठा हैं।

एक निश्चित समयावधि से सम्बन्धित समस्त आयगत लेन–देनों को आय एवं व्यय विवरण में व्यवसाय की लाभदायकता निर्धारित करने के लिए अभिलिखित किया जाता हैं। आर्थिक चिट्ठा एक निश्चित तिथि को व्यवसाय की वित्तीय स्थिति निर्धारित करने के लिए बनाया जाता हैं।

1.13 वित्तीय लेखांकन के कार्य

वित्तीय लेखांकन व्यवसाय की स्थिति एवं उसके संचालन के परिणामों के सम्बन्ध में सूचनाऐं प्रबन्ध के साथ–साथ वाह्य पक्षों को प्रदान करता हैं। वित्तीय लेखांकन के कुछ महत्वपूर्ण कार्य निम्नवत हैं:

(अ) सूचनाओं का अभिलेखनः व्यवसाय में सभी लेन–देनों को स्मरण रखना अत्यन्त कठिन हैं। इन लेन–देनों को व्यवस्थित रूप में उनके अंतिम खातों का स्वरूप ग्रहण करने के पूर्व अभिलिखित करना और रोजनामचों, खाताबहियों एवं कार्य पत्रकों में प्रविष्टि करने की आवश्यकता होती हैं। केवल उन्ही लेन–दनों को अभिलिखित किया जाता है। जिन्हे मुद्रा में मापन किया जा सके। जैसे लेन–देनों, मैद्रिक रूप में व्यक्त

नहीं किया जा सकता हैं, को वित्तीय लेखांकन में सम्मिलित नहीं किया जाता हैं यद्यपि इन लेन–देनों का व्यवसाय के कार्यकरण पर महत्वपूर्ण योगदान होता हैं।

(ब) **प्रबन्धकीय निर्णयनः** वित्तीय लेखांकन प्रबंधकों के लिए निर्णयन में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। लेखांकन के अभाव में, वित्तीय कार्य एवं निर्णयन कार्यक्रम कर सकते हैं। दैनिक क्रियाओं से विचलनों को ज्ञात करना एवं उनका विश्लेषण केवल वित्तीय लेखांकन की सहायता से ही हो सकता हैं।

(स) **वित्तीय सूचनाओं का निर्वचन :** वित्तीय सूचनाओं का निर्वचन निर्णय लेने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अभिलिखित वित्तीय सूचनाओं का इस प्रकार निर्वचन किया जाता हैं कि अन्तिम उपयोगकर्ता जैसे लेनदार, विनियोक्ता, बैंकर्स इत्यादि व्यवसाय की वित्तीय स्थिति एवं व्यवसायिक क्रियाओं की लाभदायकता के विषय में अर्थपूर्ण निर्णय ले सकें।

(द) **परिणामों कों सम्प्रेषित करना :**वित्तीय लेखांकन का संबंध तथ्यों एवं आंकडों का अभिलेखन से ही नहीं बल्कि परिणामों के सम्प्रेषण से भी हैं। वास्तव में, लेखांकन व्यवसायिक क्रियाओं का स्रोत है। अतः संकलित एवं मापित सूचना उपयोगकर्ताओं को निश्चित अवधि में सम्प्रेषित भी होनी चाहिए। सूचनाओं का सम्प्रेषण विवरणों एवं प्रतिवेदनों के माध्यम से होता है। वित्तीय विवरण एवं प्रतिवेदन विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होने चाहिए। आवश्यकताओं के अनुसार आन्तरिक प्रबन्ध को विभिन्न प्रकार के प्रतिवेदनों की आवश्यकताओं होती हैं। वाह्य पक्षों को प्रतिवेदनों के सम्प्रेषण में पूर्ण प्रकटीकरण प्रासंगिकता, संगति, एवं औचित्य के मानक आधारों का अनुपालन होना चाहिए।

वित्तीय लेखांकन की सीमायें:

वित्तीय लेखांकन, प्रारम्भिक अवस्था में व्यवस्था इतना जटिल नहीं था, व्यवसाय की आवश्यकताओं को पूर्ण करने योग्य था। ऐसा इसलिए था क्योंकि वित्तीय लेखांकन अन्तिम खातों अर्थात लाभ एवं हानि खाते और आर्थिक चिट्ठे को तैयार करने से मुख्यतः संबंधित था। किन्तु वर्तमान व्यवसाय की जटिलताओं एवं विकास ने वित्तीय लेखांकन को अत्यन्त अपर्याप्त बना दिया हैं। प्रबंध को व्यवसाय की क्रियाओं के नियोजन, नियत्रंण और समन्वय के लिए सूचनाओं की आवश्यकता होती हैं।

वित्तीय लेखांकन की सीमाएं निम्नांकित हैं:

1. **ऐतिहासिक प्रकृति :** वित्तीय लेखांकन उन समस्त लेन–देनों का अभिलेख है जो एक निश्चित अवधि में व्यवसाय में किए जाते हैं। प्रबंधकीय निर्णयों का संबंध भावी घटनाक्रम से होता हैं, वे अनुमानों एवं प्राक्कलनों पर आधारित होते हैं वित्तीय लेखांकन भूतकालीन समको से संबंधित सूचनाऐं प्रदान करते हैं, भविष्य के विषय मे नहीं, यह उन उपायों के विषय में सुझाव नहीं देता जो व्यवसाय की कार्य कार्य क्षमता को सुधारने के लिए किए जाने चाहिए । भूतकालीन समकों की आवश्यकता भावी निर्णयों के लिए होते हैं, किन्तु मात्र यह पर्याप्त नही हैं।

2. **यह केवल वास्तविक लागतों का ही अभिलेखन करता हैं:.** वित्तीय लेखांकन हमेशा उन्हीं आंकड़ों से सम्बन्ध रखता है जो एकल, सरल और निष्क्रिय मद के रूप में मानी जाती है क्योंकि यह केवल वास्तविक लागत तथ्यों का ही लेखा करता है।

माल और संपत्ति का मूल्य अक्सर बदलता रहता है । वर्तमान कीमतें रिकॉर्ड की गई लागतों से भिन्न हो सकती हैं । वित्तीय खाते इन मूल्यों में आये उतार–चढ़ाव को दर्ज नहीं करते हैं। इसलिए, अभिलिखित की गई सूचना सही सूचना नहीं दे सकती है ।

3. **यह भावात्मक सूचना प्रदान करता हैं :** वित्तीय लेखांकन केवल उन घटकों को ध्यान में रखता हैं जिन्हें भावात्मक रूप में व्यक्त किया जाता सकता हैं। जिसे मात्रात्मक रूप में मापन नहीं किया जा सकता हैं। वह वित्तीय लेखांकन का हिस्सा नहीं हो सकता हैं। आज व्यावसायिक निर्णय कई सामाजिक कारकों से प्रभावित होता हैं। सरकारी नीतियों का व्यावसायिक कार्यकरण पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता हैं। अतः, सामाजिक कारकों के साथ –साथ प्रबन्ध को व्यवसाय पर सरकारी नीतियों के प्रभाव को भी ध्यान में रखना होता है किन्तु इन कारकों को मात्रात्मक रूप में मापन नहीं किया जा सकता हैं, अतः उनका प्रभाव वित्तीय विवरणों में प्रदर्शित नहीं होगा।

4. **यह सम्पूर्ण उपकम के विषय में सूचना प्रदान करता हैं :** वित्तीय लेखांकन पूरे उपक्रम के विषय में सूचना प्रदान करता हैं। यह व्यवसाय की संकलित क्रियाओं पर केवल शुद्ध परिणामों का प्रकटीकरण करता हैं। उत्पादन आधारित, प्रक्रिया आधारित, विभाग आधारित इत्यादि विस्तृत सूचनाओं का अभिलेख वित्तीय लेखांकन में नहीं किया जाता हैं। इस प्रकार उत्पादन के अनुसार या कार्य के अनुसार उत्पादन लागत का निर्धारण नहीं हो सकता है। अतः यह आवश्यक है कि लागत निर्धारण या उत्पाद लागत नियंत्रण के उद्देश्य के लिए लेन–देनों का अभिलेखन क्रियाओं के अनुसार हो।

5. **कीमत निर्धारण में कठिनाई :** उत्पादन की लागत केवल तब ही ज्ञात हो सकती हैं, जबकि सभी व्यय कर लिए जाये। कीमतों के पूर्व में ही निर्धारित करना संभव नहीं हैं । कीमत निर्धारण के लिए परिवर्तनशील एवं स्थिर लागतों, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लागतों के विषय में विस्तृत सूचनाओं की आवश्यकता होती हैं। वित्तीय लेखांकन ऐसी सूचनाऐं प्रदान नहीं कर सकता हैं और इस कारण मूल्य स्फीति अथवा व्यापार मन्दी की समयावधि में कीमतों का उद्वरण कठिन होता हैं।

6. **नीतियों का मूल्यांकन संभव नही हैं :** वित्तीय लेखांकन वित्तीय नीतियों और योजनाओं के मूल्यांकन के लिए आंकडें प्रदान नहीं करता हैं। ऐसी कोई तकनीक नहीं हैं जिससे वास्तविक निष्पादन की तुलना बजटीय निष्पादन से की जा सके। वित्तीय लेखांकन व्यवसाय की कार्यक्षमता की जॉच के लिए कोई माप प्रदान नहीं करता है । वित्तीय कार्यक्षमता के निर्धारण का एकमात्र आधार वित्तीय समयावधि के अन्त में होने वाला लाभ हैं। अतः प्रबधकीय निष्पादन के मापक का एकमात्र पैमाना लाभ हानि खाता हैं जो प्रबन्धक की कार्यक्षमता के निर्धारण का विश्वसनीय परीक्षण नही हो सकता हैं।

7. **यह निर्णयन में सहायक नहीं हैं :** वित्तीय लेखंाकन प्रबध को व्यूहनीतिक निर्णय लेने में सहायता नहीं करता हैं क्योंकि वह वैकल्पिक कार्यपथो के संभावित परिणामों की तुलना करने के लिए पर्याप्त सूचना प्रदान नही करते हैं जैसे मशीन के द्वारा श्रम का प्रतिस्थापन, एक नवीन उत्पाद रेखा का आरम्भ करना क्षमता का विस्तार इत्यादि । इन निर्णयों के प्रभाव और निहित लागत को पूर्व निर्धारित करना होता हैं।

लेखांकन की एतिहासिक प्रकृति के कारण वित्तीय लेखांकन द्वारा प्रदत्त लेखांकन समंकों की प्रकृति प्रबन्ध के लिए अधिक सहायक नहीं होती हैं ।

8. **लेखांकन सिद्धान्तों में एकरूपता का अभाव** :लेखांकन नीतियों लेखांकन सिद्धान्तों के प्रयोंग में भिन्न होती हैं। लेखांकन सिद्धान्तों एवं कार्य पद्धतियों के उपयोग में एकरूपता का अभाव रहता हैं। एक ही संस्थान के दो भिन्न व्यक्तियों के द्वारा तैयार किए गए वित्तीय विवरण एक विशिष्ट परम्परा के अनुप्रयोग में भिन्न भिन्न निर्णयों के कारण भिन्न परिणाम प्रदान करते हैं। रहतियें के मूल्यांकन की विधियों, व्ययों का आगम एवं पूॅजी में आवंटन इत्यादि ऐसे विवादपूर्ण मुद्दे हैं, जिससे एकरूपता संभव नहीं हैं । लेखांकन की विधियों का प्रयोग वित्तीय लेखांकन की उपयोगिता एवं विश्वसनीयता को कम करता हैं।

9. **लागतों का नियत्रंण करना संभव नहीं हैं** : वित्तीय लेखांकन की एक और सीमा यह हैं कि लागत के आंकडे वित्तीय अवधि के अन्त में ही ज्ञात हो पाते हैं। जब लागत पहले ही हो जाती हैं, तब उसके नियंत्रण के लिए कुछ नहीं किया जा सकता हैं। वास्तविक लागतों के समय समय पर लगातार परीक्षण की लागत नियत्रंण हेतु आवश्यकता होती हैं किन्तु यह वित्तीय लेखांकन में सम्भव नहीं हैं।

10. **खातों में गड़बड़ी करने की संभावनाः** रहतिये के अधिमूल्यांकन एवं अव मूल्यांकन से लाभ के आकड़े प्रभावित होते हैं। लाभ को अधिक पारिश्रमिक प्राप्त करने, अधिक लाभांश भुगतान करने अथवा अंशों के मूल्य में वृद्धि करने या करों को बचाने या कर्मचारियों को बोनस का भुगतान न करने इत्यादि के लिए कम या अधिक प्रदर्शित किया जा सकता हैं। वित्तीय लेखों में गड़बड़ी की संभावना से उनकी विश्वसनीयता कम होती हैं।

11. **तकनीकी कान्तिः** प्रत्येक क्षण हो रही विज्ञान एवं तकनीकी की प्रगति और व्यवसायिक इकाई के प्रत्येक भाग से सम्बन्धित सभी प्रकार के समंको क विस्तृत वर्गीकरण प्रबन्ध के दैनिक कार्यो के लिए आवश्यक हो गया हैं। यह स्पष्ट है कि वित्तीय लेखांकन अपनी सीमित संरचना के कारण इस स्थिति में नही होता कि वह प्रबंध की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके क्योंकि यह केवल प्रारम्भिक सूचनाऐं ही प्रदान करता है।,

वित्तीय लेखांकन की सीमाओं ने लागत एवं प्रबन्धकीय लेखांकन के विकास का क्षेत्र प्रशस्त किया हैं।

लागत लेखांकनः—यह विभिन्न प्रकार की लागतों का कार्यो, प्रकियाओं, उत्पाद, केन्द्र इत्यादि आधारों पर आवंटन करता है ताकि लागत की गणना, लागत को और कम करना अथवा लागत में बचत हो सके।

प्रबन्धकीय लेखांकनः—निर्णय लेने की विवेकीकृत आवश्यकता की पूर्ति प्रबंधकीय लेखांकन से होती हैं जो निर्णय लेने के लिए प्रबधकीय अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों का उपयोग करती हैं।

1.14 सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों (गैप) का अर्थ

सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों को कार्य या व्यवहार के उन नियमों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो अनुभव और व्यवहार से व्युत्पन्न हैं और जब वे उपयोगी सिद्ध होते हैं, तो वह लेखांकन के सामान्यतया स्वीकृत सिद्धान्त बन जाते हैं। अमेरिकन इन्स्टीट्यूट आफॅ पब्लिक एकाउन्टेन्ट्स (ए0आई0सी0पी0ए0) के अनुसार ऐसे सिद्धान्त जिनका पर्याप्त अधिकारिक समर्थन होता है, सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों का अंग बन जाते हैं।

लेखांकन सिद्धान्तों एवं व्यवहार की सामान्य स्वीकृति इस बात पर निर्भर करती है कि वह निम्नाकित तीन आधारों को कितनी अच्छी तरह पूर्ण करते हैंः

प्रासंगिकताः एक सिद्धान्त उस सीमा तक प्रासांगित होता है, जहॉ तक वह ऐसी सूचना प्रदान करता है जो अर्थपूर्ण हो और लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ता के लिए उपयोगी हो।

उद्देश्यपरकताः उद्देश्यपरकता विश्वसनीयता एवं विश्वासयोग्यता की सूचक है। एक सिद्धान्त उस सीमा तक उद्देश्यपरक है जहॉ तक लेखांकन सूचना उन लोगों के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से अथवा निर्णय से प्रभावित न हो, जो इसे प्रदान करते हैं।इसमें सत्यापन की योग्यता भी सम्मिलित है जिसका आशय यह है कि प्रदान की गयी सूचनाओं की शुद्धता को किसी न किसी रूप में निर्धारित किया जा सकता है।

व्यवहार्यताः यह आधार प्रायः परस्पर विरोधी है, उदाहरणार्थ एक निवेशकर्ता के लिए नये उत्पाद के मूल्य के विषय में सूचना वास्तव में प्रसंगिक हैं किन्तु एक बार उत्पाद के मूल्य के लिय प्रबंध के द्वारा किया गया सर्वश्रेष्ठ अनुमान अत्यधिक वस्तुपरक होता हैं। लेखांकन इस प्रकार ऐसे मूल्यों को अभिलिखित करने का प्रयत्न नहीं करता हैं। यह उद्देश्यपरकता के हित में प्रासंगिकता का त्याग कर देता है। नए सिद्धान्तों के विकास में, आवश्यक समस्या, एक ओर प्रासंगिता और दूसरी ओर उद्देश्यपरकता के मध्य संतुलन करने की होती है।

1.15 सिद्धान्तों का लेखांकन

मूल लेखांकन सिद्धान्त आवश्यक रूप से निर्णय के सामान्य नियम हैं जो लेखांकन मूल लेखांकन तकनीको के विकास को शासित करते हैं। यह सिद्धान्त यह मार्ग दर्शन करते हैं कि किस प्रकार लेन–देनों का अभिलेखन किया जाय और उन्हें कैसे प्रतिवेदित किया जाय?

1. **लेखांकन इकाई सिद्धान्त** : इस सिद्धान्त के अनुसार,एक व्यवसाय को एक पृथक इकाई माना जाता है, जिसका अपने स्वामियों एवं अन्य सभी आर्थिक प्रतिष्ठानों से पृथक अस्तित्व होता हैं। उदाहरणार्थ, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के सम्बन्ध में, यद्यपि व्यवसाय का वैधानिक अस्तित्व और व्यापारी का अस्तित्व समान होता है, किन्तु लेखांकन के उद्देश्य से उन्हें एक दूसरे से पृथक माना जाता है। यदि इस मान्यता का अनुसरण न किया जाय, तब एक व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति एवं संचालनात्मक परिणामों का निर्धारण नहीं हो सकता हैं। दूसरे शब्दों में, इस मान्यता के लिए यह आवश्यक है कि लेखांकन के उद्देश्य से व्यक्तिगत लेने–देनों एवं व्यावसायिक लेन–देनों और एक व्यावसायिक ईकाई एवं दूसरी व्यावसायिक ईकाई के

लेन–दनों में अन्तर किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यवसायी के पारिवारिक व्ययों (रू.10,000) को व्यावसायिक व्यय प्रदर्शित किया जाय, तब व्यवसाय के लाभ रू.10,000 की सीमा तक कम प्रदर्शित होंगे।

2. लेखांकन अवधि सिद्धान्त :

अर्थ : इसे सावधि सिद्धान्त अथवा समयावधि सिद्धान्त के रुप में भी जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, किसी उद्यम का आर्थिक जीवन कृत्रिम रुप में सावधिक अन्तरालों में बॅटा होता है जिसे लेखांकन अवधियों के रुप में जाना जाता है, जिनके अन्त में आय–विवरण निष्पादन और वित्तीय स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए बनाए जाते हैं।

प्रभाव : इस मान्यता के प्रयोग के लिए यह भी आवश्यक है कि व्ययों का आवंटन पॅूजी और आगम के मध्य किया जाय। पॅूजी व्ययों का अंश जो चालू अवधि में उपभोग किए गए हैं, आय विवरण में एक व्यय के रुप में लिखा जाता है और अनुपभोग्य अंश को आर्थिक चिट्ठे में भावी उपयोग हेतु सम्पत्ति पक्ष में लिखा जाता है।

अनुमानित और गैर-वास्तविक आय : वास्तव में, लेखांकन अवधि के सिद्धान्त के अनुसार आय का मापन तथ्यात्मक होने की तुलता में अनुमान अधिक है क्योंकि वास्तविक आय का निर्धारण उद्यम के समापन पर ही किया जा सकता है।

प्रतिवेदन करने की अवधि : ज्ञातव्य है कि 12 माह की अवधि के अनुप्रयोग की परम्परा को बाहय प्रतिवेदन के लिए लागू किया जाता है। आन्तरिक प्रतिवेदन के लिए खातों को इससे भी कम अवधियों के लिए तैयार किया जा सकता है जैसे मासिक, त्रैमासिक अथवा अद्धवार्षिक।

3. मुद्रा मापन सिद्धान्त : इस सिद्धान्त के अनुसार केवल ऐसे लेन–देनों, जिन्हें मुद्रा के रुप में व्यक्त किया जा सकता है, को लेखांकन अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, ऐसी सूचना जिसे मुद्रा के रुप में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, को लेखांकन अभिलेख में सम्मिलित नहीं किया जाता है। उदाहरणार्थ, यदि विक्रय निदेशक और उत्पादन निदेशक की आपस में बोलचाल नहीं हैं, तो उपक्रम को निश्चित क्षति होगी। क्योंकि इस सूचना का मौद्रिक मापन सम्भव नहीं है, अतः इस तथ्य को लेखांकन अभिलेख में अभिलिखित नहीं किया जाता है। समस्त लेन–देनों को मौद्रिक रुप में व्यक्त करके, विभिन्न इकाइयों में अभिव्यक्त भिन्न–भिन्न लेन–देनों को मापन की एक सामान्य ईकाई (जैसे मुद्रा) के रुप में लाया जाता है। गैर-मौद्रिक तथ्यों अथवा गुणों को ध्यान में न रखते हुए यह मान्यता मौद्रिक इकाई की क्रय शक्ति में परिवर्तनों को भी ध्यान में नहीं रखती है। अन्य शब्दों में, यह मान्यता सभी रुपयों को समान मानती है, चाहे वह 1950 का रुपया हो अथवा 1990 का। इस प्रकार, उज्जवल व्यवसाय की प्रतिवेदित आय, सम्पत्ति और दायित्वों पर कीमत स्तर के परिवर्तनों का प्रभाव प्रदर्शित करने के लिए अतिरिक्त समंकों को प्रदान करना आवश्यक है।

4. चालू व्यापार के सिद्धान्त :

अर्थ : इसे निरन्तरता मान्यता से भी जाना जाता है। इस मान्यता के अनुसार उद्यम को सामान्यतया चालू व्यापार की भांति देखा जाता है जो कि द्रष्टव्य भविष्य तक चलता रहेगा। यह मान लिया जाता है कि उद्यम का समापन अथवा अपनी

गतिविधियों को वस्तुतः बन्द करने का उद्यम का न तो कोई इरादा है और न ही आवश्यकता ही है।

<u>प्रभाव :</u> यह चालू व्यापार मान्यता के कारण ही है कि :

- सम्पत्तियों को चालू सम्पत्तियों और स्थायी सम्पत्तियों में वर्गीकृत किया जाता है।
- दायित्वों को अल्पकालीन दायित्व एवं दीर्घकालीन दायित्व में वर्गीकृत किया जाता है।
- अप्रयुक्त संसाधनों को समापन में जाने वाले उपक्रमों की तरह समापन मूल्यों के विपरीत अप्रयुक्त लागतों या असमाप्त लागतों की तरह प्रदर्शित किया जाता है। इसी कारण समापन मूल्य नहीं बल्कि आय क्षमता चालू उद्यम का मूल्यांकन करती है।

लेखांकन मानक –1 की आवश्यकताऐं : लेखांकन मानक–1 के अनुसार, जिसे इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इन्डिया ने जारी किया है। यदि इस सिद्धान्त का अनुपालन किया जाय, तो इस तथ्य को वित्तीय विवरणों में प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसकी स्वीकृति और अनुप्रयोग स्वीकृत मान लिया गया है। इस सिद्धान्त के अनुपालन न होने की दशा में, वित्तीय विवरणों में इस तथ्य का कारणों सहित प्रकटीकरण किया जाना चाहिए।

5. नियमितता अथवा एकरुपता सिद्धान्त :

<u>अर्थः</u> इस सिद्धान्त के अनुसार लेन–देनों के एक दिए हुए वर्ग के लिए चयनित लेखांकन व्यवहार चाहे वह तार्किक हो या नहीं, को एक लेखांकन अवधि से दूसरी अवधि तक समानान्तर आधार पर एकरुपता को सुनिश्चित करने के लिए अपनाया जाना चाहिए।

<u>उदाहरण :</u> यदि रहतिये का मूल्यांकन बाद में आना पहले जाना अर्थात LIFO आधार पर किया गया है, तो इस आधार का अनुपालन वर्ष दर वर्ष किया जाना चाहिए और यदि एक विशिष्ट सम्पत्ति पर ह्रास अवशेष पद्धति (WDV) के आधार पर लगाया गया है, तो इस पद्धति को वर्ष दर वर्ष अपनाया जाना चाहिए।

<u>अनुसरण न करने का प्रभाव :</u> यदि नियमितता के इस सिद्धान्त का अनुपालन न किया जाय, तो फर्म के अन्दर आन्तरिक तुलना (अर्थात उसी फर्म की एक अवधि के वास्तविक आंकड़ों की दूसरी अवधि के वास्तविक आंकड़ो से तुलना), अर्न्त फर्म तुलना (अर्थात एक फर्म के वास्तविक आंकड़ों की तुलना उसी उद्योग की दूसरी फर्म से करना) और प्रवृत्ति की तुलना (अर्थात एक फर्म के वास्तविक आंकड़ों की तुलना उसी उद्योग की दूसरी फर्म से करना) नहीं की जा सकती है।

<u>एकरुपता से भिन्न होना :</u> नियमितता को सामान्यतः एकरुपता अथवा लोचहीनता मात्र मानकर भ्रमित नहीं होना चाहिए और सुधरे हुए लेखांकन मानकों को लागू करने में बाधक नहीं बनने देना चाहिए। एक उपक्रम के लिए यह उचित नहीं है कि वह अपनी लेखांकन नीतियों को तब भी अपरिवर्तित रखे जबकि अधिक प्रासंगिक और विश्वसनीय विकल्प मौजूद हों।

प्रकटीकरण : उपयोगकर्ताओं को वित्तीय विवरणों को बनाने में लागू की गयी लेखांकन नीतियों, इन नीतियों में किसी परिवर्तन और ऐसे परिवर्तनों के प्रभावों की सूचना दी जानी चाहिए।

6. सतर्कता सिद्धान्त (अथवा रुढ़िवादिता सिद्धान्त) :

अर्थ : इस सिद्धान्त के अनुसार, 'आय की प्रत्याशा न करें और सभी हानियों के लिए प्रावधान करें' के सिद्धान्त को लागू किया जाना चाहिए। अन्य शब्दों में, रुढ़िवादिता के सिद्धान्त के लिए यह आवश्यक है कि अनिश्चितता और संशय की स्थिति में, व्यावसायिक लेन–देनों का अभिलेखन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि लाभ और सम्पत्तियॉ अधिक न दिखायी जाय और हानि एवं दायित्व कम करके न दिखाये जाय।

उदाहरण : रहतिये का लागत या शुद्ध वसूली मूल्य से जो भी कम हो, पर मूल्यांकन और संदिग्ध ऋणों और देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान करना इस सिद्धान्त के प्रयोग हैं।

नियमितता या एकरुपता के विरुद्ध : जब रहतिये को एक लेखांकन अवधि में लागत पर और दूसरी अवधि में लागत अथवा शुद्ध वसूली मूल्य में से कम मूल्य पर मूल्यांकित किया जाय, तो यह नियमितता या एकरुपता के सिद्धान्त के विरुद्ध है।

पूर्ण प्रकटीकरण के विरुद्ध : जब संदिग्ध ऋणों के लिए एवं ह्रास के लिए अत्यधिक प्रावधान किया जाता है, तो इससे गुप्त संचय का निर्माण हो जाता है और इस प्रकार यह सिद्धान्त पूर्ण प्रकटीकरण के सिद्धान्त के विरुद्ध हो जाता है।

उद्देश्यपरकता अथवा लिखित प्रमाण के विरुद्ध : संभावित हानियों का पूर्वानुमान एक वस्तुपरक निर्णय है और इस प्रकार यह सिद्धान्त उद्देश्यपरकता के सिद्धान्त के विरुद्ध हो जाता है। संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान इत्यादि का व्यवहार आगामी लेखांकन अवधियों में तुलनात्मक रुप से कम प्रावधान को व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में यह चालू आय को कम और भावी आय को बढ़ा देता है और इस प्रकार यह मिलान के सिद्धान्त के विरुद्ध हो जाता है। आजकल रुढ़िवादिता के सिद्धान्त को सतर्कता के सिद्धान्त से प्रतिस्थापित किया जा रहा है जिसके लिए यह आवश्यक है कि रुढ़िवादिता के सिद्धान्त को विवेकपूर्ण ढंग से उस परिस्थिति में लागू किया जाना चाहिए जब अत्यधिक अनिश्चितता एवं संशय हो क्योंकि रुढ़िवादिता से मिथ्यावर्णन हो सकता है।

7. पूर्ण प्रकटीकरण सिद्धान्त : इस सिद्धान्त के अनुसार वित्तीय विवरणों को सूचना पहुँचाने, न कि सूचना छिपाने, के माध्यम का कार्य करना चाहिए। वित्तीय विवरणों को प्रासंगिक एवं विश्वसनीय सूचनाऐं, जिनका वह प्रतिनिधित्व करते हैं, को प्रकट करना चाहिए ताकि यह सूचना उपयोगकर्ताओं के लिए उपयोगी हो सके। इसके लिए यह आवश्यक है कि सूचना को इसके सार और आर्थिक यथार्थ के अनुसार और न कि इसको मात्र विधिक रुप में संकलित और प्रस्तुत किया जाय। वित्तीय विवरणों के साथ तथ्यों के संक्षिप्त विवरणों को जोड़ने का व्यवहार पूर्ण प्रकटीकरण के सिद्धान्त के परिणामस्वरुप विकसित हुआ है। प्रकटीकरण पूर्ण,

न्यायसंगत और पर्याप्त होना चाहिए ताकि वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता उद्यम के वित्तीय प्रदर्शन और स्थिति के विषय में सही मूल्यांकन कर सकें।

8. **यथार्थता अथवा सारता सिद्धान्त** : यह सिद्धान्त मूलतः पूर्ण प्रकटीकरण सिद्धान्त का एक अपवाद है। पूर्ण प्रकटीकरण सिद्धान्त के लिए यह आवश्यक है कि समस्त तथ्यों, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि वित्तीय विवरण भ्रमपूर्ण नहीं हैं, को प्रकट किया जाय जबकि यथार्थता सिद्धान्त के लिए यह आवश्यक है कि वे मदें या घटनाऐं जिनके आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण नहीं हैं अथवा वे उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक नहीं है, को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है। यथार्थता के सिद्धान्त के अनुसार सभी सापेक्षिक प्रासंगिक मदों, ज्ञान, जो वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं के निर्णय को प्रभावित करता हो, को वित्तीय विवरणों में प्रकट किया जाना चाहिए। कौन सी सूचना, अन्य की अपेक्षा अधिक प्रासंगिक है, मुख्यतः निर्णय का प्रकरण है। उदाहरणार्थ आर्थिक चिट्ठे में एक छोटे कैलकुलेटर को सम्पत्ति के रुप में अभिलिखित करना कैलकुलेटर के अभिलेखन की उपयोगिता पर इसकी लागत की अधिकता की दृष्टि से औचित्यपूर्ण नहीं हो सकता है यथार्थता किसी मद की धनराशि पर ही निर्भर नहीं करती बल्कि व्यवसाय के आकार सूचना के स्तर और प्रकृति, व्यक्ति या विभाग के स्तर जो यथार्थता के विषय में निर्णय करते हैं, पर भी निर्भर करती है। उदाहरण के लिए एक कर्मचारी जो अपने फोरमैन को उत्पादन ग्राम में (कि0ग्रा0 का भाग) प्रतिवेदन करता है, फोरमैन अपने पर्यवेक्षक को किलोग्राम में, पर्यवेक्षक के द्वारा अपने उत्पादन प्रबन्धक को क्विंटलों में और उत्पादन प्रबन्धक उच्च प्रबंध को टनों में प्रतिवेदन करना परिस्थितियों के अनुसार औचित्यपूर्ण ठहराया जा सकता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि एक उत्पादन प्रबन्धक उच्च प्रबंध को यह रिपोर्ट करे कि उत्पादन 1,99,000.99 किलोग्राम या सरलतम रुप में 200 टन(लगभग) है। यह वांछनीय है कि यथार्थ और गैरयथार्थ मदों को शासित करने वाली समान नीतियॉ स्थापित की जाय एवं अपनायी जाय ताकि किसी एक लेखांकन अवधि के लिए आय का मापन करते समय, गैर यथार्थ सामग्री को समान रुप में छोड़ दिया जाय। यथार्थता का यह सिद्धान्त लागू किया जाना चाहिए चाहे इसके प्रयोग की लागत इसके लाभों से अधिक हो जाय।

9. **ऐतिहासिक लागत सिद्धान्त** : इस सिद्धान्त के अनुसार एक सम्पत्ति को सामान्यतया लेखांकन अभिलेख में इसे प्राप्त करने के लिए भुगतान की गयी कीमत पर अभिलिखित किया जाता है और अधिग्रहण की अवधि और इसके बाद की लेखांकन अवधियों के लिए लागत आधार बन जाती है। इसी प्रकार यदि एक सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिए कुछ भी भुगतान नहीं किया गया है, तो उसे एक सम्पत्ति के रुप में अभिलिखित नहीं किया जायेगा अर्थात एक उपक्रम की लाभदायक स्थिति और बढ़ती हुई ख्याति मूल्यवान सम्पत्ति होने के बाबजूद अभिलिखित हुए बिना रहेगी। लागत सिद्धान्त के प्रयोग का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि यह उद्देश्यपरक ढंग से सत्यापन करने योग्य है। इसका यह अर्थ नहीं है कि सम्पत्ति को सदैव लागत पर ही प्रदर्शित किया जायेगा। एक सम्पत्ति की लागत को व्यवस्थित ढंग से वर्ष प्रति वर्ष ह्रास काटकर कम किया जायेगा और आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्ति को पुस्तकीय

मूल्य(लागत में से ह्रास घटाकर) प्रदर्शित किया जायेगा। यह उल्लेखनीय है कि ह्रास का उद्देश्य सम्पत्ति की लागत को इसके उपयोगी जीवन पर आवंटित करना है न कि इसकी लागत को इस प्रकार समायोजित करना ताकि वह बाजार मूल्य के समकक्ष लायी जा सके।

10. **आय मान्यता सिद्धान्त** : इस सिद्धान्त का सम्बन्ध मुख्यतया उपक्रम के आय विवरण में आगम को मान्यता प्रदान करने से है। आगत उपक्रम के सामान्य जीवन की क्रियाओं से उत्पन्न होने वाले रोकड़ का सकल अर्न्तप्रवाह, प्राप्तियाँ एवं अन्य प्रतिफल है जो माल के विक्रय, सेवायें प्रदान करने और दूसरों के द्वारा उपक्रम की संपत्तियों के उपयोग से अर्जित ब्याज, अधिकार शुल्क और लाभांशों के रुप में होता है। इसमें तृतीय पक्षकारों के लिए संकलित धनराशि जैसे निश्चित करों की राशि सम्मिलित नहीं होती है। एक एजेन्सी सम्बन्ध में आगम कमीशन की धनराशि है और रोकड़ का सकल अर्न्तप्रवाह प्राप्तियाँ या अन्य प्रतिफल नहीं है। आगम को उसी अवधि में मान्यता दी जाती है जिसमें वह अर्जित हुआ है चाहे वह उस अवधि में प्राप्त हो या नहीं।

11. **मिलान सिद्धान्त** : इस सिद्धान्त कं अनुसार, एक लेखांकन अवधि में किए गए व्ययों का उसी अवधि के मान्यता प्राप्त आगमों से मिलान किया जाना चाहिए अर्थात यदि एक अवधि में विक्रय की गई वस्तुओं की लागत को भी वसूल किया जाना चाहिए। समस्त विक्रय पर प्राप्त आग्रम को मान्यता देना किन्तु इस बिक्री के उन व्ययों को ही वसूल करना जो उस अवधि तक नकद में वसूल हुए हो, सही नहीं है।

यह सिद्धान्त मूलतः उपार्जन सिद्धान्त है क्योंकि यह वास्तविक रोकड़ अर्न्तप्रवाह या रोकड़ बर्हिगमन के समय एवं धनराशि को सम्मान नहीं देता है और केवल आगम और व्ययों के घटित होने (अर्थात् उपार्जन) पर ही ध्यान देता है। यह सिद्धान्त पूर्वदत्त व्ययों, अदत्त व्ययों, उपर्जित आय और अनुपार्जित आय के सम्बन्ध में समायोजन की मांग करता है।

मिलान सिद्धान्त का यह आशय नहीं है कि व्यय आय के साथ–साथ पहचान करने योग्य हों। एक समयावधि में किए गए व्यय उस अवधि में मान्य आय के साथ सम्बन्धित हो भी सकते हैं और सम्बन्धित नहीं भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए विक्रय किए गए माल की लागत और विक्रयकर्ता का कमीशन, विक्रय से प्रत्यक्ष में सम्बन्धित है जबकि किराया, ब्याज, ह्रास जो समय बीतने के साथ उपार्जित होते हैं और उन्हें, जिस लेखांकन अवधि से वह सम्बन्धित हैं, उसी समयावधि में लगाया जाता है। इस प्रकार, एक लेखांकन अवधि में उचित लागतों को उचित आय के साथ मिलान करना आवश्यक होता है।

12. **द्विपक्षीय सिद्धान्त** : एक लेन–देन के दोहरे पक्ष को उस लेन–देन की द्विपक्षीयता या द्वैधता कहा जाता है। यह द्वैधता ही दोहरे लेखे के अभिलेख का आधार है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, प्रत्येक लेन–देन की प्रविष्टि में दो भाग निहित होते हैं– एक डेबिट या नाम के लिए और दूसरा क्रेडिट या जमा के लिए। दोहरा लेखा प्रणाली को न्यूटन के गति के नियम के समतुल्य माना जा सकता है, जिसके अनुसार प्रत्येक क्रिया की एक समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। प्रत्येक

डेबिट या नाम का समान धनराशि का क्रेडिट या जमा होता है। इस प्रकार समस्त डेबिट या नाम का समान धनराशि का क्रेडिट या जमा होता है। इस प्रकार समस्त डेबिट का योग क्रेडिट के योग के बराबर होना चाहिए।

उदाहरण 1: एक्स, वाई को रु0 1,000 में नकद माल बेचता है। इस दशा में इस लेन–देन के दो पक्ष एक्स और वाई के लिए निम्नवत होंगे :

एक्स के लिए दोहरे पक्ष		वाई के लिए दोहरे पक्ष	
1. नकद प्राप्ति	रु0 1000	1. नकद भुगतान	रु0 1000
2. माल का त्याग	रु0 1000	2. माल की प्राप्ति	रु0 1000

उदाहरण 2: एक्स, वाई को रु0 1,000 में उधार माल बेचता है। इस दशा में इस लेन–देन के दो पक्ष एक्स और वाई के लिए निम्नवत होंगे :

एक्स के लिए दोहरे पक्ष	वाई के लिए दोहरे पक्ष
1. रु0 1000 वसूल करने के अधिकार की प्राप्ति	1. रु0 1000 के भुगतान का दायित्व ग्रहण करना
2. रु0 1000 के माल का त्याग	2. रु0 1000 के माल की प्राप्ति

13. उद्देश्यपरकता सिद्धान्त : इस सिद्धान्त के अनुसार लेखांकन के समंक निश्चित, सत्यापन योग्य एवं लेखाकार के व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से मुक्त होने चाहिए। दूसरे शब्दों में, इस सिद्धान्त के लिए यह आवश्यक है कि पुस्तकों में अभिलिखित लेन–देन या घटना का इसके समर्थन में पर्याप्त साक्ष्य होना चाहिए। ऐतिहासिक लागत लेखांकन में लेखांकन समंक सत्यापन करने के योग्य होते हैं क्योंकि लेन–देन स्रोत प्रलेख जैसे वाउचर्स, प्राप्तियां, रोकड़ रसीद, बीजक इत्यादि के आधार पर अभिलिखित किए जाते हैं। यह समर्थक प्रलेख बाद में अंकेक्षकों के द्वारा किए जाने वाले सत्यापन का आधार बने हैं। ह्रास और संदिग्ध ऋणों के लिए संचय जैसी मदों जहां कोई प्रलेखीय साक्ष्य उपलब्ध नहीं होता, प्रबन्ध के द्वारा बनाए गए नीति विवरणों को आवश्यक साक्ष्य की तरह मान लिया जाता है। इसी प्रकार, लेखांकन समंक 'पूर्णग्रह रहित' होने चाहिए क्योंकि लेखांकन समंक न तो प्रबंध के पक्षपात से ग्रसित हो और न ही लेखाकार के पक्षपात से जो इन्हें तैयार करता है। दूसरी ओर, मूल्य आधारित लेखांकन (अर्थात् चालू लागत लेखांकन) में लेखांकन समंक पक्षपात मुक्त नहीं होते क्योंकि मूल्य का अर्थ विभिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न–भिन्न हो सकता है।

14. समयबद्धता :

अर्थ : इस सिद्धान्त के अनुसार निर्णयकर्त्ताओं के लिए समयबद्ध सूचनाऐं (यद्यपि कम विश्वसनीय) उपलब्ध करायी जानी चाहिए। यदि त्रैमासिक प्रतिवेदन अर्द्धवार्षिक आधार पर उपलब्ध कराये जाये, तो त्रैमासिक सूचनाओं में निहित सूचनाऐं निर्णयकर्ताओं के लिए अधिक उपयोगी नहीं होंगी क्योंकि त्रैमासिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के पश्चात अर्द्धवर्ष के दौरान सूचनायें निर्णय को प्रभावित करने की क्षमता खो चुकी होती है।

बिलम्ब का प्रभाव : यदि सूचनाओं को प्रतिवेदित करने में अनावश्यक विलम्ब हो, तो वे अपनी प्रासंगिकता खो देती हैं। समयबद्ध आधार पर सूचनायें प्रदान करने के लिए

लेन–देनों अथवा अन्य घटनाओं के ज्ञात होने से पूर्व उनके सभी पक्षों के विषय में प्रतिवेदन करना भी प्रायः आवश्यक हो सकता है। भारत में सूचीकृत कम्पनियों (स्कन्ध विपणियों में सूचीकृत) के लिए अर्द्धवार्षिक वित्तीय विवरणों को प्रकाशित करने का प्रावधान है। यह निवेशकर्ताओं एवं संभावित निवेशकर्ताओ को उनके निवेश निर्णय लेने के लिए समयबद्ध सूचनायें प्रदान करता है। इसके विपरीत, यदि प्रतिवदनों को सभी पक्षों के ज्ञात होने तक विलम्बित कर दिया जाय, तो इससे सूचनायें अत्यधिक विश्वसनीय होंगी किन्तु उन लोगों के कम उपयोग की रहेंगी जिन्हें उस आन्तरिक समयावधि में निर्णय लेना है।

15. **रुपरेखा पर तथ्य को प्रमुखता** : लेन–देनों एवं अन्य घटनाओं को उनके तथ्य और वित्तीय यथार्थता के अनुसार न कि मात्र उनके कानूनी प्रारुप में, लेखांकित एवं प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

16. **लेखांकन व्यवहारों में विचलनः** एक उद्योग की विशिष्ट विशेषताऐं उपर्युक्त वर्णित लेखांकन मार्ग निर्देशों के विपरीत जाना आवश्यक कर सकती हैं। उदाहरणार्थ, कृषि उद्योग की दशा में फसल की उसके लागत मूल्य की अपेक्षा बाजार मूल्य पर प्रकट करने का सामान्य व्यवहार रहता है क्योंकि प्रत्येक फसल विशेष की शुद्ध लागत के आंकड़े प्राप्त करना व्ययसाध्य होता है।

17. **लागत–लाभ सिद्धान्त** : इस लेखांकन सिद्धान्त के अनुसार एक लेखांकन सिद्धान्त को लागू करने की लागत इसके लाभों से अधिक नहीं होनी चाहिए। यदि लागत अधिक है, तो इस सिद्धान्त को सुधारा जाना चाहिए। लाभ और लागत के मध्य संतुलन गुणात्मक विशेषता की अपेक्षा व्याप्त बाधा है। सूचना प्रदान करने से व्युत्पन्न लाभ इसे प्रदान करने की लागत से अधिक होने चाहिए। भारत में यह कहा जाता है कि बहुत से निवेशकर्ता कम्पनी के वार्षिक प्रतिवेदन में निहित सूचना का उपयोग नहीं करते हैं। अतः अंशधारियों को संक्षिप्त सूचना प्रदान करने का प्रावधान रखा गया है। किन्तु, जिन्हें पूर्ण सूचना की आवश्यकता है, वे उसे कम्पनी से अनुरोध कर पूर्ण वार्षिक प्रतिवेदन प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में कम्पनी वार्षिक प्रतिवेदनों को प्रकाशित करने से सम्बन्धित व्ययों को बचा सकती है।

1.16 सारांश

मनुष्य के लिए यह संभव नही है कि वह प्रत्येक लेन–देन को याद रख सके । अतः यह आवश्यक है कि वांछित वित्तीय सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए इन सभी लेन–देनों का उचित ढंग से अभिलेख रखा जाय । लेखांकन अभिलेख की सहायता से व्यवसायी एक दी हुई समयावधि के अन्त में व्यवसाय की लाभ अथवा हानि एवं वित्तीय स्थिति का निर्धारण कर सकता है तथा विभिन्न हितधारकों का व्यवसाय की गतिविधियों को सम्प्रेषित करने में समर्थ हो सकता है। लेखांकन वित्तीय लेन–देनों से सम्बन्धित है। प्रत्येक लेखांकन कार्य कारण पर आधारित होता है । सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों, व्यापक रूप में प्रयुक्त प्रथाओं, परम्पराओं, सिद्धान्तों, कार्य पद्धतियों एंव मान्यताओं से लेखांकन सिद्धान्त निर्मित होता है। इस प्रकार एक तर्कयुक्त एंव स्वीकृत परिकल्पना, जिसे सर्वसम्मानित प्राप्त हो, को लेखंाकन सिद्धान्त कहा जा सकता है। लेखा़ंकन सिद्धान्त एवं लेखांकन व्यवहार घनिष्ठ रूप से संबंधित

हैं। वे इतने अधिक सम्बधित हैं कि उन्हें पृथक करना अत्यधिक कठिन हैं। लेखांकन सिद्धान्त का विकास नैत्यिक लेखांकन पद्धतियों के अवलोकन विश्लेषण, व्याख्या, जॉच एंव गहन निरीक्षण से हुआ है। लेखाकन विषय सामग्री में हाल ही में बहुत परिवर्तन हुआ हैं। राष्ट्रीय लेखांकन, मानवशक्ति लेखांकन और सामाजिक लेखांकन इत्यादि लेखांकन प्रणाली के अनुप्रयोग के नवीन क्षेत्रों के उदाहरण हैं। नैत्यिक लेखांकन व्यवहार को सर्वमान्य सिद्धान्तो के द्वारा सम्पन्न किया जाता हैं। लेखांकन की विषयवस्तु एवं प्रयोग क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। इसका उपयोग व्यावसायिक जगत तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज के सभी पेशों तक विस्तृत हैं। वित्तीय लेखांकन व्यवसाय की स्थिति एवं उसके संचालन के परिणामों के सम्बन्ध में सूचनाऐं प्रबन्ध के साथ–साथ वाह्रय पक्षों को प्रदान करता हैं। वित्तीय लेखांकन के अपने लाभ एवं सीमाऐं भी हैं। लेखांकन सिद्धान्तों एवं व्यवहार की सामान्य स्वीकृति प्रासंगिकता, उद्देश्यपरकता एवं व्यवहार्यता पर निर्भर करती है ।

1.17 शब्दावली

- **सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धांत (GAAP) –** मूलभूत सिद्धांत जो सभी दशाओं में समान रूप से लागू किए और सभी के द्वारा अपनाए जा सकते हैं , सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धांत या गैप कहलाते हैं।
- **लेखांकन व्यवहार –** लेखांकन क्रियाओं के अभिलेखन और विश्लेषण के मार्ग में जो वास्तव में किया गया है, वह लेखांकन व्यवहार हैं।
- **लेखांकन प्रक्रिया –** समस्त वित्तीय लेन–देनों के अभिलेखन, वर्गीकरण एवं संक्षिप्तीकरण का क्रमबद्ध ढंग लेखांकन प्रक्रिया है।
- **तलपट** –खाता बही में सभी खातों के शेषों का एक साराश है।
- **वित्तीय लेखांकन**–यह वित्तीय लेन–देनो के अभिलेख, वर्गीकरण एवं संक्षिप्तीकरण से सम्बन्धित हैं ।

1.18 बोध परक प्रश्न

सत्य अथवा असत्य लिखिए।

(अ) समयबद्ध सूचनाऐं कम विश्वसनीय हो सकती हैं।
(ब) वित्तीय विवरणों के साथ तथ्यों के संक्षिप्त विवरणों को जोड़ने का व्यवहार पूर्ण प्रकटीकरण के सिद्धान्त के परिणामस्वरुप विकसित हुआ है।
(स) वित्तीय लेखांकन प्रबध को व्यूहनीतिक निर्णय लेने में सहायता करता हैं।
(द) लेखंाकन गैर वित्तीय एवं अमौद्रिक सूचना में भी व्यवहार करता है।

1.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) सत्य (ब) सत्य (स) असत्य (द) असत्य

1.20 स्वपरख प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लेखांकन सिद्धान्त को परिभाषित कीजिए एवं लेखांकन की प्रकृति को समझाइए।

2. लेखांकन के आधारभूत सिद्धान्त क्या हैं ? लेखांकन के आधारभूत सिद्धान्तों में से प्रत्येक को समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखांकन सिद्धान्त बनाम लेखांकन व्यवहार
2. लेखांकन का क्षेत्र
3. लेखांकन के लाभ
4. वित्तीय लेखांकन के कार्य
5. 'सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्त(गैप)
6. पूर्ण प्रकटीकरण सिद्धान्त
7. लेखांकन की मुख्य सीमायें

1.21 सन्दर्भ पुस्तकें

1. **एस.एन.माहेश्वरी** ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. **आर.एल.गुप्ता** , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. **शुक्ला. एवं ग्रेवाल,** एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. **अग्रवाल एवं जैन,** एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. **एस.एन.माहेश्वरी** ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 2 लेखांकन प्रविधि एवं सूचना प्रणाली के रूप में लेखांकन

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 लेखांकन एक सूचना प्रणाली के रूप में
2.3 लेखांकन सूचनाओं की गुणात्मक विशेषताऐं
2.4 प्रासंगिक और विश्वसनीय सूचना पर बाधाऐं
2.5 लेखांकन सूचनाओं के प्रकार
2.6 लेखांकन सूचनाओं के उपयोगकर्ता एवं उनकी आवश्यकताऐं
2.7 सारांश
2.8 शब्दावली
2.9 बोध प्रश्न
2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.11 स्वपरख प्रश्न
2.12 संदर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि

- एक सूचना प्रणाली के रूप में लेखांकन को समझ सकें।
- लेखांकन सूचनाओं की गुणात्मक विशेषताओं का विवेचन कर सकें।
- लेखांकन सूचनाओं का वर्गीकरण कर सकें।
- लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ताओं व सूचनाओं की आवश्यकताओं का वर्णन कर सकें।

2.1 प्रस्तावना

एक लेखा सूचना प्रणाली (एआईएस) निर्णय निर्माताओं द्वारा उपयोग किये जाने वाले वित्तीय एवं लेखा समकों को इकट्ठा करने, भंडारण और संसाधित करने की एक प्रणाली है। लेखाकार कंपनियों, संगठनों या व्यक्तियों की दीर्घावधि और अल्पावधि वित्तीय स्थिरता को निर्धारित करने और मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। लेखाकार व्ययों का पता लगाने, व्यय और भविष्य पथ के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं, साथ ही वित्तीय दस्तावेजों को तैयार करने, विश्लेषण और सत्यापित करने का कार्य भी करते हैं।

लेखांकन प्रविधि–

लेखांकन सिद्धान्त में निम्नलिखित दो प्रकार की प्रविधियाँ होती हैः–

1. वास्तविक प्रविधि
2. आदर्शात्मक प्रविधि

2.2 लेखांकन एक सूचना प्रणाली के रूप में

'प्रणाली' शब्द को तत्वों के ऐसे समुच्चय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक साथ कार्य करते हैं।

लेखांकन में परस्पर संबंधित क्रियाओं की श्रृखंला सम्मिलित होती है। लेखांकन कियाऐं चरणबद्ध प्रगति पथ निर्मित करती हैं जो अवलोकन से प्रारम्भ होकर फिर सूचनाओं का संकलन, अभिलेखन, विश्लेषण करती और अन्त में सूचनाओं का सम्प्रेषण इसके उपयोगकर्ताओं को करती हैं। एक सूचना प्रणाली के रूप में लेखांकन सूचना के स्त्रोत या सूचना प्रदान करने वाले (सामान्य रूप में लेखांकन), सम्प्रेषण के एक माध्यम (सामान्य रूप में वित्तीय विवरण) और प्राप्तकर्ताओं के एक समूह (बाह्य उपयोगकर्ता) को जोड़ता है। जब लेखांकन को सम्प्रेषण प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, तो इसकी परिभाषा यह होती है—लेखांकन प्रणाली की भाषा में अवलोकनों को संकेताकों में परिवर्तित करने, प्रणाली के चिन्हों एवं विवरणों में परिवर्तन एवं संकेतोकों से प्रतीपगमन और परिणामों को सम्प्रेषित करने की प्रक्रिया की तरह लेखांकन की परिभाषा दी जा सकती हैं।

वैकल्पिक रूप में कभी—कभी प्रक्रियन किए गए आकड़ों को पुनः प्रक्रियन के द्वारा सूचना को उपयोगकर्ताओं को उपयोगी सूचना प्रदान करने के लिए तैयार किया जाता है। प्रक्रियन की गयी एवं तैयार की गयी सूचना उपयोगकर्ताओं एवं निर्णयकर्ताओं को वित्तीय विवरणों, प्रतिवेदनों आदि के रूप में सम्प्रेषित की जाती है। लेखांकन प्रणाली में व्यावसायिक लेन—देन और क्रियाऐं आगतें होती हैं और विवरण एवं प्रतिवेदन जो निर्णयकर्ताओं को प्रदान किए जातें हैं, निर्गत अथवा परिणाम होती हैं।

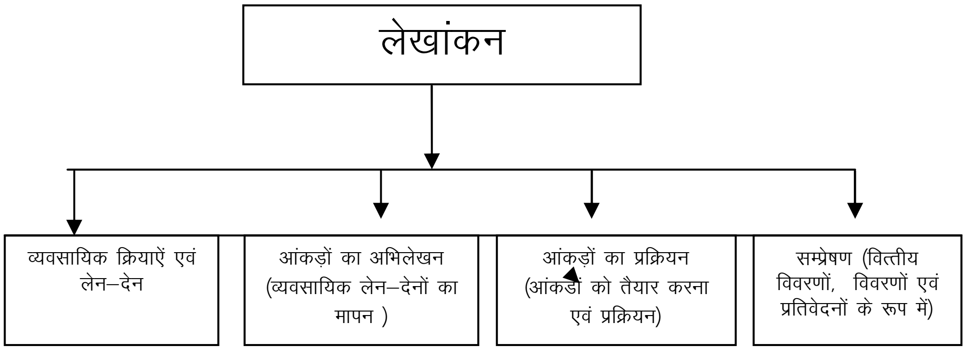

2.3 लेखांकन सूचनाओं की गुणात्मक विशेषताऐं

गुणात्मक विशेषताऐं वह गुण—चर हैं जो वित्तीय विवरणों में प्रदत्त सूचनाओं को उपयोगकर्ताओं के लिए उपयोगी बनाते है। गुणात्मक विशेषताओं के चार सिद्धान्त निम्नवत है:

लेखांकन सूचनाओं की गुणात्मक विशेषताऐं:

1. विश्वसनीयता
2. प्रासंगिकता
3. समझने की योग्यता
4. तुलनात्मकता

आइये इन गुणात्मक विशेषताओं का एक—एक कर विवेचन करें।

1. **विश्वसनीयताः** उपयोगी होने के लिए, सूचना का विश्वसनीय होना भी आवश्यक है। सूचना में विश्वसनीय का गुण तब होता है। जब वह सारता अथवा यथार्थता

की त्रुटि से मुक्त हो और उपयोगकर्ता को विश्वास पूर्वक प्रतिनिधित्व के लिए निर्भर करने योग्य हो सकते हैं अर्थात यह कि वे या तो वास्तव में प्रतिनिधित्व करते है। या जिनके उचित रूप में प्रतिनिधित्व की अपेक्षा की जा सकती है। सूचना प्रासंगिक हो सकती है किन्तु अपनी प्रकृति में या प्रतिनिधित्व में यह इतनी अविश्वसनीय हो कि इसकी पहचान प्रत्याशित रूप में भ्रमपूर्ण हो और इस प्रकार यह अनुपयोगी हो सकती हैं। वित्तीय विवरणों की विश्वसनीय निम्नलिखित पर निर्भर करती है।

(1) **<u>विश्वसनीय प्रतिनिधित्व</u>**: विश्वसनीय होने के लिए सूचना को लेन–देनों और अन्य घटनाओं, जो या तो वास्तव में प्रतिनिधित्व करने की उचित रूप में प्रत्याशा करते हैं, का विश्वसनीय प्रतिनिधित्व करना चाहिए। अधिकांश वित्तीय सूचनाओं में कुछ न कुछ जोखिम की संभावना रहती है। विश्वसनीय से कम प्रतिनिधित्व करना जितना वह प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रतीत होता है, यह पक्षपात के कारण नहीं बल्कि लेन–देनों या अन्य घटनाओं जिन्हें निर्मित करने के लिए मापन करना है, को पहचानने या मापन और प्रस्तुतीकरण तकनीकों, जिनसें उन लेन देनों या घटनाओं के अनुसार होने का संदेश जाता है, को लागू करने में कठिनाइयों को और बढ़ाने के लिए हो सकता है।

(2) **<u>प्रारूप से अधिक यथार्थता</u>**: यदि सूचनाओं को लेन–देनो और अन्य घटनाओं, जिन्हें वह प्रतिनिधित्व करते हुए प्रतीत होते है, को विश्वसनीय ढ़ग से प्रतिनिधित्व करता है, तो यह अवश्यक है कि उन्हें उनकी यथार्थता एवं आर्थिक वास्तविकता के अनुसार लेखांकित किया जाय और केवल उनके कानूनी प्रारूप में नहीं। लेन–देनों अथवा अन्य घटनाओं की यथार्थता सदैव उनकी कानूनी और प्रारूप से संगत नहीं होती है।

(3) **<u>निष्पक्षता या तटस्थता</u>**: वित्तीय विवरणों में निहित सूचना के लिए विश्वसनीय होने हेतु उनकी उनकी तटस्थता अनिवार्य हैं। वित्तीय विवरण तटस्थ नहीं होंगे, यदि सूचना के लिए निर्णय या न्याय को प्रभावित करते हैं।

(4) **<u>सावधानी</u>**: वित्तीय विवरणों के बनाने वालों को अनिश्चितताओं, जो अपरिहार्य रूप में घटनाओं और परिस्थितियों को आच्छादित करती हैं, को भी ध्यान में रखना चाहिए। ऐसी अनिश्चितताओं की पहचान उनकी प्रकृति एवं सीमा के प्रकटीकरण और वित्तीय विवरणों में सावधानी का प्रयोग करके की जा सकती हैं। सावधानी सतर्कता के कुछ अंश का समावेश है। अनिश्चितताओं की दशाओं के अन्तर्गत अनुमान लगाने में आवश्यक न्याय का प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक है, कि जिससे सम्पत्तियों और या आय अपने मूल्य से अधिक और दायित्व अथवा व्यय अपने मूल्य से कम पर न दिखायें जाय। किन्तु सावधानी का प्रयोग गुप्त संचयों अथवा अत्यधिक

प्रावधानों, जान बूझकर सम्पत्तियों या आय का अधि–प्रदर्शन अथवा जान बूझकर दायित्वों या व्ययों का अव–प्रदर्शन इत्यादि की अनुमति नहीं देता हैं।

(5) **पूर्णताः** वित्तीय विवरणों में सूचनाओं के विश्वसनीय होने के लिए उनको सारता और लागत के मानदण्ड़ों अथवा अभिसीमाओं में पूर्ण भी होना चाहिए। छूट जाने से सूचना गलत या भ्रमपूर्ण और इस प्रकार अपनी प्रासंगिकता में अविश्वसनीय एवं कम हो सकती हैं।

2. **प्रासंगिकताः** सूचना को उपयोगी होने के लिए उपयोगकर्ताओं के निर्णय करने की आवश्यकतों हेतु प्रासांगिक भी होना चाहिए। सूचना में प्रासंगिकता का गुण तब होगा जबकी वह उपयोगकर्ता के आर्थिक निर्णयों को, उन्हें भूत, वर्तमान और भावी घटनाओं के मूल्यांकन अथवा उनके भूतकाल के मूल्यांकन की पुष्टि या उसे सुधारने में, सहायता करके प्रभावित करते हैं। सूचना की उत्पादक और पुष्टि करने की भूमिकायें अर्न्तसम्बन्धित हैं। उदाहरणार्थः–संपत्ति धारित करने का चालू स्तर और संरचना की सूचना उपयोगकर्ता के लिए तब मूल्यवान होगी जबकि वह उपक्रम की अवसरों का लाभ उठाने और विपरीत परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करने की योग्यता का पुर्वानुमान लगाने में सहायता कर सकें। वही समान सूचना भूतकालीन पूर्वानुमानों के संबंध में पुष्टि कारक भूमिका का निर्वहन करती हैं। उदाहरणार्थ उस रूप में जिसमें उपक्रम की संरचना की जा सकती थी या उसकी नियोजित क्रियाओं का परिणाम प्राप्त किया जा सकता था।

3. **सारता या यथार्थताः**–सूचना की प्रासंगिकता उसकी प्रकृति या यथार्थ मानी जायेगी जब उसके छूट जाने या त्रुटि पूर्ण प्रतिनिधित्व का प्रभाव उपयोगकर्ताओं के आर्थिक निर्णयों पर वित्तीय विवरणें के आधार पर पड़ा हैं। सारता इसके छूट जाने अथवा गलत प्रदर्शन की विशेष परिस्थितियों में निर्णयन की गयी मद अथवा त्रुटि के आधार पर निर्भर करती है। इस प्रकार सारता सूचना को उपयोगी बनाने वाली गुणवत्ता की प्रारम्भिक विशेषता होने की अपेक्षा एक निर्धारण बिन्दु या साम्य बिन्दु उपलब्ध कराती है।

4. **समझने की योग्यताः–** वित्तीय विवरणों में प्रदत्त सूचना उपयोगकर्ताओं के लिए तुरन्त समझ में आने वाली होनी चाहिए। इस उद्देश्य के लिए, उपयोगकर्ताओं को व्यवसाय एवं आर्थिक तथा लेखांकन की उचित ज्ञान और उचित परिश्रम से सूचना के अध्ययन की तत्परता का होना मान लिया जाता हैं। किन्तु जटिल प्रकरणों के विषय में सूचना जिसे उपयोगकर्ता के निर्णय करने की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिकता के कारण वित्तीय विवरणों में सम्मिलित किया जाना चाहिए और केवल इस आधार पर सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए कि कुछ उपयोगकर्ताओं को इसे समझना कठिन हो सकता हैं।

5. **तुलनीयताः–** एक उपक्रम के वित्तीय विवरण तुलनात्मक होने चाहिए, इस उद्देश्यों से, उपयोगकर्ता को लेखांकन नीतियों, इन नीतियों में किसी परिवर्तन और इन परिवर्तन के प्रभावों के विषय में सूचित किया जाना चाहिए। इस गुणात्मक विशेषता के लिए लेखांकन नीतियों को चुनने में संगति लाने की आवश्यकता होती हैं। संगति के

अभाव से वित्तीय विवरणों की सूचनाओं की तुलनात्मक गुणवत्ता को हानि पहुँच सकती हैं। इस प्रकार लेखांकन नीतियों के प्रकटीकरण में लेखांकन मानक संगति को उपार्जन और चालू उपक्रम के साथ–साथ एक आधारभूत लेखांकन मान्यता के रूप में ध्यान में रखते हैं।

2.4 प्रासंगिक और विश्वसनीय सूचना पर बाधाऐं

प्रासंगिक और विश्वसनीय सूचना पर चार बाधाऐं इस प्रकार हैं:

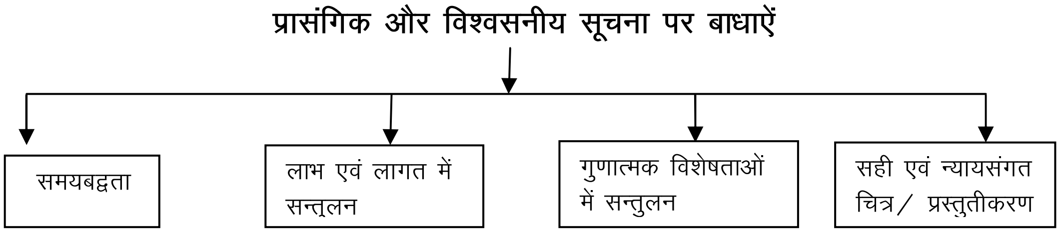

आइये, प्रासंगिक और विश्वसनीय सूचनाओं पर इन बाधाओं का एक–एक विवेचन करें:

1. **समयबद्वता:–** यदि सूचनाओं के प्रतिवेदन में अनावश्यक विलम्ब होगा, तो इससे यह प्रासंगिकता खो देंगी। समयबद्व ढ़ग से सूचना प्रदान करने के लिए प्रायः लेन–देन या अन्य घटना के सभी पक्षों के ज्ञात होने से पूर्व इसे प्रतिवेदित करना आवश्यक हो जाता हैं। भारत में सूचीकृत कम्पनियों (स्कन्ध विपणि में सूचीकृत) के लिए अर्द्धवार्षिक वित्तीय प्रतिवेदन प्रकाशित करने का प्रावधान हैं। इससे विनियोक्ताओं और संभावित विनियोक्ताओं को उनके विनियोग निर्णय लेने के लिए समयबद्ध सूचना प्राप्त होती है। इसके विपरीत यदि सभी पक्षों के ज्ञात होने तक प्रतिवेदन में विलम्ब किया जाता है, तब सूचना अत्यधिक विश्वसनीय तो हो सकती हैं, किन्तु उपयोगकर्ताओं के लिए बहुत कम उपयोगी होगी, जिन्हें आन्तरिक समय में निर्णय ले लेना था।
2. **लाभ एवं लागत के मध्य सन्तुलन:** लाभ और लागत के मध्य संतुलन गुणात्मक विशेषता की अपेक्षा बाधा है। सूचना से व्युत्पन्न लाभ, इसे प्रदान करने की लागत, से अधिक होने चाहिए। भारत में प्रायः यह कहा जाता है कि अनेक निवेशकर्ता कम्पनी की वार्षिक रिपोर्ट में प्रदत्त सूचना को उपयोग नहीं करते हैं। अतः अंशधारियों को संक्षेपित लेखा प्रदान करने का प्रावधान हैं। किन्तु, जिन्हें पूर्ण सूचना में रूचि हैं, वे पूर्णवार्णिक प्रतिवेदन कम्पनी से अनुरोध कर प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में कम्पनी एक सीमा तक वार्षिक प्रतिवेदनों के प्रकाशन से संबंन्धित व्ययों को बचा सकती हैं
3. **गुणात्मक विशेषताओं के मध्य सन्तुलन :** व्यवहार में गुणात्मक विशेषताओं के मध्य संतुलन प्रायः आवश्यक होता हैं। विभिन्न गुणात्मक विशेषताओं का सापेक्षिक महत्व विभिन्न मामलों में पेशेवर निर्णय का प्रकरण होता हैं।
4. **सही एवं न्याय संगत चित्र/न्यायसंगत प्रस्तुतीकरण:** परिवर्तन को प्रदर्शित करनें में एक उपक्रम के वित्तीय परिणाम, वित्तीय स्थिति एवं इससे परिवर्तन

का सही एवं न्याय संगत चित्र प्रदर्शित करने अथवा उचित रूप में इनके प्रस्तुतीकरण करनें में वित्तीय विवरणों को बार–बार वर्णित किया जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि गुणात्मक विशेषताओं और समुचित लेखांकन मानकों के प्रयोग के परिणामस्वरूप बनाए गए वित्तीय विवरणों के द्वारा सही एवं न्यायसंगत चित्र सम्प्रेषित होगा।

व्यवहार में वित्तीय विवरणों के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह भी आवश्यक हो गया हैं कि गुणात्मक विशेषताओं के मध्य एक उचित संतुलन प्राप्त किया जाय, विशेषताओं के सापेक्षिक महत्व का मूल्यांकन वास्तव में पेशेवर निर्णय का एक मामला हैं।

2.5 लेखांकन सूचनाओं के प्रकार

लेखांकन सूचनाओं के आधार पर एवं लेखांकन मापन के आधार पर और इसी प्रकार लेखांकन सूचना को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हैं। लेखांकन सूचना के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं।

1. वित्तीय लेन–देनों और घटनाओं से सम्बन्धित लेखांकन सूचनाऐंः

वित्तीय स्थिति : वित्तीय स्थिति से सम्बन्धित सूचनाऐं प्रारंभिक मुख्यतः आर्थिक चिट्ठों में प्रदर्शित की जाती हैं।

एक उपक्रम की वित्तीय स्थिति उसके अधिक संसाधनों जिन्हें वह नियंत्रित करता हैं, उसकी वित्तीय संरचना, उसके तरलता और शोधन क्षमता और जिस वातावरण में वह परिचालन करता हैं, उसके परिवर्तनों के अनुसार सामंजस्य करने की उसकी क्षमता से प्रभावित होती हैं ।

(अ) उपक्रम के द्वारा नियंत्रित आर्थिक संसाधनों और इन संसाधनों के परिवर्तत करने की उसकी विगत क्षमता भविष्य में उस उपक्रम की रोकड़ और रोकड़ के समान सम्पतियों को उत्पन्न करने के पूर्वानुमान करने में उपयोगी होती हैं।

(ब) वित्तीय संरचना के विषय में सूचना, भावी ऋण आवश्यकताओं और भावी लाभों एवं नकद प्रवाहों को किस प्रकार उपक्रम के हितधारकों में वितरित किया जायेगा, के पूर्वानुमान में उपयोगी होती हैं। उपक्रम किस प्रकार भविष्य में वित प्राप्त कर सकता हैं, के पूर्वानुमान में भी यह उपयोगी होती है।

(स) तरलता और शोधन क्षमता से संबंधित सूचनाऐं उपक्रम की वित्तीय प्रतिबद्धताओं, जैसे ही वह देय होती हैं, को पूर्ण करने की योग्यता का पूर्वानुमान लगाने में सहायता होती हैं। तरलता से आशय एक निश्चित अवधि में नकदी की भावी उपलब्धताओं को पूर्ण करने से हैं। शोधन क्षमता से आशय वित्तीय प्रतिबद्धताओं के देय होने पर उन्हें पूर्ण करने के लिए नकदी की उपलब्धता को दीर्घकाल के लिए पूरा करने से हैं।

वित्तीय प्रदर्शन : वित्तीय प्रदर्शन के विषय में सूचना को प्रारम्भिक रूप में मुख्यतया लाभ और हानि खाते (जिसे आय विवरण के नाम से भी जाना जाता हैं) में प्रदान की जाती हैं।

एक उपक्रम के प्रदर्शन विषय में, विशेषतया उसकी लाभदायकता की सूचना की आवश्यकता आर्थिक संसाधनों में संभावी परिवर्तनों, जिनसे भावी नियत्रंण संभावित

होता हैं, के मूल्यांकन के लिए होती हैं। इस सम्बन्ध में प्रदर्शन के परिवर्तन के विषय में सूचना महत्वपूर्ण होती हैं। प्रदर्शन के विषय में सूचना उपक्रम के वर्तमान संसाधन आधार से उत्पन्न होने वाले रोकड़ प्रवाहों की क्षमता के पूर्वानुमान के लिए उपयोगी होती हैं। यह उस प्रभावशीलता के विषय में निर्णय लेने के लिए भी उपयोगी होती हैं, जिसका प्रयोग उपक्रम को अपने अतिरिक्त संसाधनों के विनियोजन करने में करना चाहिए।

रोकड़ प्रवाह : रोकड़ प्रवाह के विषय में सूचना वित्तीय विवरणों में रोकड़ प्रवाह विवरण के माध्यम से प्रदान की जाती हैं।

एक उपक्रम की रोकड़ प्रवाह की सूचना इसके विनियोजन, वित्तीय एवं संचालनात्मक क्रियाओं के एक निश्चित प्रतिवेदन अवधि के अन्तर्गत मूल्यांकन के लिए उपयोगी होती हैं। यह सूचना उपयोगकर्ताओं को उपक्रम की रोकड़ अथवा रोकड़ जैसे संपत्तियों को उत्पन्न करने की योग्यता तथा उपक्रम के द्वारा इन रोकड़ प्रवाहों का उपयोग करने की आवश्यकता का मूल्यांकन करने के लिए आधार निर्मित करने हेतु भी उपयोगी होती हैं।

यह सूचना आगे निम्न प्रकार वर्गीकृत की जा सकती हैं :

1. ऐतिहासिक लागत के आधार पर
2. चालू लागत के आधार पर
3. वसूल किये गए मूल्य के आधार पर
4. वर्तमान मूल्य के आधार पर

2. **परिचालन आथवा प्रकार्य से संबंधित लेखांकन सूचना**
3. **एक उपक्रम की क्रियाओं के नियोजन एवं नियत्रंण की आन्तरिक प्रतिवेदन हेतु संबंधित सूचनाऐं**

इस सूचना को आगे निम्नवत वर्गीकृत किया जा सकता हैं :

(अ) वित्तीय क्षेत्र से संबंधित सूचना
(ब) उत्पादन क्षेत्र से संबंधित सूचना
(स) विपणन क्षेत्र से संबंधित सूचना
(द) सेविवर्ग से संबंधित सूचना
(य) अन्य क्षेत्र से संबंधित सूचना (जैसे शोध एवं विकास)

4. **व्यवसायिक निर्णयों के सामाजिक प्रभाव से संबंधित लेखांकन सूचनायें।**
5. **पर्यावरण और पारिस्थितिकी से संबंधित लेखांकन सूचनायें।**
6. **मानवीय संसाधनों से संबंधित लेखांकन सूचनायें।**

2.6 लेखांकन सूचनाओं के उपयोगकर्ता एवं उनकी आवश्यकताऐं

लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ताओं में वर्तमान एवं भावी विनियोक्ता, प्रबन्ध, कर्मचारी, .ऋणदाता, आपूर्तिकर्ता एवं अन्य व्यापारिक लेनदार, ग्राहक, सरकार एवं उसके विभिन्न अभिकरण और जनता सम्मिलित है। यह उपयोगकर्ता अपनी विभिन्न प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए लेखांकन सूचना का उपयोग करते हैं।

कुछ उपयोगकर्ता और सूचना की उनकी आवश्यकताओं निम्नवत दी गयी हैं :

उपयोगकर्ता	सूचना की आवश्यकता
1.**अल्पकालीन लेनदार** (उदाहरणार्थ कच्चे माल/अन्तिम माल के आपूर्तिकर्ता, अल्पावधि ऋण दाता)	अल्पकालीन देनदारों को सूचना की आवश्यकता यह निर्धारित करने के लिए होती हैं कि क्या उसको देय धनराशि देय हो जाने पर उन्हें भुगतान की जायेगी और क्या उन्हें व्यक्तिगत उपक्रम को ऋण के प्रवाह का विस्तार, वर्तमान स्थिति बनाये रखना अथवा प्रतिबन्धित करना चाहिए।
2. **दीर्घकालीन लेनदार** (उदाहरणार्थ, दीर्घकालीन ऋणदाता)	दीर्घकालीन लेनदारों को सूचना की आवश्यकता यह निर्धारित करने के लिए है कि क्या उनका मूलधन एवं उस पर ब्याज देय होने पर उन्हें भुगतान किया जायेगा और क्या एक व्यक्तिगत उपक्रम को ऋण के प्रवाह को उन्हें प्रतिबन्धित करना चाहिए।
3.वर्तमान विनियोक्ता (उदाहरणार्थ, समता अंशधारी)	वर्तमान विनियोक्ताओं को सूचना की आवश्यकता अपने विनियोग की संभावना हेतु निर्णय करने और यह निर्धारित करने के लिए होती है कि क्या उन्हें अंशे का क्रय, धारण अथवा विक्रय करना चाहिए।
4.संभावित विनियोक्ता (उदाहरणार्थ, वह जो विनियोग करना चाहते हैं।)	संभावित विनियोक्ताओं को सूचना की आवश्यकता एक उपक्रम की संभावनाओं पर निर्णय लेने और यह निश्चित करने के लिए होती हैं कि क्या उन्हें अंशों का क्रय करना चाहिए।
5. प्रबन्ध	प्रबंध को सूचना की आवश्यकता फर्म के (अ) अल्पकालीन शोधन क्षमता (ब) दीर्घकालीन शोधन क्षमता (स) क्रियाशीलता (जैसे संसाधनों का कुशल उपयोग) (द) आवर्त से सम्बन्धित लाभदायकता का परीक्षण करने तथा भावी कार्य योजना के निर्धारण करने के लिए होती हैं।
6.कर्मचारी	कर्मचारी एवं उनके प्रतिनिधि समूहों को नियोक्ता की स्थिरता एवं लाभयकता में रूचि होती हैं। वे इस सूचना में भी रूचि रखते हैं जिससे वे उपक्रम की पारिश्रमिक एवं सेवानिवृत्ति लाभ भुगतान करने और रोजगार अवसर प्रदान करने की योग्यता का मूल्यांकन करने के योग्य हो सकें।
7.कर प्राधिकारी	कर अधिकारियों को सूचना की आवश्यकता उपक्रम के कर दायित्वों के लिए होती हैं।
8.ग्राहक	ग्प्रहकों के उपक्रम के चलते रहने, विशेष रूप में तब जबकि उनका उसके साथ दीर्घावधि संबंध हो गया हो

	अथवा वे उपक्रम पर निर्भर करते हों, की सूचना में रूचि होती हैं।
9.सरकार एवं अन्य अभिकरण	सरकार एवं अन्य अभिकरण संसाधनों के आबंटन और इस प्रकार, उपक्रम की क्रियाओं में रूचि रखते हैं। उन्हें सूचना की आवश्यकता उपक्रम की क्रियाओं का नियमन करने, कराधान नीतियों को निर्धारित करने और राष्ट्रीय आय तथा इस प्रकार के समान समंकों के आधार के रूप में होता हैं।
10.जनता	उपक्रम जनता के सदस्यों को कई प्रकार प्रभावित करते हैं। उदाहरणार्थ उपक्रम स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई प्रकार से, जिसमें रोजगार प्रदान किए गए व्यक्तियों की संख्या और आपूर्तिकर्ताओं को प्रदत्त संस्थागत सहयोग इत्यादि के रूप में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। वित्तीय विवरणों से जनता को प्रवृत्तियों एवं उपक्रमों की प्रगति एवं क्रियओं की अभिसीमा में हुए नवीनतम विकास के विषय में सूचना प्रदान की जाती हैं। जहाँ वित्तीय विवरण इन उपयोगकर्ताओं की समस्त सूचनाओं की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते, वहीं कुछ सूचना आवश्यकताऐं समस्त उपयोगर्ताओं के लिए समान होती हैं। वित्तीय विवरणों में निहित सूचनायें, जो विनियोक्ताओं अथवा जोखिम पूँजी प्रदान कर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करती हैं, वह अन्य उपयोगकताओं की अधिकांश आवश्यकताओं को भी पूर्ण करेंगी।

2.7 सारांश

लेखांकन में परस्पर संबंधित क्रियाओं की श्रृखंला सम्मिलित होती है। लेखांकन कियाऐं चरणबद्ध प्रगति पथ निर्मित करती हैं जो अवलोकन से प्रारम्भ होकर फिर सूचनाओं का संकलन, अभिलेखन, विश्लेषण करती और अन्त में सूचनाओं का सम्प्रेषण इसके उपयोग कर्ताओं को करती हैं। लेखांकन सूचनाओं की चार गुणात्मक विशेषताओं में विश्वसनीयता, प्रासंगिकता, समझने की योग्यता, तुलनात्मकता सम्मिलित हैं। प्रासंगिक और विश्वसनीय सूचना पर चार बाधाऐं इस प्रकार हैः समयबद्वता, लाभ एवं लागत के मध्य सन्तुलन, गुणात्मक विशेषताओं के मध्य सन्तुलन एवं सही एवं न्याय संगत चित्र/न्यायसंगत प्रस्तुतीकरण। लेखांकन सूचनाओं के आधार पर एवं लेखांकन मापन के आधार पर और इसी प्रकार लेखांकन सूचना को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हैं– वित्तीय लेन–देनों और घटनाओं से सम्बन्धित लेखांकन

सूचनाए, वित्तीय प्रदर्शन एवं रोकड़ प्रवाह आदि। लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ताओं में वर्तमान एवं भावी विनियोक्ता, प्रबन्ध, कर्मचारी, ऋणदाता, आपूर्तिकर्ता एवं अन्य व्यापारिक लेनदार, ग्राहक, सरकार एवं उसके विभिन्न अभिकरण और जनता सम्मिलित है। यह उपयोगकर्ता अपनी विभिन्न प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए लेखांकन सूचना का उपयोग करते हैं। जहाँ वित्तीय विवरण इन उपयोगकर्ताओं की समस्त सूचनाओं की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते, वहीं कुछ सूचना आवश्यकताऐं समस्त उपयोगर्ताओं के लिए समान होती हैं। वित्तीय विवरणों में निहित सूचनायें, जो विनियोक्ताओं अथवा जोखिम पूँजी प्रदानकर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करती हैं, वह अन्य उपयोगकताओं की अधिकांश आवश्यकताओं को भी पूर्ण करेंगी।

2.8 शब्दावली

- **रोकड़ प्रवाह** – रोकड़ का व्यवसाय से बाहर जाना अथवा अन्दर आना ।
- आय का अधि–प्रदर्शन अथवा अव–प्रदर्शन – आय को वास्तविक से अधिक या कम मूल्य पर दिखाना ।

2.9 बोध प्रश्न

सत्य अथवा असत्य लिखिए।

(अ) रोकड़ प्रवाह के विषय में सूचना वित्तीय विवरणों में रोकड़ प्रवाह विवरण के माध्यम से प्रदान की जाती हैं।

(ब) अधिकांश वित्तीय सूचनाओं में जोखिम की संभावना नहीं रहती है।

(स) अंशधारियों को संक्षेपित लेखा प्रदान करने से कम्पनी एक सीमा तक वार्षिक प्रतिवेदनों के प्रकाशन से संबंन्धित व्ययों को बचा सकती हैं

(द) ग्राहकों को उपक्रम के चलते रहने की सूचना में रूचि नहीं होती हैं।

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) **सत्य** (ब) **असत्य** (स) **सत्य** (द) **असत्य**

2.11 स्वपरख प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

3. लेखांकन प्रविधियाँ क्या होती हैं ? एक सूचना प्रणाली के रूप में लेखांकन को समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वास्तविक प्रविधि
2. आदर्शात्मक प्रविधि
3. लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ता

2.12 सन्दर्भ पुस्तकें

1. एस.एन.माहेश्वरी ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. आर.एल.गुप्ता , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. शुक्ला. एवं ग्रेवाल, एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस

4. अग्रवाल एवं जैन, एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. एस.एन.माहेश्वरी ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 3 भारत में लेखांकन मानक एवं मानक निर्धारण के मुद्दे

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना
3.2 भारत में लेखांकन मानक
3.3 लेखांकन मानक का अर्थ
3.4 लेखांकन मानक के उद्देश्य
3.5 लेखांकन मानक का महत्व एवं लाभ
3.6 भारत में लेखांकन मानकों को कौन निर्गत करता है?
3.7 लेखांकन मानकों के अनुसार अनुपालन में वैधानिक सम्परीक्षकों का क्या कर्तव्य है?
3.8 लेखांकन मानकों को निर्गत करने की कार्य पद्धति
3.9 लेखांकन मानकों के निर्धारण के लाभ
3.10 लेखांकन मानकों के निर्धारण के विपक्ष में तर्क
3.11 लेखांकन मानकों का विकास
3.12 भारत का लेखांकन मानक बोर्ड
3.13 लेखांकन मानकों का अनुपालन
3.14 सारांश
3.15 शब्दावली
3.16 बोध परक प्रश्न
3.17 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.18 स्वपरख प्रश्न
3.19 संदर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- लेखांकन मानक का अर्थ, उद्देश्य महत्व एवं लाभों की व्याख्या कर सकें।
- लेखांकन मानकों को निर्गत करने की कार्य पद्धति का विवेचन कर सकें।
- लेखांकन मानकों के विकास एवं अनुपालन की आवश्यकता की व्याख्या कर सकें।
- भारत में अब तक निर्गमित लेखांकन मानकों का वर्णन कर सकें।

3.1 प्रस्तावना

वित्तीय विवरण एक लेखांकन अवधि में किसी उद्यम की समस्त वित्तीय क्रियाओं के परिणामों को मौद्रिक रूप में संक्षिप्तीकरण के लिये बनाये जाते हैं। यह वित्तीय क्रियाऐं एक उद्यम से दूसरे उद्यम तक भिन्न होती हैं। वित्तीय विवरणों की तुलना करने में विभिन्न प्रतिवेदक उद्यमों को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पडता

है क्योंकि वित्तीय विवरणों को तैयार करने में इन उद्यमों के द्वारा विभिन्न विधियों एवं सिद्धांतों का अनुसरण किया जाता है। इन विधियों एवं सिद्धांतों को यथासंभव एकरूप और तुलनात्मक बनाने के लिये मानकों का अभ्युदय हुआ है। वित्तीय मानकों का प्रयोग विश्व में लगभग सभी देशों में प्रमुख अनिवार्य नियामक व्यवस्था के रूप में सामान्य उद्देश्य के वित्तीय प्रतिवेदनों को तैयार करने और तत्पश्चात उनका सम्परीक्षण करने के लिये किया जाता है।

3.2 भारत में लेखांकन मानक

लेखांकन मानकों को लेखांकन मानक बोर्ड (एएसबी) के पर्यवेक्षण और नियंत्रण के तहत जारी किया गया था, जिसे 1977 में एक संस्था के रूप में गठित किया गया था। एएसबी चार्टर्ड एकाउंटेंट्स संस्थान के अधीन एक समिति है, जिसमें सरकारी विभाग, शिक्षाविदों, अन्य पेशेवर निकायों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। लेखांकन मानकों का सम्बंध वित्तीय विवरणों को तैयार करने एवं उनका प्रस्तुतीकरण करने के लिये मापन और प्रकटीकरण की प्रणाली से है। लेखांकन मानक लेखांकन लेन–देनों एवं घटनाओं के विभिन्न पहलुओं के मापन व्यवहार एवं प्रकटीकरण के संबंध में मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ लेखांकन संस्थाओं के द्वारा निर्गत किये गये नीति अभिलेख (उत्तम लेखांकन व्यवहार के अधिकृत वक्तव्य) हैं।

3.3 लेखांकन मानक का अर्थ

लेखांकन व्यवसाय की भाषा है जो एक उद्यम के विभिन्न हितधारक पक्षों को वित्तीय विवरणों, जिन्हें वित्तीय परिणामों एवं इसकी वस्तुस्थिति का सही एवं उचित चित्र प्रदर्शित करना होता है, के माध्यम से उद्यम के वित्तीय प्रदर्शन और स्थिति को सम्प्रेषित करती है। किसी भी अन्य भाषा की तरह लेखांकन के भी अपने नियमों का एक जटिल समूह होता है। वित्तीय विवरणों को बनाने में प्रयुक्त परम्पराओं अथवा नियमों का प्रादुर्भाव अनेकों वर्षों में लेखांकन पेशेवरों के रूचि, अनुभवों के उत्पाद के रूप में हुआ है। परिणामस्वरूप विभिन्न कम्पनियों के द्वारा विविध प्रकार के लेखांकन नियमों का प्रयोग किया जाता रहा है। ऐसी स्थिति में यह अनुभव किया गया कि वित्तीय विवरणों को बनाने में प्रयुक्त विधियों में भ्रमकारी भिन्नता को कम या समाप्त करने के लिये लेखांकन के नियमों और सिद्धांतों के कुछ मानकीकृत समूह होने चाहिये। किन्तु ऐसे लेखांकन नियमों में एक उद्यम की विशिष्ट परिस्थितियों और आर्थिक वातावरण, सामाजिक आवश्यकताओं, विधिक अनिवार्यताओं और तकनीकी विकास के अनुसार उचित मात्रा में लोचशीलता भी होनी चाहिये। लेखांकन मापन के नियमों और आधारों को सुझाने के क्रम में अनेक लेखांकन मानक निर्धारक संस्थाओं को विकसित एवं विकासशील देशों में स्थापित किया गया। लेखांकन मानकों का निर्धारण एक सामाजिक निर्णय है। मानक व्यवहार पर प्रतिबंध लगाते हैं और इस कारण प्रभावित पक्षों के द्वारा उनको स्वीकृत किया जाना आवश्यक है।

लेखांकन मानक लेखाकन लेन–देनों एवं घटनाओं के विभिन्न पहलुओं के मापन व्यवहार, एवं प्रकटीकरण के संबंध में मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ लेखांकन सस्थाओं के द्वारा निर्गत किए गए नीति अभिलेख (उत्तम लेखांकन के अधिकृत वक्तव्य) हैं।

परिभाषा

"लेखांकन मानक नियामक लेखांकन संस्थाओं की आचार संहिताओं के कथन है, जिन्हें वित्तीय विवरणों को बनाने एवं प्रस्तुतीकरण में अनुपालन करना होता है। सामान्य अर्थ में, लेखांकन मानक विशेषज्ञ संस्थाओं अथवा अन्य नियामक संस्थाओं के द्वारा विभिन्न लेखांकन संव्यवहारों के मानक, व्यवहार प्रस्तुतीकरण एवं प्रकटीकरण के विभिन्न पहलुओं पर निर्गत लिखित प्रलेख हैं।"

"एक लेखांकन मानक विभिन्न विकल्पों में से चयनित किए जाने वाले सिद्धान्तो एवं विधियो के संबंध में लेखांकन नीतियों अथवा विस्तृत मार्ग निर्देशों का चुना हुआ समूह हैं। मानक लागू कानून, रीति–रिवाजों एवं प्रयोग और व्यावसायिक वातावरण का पुष्टिकरण करते हैं। अतः सार्वभौमिक रूप में स्वीकृत मानक कोई नहीं है।"

3.4 लेखांकन मानक के उद्देश्य

लेखांकन मानकों का मुख्य उद्देश्य भारत में वर्तमान में प्रयुक्त विविध लेखांकन नीतियों एवं व्यवहारों को संगति में लाना है, किन्तु संगति में लाने का यह आशय नहीं है, कि लेखांकन मानकों को अत्यन्त कठोर बना दिया जाय। वास्तव में लेखांकन मानकों में संगति लाने से उनमें उद्देश्य के अनुसार समायोजन करने की लोचशीलता प्राप्त होती हैं।

लेखांकन मानकों का उद्देश्य विभिन्न लेखांकन पहलुओं के व्यवहार में विचलनों को समाप्त करना तथा प्रस्तुतीकरण में प्रमापीकरण हैं। उनका प्रयोजन जाने वाले वित्तीय विवरणों में अपनायी गयी सामन्जस्य एवं प्रस्तुत किए विविध लेखांकन नीतियों में संगति लाना हैं।

वित्तीय विवरणों को तैयार करने एवं प्रस्तुतीकरण में अपनायी गयी विविध लेखांकन पद्धतियों में सामंजस्य लाना है, जिससे फर्मो के मध्य और फर्म के अन्दर तुलना की जा सके।

3.5 लेखांकन मानक का महत्व एवं लाभ

लेखांकन मानकों का अंगीकरण एवं अनुप्रयोग वित्तीय, विवरणों को तैयार एवं प्रस्तुतीकरण करने में एकरूपता, तुलनात्मकता एवं गुणात्मक सुधार को सुनिश्चित करता हैं।

लेखाकन मानक लेखांकन सिद्धान्तों, मूल्यांकन तकनीकों और वित्तीय विवरणों कों तैयार एवं प्रस्तुतीकरण करने में लेखांकन सिद्धान्तों एवं विधियों का अनुप्रयोग करना चाहता है ताकि वित्तीय विवरण सत्य एवं उचित चित्र प्रदान कर सके। मानक निर्धारक संस्थाओं का स्वाभाविक उद्देश्य व्यवसाय के आर्थिक प्रदर्शन में निवेशकर्ताओं को यथासमय उपयोगी वित्तीय सूचनाओं के संवहन का प्रर्वतन करना होता है।

लेखांकन मानकों के लाभो को निम्नवत सूचीकृत किया जा सकता हैः

1. वित्तीय विवरणों की विश्वसनीयता में सुधार करना
2. कम्पनी की जबाबदेही का निर्धारण करना
3. लेखांकन व्यवहारों में सुधार करना
4. लेखाकारों और सम्परीक्षकों को लाभ।

3.6 भारत में लेखांकन मानकों को कौन निर्गत करता है?

चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस इंस्टीटयूट ऑफ इन्डिया (आई0सी0आई0) ने भारत में प्रयोग की जा रही विविध लेखांकन नीतियों एवं व्यवहारों में सामंजस्य की आवश्यकता को मान्यता प्रदान करते हुए लेखांकन मानक बोर्ड (ए0एस0बी0) का 22 अप्रैल, 1977 को गठन किया है। ए0एस0बी0 कि मुख्य भूमिका समय–समय पर लेखांकन मानकों का निरूपण करना है।

3.7 लेखांकन मानकों के अनुसार अनुपालन में वैधानिक सम्परीक्षकों का क्या दायित्व हैं?

कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 211 (3ए) में प्रावधान है कि कम्पनी का प्रत्येक लाभ एवं हानि खाता आर्थिक चिटठा लेखांकन मानक के अनुसार होंगे।
वैधानिक सम्परीक्षकों को यह आवश्यक है, कि प्रदत्त लेखांकन मानको से भिन्न ढ़ग से उल्लेख होना चाहिए। किन्तु ऐसा उल्लेख करते समय उन्हें संबंधित पद की विशेष परिस्थितियों पर विचार करना चाहिये। इसके अतिरिक्त कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 227 (3) के अनुसार एक संम्परीक्षक को यह प्रतिवेदन देना होगा कि उसकी सम्पत्ति में, लाभ एवं हानि खाता और आर्धिक चिटठा, लेखांकन मानको, जैसा कि कम्पनी अधिनियम 211(3सी) में उल्लिखित है , के अनुसार बनाये गए हैं।

3.8 लेखांकन मानकों को निर्गमित करने की कार्य पद्धति

विस्तृत रुप में, लेखांकन मानकों को अपनाने में निम्नांकित कार्य पद्धति का अनुपालन करना होगाः

चरण –1: विस्तृत क्षेत्रों जिनमें लेखांकन मानकों के निरुपण की आवश्यकता है तथा उनके चयन की प्राथमिकता का निर्धारण।

चरण –2: सरकार, सार्वजनिक अभिकरणों, उद्योग एवं अन्य संगठनों के प्रतिनिधियों से उनके मत के निर्धारण हेतु संवाद स्थापित करना।

चरण –3: अध्ययन दलों के कार्य और प्रतिनिधियों से वार्ता के आधार पर संस्था के सदस्यों एवं सामान्य जनता की सम्मति के लिए प्रस्तावित मानक को तैयार कर उनके विचारों हेतु निर्गमित करना।

चरण –4: प्राप्त सम्मतियों पर ध्यान देने के बाद प्रस्तावित मानक के ड्राफ्ट को अन्तिम रुप प्रदान करना।

चरण –5: प्रस्तावित मानक के अन्तिम ड्राफ्ट को संस्थान की परिषद को सौंपना।

संस्था की परिषद प्रस्तावित मानक के अन्तिम ड्राफ्ट पर विचार करेगी और यदि आवश्यक हो, तो ए0एस0बी0 के साथ विचार कर उसका सुधार करेगी। तब सम्बन्धित विषय पर लेखांकन मानक को परिषद के प्राधिकार के अन्तर्गत जारी कर दिया जायेगा।

3.9 लेखांकन मानकों के निर्धारण के लाभ

1. **विचलनों में कमी** : मानक वित्तीय विवरणों को तैयार करने में प्रयुक्त लेखांकन व्यवहारों में विविध शंकाओं को एक सीमा तक कम करने अथवा पूर्णतया समाप्त करते हैं।

2. **विधि द्वारा आवश्यकता के परे प्रकटीकरण करना** : अनके ऐसे क्षेत्र हैं, जहां महत्वपूर्ण सूचना का विधिक प्रकटीकरण आवश्यक नहीं होता है। मानक विधि के द्वारा आवश्यक प्रावधानों के परे प्रकटीकरण करना आवश्यक कर सकते हैं।

3. **तुलना में सहायता** : लेखांकन मानकों के अनुप्रयोग से, सीमित मात्रा में विभिन्न क्षेत्रों में अवस्थित कम्पनियों के वित्तीय विवरणों के तुलनात्मक अध्ययन में सहायता प्राप्त होती है।

3.10 लेखांकन मानकों के निर्धारण के विपक्ष में तर्क

किन्तु लेखांकन मानकों के निर्धारण के विपक्ष में भी कुछ तर्क हैं :

1. **वैकल्पिक व्यवहारों के चयन पर प्रतिबन्ध** : कतिपय लेखांकन समस्याओं के वैकल्पिक समाधान को संस्तुत करने पर जोर देता है, अनावश्यक प्रतिबन्धात्मक हो सकता है। इस स्थिति से फर्म या तो विभिन्न लेखांकन व्यवहारों के मध्य चयन की अनुमति प्रदान करके अथवा उन निकट परिस्थितियों, जहॉ भिन्न व्यवहार उचित हो सकता है, को परिभाषित करके बचा जा सकता है।

2. **लोचहीनता** : लेखांकन मानकों को लागू करते समय लोचहीनता की भी प्रवृत्ति हो सकती है। वित्तीय लेखांकन मानक बोर्ड के शोध एवं तकनीकी क्रियाओं के निदेशक माइकल एलेक्जेंडर न कहा, ‘‘मानकों की मांग मुख्यतः नियमों की अतृत्पता से उत्पन्न होती है। तकनीकी लेखांकन मामलों में निर्णय पर विश्वसनीयता समाप्त हो गयी प्रतीत होती है।’’

3. **कानूनी प्रावधानों के ऊपर नहीं हो सकते** : लेखांकन मानक कानून के ऊपर नहीं है। मानकों को प्रचालित कानूनों की परिधि के भीतर ही निर्मित किया जाना चाहिए।

3.11 लेखांकन मानकों का विकास

1970 से पूर्व बहुत कम शिक्षा शास्त्रियों का ध्यान लेखांकन प्रक्रिया में मानक निर्धारण की ओर गया। किन्तु 1970 से आरम्भ होकर यह आवश्यक हो गया कि मानक निर्धारण प्रक्रिया है और प्रभावित पक्षों के आर्थिक हितों से जुड़ गयी। वर्तमान में, मानक निर्धारण बोर्ड या समितियॉ कई देशों में सक्रिय हैं, जिनमें अमेरिका, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैण्ड, नीदरलैण्ड, जापान और भारत सम्मिलित हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 1972 में अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानकों (आई0ए0एस0) का विकास करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक समिति (आई0ए0एस0सी0) का गठन किया गया। आई0ए0एस0सी0 में 75 देशों से अधिक के पेशेवर लेखाकर्म संस्थान (इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट ऑफ इन्डिया सहित) सम्मिलित हैं। इन तीन दशकों में आई0ए0एस0सी0 ने समस्त विश्व में फैले लेखाकर्म पेशे, वित्तीय विवरणों के निर्माता एवं उपयोगकर्ताओं और राष्ट्रीय मानक निर्धारण संस्थाओं को सम्मिलित करते हुए उचित प्रक्रिया के माध्यम से 40 आई0ए0एस0 निर्गमित किये हैं। किन्तु आई0ए0एस0 समस्त विश्व में स्वीकृत नहीं हैं। 1978 में, एक अन्य पेशेवर संस्थान, लेखाकारों का अन्तर्राष्ट्रीय फैडरेशन (आई0ए0एस0सी0) स्थापित किया गया।

3.12 भारत का लेखांकन मानक बोर्ड

लेखांकन मानक बोर्ड का गठन : भारत में वर्तमान में प्रयुक्त विविध लेखांकन नीतियों एवं व्यवहारों में एकरुपता की आवश्यकता को मान्यता प्रदान करते हुए इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इन्डिया ने अप्रैल 21, 1977 को लेखांकन मानक बोर्ड (ए0एस0सी0) का गठन किया।

लेखांकन मानक बोर्ड का क्षेत्र एवं कार्य :

लेखांकन मानक बोर्ड का मुख्य कार्य लेखांकन मानकों का निर्माण करना है ताकि भारत के संस्थानों की परिषद ऐसे मानकों को स्थापित कर सकें। मानकों का निर्माण करते समय लेखांकन मानक बोर्ड प्रचलित कानून एवं व्यावसायिक वातावरण को ध्यान में रखता है। यह संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक समिति (आई0ए0एस0सी0) का एक सदस्य है और आई0ए0एस0सी0 के उद्देश्यों को समर्थन देने पर सहमत हुआ है। मानकों के निर्माण करते समय लेखांकन मानक बोर्ड आई0ए0एस0सी0 के द्वारा निर्गमित अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानकों को भी समुचित ध्यान में रखेगा और भारत में प्रचलित शर्तों एवं व्यवहार के प्रकाश में उन्हें यथा सम्भव एकीकृत करने का प्रयास करेगा। लेखांकन मानकों को परिषद के प्राधिकार के अन्तर्गत निर्गमित किया जायेगा। ए0एस0बी0 को लेखांकन मानकों के प्रचार और सम्बन्धित पक्षों को उन्हें अपनाने एवं वित्तीय विवरणों में प्रस्तुतीकरण करने हेतु तैयार करने का दायित्व दिया गया है। ए0एस0बी0 लेखांकन मानकों के लिए मार्गदर्शक आलेख निर्गत करेगा और उनसे उत्पन्न मुद्दों पर स्पष्टीकरण प्रदान करेगा। ए0एस0बी0निश्चित समय अन्तरालों में लेखांकन मानकों का पुनरीक्षण भी करेगा।

भारत में अब तक निर्गमित लेखांकन मानक – इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इन्डिया की परिषद द्वारा अब तक 32 लेखांकन मानक निर्गमित किए गए हैं। इनमें से कुछ मानक अनिवार्य हैं। यह लेखांकन मानक इस अर्थ में अनिवार्य हैं कि यह संस्थान के सदस्यों पर बाध्यकारी है। यह मानक निम्नवत हैं :

संख्या	शीर्षक	संस्तुतनीय अथवा अनिवार्य	लेखांकन अवधि प्रारम्भ होने पर अथवा पश्चात से अनिवार्य
ए0एस0–1	लेखांकन नीतियों का प्रकटीकरण	अनिवार्य	1.4.1993
ए0एस0–2	रहतिये का मूल्यांकन (संशोधित)	''	1.4.1999
ए0एस0–3	रोकड़ प्रवाह विवरण	''	1.4.2001
ए0एस0–4	चिट्ठे के दिनांक के पश्चात की सांयोगिकताऐं और घटने वाली घटनाऐं (संशोधित)	''	1.4.1995
ए0एस0–5	पूर्व अवधि एवं असाधारण मदें तथा लेखांकन नीतियों में परिवर्तन (संशोधित)	''	1.1.1996
ए0एस0–6	मूल्य ह्रास लेखांकन (संशोधित)	''	1.4.1995
ए0एस0–7	निर्माणी ठेकों हेतु लेखांकन (संशोधित)	''	1.4.2003
ए0एस0–8	शोध एवं विकास हेतु लेखांकन	''	1.4.1993
ए0एस0–9	आय पहचान	''	1.4.1993

ए0एस0–10	स्थायी संपत्तियों हेतु लेखांकन	''	1.4.1993
ए0एस0–11	विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन के प्रभाव हेतु लेखांकन	''	1.4.2004
ए0एस0–12	सरकारी अनुदानों हेतु लेखांकन	''	1.4.1994
ए0एस0–13	विनियोगों हेतु लेखांकन	''	1.4.1995
ए0एस0–14	एकीकरण हेतु लेखांकन	''	1.4.1995
ए0एस0–15	नियोक्ताओं के वित्तीय विवरणों में सेवानिवृत्ति लाभों हेतु लेखांकन	''	1.4.1995
ए0एस0–16	उधार की लागतों हेतु लेखांकन	''	1.4.2000
ए0एस0–17	खण्ड प्रतिवेदन	''	1.4.2001
ए0एस0–18	सम्बद्ध पक्ष प्रकटीकरण	''	1.4.2001
ए0एस0–19	पट्टे	''	1.4.2001
ए0एस0–20	प्रति अंश आय	''	1.4.2001
ए0एस0–21	एकीकृत वित्तीय विवरण	''	1.4.2001
ए0एस0–22	आय पर करों हेतु लेखांकन	''	1.4.2001
ए0एस0–23	एकीकृत वित्तीय विवरणों में सम्बद्ध प्रतिष्ठानों में विनियोगों हेतु लेखांकन	''	1.4.2002
ए0एस0–24	क्रियाओं को बन्द करना	''	1.4.2004
ए0एस0–25	अन्तरिम वित्तीय प्रतिवेदन	''	1.4.2003
ए0एस0–26	अमूर्त सम्पत्तियॉ	''	1.4.2003
ए0एस0–27	संयुक्त उपक्रम में ब्याज हेतु वित्तीय प्रतिवेदन	''	1.4.2003
ए0एस0–28	क्षतिग्रस्त सम्पत्तियॉ	''	1.4.2003
ए0एस0–29	प्रावधान, सांयोगिक दायित्व एवं सांयोगिक संपत्तियॉ	''	1.4.2003
ए0एस0–30	वित्तीय उपकरण : पहचान एवं मापन	''	1.4.2011
ए0एस0–31	वित्तीय उपकरण : प्रस्तुतीकरण	''	1.4.2011
ए0एस0–32	वित्तीय उपकरण : प्रकटीकरण	''	1.4.2011

3.13 लेखांकन मानकों का अनुपालन

उस अवधि में जिसमें लेखांकन मानक संस्तुति किए जाने की प्रकृति के हैं, संस्थान के सदस्यों को उनके कर्तव्यों के पालन करते समय यह परीक्षण करना चाहिए कि मानकों का अनुपालन किया गया है अथवा नहीं। यदि उनका पालन नहीं किया गया है तब सदस्यों को प्रकरण की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह देखना होगा कि उनकी अंकेक्षण रिपोर्ट में प्रकटीकरण आवश्यक है या नहीं।

एक बार मानकों के अनिवार्य हो जाने पर, संस्थान के सदस्यों का यह कर्तव्य होगा कि अपने कर्तव्यों का पालन करते समय यह परीक्षण करें कि लेखांकन मानक अंकेक्षण से आच्छादित वित्तीय विवरणों के प्रस्तुतीकरण में अनुपालन किए गए हैं अथवा नहीं। लेखांकन मानकों से किसी विचलन की दशा में, उनका यह कर्तव्य होगा

कि अपनी अंकेक्षण रिपोर्ट में उनका पर्याप्त प्रकटीकरण करें, ताकि वित्तीय विवरणों के प्रयोगकर्ताओं को इन विचलनों की जानकारी हो सके।

3.14 सारांश

लेखांकन मानक लेखांकन लेन–देनों एवं घटनाओं के विभिन्न पहलुओं के मापन व्यवहार एवं प्रकटीकरण के संबंध में मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ लेखांकन संस्थाओं के द्वारा निर्गत किये गये नीति अभिलेख (उत्तम लेखांकन व्यवहार के अधिकृत वक्तव्य) हैं। लेखांकन मापन के नियमों और आधारों को सुझाने के क्रम में अनेक लेखांकन मानक निर्धारक संस्थाओं को विकसित एवं विकासशील देशों में स्थापित किया गया। लेखांकन मानकों का निर्धारण एक सामाजिक निर्णय है। मानक व्यवहार पर प्रतिबंध लगाते हैं और इस कारण प्रभावित पक्षों के द्वारा उनको स्वीकृत किया जाना आवश्यक है। लेखांकन मानकों का उद्देश्य विभिन्न लेखांकन पहलुओं के व्यवहार में विचलनों को समाप्त करना तथा प्रस्तुतीकरण में प्रमापीकरण हैं। उनका प्रयोजन जाने वाले वित्तीय विवरणों में अपनायी गयी सामन्जस्य एवं प्रस्तुत किए विविध लेखांकन नीतियों में संगति लाना हैं। कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 211 (3ए) में प्रावधान है कि कम्पनी का प्रत्येक लाभ एवं हानि खाता आर्थिक चिटठा लेखांकन मानक के अनुसार होंगे। लेखांकन मानकों के निर्धारण के अनेक लाभ हैं किन्तु लेखांकन मानकों के निर्धारण के विपक्ष में भी कुछ तर्क हैं। भारत में लेखांकन मानक बोर्ड का मुख्य कार्य लेखांकन मानकों का निर्माण करना है ताकि भारत के संस्थानों की परिषद ऐसे मानकों को स्थापित कर सकें। मानकों का निर्माण करते समय लेखांकन मानक बोर्ड प्रचलित कानून एवं व्यावसायिक वातावरण को ध्यान में रखता है। भारत में अब तक 32 लेखांकन मानक निर्गमित किए गए हैं। इनमें से कुछ मानक अनिवार्य हैं।

3.15 शब्दावली

- **लेखांकन मानक** – मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ लेखांकन संस्थाओं के द्वारा निर्गत किये गये उत्तम लेखांकन व्यवहार के अधिकृत वक्तव्य या नीति अभिलेख हैं।

3.16 बोध परक प्रश्न

सत्य अथवा असत्य लिखिए।

(अ) सार्वभौमिक रूप में स्वीकृत मानक कोई नहीं है।

(ब) लेखांकन मानक बोर्ड (ए0एस0बी0) का गठन 22 अप्रैल,1997 को किया गया है।

(स) लेखांकन मानक कानून के ऊपर नहीं है।

(द) मानक विधि के द्वारा आवश्यक प्रावधानों के परे प्रकटीकरण करना आवश्यक नहीं कर सकते हैं।

3.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) **सत्य** (ब) **असत्य** (स) **सत्य** (द) **असत्य**

3.18 स्वपरख प्रश्न

वृहत उत्तरीय प्रश्न–

1. लेखांकन मानक क्या है ? लेखांकन मानकों के उद्देश्य एवं महत्व की व्याख्या कीजिए।
2. लेखांकन मानकों के निर्धारण के सम्बन्ध में विभिन्न मुद्दों का वर्णन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. ए0एस0 का निर्माण कौन करता है ?
2. लेखांकन मानकों के निर्धारण के लाभ क्या है ?
3. लेखांकन मानकों के उद्देश्य क्या है ?

3.19 संदर्भ पुस्तकें

1. एस.एन.माहेश्वरी ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. आर.एल.गुप्ता , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. शुक्ला. एवं ग्रेवाल, एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. अग्रवाल एवं जैन, एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. एस.एन.माहेश्वरी ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 4 सिद्धान्त निर्माण के विभिन्न दृष्टिकोंण

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना
4.2 सिद्धान्त निर्माण के दृष्टिकोंण
4.3 लेखांकन सिद्धान्त के कुछ अन्य दृष्टिकोंण
4.4 सारांश
4.5 शब्दावली
4.6 बोध प्रश्न
4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.8 स्वपरख प्रश्न
4.9 संदर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि –

- लेखांकन सिद्धान्त के आगमनात्मक एवं निगमनात्मक दृष्टिकोंण में अन्तर कर सकें।
- लेखांकन सिद्धान्त के अन्य विभिन्न दृष्टिकोंणों का विवेचन कर सकें।

4.1 प्रस्तावना

लेखांकन एक सम्पूर्ण प्रणाली है, जिसमें संगठन के विषय में प्रत्येक आर्थिक और वित्तीय सूचनाओं का मापन और रिकॉर्डिंग से संबंधित हर गतिविधि शामिल है, जिसे आम जनता द्वारा व्यापार का विश्लेषण करने और निर्णय लेने के लिए उपयोग किया जाता है। जब लेखांकन सिद्धांतों की बात आती है तो सबसे महत्वपूर्ण कदम उनका निर्माण करना होता है। ऐसे कई दृष्टिकोण हैं जो इन सिद्धांतों के अध्ययन और गठन में हिस्सा बनते हैं। सैद्धांतिक दृष्टिकोण में विभिन्न सिद्धांतों को विकसित करने में विभिन्न सिद्धांतों का अंगीकरण व गुणात्मक विश्लेषण शामिल हैं। नीति निर्माताओं द्वारा अलग–अलग लेखांकन सिद्धांतों के विकास के लिए विभिन्न सिद्धांतों और सैद्धांतिक संदर्भों का उपयोग किया जाता हैं। इस प्रकार से लेखांकन सिद्धांतों के निर्माण के सैद्धांतिक दृष्टिकोण में कई अलग–अलग दृष्टिकोण और संदर्भ शामिल हैं। सैद्धांतिक दृष्टिकोण के अलावा, नीतिकार विभिन्न लेखांकन सिद्धांतों के निर्माण और विकास के लिए कई अलग–अलग गैर–सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का उपयोग भी करते हैं। इस दृष्टिकोण में विभिन्न गैर–सैद्धांतिक संदर्भ शामिल हैं जिसके अनुसार नए और अलग–अलग लेखांकन सिद्धांत विकसित किए जाते हैं और फिर लेखाकार द्वारा कार्यान्वित किए जाते हैं

4.2 सिद्धान्त निर्माण के दृष्टिकोंण

सिद्धान्त निर्माण में मुख्य रूप में दो दृष्टिकोंण हैं जो निम्नवत हैं ।

1. निगमनात्मक दृष्टिकोंण
2- आगमनात्मक दृष्टिकोंण

निगमनात्मक दृष्टिकोंण

निगमनात्मक दृष्टिकोंण मूलभूत लेखांकन उद्‌देश्य एवं मान्यता से आरम्भ होता है और तार्किक साधनों द्वारा लेखांकन सिद्धान्त की व्युत्पत्ति हेतु आगे बढ़ता है, जो लेखांकन तकनीकों के विकास हेतु मागदर्शन एवं आधार प्रदान करता है। निगमनात्मक दृष्टिकोंण में निम्नवत प्रक्रिया सम्मिलित होती हैः

(अ) वित्तीय प्रतिवेदन के उद्‌देश्यों का निर्धारण

(ब) लेखांकन की मान्यताओं का चयन

(स) परिभाषाओं के समूह का विकास

(द) लेखांकन सिद्धान्तों और नीति के सामान्य कथनों का निरूपण

(य) लेखांकन सिद्धान्तों को विशिष्ट स्थितियों में लागू करना और

(र) कार्य पद्धतियों, विधियों एवं नियमों की स्थापना।

आगमनात्मक दृष्टिकोंण

लेखांकन सिद्धान्त का आगमनात्मक दृष्टिकोंण पहले लेखांकन व्यवहारों का अवलोकन करता है और तत्पश्चात इन अवलोकनों से सिद्धान्तों एवं कार्य पद्धतियों की व्युत्पत्ति करता है। यह दृष्टिकोंण व्यावसायिक उपक्रमों की वित्तीय सूचनाओं के व्यापक अवलोकन एवं मापन से सामान्यीकृत निष्कर्षों और लेखांकन सिद्धान्तों के निरूपण पर जोर देता है। इस दृष्टिकोंण में निम्नवत प्रक्रिया सम्मिलित होती हैः

(अ) अवलोकन करना और समस्त अवलोकनों का अभिलेखन करना

(ब) इन अवलोकनों से बार–बार होने वाले अर्न्तसंबंधों, समानताओं एवं असमानताओं का निर्धारण करने के लिए इनका विश्लेषण और वर्गीकरण करना।

(स) बार–बार होने वाले अर्न्तसंबंधों वाले अभिलिखित अवलोकनों से सामान्यीकरणों एवं लेखांकन सिद्धान्तों की व्युत्पत्ति एवं निरूपण

(द) सामान्यीकरणों और सिद्धान्तों का परीक्षण।

4.3 लेखांकन सिद्धान्त के कुछ अन्य दृष्टिकोंण

घटना दृष्टिकोंण

लेखांकन सिद्धान्त में घटना दृष्टिकोंण यह व्यक्त करता है कि लेखांकन का मूल उद्‌देश्य प्रासंगिक आर्थिक घटनाओं के विषय में सूचना प्रदान करना है जो अनेक प्रकार के संभावित निर्णय माडलों में उपयोगी हो सके। घटना दृष्टिकोंण प्रस्तुत वित्तीय प्रतिवेदनों में लेखांकन आंकड़ों के व्यापक विस्तार का सुझाव देता है।

मूल्य दृष्टिकोंण

यह लेखांकन में एक परम्परागत दृष्टिकोंण है, जिसकी यह मान्यता है कि उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताऐं ज्ञात एवं पर्याप्त रूप में भली–भांति निर्दिष्ट होतीं हैं ताकि लेखांकन सिद्धान्त को निगमनात्मक रूप में निरूपित किया जा सके एवं उपयोगकर्ताओं और उपयोगी निर्णयन के लिए अधिकतम आगत मूल्य उत्पन्न किये जा सकें।

पूर्वानुमान दृष्टिकोंण

लेखांकन सिद्धान्त में पूर्वानुमान दृष्टिकोंण विभिन्न लेखांकन विकल्पों और मापन विधियों के निर्धारण का कार्य करता है। दृष्टिकोंण यह बताता है कि एक विशेष लेखांकन विधि जिसकी पूर्वानुमान की क्षमता हो, को अपनाना चाहिए अर्थात जो उन घटनाओं का पूर्वानुमान लगा सके जो निर्णयन में उपयोगी हों और जिनमें उपयोगकर्ताओं की रूचि हो।

यथार्थवादी दृष्टिकोंण

यथार्थवादी दृष्टिकोंण का उद्‌देश्य ऐसे सिद्धान्त का निर्माण करना है जिसमें वास्तविक विश्व के व्यवहारों की पुष्टि की विशेषता हो और जो व्यावहारिक समाधान प्रदान करने में उपयोगी भी हो।

इस दृष्टिकोंण के अनुसार लेखांकन तकनीकों और सिद्धान्तों का चयन लेखांकन सूचना के उपयोगकर्ताओं के लिए उनकी उपयोगिता एवं निर्णयन प्रक्रिया में उनकी प्रासंगिकता के कारण करना चाहिए।

निरंकुशवादी दृष्टिकोंण

लेखांकन सिद्धान्त के निरूपण का निरंकुशवादी दृष्टिकोंण जो मुख्य रूप से पेशेवर संगठनों के द्वारा प्रयोग में लाया जाता है, में लेखांकन व्यवहारों के नियमन हेतु घोषणाऐं निर्गत करना सम्मिलित है।

नैतिक दृष्टिकोंण

लेखांकन सिद्धान्त का नैतिक दृष्टिकोंण न्याय, सत्य एवं निष्पक्षता के सिद्धान्तों पर जोर देता है। न्याय ,सत्य एवं निष्पक्षता यह व्यक्त करती है कि लेखांकन प्रतिवेदन एवं विवरण अनुचित प्रभाव अथवा पक्षपात से प्रभावित नहीं हैं।

नैतिक दृष्टिकोंण लेखांकन सिद्धान्तों के विकास या वर्तमान में स्वीकृत सिद्धान्तों के मूल्यांकन के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान करने में असफल रहता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोंण

लेखांकन सिद्धान्त के निरूपण का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोंण लेखांकन तकनीकों के सामाजिक प्रभाव पर जोर देता है। यह एक नैतिक दृष्टिकोंण है जो निष्पक्षता अर्थात सामाजिक कल्याण के व्यापक सिद्धान्तों पर केन्द्रित रहता है। इस दृष्टिकोंण के अनुसार एक विशेष लेखांकन सिद्धान्त या तकनीक समाज के सभी वर्गों पर इसके प्रतिवेदन प्रभावों के आधार पर स्वीकृति के लिए मूल्यांकित की जाएगी।

आर्थिक दृष्टिकोंण

लेखांकन सिद्धान्त के निरूपण का आर्थिक दृष्टिकोंण समष्टि आर्थिक संकेतकों, जो विभिन्न लेखांकन तकनीकों के अपनाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं, के व्यवहार के नियन्त्रण पर जोर देता है। इस दृष्टिकोंण के अनुसार, विभिन्न लेखांकन तकनीकों का चयन उनके राष्ट्रीय आर्थिक कल्याण पर प्रभाव पर निर्भर करता है।

मिश्रित दृष्टिकोंण

मिश्रित दृष्टिकोंण मूलतः व्यक्तिगत लेखकों एवं शोधकर्ताओं, पेशेवर संगठनों, सरकारी प्राधिकारियों के द्वारा लेखांकन सिद्धान्तों और उनमें निहित अवधारणाओं की

स्थापना में किए गए अनेकों प्रयत्नों का परिणाम है। अतः मिश्रित दृष्टिकोंण अनेकों दृष्टिकोंणों का सामंजस्य है।

4.4 सारांश

लेखांकन सिद्धान्त निर्माण में मुख्य रूप में दो दृष्टिकोंण निगमनात्मक एवं आगमनात्मक दृष्टिकोंण हैं। निगमनात्मक दृष्टिकोंण मूलभूत लेखांकन उद्देश्य एवं मान्यता से आरम्भ होता है और तार्किक साधनों द्वारा लेखांकन सिद्धान्त की व्युत्पत्ति हेतु आगे बढ़ता है, जो लेखांकन तकनीकों के विकास हेतु मागदर्शन एवं आधार प्रदान करता है। आगमनात्मक दृष्टिकोंण पहले लेखांकन व्यवहारों का अवलोकन करता है और तत्पश्चात इन अवलोकनों से सिद्धान्तों एवं कार्य पद्धतियों की व्युत्पत्ति करता है। इसके अतिरिक्त लेखांकन सिद्धान्त निर्माण के कुछ अन्य दृष्टिकोंण भी हैं।

4.5 शब्दावली

- **निगमनात्मक दृष्टिकोंण** – मूलभूत लेखांकन उद्देश्य एवं मान्यता से आरम्भ होता है और तार्किक साधनों द्वारा लेखांकन सिद्धान्त की व्युत्पत्ति हेतु आगे बढ़ता है।
- **आगमनात्मक दृष्टिकोंण**– पहले लेखांकन व्यवहारों का अवलोकन करता है और तत्पश्चात इन अवलोकनों से सिद्धान्तों एवं कार्य पद्धतियों की व्युत्पत्ति करता है।

4.6 बोध प्रश्न

सत्य अथवा असत्य लिखिए।

(अ) निगमनात्मक दृष्टिकोंण मूलभूत लेखांकन उद्देश्य एवं मान्यता से आरम्भ होता है ।

(ब) लेखांकन सिद्धान्त के निरूपण का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोंण एक नैतिक दृष्टिकोंण है।

(स) आगमनात्मक दृष्टिकोंण पहले लेखांकन व्यवहारों का अवलोकन करता है और तत्पश्चात सिद्धान्तों की व्युत्पत्ति करता है।

(द) लेखांकन सिद्धान्त का मिश्रित दृष्टिकोंण अनेकों दृष्टिकोंणों का सामंजस्य है।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) **सत्य** (ब) **सत्य** (स) **सत्य** (द) **सत्य**

4.8 स्वपरख प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सिद्धान्त निर्माण के विभिन्न दृष्टिकोंणों को समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निगमनात्मक दृष्टिकोंण
2. आगमनात्मक दृष्टिकोंण
3. मिश्रित दृष्टिकोंण
4. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोंण

5. यथार्थवादी दृष्टिकोंण
6. पूर्वानुमान दृष्टिकोंण
7. घटना दृष्टिकोंण

4.9 संदर्भ पुस्तकें

1. एस.एन.माहेश्वरी, एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. आर.एल.गुप्ता, एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. शुक्ला. एवं ग्रेवाल, एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. अग्रवाल एवं जैन, एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. एस.एन.माहेश्वरी, कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 5 लेखांकन एवं आय और मूल्य की आर्थिक अवधारणाऐं

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 आय की अवधारणा
5.3 लेखांकन अवधारणाऐं एवं आय मापन
5.4 समाप्त लागत एवं आय मापन
5.5 वसूली अवधारणा एवं आय मापन
5.6 पूँजी एवं आय की लेखाकार एवं अर्थशास्त्री की अवधारणा
5.7 सारांश
5.8 शब्दावली
5.9 बोध प्रश्न
5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.11 स्वपरख प्रश्न
5.12 संदर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि –

- आय की अवधारणा की व्याख्या कर सकें।
- विभिन्न लेखांकन अवधारणाओं का व्यवसाय की आय के मापन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन कर सकें।
- आय मापन की समाप्त लागत की भूमिका का विवेचन कर सकें।
- आय को प्राप्त मानने की स्थिति में समय के पुर्नसंगठन के सम्बन्ध में विभिन्न विकल्पों की पहचान कर सकें।
- लेखाकार एवं अर्थशास्त्री की पूँजी एवं आय की अवधारणाओं में अन्तर कर सकें।

5.1 प्रस्तावना

आय विवरण एक विशिष्ट समयावधि में व्यवसाय की आय का मापन करता है। यह आर्थिक चिट्ठे की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि व्यावसायिक उपक्रम के संचालन का मुख्य उद्देश्य लाभ का अधिकतमीकरण है और यह मुख्य रुप से वर्ष प्रतिवर्ष की आय पर निर्भर करता है। इस कारण से प्रबन्ध, कर्मचारी, अंशधारी, सरकार इत्यादि सभी आय विवरण को बनाने एवं इसके प्रस्तुतीकरण में रुचि रखते हैं। अतः शब्द आय के अर्थ एवं इसके निर्धारण की समस्याओं का सही अर्थ जानना उपयोगी होगा।

5.2 आय की अवधारणा

सामान्य अर्थ में 'आय' शब्द का अर्थ वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के विनिमय से प्राप्त पुरस्कार या भुगतान से लगाया जाता है। उदाहरणार्थ, एक क्लर्क के द्वारा प्राप्त वेतन उसकी आय है क्योंकि यह उसकी सेवाओं के लिए प्राप्त पुरस्कार है।

इसी प्रकार सम्पत्ति के स्वामी द्वारा प्राप्त किराया उसकी आय है क्योंकि यह सम्पत्ति के माध्यम से प्रदत्त सेवाओं का पुरस्कार है। यदि एक दस्तकार स्वयं द्वारा निर्मित कुछ वस्तुओं की बिक्री से कुछ मुद्रा कमाता है, तो इस प्रकार कमायी गयी मुद्रा उसकी आय मानी जायेगी। आय कई प्रकार की हो सकती है जैसे व्यक्तिगत आय, राष्ट्रीय आय, व्यावसायिक आय, सकल आय, शुद्ध आय इत्यादि। इस प्रकार 'आय' शब्द अपने आप में कोई सही अर्थ नहीं दे सकता जब तक इसे किसी विशेषण के साथ प्रयोग न किया जाय।

लेखांकन में, हमारा सम्बन्ध मुख्यतः व्यवसाय की आय से होता है, जो व्यवसाय के लाभ शब्द का समानार्थी है। इसे एक निश्चित अवधि में व्यवसाय के द्वारा व्ययों के ऊपर आय के आधिक्य के रुप में परिभाषित किया जा सकता है। स्मिथ के अनुसार, ''एक समयावधि के लिए शुद्ध आय एक विशिष्ट लेखांकन इकाई के द्वारा अवधि में प्राप्त आय का उसी अवधि में समाप्त लागत (हानियों सहित) पर आधिक्य है।

आय की सर्वाधिक स्वीकृत एवं प्रामाणिक परिभाषा अमेरिकन एकाउन्टिंग एसोसिएसन द्वारा दी गयी है। इसे निम्नवत उद्धृत किया जा सकता हैः ''एक उपक्रम की प्राप्त शुद्ध आय इसकी प्रभावशीलता को एक संचालित इकाई के रुप में मापन करती है और यह (अ) सम्बंधित समाप्त लागत की तुलना में आय का आधिक्य या कमी और (ब) उपक्रम को विक्रय, विनिमय या सम्पत्तियों के अन्य परिवर्तन से हुई अन्य आय अथवा हानियों, से उत्पन्न शुद्ध सम्पत्तियों में परिवर्तन है।''

इसके अतिरिक्त अमेरिकन एकाउन्टिंग एसोसएसन के अनुसार व्यवसाय आय शब्द में प्राप्त शुद्ध आय और न कि मात्र आय सम्मिलित होती है। इसका अर्थ है कि आय को व्यवसाय आय तब ही माना जायेगा जबकि यह वास्तव में प्राप्त कर ली गयी है। राष्ट्रीय आय जैसे फर्म की सम्पत्तियों के बाजार मूल्य में वृद्धि को तब तक व्यावसाय आय नहीं माना जा सकता है जब तक सम्पत्तियों का वास्तव में व्यवस्थापन न कर दिया गया हों उपरोक्त परिभाषा के अनुसार आय की गणना में, इस प्रकार, समाप्त लागत या व्यय का आय के साथ मिलान सम्मिलित होता है। किन्तु, व्यवसाय आय के मापन में लेखाकार को व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह कठिनाइयां दो कारणों से उत्पन्न होती हैं :

(i) लेखांकन आय का मापन अनेक अवधारणाओं एवं परम्पराओं से संबंधित है।

(ii) समाप्त लागत का निर्धारण भारी संख्या वाले व्यावसायिक लेन–देनों की जटिल श्रृंखला के कारण एक कठिन अभ्यास हो जाता हैं।

5.3 लेखांकन अवधारणाऐं और आय मापन

लेखांकन आय का मापन अनेक लेखांकन अवधारणाओं एवं परम्पराओं से सम्बन्धित हैं। इन अवधारणाओं एवं परंपराओं का लेखांकन आय के मापन पर प्रभाव निम्नवत् दिया गया हैं :

1. रूढिवादिता की परम्परा

रूढिवादिता की परम्परा के अनुसार, लेखांकार व्यवसाय की आय का निर्धारण करते समय हमेशा सुरक्षित चलने की नीति अपनाते हैं। रूढिवादिता की परम्परा इस प्रकार यह सुनिश्चित करना चाहती हैं कि प्रतिवेदित लाभ अधिमूल्यित नहीं किया गया हैं। किन्तु यह नहीं कहा जाता हैं कि यह सिद्धान्त यह सुनिश्चित करेगा कि प्रतिवेदित लाभ अवमूल्यित नहीं किया गया हैं। व्यवसाय आय का अत्यधिक ह्रास, संदिग्ध ऋणों के लिए अत्यधिक प्रावधान आदि के द्वारा अवमूल्यन किया जा सकता हैं। इस प्रकार वित्तीय विवरणों के द्वारा प्रकट आय व्यवसाय की वास्तविक आय नहीं हो सकती हैं।

2. नियमितता अथवा यथार्थता

इस अवधारणा के अनुसार एक व्यावसायिक उपक्रम को इसकी सम्पत्तियों, दायित्वों, आय और व्ययों के व्यवहार में अपनायी जाने वाले लेखांकन व्यवहारों में संगत अथवा नियमित होना चाहिए। कभी–कभी लेखाकर के लिए नियमितता की अवधारणा का कठोरता से पालन कठिन हो जाता हैं। कानूनी आवश्यकताओं अथवा लेखांकन विधियों में परिवर्तन के कारण विभिन्न मदों के व्यवहार में भी परिवर्तन की आवश्यकता होती हैं। उदाहरणार्थ, एक उपक्रम रहतिये के मूल्यांकन की विधि अथवा वर्ष प्रतिवर्ष ह्रास लगाने की विधि में परिवर्तन कर सकता हैं। ऐसा परिवर्तन लेखांकन आय के निर्धारण में वर्तमान प्रवृत्ति की तुलना में भिन्न प्रवृत्ति को जन्म देगा। इस प्रकार व्यवसाय आय का मापन व्यवसाय के आय–विवरण में निहित विभिन्न मदों के व्यवहार में अपनाये गये आधार पर भी महत्वपूर्ण रूप में निर्भर करता हैं। किन्तु, अधिकाशं देशों के लेखांकन पेशे एवं कम्पनी कानूनों में यह आवश्यक किया गया हैं कि वित्तीय विवरणों को उनमें प्रदर्शित आकडों के विगत अवधि के आकडों से संगत होने के आधार पर बनाया जाना चाहिए। लेखांकन व्यवहार में परिवर्तन करने की स्थिति में लाभ और हानि में परिणामी परिवर्तनों को पृथक से प्रकट किया जाना चाहिए।

3. लेखांकन अवधि अवधारणा

वास्तव में, एक व्यवसायिक उपक्रम की आय को उचित रूप में उसके जीवन के अन्त में ही अर्थात जब व्यवसाय को अन्तिम रूप में बन्द कर दिया जाए, तब ही निर्धारित किया जा सकता हैं। किन्तु व्यवसाय के द्वारा की गयी प्रगति के विषय में एक अनुमान लेने तथा समय से सुधारात्मक कदम उठाने के लिए व्यवसाय आय का निर्धारण एक उचित अवधि की समाप्ति के बाद किया जाता हैं। इस समयावधि को 'लेखांकन अवधि' कहा जाता हैं। आय विवरण के द्वारा प्रकट की गयी आय लेखांकन अवधि के अन्तर्गत अर्जित आय हैं। किन्तु यह केवल एक अन्तरिम रिर्पोट हैं। इस प्रकार, लेखांकन आय का मापन भी लेखांकन अवधि अवधारणा से सम्बन्धित हैं।

4. उपार्जन अवधारणा

लेखांकन आय का मापन उपार्जन अवधारणा से भी सम्बन्धित हैं। लेखांकन अवधि के अन्त में जब अन्तिम खाते बनाए जाते हैं, तब बहुत सी व्यापारिक क्रियाऐं प्रगति के विभिन्न चरणों में हो सकती हैं। कुछ माल बिना विक्रय के रह सकता है, कुछ कार्य अब भी चालू हो सकता हैं, देनदारों से प्राप्य मुद्रा वसूल होनी रह सकती हैं इत्यादि। लेखांकन में आय को सामान्यतया अर्जित मान लिया जाता हैं जब वस्तु एवं

सेवाओं को ग्राहकों को दे दिया जाता हैं और तब नहीं जब उनसे नकद या अन्य मूल्यवान प्रतिफल प्राप्त हो जाता हैं। यह संभव हो सकता हैं कि कुछ मदों जिनके लिए आय को अर्जित मान लिए गया हो, से भुगतान प्राप्त न होने के कारण वास्तव में आय प्राप्त न हो । इस प्रकार आय विवरण द्वारा प्रकट आय व्यवासाय की वास्तविक आय नहीं हो सकती हैं।

5. चालू व्यवसाय की अवधारणा

व्यवसाय आय का मापन चालू व्यवसाय की अवधारणा से भी संबंधित हैं। इस अवधारणा के अनुसार यह मान लिया जाता हैं कि व्यवसाय पर्याप्त लम्बी अवधि तक चलता रहेगा। इस कारण से, लेखाकार स्थायी सम्पत्तियों पर ह्मस बाजार मूल्य के आधार पर नहीं बल्कि मौलिक लागत के आधार पर लगाता हैं। स्फीतिक अर्थव्यवस्था की दशा में, स्थायी सम्पत्तियों पर मौलिक लागत पर ह्मस लगाने और आय को चालू बाजार मूल्यों के आधार पर लेने से व्यवसाय आय का महत्वपूर्ण रूप में अधिमूल्यन हो सकता हैं।

6. पृथक इकाई की अवधारणा

इस अवधारण के अनुसार व्यवसाय एवं व्यापारी को दो भिन्न व्यक्ति माना जाता हैं। इस प्रकार व्यवसाय की आय नहीं माना जा सकता हैं। उदाहरणार्थ पूॅजी पर ब्याज व्यापारी की दृष्टि से आय हैं किन्तु व्यवसाय की दृष्टि से यह एक व्यय हैं। अतः 'व्यवसाय आय' को 'व्यक्तिगत आय' से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। यह आवश्यक है कि अन्ततोगत्वा, व्यवसाय आय भी व्यापारी की व्यक्तिगत आय का एक भाग बन जाती हैं।

5.4 समाप्त लागत एवं आय मापन

अमेरिकन एकाउन्टिंग एसोसिएसन के द्वारा दी गई व्यवसाय आय की परिभाषा के अनुसार व्यवसाय आय की तुलना सम्बन्धित समाप्त लागत (या व्यय) से की जानी चाहिए। दूसरे शब्दों में, समाप्त लागत या व्ययों की पहचान आय के एक अथवा अधिक तत्वों से किसी न किसी रूप में की जानी चाहिए। वास्तविक जगत की स्थितियों में यह अत्यधिक कठिन हैं और बहुत सी दशाओं में इस प्रकार की पहचान लगभग असंभव हैं। यह व्यवसाय में लेन–देनों के विभिन्न प्रकारों और उसकी संख्या की श्रृखंला के कारण हैं। इसके अतिरिक्त यह सदैव आवश्यक नहीं हैं कि एक एकाउन्टिंग अवधि के अन्तर्गत आय केवल उस लेखांकन अवधि में हुई लागत अथवा किए गए व्ययों के कारण अर्जित हुई। यह विगत कुछ वर्षो के अन्तर्गत किए गए प्रयासों अथवा किए गए व्ययों का परिणाम हो सकती हैं। इस प्रकार, एक लेखांकन अवधि के अन्तर्गत किए गए प्रयास या व्यय आने वाले वर्षों में परिणाम दे सकता हैं। उदाहरणार्थ, एक निश्चित समय में क्रय किए गए माल अथवा निर्मित माल को उस वर्ष विक्रय नहीं किया जा सकता हैं। उसे आगामी वर्ष में उस वर्ष में उस वर्ष के अन्तगर्त निर्मित अथवा क्रय किए माल के साथ अंशतः या पूर्णतः विक्रय किया जा सकता हैं। इसी प्रकार एक विशिष्ट में किए गए विज्ञापन व्यय व्यवसाय को आगामी कुछ वर्षो में ही लाभ प्रदान कर सकते हैं। इन स्थितियों यह निश्चित करना कि

कितना व्यय उस लेखांकन वर्षों में अर्जित की गयी आय के लिए किया गया हैं। यह लगभग असम्भव कार्य हैं ।

लेखाकार द्वारा वास्तविक व्यवसाय आय के निर्धारण में सामना की जाने वाली समस्याओं का बेहतर अनुमान प्रदान करने के लिए समस्याओं का बेहतर अनुमान प्रदान करने के लिए समस्या की, व्यवसाय आय के निर्धारण की प्रक्रिया में निहित विभिन्न प्रकार की लागतों के आधार पर व्याख्या की जा सकती हैं। लागत विश्लेषण के उद्देश्य से, व्यावसायिक उपक्रमों के दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता हैः

(i) व्यापारिक उपक्रम

(ii) निर्माणी उपक्रम

व्यापारिक उपक्रम उपक्रम वाह्रय स्त्रोतों से माल क्रय करते हैं और उन्हें लाभदायक कीमतों पर बेचते हैं। दूसरी ओर निर्माणी उपक्रम कच्चा माल क्रय करते हैं और उन्हें निर्मित माल में विभिन्न निर्माणी क्रियाओं के माध्यम से रूपान्तरित कर देते हैं। इन उपक्रमों में मूलभूत अन्तर उनके द्वारा रखे गये रहतिये के प्रकार और लगायी गयी लागत में निहित हैं।

व्यापारिक उपक्रमों की दशा में रहतियं में मुख्यतः निर्मित माल सम्मिलित होता है जबकि निर्माणी उपक्रमों की दशा में रहतियें में कच्चा माल, चालू कार्य अथवा निर्मित माल सम्मिलित हो सकते हैं।

आय निर्धारण के उद्देश्य से, व्यापारिक उपक्रमों में, बेचे गये माल की लागत जो प्रशासनिक, विक्रय और वितरण व्ययों के साथ प्रासंगिक हो, की उस अवधि की आय के साथ तुलना की जानी चाहिए। जबकि निर्माणी उपक्रमों की दशा में निर्मित एवं विक्रय किये गये माल की लागत की आय के साथ तुलना की जानी चाहिए। उस प्रकार दोनों ही में बेचे गए माल की लागत का निर्धारण करना होता हैं। व्यापारिक उपक्रमों की दशा में, बेचे गये माल की लागत माल के क्रय की कीमत पर निर्भर करती हैं जबकि निर्माणी उपक्रमों में यह निर्माण लागत पर निर्भर करती हैं। दोनों ही दशाओं में, एक निश्चित अवधि में आय का निर्धारण करने के लिए व्यवसाय के संचालनात्मक व्ययों को भी ध्यान में रखना होता है। इन लागतों के अतिरिक्त, कई असाधारण व्यय या हानियॉ जैसे–प्राकृतिक आपदाओं के कारण हानियॉ, विकास व्यय आदि भी होता हैं। जिन्हें भी आय के निर्धारण के उद्देश्य से ध्यान में रखा जाना चाहिए। इस प्रकार व्यवसाय आय के निर्धारण के लिए समाप्त लागत अथवा व्यय का निर्धारण भी आवश्यक है जिसमें निम्नांकित प्रकार की लागतें सम्मिलित होती हैः–

(1) बेचे गए माल की लागत जिसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों लागतें सम्मिलित हों।

(2) रहतिये की लागत

(3) अदृश्य लागत

(4) निहित लागत

(5) असाधारण लागत आदि।

इन लागतों में से प्रत्येक का निर्धारण एक जटिल एवं कठिन कार्य है।इन लागतों के निर्धारण में लेखांकार के समक्ष आने वाली समस्याऐं निम्नवत वार्णित की जा रही हैं:

(1) विक्रय अथवा क्रय किए गए माल की लागत

निर्माणी एवं व्यापारिक दोनों ही उपक्रमों की दशा में आय का निर्धारण विक्रय किए गए माल की लागत से संबंधित है। व्यापारिक उपक्रमों की दशा में, यह कार्य अपेक्षाकृत सरल है क्योकि विक्रय किए गए माल की लागत को माल की क्रय लागत को ध्यान में रखकर आसानी से ज्ञात किया जा सकता है। किन्तु निर्माणी उपक्रमों की दशा में, इसे निर्माण लागत को ध्यान में रखकर ज्ञात किया जाता है। निर्माण लागतें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों होती हैं। प्रत्यक्ष लागत वह होती हैं जिन्हें विशिष्ट उत्पाद, प्रकार्य अथवा निर्माण प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप में, सुविधाजनक ढ़ग से और पूर्णतया पहचाना जा सकता है जैसे एक उत्पादन को निर्मित करने में प्रयुक्त कच्चे माल की लागत, कारखाना श्रम की लागत आदि। अप्रत्यक्ष निर्माण लागतें वह होती हैं जिन्हें विशिष्ट प्रकार्य उत्पाद या प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप में नहीं पहचाना जा सकता है जैसेः—कारखाना प्रबन्धक को भुगतान किया गया वेतन, किराया, दरें, बिजली, कारखाना मशीनरी का ह्मस आदि। इन लागतों को विभिन्न उत्पादों में कुछ उचित आधार पर अभिभाजित करना होता है जैसेः— कारखाना प्रबंधक को भुगतान किया गया वेतन प्रत्येक उत्पाद हेतु प्रत्यक्ष मजदूरी के आधार पर विभिन्न उत्पादों में विभाजित किया जा सकता है। इसी प्रकार कारखाने के लिए भुगतान किया गया किराया विभिन्न उत्पादों में प्रत्येक उत्पादन विभाग के द्वारा आच्छादित विभागीय क्षे़त्र के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। अप्रत्यक्ष लागतों का इस प्रकार किया गया अभिभाजन पूर्णतः सही नहीं हो सकता है, जिससे उत्पाद लागत की गणना की शुद्धता प्रभावित होती हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ लागतों जैसेः—प्लान्ट एवं मशीनरी पर ह्मस अथवा कारखाना भवन का ह्मस को शुद्धता से निर्धारित नहीं किया जा सकता है। ह्मस सम्पत्ति की लागत इसके अवशेष मूल्य और सम्पत्ति के अनुमानित जीवन पर निर्भर करता है। अतः ह्मस की लगायी गयी धनराशि सही नहीं हो सकती हैं। इस प्रकार जब तक लागत के विभिन्न संघटक तत्वों का सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता है, तब तक इस अनुभव के आधार पर किया गया आय का मापन भी बहुत सही नहीं हो सकता हैं।

(2) रहतिया लागत

रहतिया' शब्द में (i) कच्चे माल का रहतिया (ii) चालू कार्य का रहतिया एवं (iii)निर्मित माल का रहतिया सम्मिलित होता है। रहतिये की लागत की गणना भी एक जटिल प्रक्रिया है। कच्चे माल के रहतिये का मूल्यांकन व्यवसाय के द्वारा सामग्री निर्गमन के कीमत निर्धारण हेतु अपनायी गयी विधि पर निर्भर करता है।उत्पादन को सामग्री का निर्गमन पहले आना पहले जाना (FIFO) विधि, बाद में आना, पहले जाना (LIFO) विधि, भारित औसत कीमत विधि इत्यादि के द्वारा किया जा सकता है। इनमें से प्रत्येक दशा में कच्चे माल के रहतिये का मूल्य व्यापक रूप में भिन्न हो सकता हैं। इसे निम्नांकित उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता हैः

एक व्यवसायी कच्चा माल दों विभिन्न समूहों में क्रय करता है। प्रथम समूह में 1,000 इकाईयॉ रू.10प्रति इकाई की दर से क्रय की गयी। दूसरे समूह में 2,000 इकाईयॉ रू.12प्रति इकाई की दर से क्रय की गयी। लेखांकन अवधि के अन्त में रहतिये के 1,000 इकाई रह जाने की दशा में, रहतिये का मूल्यांकन उपरोक्त वर्णित विधि में से प्रत्येक के अन्तर्गत निम्नवत होगाः–

(अ) पहले आना पहले जाना (FIFO) विधि

1,000 इकाईयॉ @ रू.12 प्रति इकाई =12,000

(चूॅकि पहले क्रय की गयी सामग्री को उत्पादन हेतु पहले जारी किया जाना होगा, अतः कच्चे माल का रहतिया अंत में क्रय की गयी सामग्री से होगा।)

(ब) अन्त में आना, पहले जाना (LIFO) विधि

1,000 इकाईयॉ @ रू.10 प्रति इकाई =10,000

(चूॅकि अन्त में क्रय की गयी सामग्री को उत्पादन हेतु सर्वप्रथम जारी किया जाना होगा,अतःकच्चे माल का रहतिया पहले क्रय किए गए कच्चे माल से होगा।)

(स) भारित औसत कीमत विधि

1,000 इकाईयॉ रू.11.333 = रू.11,333

(रू.34,000 की कुल लागत पर 3,000 इकाइयॉ कुल क्रय की गयी हैं,जिससे रू.11. 333 प्रति इकाई भारित औसत कीमत प्राप्त हुई है।)

कच्चे माल के रहतिये के विषय में जो भी कहा गया है,वह चालू कार्य और निर्मित माल के रहतिये के विषय में भी सत्य है। चालू कार्य की दशा में इसे कारखाना लागत या कुल उत्पादन लागत पर मूल्यांकित किया जा सकता है। निर्मित माल का रहतिया लागत या बाजार मूल्य में जो भी कम हो, के सिद्धान्त पर आधारित है। इस प्रकार, रहतिये के मूल्य की, रहतिये के मूल्यांकन में सम्मिलित क्रय किए गए अथवा निर्मित मदों हेतु लगायी गयी वास्तविक लागत से कोई प्रासंगिकता नहीं है।

दूसरी समस्या तब उत्पन्न होती है, जब माल को बेचा जाता है। मिलान अवधारणा के अनुसार लागतों को प्राप्त आय से पहचाना जाना चाहिए, यह भी एक जटिल कार्य हैं। एक निश्चित अवधि के अन्तर्गत विक्रय किए गए माल की लागत को विक्रय की मात्रा से पहचानना लगभग असम्भव है, क्योंकि विक्रय किए गए माल लागत पुनः FIFO, LIFO या औसत विधि जिसे फर्म के द्वारा अपनाया गया है, पर निर्भर करती है। इस प्रकार एक निश्चित अवधि के अन्तर्गत कमायी गयी वास्तविक आय का निर्धारण लगभग असम्भव हैं।

(3) अदृश्य लागत

अदृश्य या अमूर्त सम्पत्तियों जैसेः–पेटेन्ट, ख्याति, ट्रेडमार्क इत्यादि जिन्हें आय अर्जित करने में प्रयोग किया जाता है, की लागत का निर्धारण एक व्यवसायिक फर्म के द्वारा एक निश्चित अवधि के लिए अर्जित आय के निर्धारण में एक अन्य समस्या उत्पन्न करता हैं। इनमें से कुछ सम्पत्तियों, जैसे पेटेन्ट, कापीराइट, लाइसेन्स आदि , जिनका एक निश्चित कानूनी जीवन होता है, की दशा में लागत का निर्धारण कठिन नहीं होता हैं। किन्तु, ख्याति, वृहत विज्ञापन व्यय, पूर्वाधिकार व्यय जैसी सम्पत्तियों जिनका उपयोगी जीवन काल सही मात्रा में निर्धारित नहीं किया जा सकता है, की

दशा में कठिनाई उत्पन्न होती हैं। इन सम्पत्तियों की अधिप्राप्ति अथवा इन सम्पत्तियों के सम्बन्ध में लगायी गयी लागत को लाभ हानि खाते से कई वर्षो तक मनमाने आधार पर अपलिखित किया जाता है। व्यवसाय आय के निर्धारण में इससे परिशुद्धता नहीं रहती हैं।

(4) निहित लागतें

व्यावसायिक आय के निर्धारण में कुछ निहित लागतें जैसे पूँजी पर ब्याज, व्यापारी का वेतन, व्यवसाय में प्रयुक्त व्यापारी के अपने किराया को भी ध्यान में रखा जाता हैं। यह लागतें धारणागत लागत मात्र हैं और प्रबंधकीय निर्णय करने के लिए ध्यान में रखी जाती हैं। उदाहरण के लिए, जब एक व्यक्ति रू.1,00,000 के विनियोग से एक व्यवसाय प्रारम्भ करने का इरादा करता है उसे यह निश्चित करने से पूर्व कि वह व्यवसाय प्रारम्भ करेगा या नहीं, यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि वह अपने द्वारा किए गए विनियोग पर अन्यथा कितना ब्याज कमा सकता था अथवा वह अन्यथा कितना वेतन प्राप्त कर सकता था। किन्तु वेतन अथवा ब्याज को मात्र जानकारी के आधार के लिए लगाया जाता है। उनकी धनराशि को सही मात्रा में निर्धारित नहीं किया जा सकता हैं। इस प्रकार, इन धारणागत व्ययों को ध्यान में रखने के बाद गणना की हुई आय को व्यवसाय की वास्तविक आय नहीं माना जा सकता है।

(5) असाधारण लागतें

व्यवसाय में कुछ निश्चित असाधारण लागत व हानियॅा उठानी पडती है। असाधारण लागत व्यावसायिक नीति या वाह्रय घटनाओं के लिए बनायी गयी रणनीति के कारण उत्पन्न हो सकती है। जैसे जब निश्चित उत्पादन सुविधाओं को अथवा उत्पादन की नयी रेखाओं को प्रबध के नियंत्रण से परे कारणों से बन्द करना पड़े। व्यवसाय में कुछ निश्चित असाधारण लागत व हानियॅा वहन करनी पड़ती है, असाधारण लागत व्यावसायिक नीति अथवा वाह्रय घटनाओं के उत्तर में बनाई गयी रणनीति के कारण उत्पन्न हो सकती हैं जैसे जब कुछ निश्चित उत्पादन सुविधाओं को बन्द करना अथवा नवीन उत्पादन रेखाओं को प्रारम्भ करना प्रबंध के नियंत्रण से परे कारणों से हो, कारखाने के परिसर को कानूनी कारणों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना पड़े इत्यादि। कुछ असाधारण हानियॅा प्राकृतिक आपदाओं अथवा दुर्घटना के कारण हो सकती है, जैसे बाढ़, अग्नि इत्यादि से हानियॅा। इन लागतों या हानियों की पहचान आय से नहीं की जा सकती है। असामान्य हानियॅा जैसे अग्नि के हानि इत्यादि को प्रायः आगे नहीं ले जाया जाता हैं। वे उसी अवधि की आय के सापेक्ष वसूल किए जाते हैं, जिस अवधि में वह किये गए हैं, जबकि असामान्य लागतें जैसे वह लागतें जो कारखाने या कारखाने के परिसर के स्थानान्तरण के कारण होती हैं, 2–3 वर्षो की समयावधि में फैली होती हैं, उस दशा में जबकी उनकी धनराशि बहुत बड़ी हो । यह मिलान लागत सिद्धान्त के अनुसार स्पष्टतया नहीं हैं।

5.5 वसूली सिद्धान्त एवं आय मापन

यह पहले ही बताया जा चुका है कि अमेरिका एकाउन्टिग एसोसिएसन ने 'आय' को परिभाषित करते समय आय के वसूली पक्ष पर जोर दिया है। अतः यह निश्चित करना महत्वपूर्ण है कि आय या आगम को कब अर्जित या वसूल हुआ माना

जाय। जब आगम या आय को अर्जित माना जाय, उस समय की पहचान करने के चार विभिन्न विकल्प हैं:–

(i) विक्रय के समय पहचान करना।

(ii) उस समय पहचान करना जब विक्रय मूल्य वसूल हो जाय।

(iii) उस समय पहचान करना जब उत्पादन पूर्ण हो जाय।

(iv) अनुबन्ध के निष्पादन पर आनुपातिक रूप में पहचान करना।

इन समस्त विकल्पों की निम्नवत व्याख्या की गयी हैं:

(i) विक्रय के समय पहचान करना

आय की पहचान करने का यह सर्वाधिक प्रचलित आधार हैं। माल के निर्माण अथवा कय का उद्देश्य तब प्राप्त होता है जब माल का विक्रय हो जाता हैं। इस प्रकार आय को तब अर्जित माना जाता है जब बिक्री व्यवसाय की साधारण प्रगति में प्रभावित हो जाय और ऐसी परिस्थितियॉ न हो कि विक्रय मूल्य उचित रूप में सुनिश्चित न हो सके। कानूनी दृष्टि से, विक्रय को तब पूर्ण माना जाता है जब माल का स्वामित्व विक्रेता से क्रेता को हस्तान्तरित हो जाता है। यह उल्लेखनीय है कि स्वामित्व का हस्तांतरण माल की सुपुर्दगी अथवा कीमत के भुगतान पर निर्भर नहीं करता हैं। इन दोनों दायित्वों का निष्पादन भविष्य में भी हो सकता है। आवश्यक यह है कि क्रेता को माल की सुपुर्दगी लेने अथवा कीमत का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होना चाहिए, इसमें समय महत्वपूर्ण नहीं हैं। आय की पहचान में उन व्यवसायों की दशा में कठिनाई उत्पन्न होती है जो वस्तुओं के विक्रय की अपेक्षा सेवायें प्रदान करने में संलग्न हों जैसे सार्वजनिक उपयोगिता वाले उपक्रम यथा विधुत कम्पनियॉ जलापूर्ति कार्य, रेलवे इत्यादि। यहॉ, आय को अर्जित मान लिया जाता है, जब सेवा आपूर्ति के लिए बीजक अथवा बिल प्रस्तुत हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में इन दशाओं में उपार्जन का आधार आय को पहचानने का सर्वाधिक उचित आधार हैं।

(ii) उस समय आय की पहचान करना जब विक्रय मूल्य प्राप्त हो जाय

कई उपक्रम उपार्जन आधार की अपेक्षा आय की पहचान करने के लिए नकद आधार का उपयोग करते है। उपार्जन आधार की दशा में, आय को तब अर्जित माना जाता हैं जब माल अथवा सेवा का भुगतान व्यवसाय को देय हो जाता है। उदाहरणार्थ, व्यापारिक उपक्रमों की दशाओं में यह तब होता हैं जब माल का विक्रय कर दिया जाता है, यद्यपि भुगतान बाद में प्राप्त हो सकता है। ऐसा इसलिए हैं क्योंकि माल बेच दिया गया है और व्यवसाय उसके लिए भुगतान प्राप्त करने के हेतु अर्ह हो गया है।उस दशा में जब नकद आधार अपनाया गया हो, प्राप्ति तब होती है जब माल अथवा सेवा का भुगतान वास्तव में प्राप्त हो जाता है। आय की पहचान करने के इस आधार को किश्त भुगतान प्रणाली (एक ऐसी प्रणाली जिसमें विक्रय मूल्य को तय की गयी किश्तों में वसूल किया जाता है) के अन्तर्गत माल के विक्रय की दशा में अपनाया जाता है। यह आधार बहुत सन्तोषजनक नहीं है क्योकि यह लागत को आय के साथ मिलान करने में वहॉ असफल रहता है, जहॉ माल के विक्रय अथवा सेवापूर्ति एवं उनके भुगतान में पर्याप्त समय बिलम्बना होती हैं।

(iii) **आय की उस समय पहचान करना जब उत्पादन पूर्ण हो जाय**

यह सामान्यतया माना जाता है कि आय केवल विक्रय के समय उपार्जित होती है और लाभ को, सम्पत्तियों के चालू बाजार मूल्यों में प्रदर्शन के द्वारा प्रत्याशित नहीं किया जाना चाहिए। किन्तु कई उद्योगों में जहाँ उत्पाद की न्यूनाधिक स्थिर कीमतों पर शीघ्र विपणनशीलता होती है, ज्यों ही उत्पादन पूर्ण हो जाय, आय को अर्जित माना जा सकता हैं। अर्जित आय की धनराशि पूर्ण उत्पादों के अनुमानित विक्रय मूल्य का उनके उत्पादन अथवा निकास की लागतों पर आधिक्य होती हैं। किन्तु, इन उत्पादों के व्यवस्थापन में किए गए व्ययों को वसूल और पूर्णतया वित्तीय विवरणों में प्रकट किया जाना चाहिए। यह विशेष रूप से कीमती धातुओं जैसे सोना और चाँदी तथा उत्कर्षण उद्योगो (जैसे तेल) और कृषि के लिए सत्य है। इन उद्योगों की दशा में रहतिये को विक्रय कीमतों पर दिखाया जाता है।

(iv) **अनुबन्ध के निष्पादन में आनुपातिक पहचान करना**

इस आधार के अनुसार आय तब भी पहचानी जाती है जबकि कार्य सब प्रकार से पूर्ण नहीं किया गया है यह दीर्घकालीन अनुबन्धों की दशा में विशेष रूप में सत्य है, जिन्हे पूर्ण होने में कुछ वर्ष लग सकते है। ऐसी दशाओं में आय की उस कार्य के आधार पर पहचान की जाती है जिसे पूर्ण कर लिया गया है। ठेकादाता के द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है।(तकनीकी रूप में कार्य प्रमाणित कहा जाता है) इसे कुछ निश्चित स्वीकृत मानदण्डों के आधार पर किया जाता है, जिन्हें निम्नवत वर्णित किया गया हैः–

(i) जब ठेके के एक चौथाई से कम कार्य को पूर्ण किया गया है, तो लाभ हानि खाते में कोई लाभ नहीं ले जाया जायेगा।

(ii) जब ठेका कार्य के एक चौथाई या अधिक किन्तु आधे से कम को पूर्ण किया गया है, तो लाभ के एक तिहाई भाग को लाभ हानि खाते में ले जाया जायेगा। इसे फिर ठेकादाता से ठेकेदार को प्राप्त नकद धनराशि के आधार पर कम किया जा सकता हैं। इसे तकनीकी रूप में लाभ को नकद आधार पर कम करना कहा जाता है।

(iii) यदि ठेका कार्य का आधा या आधे से अधिक भाग पूर्ण कर लिया गया है, तब लाभ का दो तिहाई भाग जिसे नकद आधार पर कम कर दिया गया हो, को लाभ हानि खाते में ले जाया जा सकता है।

ठेके के पूर्ण होने के अंश की गणना प्रमाणित कार्य की ठेका मूल्य से तुलना करके की जाती है। उपयुर्क्त प्रदत्त मानदण्डों को निम्नांकित उदाहरण की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता हैः

उदाहरण–1

ठेका मूल्यः रू. 30,000 ठेका के तीन वर्षो में पूर्ण होने की संभावना है। प्रथम वर्ष में रू.10,000 व्यय किए गए और ठेकादाता द्वारा प्रमाणित किया गया कार्य रू 15,000 ठेकादाता प्रमाणित कार्य के 80% नकद भुगतान करता है।

लाभ एवं हानि खाते में ले जाया जाने वाला लाभ की (अर्थात वह सीमा जिस तक आय अर्जित हुई मान ली जायेगी) निम्नवत गणना की जायेगीः

	रू.
प्रमाणित कार्य का मूल्य	15,000
अब तक लगायी गयी लागत	10,000
लेखांकन वर्षा के अन्तर्गत अर्जित लाभ	5,000

ठेका मूल्य रू.10,000 है, जबकि प्रमाणित कार्य का मूल्य रू.15,000 है। अतः ठेके का आधा भाग पूर्ण कर लिया गया है। चालू वर्ण में लाभ एवं हानि खाते में ले जायी जाने वाली धनराशि की गणना इस प्रकार की गयी हैः

$= 5{,}000 \times 2/3 \times 80/100 = 2666.$

इस प्रकार, अनुबन्ध के निष्पादन पर आनुपातिक रूप में आय की पहचान के आधार के अनुसार रू. 2666 की सीमा तक आगम /आय की पहचान की गयी है। पिछले पृष्ठों में जो भी कहा गया है, के आधार पर लेखांकन द्वारा व्यवसाय आय के मापन के लिए ध्यान में रखे जाने वाले कारकों को निम्नवत सारांकित किया जा सकता हैः

(i) लेखांकन अवधारणाऐं एवं परम्परायें।

(ii) समाप्त लागतों की सही गणना।

(iii) आय की सही पहचान।

इनमें से प्रत्येक कारक, कई अन्य कारकों जिन्हें पिछले पृष्ठों में वर्णित किया गया हैं, के द्वारा प्रभावित होता है। इस कारण से, व्यवसाय आय की गणना न केवल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है बल्कि आजकल लेखांकन का सर्वाधिक कठिन प्रकार्य है।

5.6 पूँजी एवं आय की लेखांकार और अर्थशास्त्री की अवधारणा

आय

पूँजी एवं आय की अर्थशास्त्री की अवधारणा लेखांकार की अवधारणा से भिन्न है। अर्थशास्त्री के अनुसार 'पूँजी' शब्द ऐसी सम्पत्तियों को व्यक्त करता है जिन्हें वस्तु एवं सेवाओ के उत्पादन में उपयोग किया जाता है। इसमें मूर्त सम्पत्तियॉ जैसे भवन, भूमि, प्लाट एवं मशीनरी, फर्नीचर, उपकरण आदि अमूर्त सम्पत्तियाँ जैसे मानवीय कौशल, तकनीकी इत्यादि सम्मिलित हैं। लेखांकार के अनुसार 'पूँजी' अथवा 'विनियोजित पूँजी' से आशय आय अर्जित करने के लिए व्यवसाय में प्राप्त एवं लगायी गयी समस्त मूर्त एवं अमूर्त सम्पत्तियों से है। इनमें स्थायी एवं चालू सम्पत्तियाँ दोनों सम्मिलित हैं। विनियोजित पूँजी में पट्टे या लीज पर ली गयी सम्पत्तियाँ सम्मिलित नहीं की जाती हैं। इसी प्रकार, मानवीय कौशल जैसी सम्पत्तियों को भी सम्मिलित नहीं किया जाता है। वास्तव में, मानवीय संसाधनों के उपयोग के लिए भुगतान किया गया वेतन आयगत व्यय माना जाता है एवं लाभों में से अपलिखित किया जाता है।

अर्थशास्त्रियों के अनुसार 'आय' शब्द का आशय 'एक समयावधि के अन्तर्गत वस्तु एवं सेवाओं का चालू प्रवाह' से है। उदाहरणार्थ, यदि अर्थशास्त्री यह कहे कि भारत

की राष्ट्रीय आय वर्ष 1997–98 के अर्न्तगत रू. 80,000 करोड़ थी, तो उसका मतलब है कि वर्ष 1997–98 के अन्तर्गत रू .80,000 मूल्य की वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया गया। एक अर्थशास्त्री का मुख्यतया संबंध व्यक्तियों (प्रति व्यक्ति)अथवा राष्ट्रीय आय से है।

इसके अतिरिक्त, आय को निर्धारित करते समय, एक अर्थशास्त्री मौद्रिक एवं अमौद्रिक दोनों पहलुओं को ध्यान में रखता है। उदाहरणार्थ यदि एक कारखाने को एक विशेष क्षेत्र में प्रारम्भ किया गया है तो वह उस क्षेत्र के लोगों के लिए अधिक रोजगार अवसरों का सृजन करता हैं। वे मौद्रिक लाभ प्राप्त करने के लिए समर्थन देते हैं। किन्तु कारखाने की चिमनियों से विषैली गैसों के द्वारा पर्यावरण प्रदूषण से सृजित स्वास्थ्य जोखिम से उस क्षेत्र के लोगों को क्षति होती है। एक अर्थशास्त्री लोगों की आय पर कारखाने के प्रारम्भ होने के प्रभाव का निर्धारण करते समय दोनों ही पहलुओं को ध्यान में रखेगा इस प्रकार, वह आय निर्धारण के मौद्रिक एवं अमौद्रिक (निहित या सामाजिक दोनों लाभों एवं लागतों को ध्यान में रखता है। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति अथवा समाज की आय को निर्धारित करते समय एक अर्थशास्त्री, वास्तविक आय, जो वास्तव में उच्च अंश की मूल्य की वस्तुपरकता से संबंधित होती है, को ध्यान में रखता है। दूसरी ओर, एक लेखाकार व्यवसाय द्वारा अर्जित मौद्रिक आय जिसे मौद्रिक रूप में व्यक्त किया जा सके, से ही मुख्यतया सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार एक लेखाकार आय की गणना में एक अर्थशास्त्री से अधिक सटीक होता है।

अर्थशास्त्री की 'लाभ' शब्द की अवधारणा भी लेखांकार से भिन्न होती है। लेखांकार के अनुसार शब्द 'लाभ' और 'आय' समानार्थी है। लाभ या आय की गणना कुल आगम में से उस आगम को अर्जित करने में होने वाले व्ययों को घटाकर की जाती है। किन्तु एक अर्थशास्त्री लाभ को मजदूरी, ब्याज और किराये की तरह उपादान की प्रत्याय मानता है। यदि मजदूरी श्रम के लिए प्रतिफल है, तब लाभ उद्यमी की उद्यमशीलता की योग्यता हेतु प्रतिफल है।'उद्यमशीलता की योग्यता' शब्द में जोखिम को सहन करने और पहल करने की योग्यता भी सम्मिलित होती है।दूसरे शब्दों में,लाभ उद्यमी के लिए अनिश्चितता को वहन करने तथा नवाचार दोनों का प्रतिफल है। नैत्यिक प्रबन्धकीय मामलों (जैसे उसकी सामान्य सेवाओं हेतु) के लिए प्रत्याय को लाभ नहीं बल्कि मजदूरी माना जाता है।

एक लेखांकार इस प्रकार का अन्तर नहीं करता है। उसके अनुसार, व्यावसायिक व्ययों को पूरा करने के बाद बचा अवशेष व्यवसाय का लाभ माना जायेगा। इसमें उद्यमशीलता की योग्यता तथा नैत्यिक प्रबंधकीय सेवाओं दोनों का पारिश्रमिक सम्मिलित होता है।

अर्थशास्त्री की पूँजी और आय की अवधारणाऐं एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। इरविंग फिशर के अनुसार 'पूँजी' शब्द से आशय 'एक दी हुई समय अभिसीमा में विद्यमान सम्पदा'से है। जबकी शब्द 'आय' से आशय 'एक दिये हुए समय के अन्तर्गत सम्पदा से लाभों का प्रवाह' से है। उदाहरणार्थः–कृषि भूमि पूँजी हैं, किन्तु कृषि उत्पदान के रूप में इससे प्राप्त लाभ आय है। इस प्रकार, आय पूँजी से व्युत्पादित है।

दूसरी ओर एक सम्पत्ति का मूल्य इससे प्राप्त हो सकने वाले भावी लाभों का वर्तमान मूल्य है। इसे निम्नांकित उदाहरण से समझा जा सकता है:—

उदाहरण 5.1

'ए' ने एक मशीनरी 1जनवरी 1990 को रू.1,50,000 की धनराशि से खरीदी। वह 5 वर्षो में प्रत्येक वर्ष के अन्त में 50,000 के वार्षिक रोकड़ प्रवाह की प्रत्याशा करता हैं। पूँजी की लागत 15% है और रू.1 की वार्षिकी का वर्तमान मूल्य (5 वर्षो के लिए प्रतिवर्ष रू.1 का भुगतान और इस प्रकार कुल रू. 5) 15% कटौती की वार्षिक दर पर रू. 3.3522 है। आपको 1 जनवरी 1990 को मशीनरी के मूल्य की गणना लेखाकार और अर्थशास्त्री दोनों की अवधारणाओं के अनुसार करनी है।

उत्तरः—

लेखांकार के अनुसार 1 जनवरी 1990 को मशीनरी का मूल्य रू.1,50,000 होगा। यह लागत अवधारणा पर आधारित है।

अर्थशास्त्री के अनुसार,1 जनवरी 1990 को मशीनरी भावी लाभों के वर्तमान मूल्य पर मूल्यांकित की जायेगी। प्रश्न में यह दिया गया है कि 5वर्षो के लिये रू.1 वार्षिक भुगतान (अर्थात कुल रू.5) का वर्तमान मूल्य रू.3.3522 कटौती दर 15% पर हैं। दूसरे शब्दों में 5 वर्षो की अवधि में प्रतिवर्ष रू.50,000 की प्राप्त धनराशि का वर्तमान मूल्य (50,000×LIFO 3.3522)=रू.1,67,610 हैं।

'एक्स एन्टे्' आय

वर्ष के अन्त में रोकड़ प्रवाह की प्रत्याशा (t_1) और प्रारम्भिक पूँजी प्रवाह का वर्तमान मूल्य(t_0)को 'एक्स एन्टे्' आय कहा जाता है।

'एक्स—पोस्ट' आय

सम्बन्धित सम्पत्ति से प्रत्याशित रोकड़ प्रवाह अवधि के समाप्त होने पर भिन्न हो सकता है। ऐसी दशाओं में सम्पत्ति से प्राप्त संशोधित रोकड़ प्रवाह की गणना की जायेगी।

संशोधित रोकड़ प्रवाह के वर्तमान मूल्य (t_1) और प्रारंभिक रोकड़ प्रवाह के वर्तमान मूल्य (t_0) में अन्तर के आधार पर गणना की गयी आय को 'एक्स—पोस्ट' आय कहा जाता हैं,

उदाहरण 5.2

उदाहरण 10.1 में प्रदत्त आंकडों के आधार पर 'एक्स—पोस्ट' आय की गणना कीजिए।

यदि 1990 के अन्त में संशोधित रोकड़ प्रवाह अगले 4 वर्षो के लिए निम्नांकित हैं।

वर्ष के अन्त में	संशोधित रोकड़ प्रवाह रू.	वर्तमान मूल्य कारक 15% की दर पर
1991	60,000	0.756
1992	70,000	0.658
1993	80,000	0.572

1994	50,000	0.497

उत्तरः–

1990 के लिए 'एक्स–पोस्ट' आय की गणना

क्रम संख्या	वर्ष के अन्त में	रोकड़ प्रवाह रू.	15% कटौती दर पर वर्तमान मूल्य	वर्तमान मूल्य रू.
1	1990	50,000	1.000	50,000
2	1991	60,000	0.756	45,360
3	1992	70,000	0.658	46,060
4	1993	80,000	0.572	45,760
5	1994	50,000	0.497	24,850

संशोधित (c_1t_1) 212030

'एक्ट पोस्ट'आय = संशोधित(c_1t_1)–(c_0t_0)=रू.2,12,030–1,67,610=रू.44,420

यह उल्लेखनीय है कि अवधि 1 (c_1) में प्रारंभिक रोकड़ प्रवाह तथा प्रत्याशित रोकड़ प्रवाह में अन्तर न होने के कारण 'एक्स–एन्टे्' आय और 'एक्स–पोस्ट' आय समान हैं।

5.7 सारांश

आय विवरण एक निश्चित समयावधि के अन्तर्गत व्यवसाय की आय का मापन करता हैं। आय विभिन्न प्रकार की हो सकती हैं जैसेः–व्यक्तिगत आय, राष्ट्रीय आय, व्यवसाय आय, सकल आय, शुद्ध आय इत्यादि। लेखांकन में किसी का भी ध्यान मुख्यतया 'व्यवसाय आय' से संबंधित होता है। जो कि 'व्यवसाय लाभ' शब्द का समानार्थी हैं। अमेंरिका एकाउन्टिंग एसोसिएसन के अनुसार व्यवसाय आय शब्द में समस्त अर्जित शुद्ध आय सम्मिलित होती है न कि केवल आय इसका आशय यह है कि आय को व्यवसाय आय केवल तब माना जायेगा जब यह वास्तव में प्राप्त हो जाय। राष्ट्रीय आय जो फर्म की सम्पत्तियों के बाजार मूल्य में अभिवृद्वि है, को तब तक व्यवसाय आय नहीं माना जा सकता है। जब तक सम्तत्तियों को वास्तव में व्यवस्थापन न कर दिया गया हो। लेखांकन आय का मापन अनेक लेखांकन अवधारणाओं और परम्पराओं से सम्बन्धित हैं। लागत विशेष के उद्देश्य से व्यावसायिक उपक्रमों को दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता है। अर्थात व्यापारिक उपक्रम एवं निर्णाणी उपक्रम व्यापरिक एवं निर्माणी दोनों ही उपक्रमों में आय निर्धारण के लिए विक्रय माल की लागत आवश्यक होती है। व्यापारिक उपक्रमों की दशा में यह कार्य अपेक्षाकृत सरल है। क्योकि विक्रय माल की लागत को आसानी से माल की क्रय लागत को ध्यान में रखकर ज्ञात किया जा सकता है।

5.8 शब्दावली

- **आयः–** एक विशिष्ट लेखांकन इकाई के द्वारा एक समयावधि में अर्जित आगम का उसी अवधि की समाप्त लागत पर आधिक्य।

- **लेखांकन अवधिः–** व्यवसाय के द्वारा की गयी प्रगति का अवलोकन करने तथा समय पर सुधारात्मक कदम उठाने के लिए व्यवसाय आय को एक उचित अवधि की समाप्ति पर निर्धारण किया जाता है। इस अवधि को 'लेखांकन अवधि' कहा जाता है।
- **निहित लागतः–** यह वह लागतें हैं जो धारणागत लागतें है और प्रबंधकीय निर्णयन में ध्यान में रखी जाती है।
- **एक्स एन्टे् आयः–**चालू अवधि की पूँजी के मूल्य का आधार अवधि के पूँजी मूल्य पर आधिक्य चालू अवधि के आधार पर भावी प्रत्याशित प्रत्याय के सन्दर्भ में।

5.9 बोध प्रश्न

सत्य अथवा असत्य लिखिए।

i. आगम को सामान्यतया तब पहचाना जाता हैं जब माल का विक्रय होता है।
ii. अर्थशास्त्रियों और लेखाकारों ने आय की विभिन्न अवधारणाऐं प्रदान की है।
iii. व्यवसाय की वास्तविक अर्जित आय तब ही ज्ञात की जा सकती है जब व्यवसाय को अन्तिम रूप से बन्द कर दिया जाय।
iv. रूढ़िवादिता की अवधारण सुनिश्चित करती है कि प्रतिवेदित लाभ अधिमूल्यित नहीं है।
v. LIFO विधि के अनुसार अन्त में क्रय कि गयी सामग्री को अन्त में निर्गमन के लिए लाया जाता है।
vi. व्यवसाय आय में व्यवसाय के स्वामी की व्यक्तिगत आय भी सम्मिलित की जाती है।
vii. लेखाकार की अपेक्षा एक अर्थशास्त्री आय की गणना में अधिक सही (सटीक) होता है।
viii. धारणागत आय को भी व्यवसाय आय की गणना करते समय ध्यान में लिया जाना चाहिए।

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

i)	सत्य	ii)	सत्य	iii)	सत्य	iv)	सत्य
v)	असत्य	vi)	असत्य	vii)	असत्य	viii)	असत्य

5.11 स्वपरख प्रश्न

1. माल के विक्रय के लेने–देनों की दशा में आगम या आय की पहचान कब की जाती है?
2. व्यवसाय की आय कब उपार्जित मानी जाती है? इस नियम के कौन से अपवाद हैं?
3. लेखाकार की आय की अवधारण और अर्थशास्त्री की आय की अवधारण में अन्तर कीजिए।

4. "वास्तव में किए गए कार्य के आधार पर आनुपातिक रूप में आय की पहचान का सिद्धान्त दीर्घकालीन अनुबन्धों की दशा में भी सामान्यतया अपनाया जाता है।" व्याख्या कीजिए।

5.12 संदर्भ पुस्तकें

1. **एस.एन.माहेश्वरी** ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. **आर.एल.गुप्ता** , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. **शुक्ला. एवं ग्रेवाल,** एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. **अग्रवाल एवं जैन,** एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. **एस.एन.माहेश्वरी** ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 6 वित्तीय लेखांकन : वित्तीय विवरण एवं सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

6.1 वित्तीय लेखांकनः अर्थ एवं परिभाषा
6.2 लेखांकन सिद्धान्तः अवधारणाऐं एवं परम्पराऐं
6.3 लेखांकन सूचना के प्रकार
6.4 सारांश
6.5 शब्दावली
6.6 बोध प्रश्न
6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
6.8 स्वपरख प्रश्न
6.9 सन्दर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि –

- वित्तीय लेखांकन का अर्थ एवं परिभाषा समझ सकें।
- वित्तीय लेखांकन के लाभों की व्याख्या कर सकें।
- लेखांकन सिद्धान्तों की अवधारणओं एवं परम्पराओं का वर्णन कर सकें।

6.1 वित्तीय लेखांकन : अर्थ एवं परिभाषा

वित्तीय लेखांकन का अर्थ

वित्तीय लेखांकन वित्तीय लेन–देनों एवं घटनाओं की पहचान, मापन, अभिलेखन, वर्गीकरण, संक्षिप्तीकरण, विश्लेषण, निर्वचन एवं सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। लेखांकन की इस शाखा का उद्देश्य वित्तीय प्रदर्शन एवं वित्तीय स्थिति को निर्धारित करने के लिए व्यवस्थित अभिलेख रखना तथा लेखांकन सूचना को रूचि रखने वाले पक्षों को सम्प्रेषित करना है। इसका सम्बन्ध वित्तीय लेन–देनों के अभिलेखन, वर्गीकरण, संक्षिप्तीकरण से है ताकि वित्तीय विवरणों अर्थात आय विवरण और स्थिति विवरण तैयार किए जा सकें।

परिभाषा

वित्तीय लेखांकन को विभिन्न संस्थाओं और विशेषज्ञों ने परिभाषित किया है। समस्त परिभाषाओं में ए0आइ0सी0पी0ए0 के द्वारा दी गयी परिभाषा बहुत सरल एवं विस्तृत है, जो निम्नवत है :

अमेरिकन इन्सटीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक एकाउन्टेन्ट (ए०आई०सी०पी०ए०) ने लेखांकन को 'लेन–देनों एवं घटनाओं को, जो कम से कम अंशतः वित्तीय प्रकृति के हो, महत्वपूर्ण ढंग से एवं मौद्रिक रूप में अभिलिखित, वर्गीकृत एवं सारांकित करने तथा उनके परिणामों का निर्वचन करने की कला' के रूप में परिभाषित किया । लेखांकन व्यवसाय की भाषा है जिसे वित्तीय सूचनाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से रूचि रखने वाले पक्षों को सम्प्रेषित करने हेतु उपयोग किया जाता है।

वित्तीय लेखांकन का उद्देश्य लाभदायकता को ज्ञात करना और संगठन की वित्तीय स्थिति के विषय में सूचना प्रदान करना है। वित्तीय लेखांकन के दो महत्वपूर्ण विवरण निम्नवत हैं :

1. आय और व्यय विवरण तथा
2. आर्थिक चिट्ठा

एक निश्चित अवधि से सम्बन्धित समस्त आयगत लेन–देनों की लाभदायकता ज्ञात करने के लिए आय और व्यय विवरण में अभिलिखित किया जाता है। आर्थिक चिट्ठा एक निश्चित तिथि को संगठन की वित्तीय स्थिति निर्धारित करने के लिए बनाया जाता है।

वित्तीय लेखांकन के कार्यः

वित्तीय लेखांकन व्यवसाय की स्थिति एवं उसके संचालन के परिणामों के सम्बन्ध में सूचनाऐं प्रबन्ध के साथ–साथ वाह्रय पक्षों को प्रदान करता हैं। वित्तीय लेखांकन के कुछ महत्वपूर्ण कार्य निम्नवत हैं:

(अ) सूचनाओं का अभिलेखनः व्यवसाय में सभी लेन–देनों को स्मरण रखना अत्यन्त कठिन हैं। इन लेन–देनों को व्यवस्थित रूप में उनके अंतिम खातों का स्वरूप ग्रहण करने के पूर्व अभिलिखित करना और रोजनामचों, खाताबहियों एवं कार्य पत्रकों में प्रविष्टि करने की आवश्यकता होती हैं। केवल उन्ही लेन–दनों को अभिलिखित किया जाता है। जिन्हे मुद्रा में मापन किया जा सके। जिन लेन–देनों, मौद्रिक रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता हैं, को वित्तीय लेखांकन में सम्मिलित नहीं किया जाता हैं यद्यपि इन लेन–देनों का व्यवसाय के कार्यकरण पर महत्वपूर्ण योगदान होता हैं।

(ब) प्रबन्धकीय निर्णयन :वित्तीय लेखंाकन प्रबंधकों के लिए निर्णयन में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। लेखांकन के अभाव में, वित्तीय कार्य एवं निर्णयन कार्यक्रम गलत दिशा में ले जा सकते हैं। दैनिक क्रियाओं की पूर्वनिर्धारित मानकों से तुलना की जाती है। वास्तविक क्रियाओं के विचलनों को ज्ञात करना एवं उनका विश्लेषण केवल वित्तीय लेखाकन की सहायता से ही हो सकता हैं।

(स) वित्तीय सूचनाओं का निर्वचन : वित्तीय सूचनाओं का निर्वचन निर्णय लेने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अभिलिखित वित्तीय सूचनाओं का इस प्रकार निर्वचन किया जाता हैं कि अन्तिम उपयोगकर्ता जैसे लेनदार, विनियोक्ता, बैंकर्स इत्यादि व्यवसाय की वित्तीय स्थिति एवं व्यवसायिक क्रियाओं की लाभदायकता के विषय में अर्थपूर्ण निर्णय ले सकें।

(द) परिणामों कों सम्प्रेषित करना : वित्तीय लेखांकन का संबंध तथ्यों एवं आंकडों का अभिलेखन से ही नहीं बल्कि परिणामों के सम्प्रेषण से भी हैं। वास्तव में, लेखंाकन व्यवसायिक क्रियाओं का स्रोत है। अतः संकलित एवं मापित सूचना उपयोगकर्ताओं को निश्चित अवधि में सम्प्रेषित भी होनी चाहिए। सूचनाओं का सम्प्रेषण विवरणों एवं प्रतिवेदनों के माध्यम से होता है। वित्तीय विवरण एवं प्रतिवेदन विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होने चाहिए। आवश्यकताओं के अनुसार आन्तरिक प्रबन्ध को विभिन्न प्रकार के प्रतिवेदनों की आवश्यकता होती हैं। वाह्रय पक्षों को प्रतिवेदनों के सम्प्रेषण में पूर्ण

प्रकटीकरण. प्रासंगिकता, संगति, एवं औचित्य के मानक आधारों का अनुपालन होना चाहिए।

व्यवसाय की भाषा के रूप में वित्तीय लेखांकन

जिस प्रकार बिना भाषा के एक व्यक्ति की कोई उपयोगिता नही होती या जैसे मूक मनुष्य को स्पष्ट रूप में नही समझा जा सकता है। उसी प्रकार व्यवसाय भी अपनी क्रियाओं के लेखों के बिना अर्थहीन हो जाता है। एक भाषा उस भाषा समूह की लोगों की प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है। एक विकसित भाषा विकसित समाज को प्रतिबिंबित करती है। समाजार्थिक प्रगति सदैव इसकी भाषायी विकास पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों, में मानवीय संस्कृति और आर्थिक क्रियाऐं सदैव उनके पोषण एवं प्रगति के लिये भाषा एवं साहित्य पर निर्भर करती है।

एक व्यवसायिक इकाई की भी अपनी भाषा होती है जिसमें यह अपनी क्रियाओं की परिणामों को व्यक्त करती है। और यह भाषा लेखांकन है। इस भाषा अर्थात लेखांकन की सहायता से यह अपनी भावी योजनाऐं कार्यक्रम एवं परियोजनाऐं तैयार करती हैं । व्यवसाय की भाषा अर्थात लेखांकन को प्रभावपूर्ण ढंग से वर्तमान क्रियाओं के विश्लेषणात्मक मूल्यांकन एवं विभिन्न हितधारक व्यक्तियों को परिणामों की जानकारी देने में भी उपयोग किया जाता है।

जिस प्रकार सूर्य की भाषा इसकी किरणें, फूल की भाषा, इसकी सुगंध और आकाशीय विद्युत की भाषा इसकी चमक होती है, वैसे ही व्यवसाय की भाषा लेखांकन है। जिस प्रकार एक मानव अपने विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है, वैसे ही व्यवसाय के परिणामों की अभिव्यक्ति लेखांकन की माध्यम से अंतिम लेखों के रूप में प्रतिवेदनों और विवरणों के साथ ही की जाती है। व्यवसाय की सफलता अथवा असफलता, लाभ अथवा हानि और दैनिक क्रियाओं अथवा लेन–देनों को तब जीवन प्राप्त होता है जब वह लेखों में रूपांतरित एवं अनुवादित होती है।
व्यवसाय की भाषा लेखांकन से हमें लाभदायकता अथवा लाभार्जन क्षमता ज्ञात करने में सहायता मिलती है। यही नहीं, लेखांकन की भाषा व्यवसाय की वित्तीय स्थायित्व, पूंजी संरचना की सुदृढता और आंतरिक मूल्य अथवा वास्तविक शुद्ध मूल्य को भी अभिव्यक्त करती है। एक उपक्रम की भावी सम्भावनाओं की स्पष्ट जानकारी प्रकाशित खातों से ज्ञात हो सकती है। वास्तव में समाज के समस्त हितधारक व्यक्ति जैसे देनदार, लेनदार निवेशकर्ता साहूकार बैंकर्स सरकार कर संग्रहणकर्ता अर्थशास्त्री, शोधकर्ता इत्यादि व्यवसाय की क्रियाओं को इसकी भाषा अर्थात लेखांकन से जान सकते हैं।

6.2 लेखांकन सिद्धान्त :अवधारणाऐं एवं परम्पराऐं

लेखांकन सिद्धान्त मूलतः आवश्यक रूप से निर्णय के सामान्य नियम हैं जो लेखांकन तकनीको के विकास को शासित करते हैं। यह सिद्धान्त यह मार्ग दर्शन करते हैं कि किस प्रकार लेन–देनों का अभिलेखन किया जाय और उन्हें कैसे प्रतिवेदित किया जाय? इन सिद्धान्तों को अवधारणाओं एवं परम्पराओं में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिन्हें निम्नवत समझाया गया है :

लेखांकन अवधारणाऐं :

यदि हम लेखांकन अवधारणाओं को परिभाषित करें, तो हम कह सकते हैं कि ये वैज्ञानिक नियम एवं विधान हैं, जिनके आधार पर लेखांकन किया जाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि वैज्ञानिक नियम कारण एवं परिणाम के सम्बन्धों पर आधारित होते हैं। लेखांकन अवधारणाओं के सम्बन्ध में भी यही लागू होता है। लेखांकन अवधारणाओं को निम्नवत समझाया गया है :

1. पृथक ईकाई की अवधारणा

इस सिद्धान्त के अनुसार,एक व्यवसाय को एक पृथक इकाई माना जाता है, जिसका अपने स्वामियों एवं अन्य सभी आर्थिक प्रतिष्ठानों से पृथक अस्तित्व होता हैं। उदाहरणार्थ, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के सम्बन्ध में, यद्यपि व्यवसाय का वैधानिक अस्तित्व और व्यापारी का अस्तित्व समान होता है, किन्तु लेखांकन के उद्देश्य से उन्हें एक दूसरे से पृथक माना जाता है। यदि इस मान्यता का अनुसरण न किया जाय, तब एक व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति एवं संचालनात्मक परिणामों का निर्धारण नहीं हो सकता हैं।

दूसरे शब्दों में, इस मान्यता के लिए यह आवश्यक है कि लेखांकन के उद्देश्य से निम्नांकित के मध्य अन्तर किया जाना चाहिए :

(अ) व्यक्तिगत लेने–देनों एवं व्यावसायिक लेन–देनों में और

(ब) एक व्यावसायिक इकाई एवं दूसरी व्यावसायिक इकाई के लेन–दनों में ।

उदाहरण के लिए, यदि एक व्यवसायी के पारिवारिक व्ययों (रू.10,000)को व्यावसायिक व्यय प्रदर्शित किया जाय, तब व्यवसाय के लाभ रू.10,000 की सीमा तक कम प्रदर्शित होंगे।

2. लेखांकन अवधि अवधारणा

इसे सावधि सिद्धान्त अथवा समयावधि सिद्धान्त के रुप में भी जाना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, किसी उद्यम का आर्थिक जीवन कृत्रिम रुप में सावधिक अन्तरालों में बॅटा होता है जिसे लेखांकन अवधियों के रुप में जाना जाता है, जिनके अन्त में आय–विवरण निष्पादन और वित्तीय स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए बनाए जाते हैं।

प्रभाव : इस मान्यता के प्रयोग के लिए यह भी आवश्यक है कि व्ययों का आवंटन पूॅजी और आगम के मध्य किया जाय। पूॅजी व्ययों का अंश जो चालू अवधि में उपभोग किए गए हैं, आय विवरण में एक व्यय के रुप में लिखा जाता है और अनुपभोग्य अंश को आर्थिक चिट्ठे में भावी उपयोग हेतु सम्पत्ति पक्ष में लिखा जाता है।

अनुमानित और गैर वास्तविक आय : वास्तव में, लेखांकन अवधि के सिद्धान्त के अनुसार आय का मापन तथ्यात्मक होने की तुलता में अनुमान अधिक है क्योंकि वास्तविक आय का निर्धारण उद्यम के समापन पर ही किया जा सकता है।

प्रतिवेदन करने की अवधि : ज्ञातव्य है कि 12 माह की अवधि के अनुप्रयोग की परम्परा को बाहय प्रतिवेदन के लिए लागू किया जाता है। आन्तरिक प्रतिवेदन के लिए खातों को इससे भी कम अवधियों के लिए तैयार किया जा सकता है जैसे मासिक, त्रैमासिक अथवा अद्धवार्षिक।

3. मुद्रा मापन अवधारणा

इस सिद्धान्त के अनुसार केवल ऐसे लेन–देनों, जिन्हें मुद्रा के रुप में व्यक्त किया जा सकता है, को लेखांकन अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, ऐसी सूचना जिसे मुद्रा के रुप में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, को लेखांकन अभिलेख में सम्मिलित नहीं किया जाता है। उदाहरणार्थ, यदि विक्रय निदेशक और उत्पादन निदेशक की आपस में बोलचाल नहीं हैं, तो उपक्रम को निश्चित क्षति होगी। क्योंकि इस सूचना का मौद्रिक मापन सम्भव नहीं है, अतः इस तथ्य को लेखांकन अभिलेख में अभिलिखित नहीं किया जाता है। समस्त लेन–देनों को मौद्रिक रुप में व्यक्त करके, विभिन्न इकाइयों में अभिव्यक्त भिन्न–भिन्न लेन–देनों को मापन की एक सामान्य इकाई (जैसे मुद्रा) के रुप में लाया जाता है। गैर मौद्रिक तथ्यों अथवा गुणों को ध्यान में न रखते हुए यह मान्यता मौद्रिक इकाई की क्रय शक्ति में परिवर्तनों को भी ध्यान में नहीं रखती है। अन्य शब्दों में, यह मान्यता सभी रुपयों को समान मानती है, चाहे वह 1950 का रुपया हो अथवा 1990 का। इस प्रकार, उज्जवल व्यवसाय की प्रतिवेदित आय, सम्पत्ति और दायित्वों पर कीमत स्तर के परिवर्तनों का प्रभाव प्रदर्शित करने के लिए अतिरिक्त समंकों को प्रदान करना आवश्यक है।

4. चालू व्यापार अवधारणाः

इसे निरन्तरता मान्यता से भी जाना जाता है। इस मान्यता के अनुसार उद्यम को सामान्यतया चालू व्यापार की भांति देखा जाता है जो कि द्रष्टव्य भविष्य तक चलता रहेगा। यह मान लिया जाता है कि उद्यम का समापन अथवा अपनी गतिविधियों को वस्तुतः बन्द करने का उद्यम का न तो कोई इरादा है और न ही आवश्यकता ही है।

<u>प्रभाव :</u> यह चालू व्यापार मान्यता के कारण ही है कि :

- सम्पत्तियों को चालू सम्पत्तियों और स्थायी सम्पत्तियों में वर्गीकृत किया जाता है।
- दायित्वों को अल्पकालीन दायित्व एवं दीर्घकालीन दायित्व में वर्गीकृत किया जाता है।
- अप्रयुक्त संसाधनों को समापन में जाने वाले उपक्रमों की तरह समापन मूल्यों के विपरीत अप्रयुक्त लागतों या असमाप्त लागतों की तरह प्रदर्शित किया जाता है। इसी कारण समापन मूल्य नहीं बल्कि आय क्षमता चालू उद्यम का मूल्यांकन करती है।

5. ऐतिहासिक लागत अवधारणा

इस सिद्धान्त के अनुसार एक सम्पत्ति को सामान्यतया लेखांकन अभिलेख में इसे प्राप्त करने के लिए भुगतान की गयी कीमत पर अभिलिखित किया जाता है और अधिग्रहण की अवधि और इसके बाद की लेखांकन अवधियों के लिए लागत आधार बन जाती है। इसी प्रकार यदि एक सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिए कुछ भी भुगतान नहीं किया गया है, तो उसे एक सम्पत्ति के रुप में अभिलिखित नहीं किया जायेगा अर्थात एक उपक्रम की लाभदायक स्थिति और बढ़ती हुई ख्याति मूल्यवान सम्पत्ति होने के बाबजूद अभिलिखित हुए बिना रहेगी। लागत सिद्धान्त के प्रयोग का औचित्य इस तथ्य

में निहित है कि यह उद्‌देश्यपरक ढंग से सत्यापन करने योग्य है। इसका यह अर्थ नहीं है कि सम्पत्ति को सदैव लागत पर ही प्रदर्शित किया जायेगा। एक सम्पत्ति की लागत को व्यवस्थित ढंग से वर्ष प्रति वर्ष ह्रास काटकर कम किया जायेगा और आर्थिक चिट्‌ठे में सम्पत्ति को पुस्तकीय मूल्य (लागत में से ह्रास घटाकर) प्रदर्शित किया जायेगा। यह उल्लेखनीय है कि ह्रास का उद्‌देश्य सम्पत्ति की लागत को इसके उपयोगी जीवन पर आवंटित करना है न कि इसकी लागत को इस प्रकार समायोजित करना ताकि वह बाजार मूल्य के समकक्ष लायी जा सके।

6. आय मान्यता अवधारणा

इस सिद्धान्त का सम्बन्ध मुख्यतया उपक्रम के आय विवरण में आगम को मान्यता प्रदान करने से है। आगत उपक्रम के सामान्य जीवन की क्रियाओं से उत्पन्न होने वाले रोकड़ का सकल अर्न्त प्रवाह, प्राप्तियॉ एवं अन्य प्रतिफल है जो माल के विक्रय, सेवायें प्रदान करने और दूसरों के द्वारा उपक्रम की संपत्तियों के उपयोग से अर्जित ब्याज, अधिकार शुल्क और लाभांशों के रुप में होता है। इसमें तृतीय पक्षकारों के लिए संकलित धनराशि जैसे निश्चित करों की राशि सम्मिलित नहीं होती है। एक एजेन्सी सम्बन्ध में आगम कमीशन की धनराशि है और रोकड़ का सकल अर्न्तप्रवाह प्राप्तियॉ या अन्य प्रतिफल नहीं है। आगम को उसी अवधि में मान्यता दी जाती है जिसमें वह अर्जित हुआ है चाहे वह उस अवधि में प्राप्त हो या नहीं।

7. मिलान सिद्धान्त अवधारणा

इस सिद्धान्त कं अनुसार, एक लेखांकन अवधि में किए गए व्ययों का उसी अवधि के मान्यता प्राप्त आगमों से मिलान किया जाना चाहिए अर्थात यदि एक अवधि में विक्रय की गई वस्तुओं की लागत को भी वसूल किया जाना चाहिए। समस्त विक्रय पर प्राप्त आग्रम को मान्यता देना किन्तु इस बिक्री के उन व्ययों को ही वसूल करना जो उस अवधि तक नकद में वसूल हुए हो, सही नहीं है।

यह सिद्धान्त मूलतः उपार्जन सिद्धान्त है क्योंकि यह वास्तविक रोकड़ अर्न्तप्रवाह या रोकड़ बर्हिगमन के समय एवं धनराशि को सम्मान नहीं देता है और केवल आगम और व्ययों के घटित होने (अर्थात् उपार्जन) पर ही ध्यान देता है। यह सिद्धान्त पूर्वदत्त व्ययों, अदत्त व्ययों, उपर्जित आय और अनुपार्जित आय के सम्बन्ध में समायोजन की मांग करता है।

मिलान सिद्धान्त का यह आशय नहीं है कि व्यय आय के साथ–साथ पहचान करने योग्य हों। एक समयावधि में किए गए व्यय उस अवधि में मान्य आय के साथ सम्बन्धित हो भी सकते हैं और सम्बन्धित नहीं भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए विक्रय किए गए माल की लागत और विक्रयकर्ता का कमीशन, विक्रय से प्रत्यक्ष में सम्बन्धित है जबकि किराया, ब्याज, ह्रास जो समय बीतने के साथ उपार्जित होते हैं और उन्हें, जिस लेखांकन अवधि से वह सम्बन्धित हैं, उसी समयावधि में लगाया जाता है। इस प्रकार, एक लेखांकन अवधि में उचित लागतों को उचित आय के साथ मिलान करना आवश्यक होता है।

8. द्विपक्षीय अवधारणा

एक लेन–देन के दोहरे पक्ष को उस लेन–देन की द्विपक्षीयता या द्वैधता कहा जाता है। यह द्वैधता ही दोहरे लेखे के अभिलेख का आधार है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, प्रत्येक लेन–देन की प्रविष्टि में दो भाग निहित होते हैं– एक डेबिट या नाम के लिए और दूसरा क्रेडिट या जमा के लिए। दोहरा लेखा प्रणाली को न्यूटन के गति के नियम के समतुल्य माना जा सकता है, जिसके अनुसार प्रत्येक क्रिया की एक समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। प्रत्येक डेबिट या नाम का समान धनराशि का क्रेडिट या जमा होता है। इस प्रकार समस्त डेबिट या नाम का समान धनराशि का क्रेडिट या जमा होता है। इस प्रकार समस्त डेबिट का योग क्रेडिट के योग के बराबर होना चाहिए।

लेखांकन परम्पराऐं :

लेखांकन परम्पराऐं मूलतः वह रीति रिवाज हैं, जिन्हें लेखांकन में अनुसरण किया जाता है। यद्यपि ये उनकी तरह वैज्ञानिक नही है, जितनी अवधारणाऐं वैज्ञानिक हैं, किन्तु इनके लाभों के कारण लेखाकार इनका अनुसरण करते हैं और इन्हें गैप अर्थात सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्त का भाग बनाया गया है। लेखांकन परम्पराओं को निम्नवत समझाया गया है :

1. **यथार्थता अथवा सारता की परम्परा** : यह सिद्धान्त मूलतः पूर्ण प्रकटीकरण सिद्धान्त का एक अपवाद है। पूर्ण प्रकटीकरण सिद्धान्त के लिए यह आवश्यक है कि समस्त तथ्यों, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि वित्तीय विवरण भ्रमपूर्ण नहीं हैं, को प्रकट किया जाय जबकि यथार्थता सिद्धान्त के लिए यह आवश्यक है कि वे मदें या घटनाऐं जिनके आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण नहीं हैं अथवा वे उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक नहीं है, को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है। यथार्थता के सिद्धान्त के अनुसार सभी सापेक्षिक प्रासंगिक मदों, ज्ञान, जो वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं के निर्णय को प्रभावित करता हो, को वित्तीय विवरणों में प्रकट किया जाना चाहिए। कौन सी सूचना, अन्य की अपेक्षा अधिक प्रासंगिक है, मुख्यतः निर्णय का प्रकरण है। उदाहरणार्थ आर्थिक चिट्ठे में एक छोटे कैलकुलेटर को सम्पत्ति के रुप में अभिलिखित करना कैलकुलेटर के अभिलेखन की उपयोगिता पर इसकी लागत की अधिकता की दृष्टि से औचित्यपूर्ण नहीं हो सकता है यथार्थता किसी मद की धनराशि पर ही निर्भर नहीं करती बल्कि व्यवसाय के आकार सूचना के स्तर और प्रकृति, व्यक्ति या विभाग के स्तर जो यथार्थता के विषय में निर्णय करते हैं, पर भी निर्भर करती है। उदाहरण के लिए एक कर्मचारी जो अपने फोरमैन को उत्पादन ग्राम में (कि0ग्रा0 का भाग) प्रतिवेदन करता है, फोरमैन अपने पर्यवेक्षक को किलोग्राम में, पर्यवेक्षक के द्वारा अपने उत्पादन प्रबन्धक को क्विंटलों में और उत्पादन प्रबन्धक उच्च प्रबंध को टनों में प्रतिवेदन करना परिस्थितियों के अनुसार औचित्यपूर्ण ठहराया जा सकता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि एक उत्पादन प्रबन्धक उच्च प्रबंध को यह रिपोर्ट करे कि उत्पादन 1,99,000.99 किलोग्राम या सरलतम रुप में 200 टन(लगभग) है। यह वांछनीय है कि यथार्थ और गैरयथार्थ मदों को शासित करने वाली समान नीतियॉ स्थापित की जाय एवं अपनायी जाय ताकि किसी एक लेखांकन अवधि के लिए आय का मापन करते समय, गैर यथार्थ सामग्री को समान

रुप में छोड़ दिया जाय। यथार्थता का यह सिद्धान्त लागू किया जाना चाहिए चाहे इसके प्रयोग की लागत इसके लाभों से अधिक हो जाय।

2. **पूर्ण प्रकटीकरण की परम्परा :** इस सिद्धान्त के अनुसार वित्तीय विवरणों को सूचना पहुँचाने, न कि सूचना छिपाने, के माध्यम का कार्य करना चाहिए। वित्तीय विवरणों को प्रासंगिक एवं विश्वसनीय सूचनाऐं, जिनका वह प्रतिनिधित्व करते हैं, को प्रकट करना चाहिए ताकि यह सूचना उपयोगकर्ताओं के लिए उपयोगी हो सके। इसके लिए यह आवश्यक है कि सूचना को इसके सार और आर्थिक यथार्थ के अनुसार और न कि इसको मात्र विधिक रुप में संकलित और प्रस्तुत किया जाय। वित्तीय विवरणों के साथ तथ्यों के संक्षिप्त विवरणों को जोड़ने का व्यवहार पूर्ण प्रकटीकरण के सिद्धान्त के परिणामस्वरुप विकसित हुआ है। प्रकटीकरण पूर्ण, न्यायसंगत और पर्याप्त होना चाहिए ताकि वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता उद्यम के वित्तीय प्रदर्शन और स्थिति के विषय में सही मूल्यांकन कर सकें।

3. **नियमितता अथवा एकरुपता की परम्परा :** इस सिद्धान्त के अनुसार लेन–देनों के एक दिए हुए वर्ग के लिए चयनित लेखांकन व्यवहार चाहे वह तार्किक हो या नहीं, को एक लेखांकन अवधि से दूसरी अवधि तक समानान्तर आधार पर एकरुपता को सुनिश्चित करने के लिए अपनाया जाना चाहिए।

उदाहरण : यदि रहतिये का मूल्यांकन बाद में आना पहले जाना अर्थात LIFO आधार पर किया गया है, तो इस आधार का अनुपालन वर्ष दर वर्ष किया जाना चाहिए और यदि एक विशिष्ट सम्पत्ति पर ह्रास अवशेष पद्धति (WDV) के आधार पर लगाया गया है, तो इस पद्धति को वर्ष दर वर्ष अपनाया जाना चाहिए।

अनुसरण न करने का प्रभाव : यदि नियमितता के इस सिद्धान्त का अनुपालन न किया जाय, तो फर्म के अन्दर आन्तरिक तुलना (अर्थात उसी फर्म की एक अवधि के वास्तविक आंकड़ों की दूसरी अवधि के वास्तविक आंकड़ो से तुलना), अर्न्त फर्म तुलना (अर्थात एक फर्म के वास्तविक आंकड़ों की तुलना उसी उद्योग की दूसरी फर्म से करना) और प्रवृत्ति की तुलना (अर्थात एक फर्म के वास्विक आंकड़ों की तुलना उसी उद्योग की दूसरी फर्म से करना) नहीं की जा सकती है।

एकरुपता से भिन्न होना : नियमितता को सामान्यतः एकरुपता अथवा लोचहीनता मात्र मानकर भ्रमित नहीं होना चाहिए और सुधरे हुए लेखांकन मानकों को लागू करने में बाधक नहीं बनने देना चाहिए। एक उपक्रम के लिए यह उचित नहीं है कि वह अपनी लेखांकन नीतियों को तब भी अपरिवर्तित रखे जबकि अधिक प्रासंगिक और विश्वसनीय विकल्प मौजूद हों।

प्रकटीकरण :उपयोगकर्ताओं को वित्तीय विवरणों को बनाने में लागू की गयी लेखांकन नीतियों, इन नीतियों में किसी परिवर्तन और ऐसे परिवर्तनों के प्रभावों की सूचना दी जानी चाहिए।

4. **सतर्कता सिद्धान्त (अथवा रुढ़िवादिता सिद्धान्त) :**

इस सिद्धान्त के अनुसार, 'आय की प्रत्याशा न करें और सभी हानियों के लिए प्रावधान करें' के सिद्धान्त को लागू किया जाना चाहिए। अन्य शब्दों में, रुढ़िवादिता के सिद्धान्त के लिए यह आवश्यक है कि अनिश्चितता और संशय की स्थिति में, व्यावसायिक

लेन–देनों का अभिलेखन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि लाभ और सम्पत्तियॉ अधिक न दिखायी जाय और हानि एवं दायित्व कम करके न दिखाये जाय।

उदाहरण : रहतिये का लागत या शुद्ध वसूली मूल्य से जो भी कम हो, पर मूल्यांकन और संदिग्ध ऋणों और देनदारों पर कटौती के लिए प्रावधान करना इस सिद्धान्त के प्रयोग हैं।

नियमितता या एकरुपता के विरुद्ध : जब रहतिये को एक लेखांकन अवधि में लागत पर और दूसरी अवधि में लागत अथवा शुद्ध वसूली मूल्य में से कम मूल्य पर मूल्यांकित किया जाय, तो यह नियमितता या एक रुपता के सिद्धान्त के विरुद्ध है।

पूर्ण प्रकटीकरण के विरुद्ध : जब संदिग्ध ऋणों के लिए एवं ह्रास के लिए अत्यधिक प्रावधान किया जाता है, तो इससे गुप्त संचय का निर्माण हो जाता है और इस प्रकार यह सिद्धान्त पूर्ण प्रकटीकरण के सिद्धान्त के विरुद्ध हो जाता है।

उद्देश्यपरकता अथवा लिखित प्रमाण के विरुद्ध : संभावित हानियों का पूर्वानुमान एक वस्तुपरक निर्णय है और इस प्रकार यह सिद्धान्त उद्देश्यपरकता के सिद्धान्त के विरुद्ध हो जाता है। संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान इत्यादि का व्यवहार आगामी लेखांकन अवधियों में तुलनात्मक रुप से कम प्रावधान को व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में यह चालू आय को कम और भावी आय को बढ़ा देता है और इस प्रकार यह मिलान के सिद्धान्त के विरुद्ध हो जाता है। आजकल रुढ़िवादिता के सिद्धान्त को सतर्कता के सिद्धान्त से प्रतिस्थापित किया जा रहा है जिसके लिए यह आवश्यक है कि रुढ़िवादिता के सिद्धान्त को विवेकपूर्ण ढंग से उस परिस्थिति में लागू किया जाना चाहिए जब अत्यधिक अनिश्चितता एवं संशय हो क्योंकि रुढ़िवादिता से मिथ्यावर्णन हो सकता है।

लेखांकन एक सूचना प्रणाली के रूप में

'प्रणाली' शब्द को तत्वों के ऐसे समुच्चय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक साथ कार्य करते हैं।

लेखांकन में परस्पर संबंधित क्रियाओं की श्रृखंला सम्मिलित होती है। लेखांकन कियाऐं चरण बद्ध प्रगति पथ निर्मित करती हैं जो अवलोकन से प्रारम्भ होकर फिर सूचनाओं का संकलन, अभिलेखन, विश्लेषण करती और अन्त में सूचनाओं का सम्प्रेषण इसके उपयोग कर्ताओं को करती हैं। एक सूचना प्रणाली के रूप में लेखांकन सूचना के स्त्रोत या सूचना प्रदान करने वाले (सामान्य रूप में लेखांकन), सम्प्रेषण के एक माध्यम (सामान्य रूप में वित्तीय विवरण) और प्राप्तकर्ताओं के एक समूह (बाह्य उपयोगकर्ता) को जोड़ता है। जब लेखांकन को सम्प्रेषण प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है,तो इसकी परिभाषा यह होती है–लेखांकन प्रणाली की भाषा में अवलोकनों को संकेताकों में परिवर्तित करने, प्रणाली के चिन्हों एवं विवरणों में परिवर्तन एवं संकेतांकों से प्रतीपगमन और परिणामों को सम्प्रेषित करने की प्रक्रिया की तरह लेखांकन की परिभाषा दी जा सकती हैं।

वैकल्पिक रूप में कभी–कभी प्रक्रियन किए गए आकड़ों को पुनः प्रक्रियन के द्वारा सूचना को उपयोगकर्ताओं को उपयोगी सूचना प्रदान करने के लिए तैयार किया जाता है। प्रक्रियन की गयी एवं तैयार की गयी सूचना उपयोगकर्ताओं एवं निर्णयकर्ताओं को

वित्तीय विवरणों, प्रतिवेदनों आदि के रूप में सम्प्रेषित की जाती है। लेखांकन प्रणाली में व्यावसायिक लेन–देन और क्रियाऐं आगतें होती हैं और विवरण एवं प्रतिवेदन जो निर्णयकर्ताओं को प्रदान किए जातें हैं, निर्गत अथवा परिणाम होती हैं।

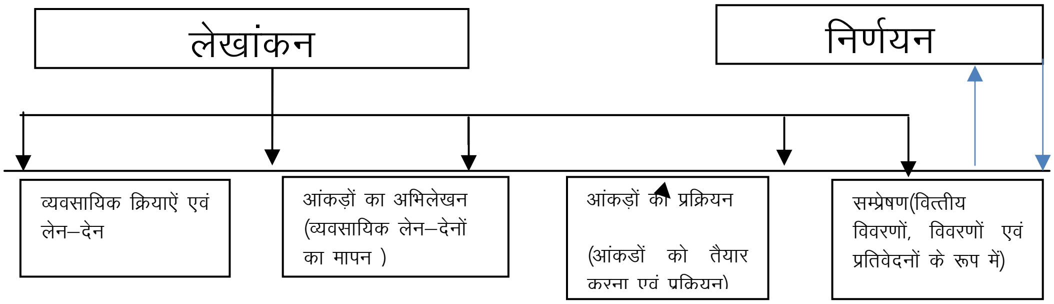

6.3 लेखांकन सूचना के प्रकार

लेखांकन सूचनाओं के आधार पर एवं लेखांकन मापन के आधार पर और इसी प्रकार लेखांकन सूचना को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हैं। लेखांकन सूचना के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं।

1. वित्तीय लेन–देनों और घटनाओं से सम्बन्धित लेखांकन सूचनाऐं:

वित्तीय स्थिति : वित्तीय स्थिति से सम्बन्धित सूचनाऐं मुख्यतः आर्थिक चिट्ठों में प्रदर्शित की जाती हैं।

एक उपक्रम की वित्तीय स्थिति उसके आर्थिक संसाधनों, जिन्हें वह नियंत्रित करता हैं, उसकी वित्तीय संरचना, उसके तरलता और शोधन क्षमता और जिस वातावरण में वह परिचालन करता हैं, उसके परिवर्तनों के अनुसार सामंजस्य करने की उसकी क्षमता से प्रभावित होती हैं ।

(अ) उपक्रम के द्वारा नियंत्रित आर्थिक संसाधनों और इन संसाधनों के परिवर्तत करने की उसकी विगत क्षमता भविष्य में उस उपक्रम की रोकड़ और रोकड़ के समान सम्पतियों को उत्पन्न करने के पूर्वानुमान करने में उपयोगी होती हैं।

(ब) वित्तीय संरचना के विषय में सूचना, भावी ऋण आवश्यकताओं और भावी लाभों एवं नकद प्रवाहों को किस प्रकार उपक्रम के हितधारकों में वितरित किया जायेगा, के पूर्वानुमान में उपयोगी होती हैं। उपक्रम किस प्रकार भविष्य में वित प्राप्त कर सकता हैं, के पूर्वानुमान में भी यह उपयोगी होती है।

(स) तरलता और शोधन क्षमता से संबंधित सूचनाऐं उपक्रम की वित्तीय प्रतिबद्धताओं, जैसे ही वह देय होती हैं, को पूर्ण करने की योग्यता का पूर्वानुमान लगाने में सहायता होती हैं। तरलता से आशय एक निश्चित अवधि में नकदी की भावी उपलब्धताओं को पूर्ण करने से हैं। शोधन क्षमता से आशय वित्तीय प्रतिबद्धताओं के देय होने पर उन्हें पूर्ण करने के लिए नकदी की उपलब्धता को दीर्घकाल के लिए पूरा करने से हैं।

वित्तीय प्रदर्शन : वित्तीय प्रदर्शन के विषय में सूचना को प्रारम्भिक रूप में मुख्यतया लाभ और हानि खाते (जिसे आय विवरण के नाम से भी जाना जाता हैं) में प्रदान की जाती हैं।

एक उपक्रम के प्रदर्शन विषय में, विशेषतया उसकी लाभदायकता की सूचना की आवश्यकता आर्थिक संसाधनों में संभावी परिवर्तनों, जिनसे भावी नियत्रंण संभावित होता हैं, के मूल्यांकन के लिए होती हैं। इस सम्बन्ध में प्रदर्शन के परिवर्तन के विषय में सूचना महत्वपूर्ण होती हैं। प्रदर्शन के विषय में सूचना उपक्रम के वर्तमान संसाधन आधार से उत्पन्न होने वाले रोकड़ प्रवाहों की क्षमता के पूर्वानुमान के लिए उपयोगी होती हैं। यह उस प्रभावशीलता के विषय में निर्णय लेने के लिए भी उपयोगी होती हैं, जिसका प्रयोग उपक्रम को अपने अतिरिक्त संसाधनों के विनियोजन करने में करना चाहिए।

रोकड़ प्रवाह : रोकड़ प्रवाह के विषय में सूचना वित्तीय विवरणों में रोकड़ प्रवाह विवरण के माध्यम से प्रदान की जाती हैं।

एक उपक्रम की रोकड़ प्रवाह की सूचना इसके विनियोजन, वित्तीय एवं संचालनात्मक क्रियाओं के एक निश्चित प्रतिवेदन अवधि के अन्तर्गत मूल्यांकन के लिए उपयोगी होती हैं। यह सूचना उपयोगकर्ताओं को उपक्रम की रोकड़ अथवा रोकड़ जैसे संपत्तियों को उत्पन्न करने की योग्यता तथा उपक्रम के द्वारा इन रोकड़ प्रवाहों का उपयोग करने की आवश्यकता का मूल्यांकन करने के लिए आधार निर्मित करने हेतु भी उपयोगी होती हैं।

यह सूचना आगे निम्न प्रकार वर्गीकृत की जा सकती हैं :

1. ऐतिहासिक लागत के आधार पर
2. चालू लागत के आधार पर
3. वसूल किये गए मूल्य के आधार पर
4. वर्तमान मूल्य के आधार पर

2. परिचालन आथवा प्रकार्य से संबंधित लेखांकन सूचना
3. एक उपक्रम की क्रियाओं के नियोजन एवं नियत्रंण की आन्तरिक प्रतिवेदन हेतु संबंधित सूचनाऐं

   इस सूचना को आगे निम्नवत वर्गीकृत किया जा सकता हैं :

   (अ) वित्तीय क्षेत्र से संबंधित सूचना
   (ब) उत्पादन क्षेत्र से संबंधित सूचना
   (स) विपणन क्षेत्र से संबंधित सूचना
   (द) सेविवर्ग से संबंधित सूचना
   (य) अन्य क्षेत्र से संबंधित सूचना (जैसे शोध एवं विकास)
4. व्यवसायिक निर्णयों के सामाजिक प्रभाव से संबंधित लेखांकन सूचनायें।
5. पर्यावरण और पारिस्थितिकी से संबंधित लेखांकन सूचनायें।
6. मानवीय संसाधनों से संबंधित लेखांकन सूचनायें।

लेखांकन के लाभः

लेखांकन के लाभ इस प्रकार हैंः

रेखाचित्र

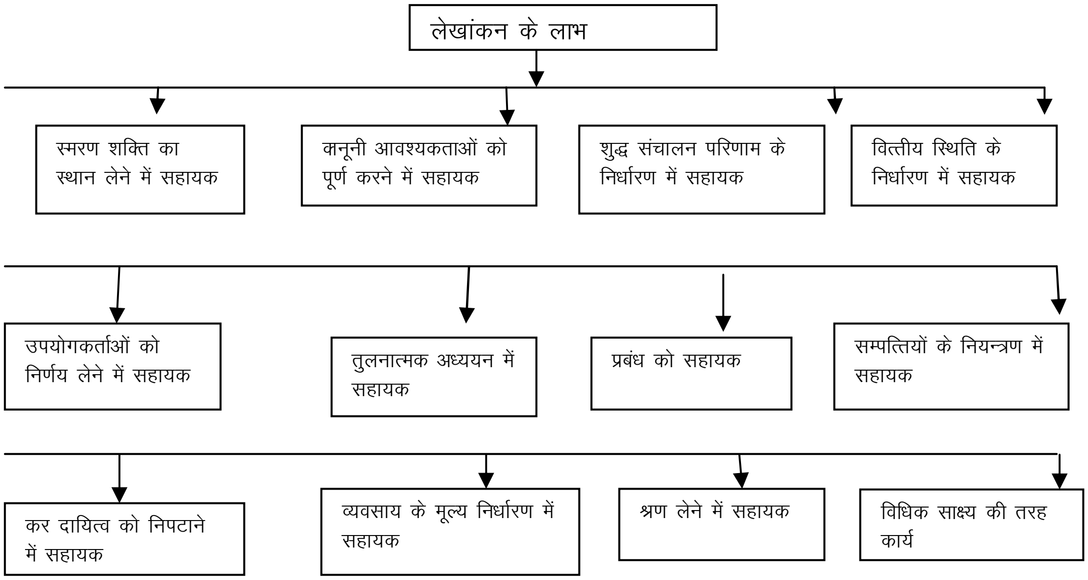

आइये, इन लाभों की एक–एक कर विवेचना करें।

5. **स्मरण शक्ति का स्थान लेने में सहायक** : लेखांकन वित्तीय लेन–देनों का पूर्ण अभिलेख रखने में मानवीय स्मरण शक्ति का स्थान लेने में सहायक होता है। मानवीय स्मरण शक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार सीमित है और लेखांकन की सीमा की विजय में सहायता प्रदान करता है।

6. **कानूनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायकः** लेखांकन कानूनी अवश्यकताओं, जो किसी उद्यम के लिये लेखे रखना आवश्यक बनाती है, को पूर्ण करने में सहायक होती है। उदाहरणार्थ, कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 209 के अनुसार एक कम्पनी को उपार्जन पर लेखे की पुस्तकें रखना अनिवार्य है। आय कर अधिनियम की धरा 44AA के द्वारा निश्चित व्यक्तियों के लिये निर्धारित लेखा पुस्तकें रखना अनिवार्य किया गया है।

7. **संचालन के शुद्ध परिणामों के निर्धारण में सहायकः** लेखांकन आय विवरण को तैयार कर संचालन के शुद्ध परिणामों के निर्धारण की सुविधा प्रदान करता हैं।

8. **वित्तीय स्थिति के निर्धारण में सहायकः** स्थिति विवरण बनाकर लेखांकन वित्तीय स्थिति के निर्धारण की सुविधा प्रदान करता हैं।

9. **उपयोगकर्ताओं को निर्णय लेने में सहायक** : लेखांकन एक उपक्रम के वित्तीय परिणामों एवं स्थिति को ज्ञात करता है और साथ ही यह इस सूचना को इसके उपयोगकर्ताओं अर्थात अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन लेनदारों, प्रबन्ध, सामान्य जनता, कर प्राधिकारी आदि को निर्णयन हेतु सम्प्रेषित करता हैं।

10. **तुलनात्मक अध्ययन में सहायकः** लेखांकन तुलनात्मक अध्ययन में निम्नांकित चार प्रकार से सहायक करता हैः

(1) समान समयावधि और समान फर्म के वास्तविक आंकड़ों की प्रमापित एवं बजटेड आंकड़ों से तुलना

(2) समान फर्म के संबंध में एक समयावधि के वास्तविक आंकड़ों की दूसरी समयावधि से तुलना (आन्तरिक फर्म तुलना)

(3) समान उधोग के अन्तर्गत एक फर्म के वास्तविक आकड़ों की प्रमाप फर्म से तुलना (अन्र्त फर्म तुलना)

(4) फर्म से सम्बन्धित उधोग से फर्म के वास्तविक आकड़ों की तुलना (प्रवृति तुलना)

11. **प्रबंध की सहायताः** व्यावसायिक क्रियाओं के नियोजन एवं नियंत्रण तथा निर्णयन में लेखांकन प्रबंधं की सहायता करता है। उदाहरणार्थ, प्रक्षेपित रोकड़ प्रवाह विवरण प्रबन्ध को भावी प्रप्तियों एवं भुगतानों को ज्ञान करने तथा प्रत्याशित कोषो के अवशेष अथवा कमी के संबंध में निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता हैं।

12. **सम्पत्तियों के नियंत्रण में सहायकः** लेखांकन रोकड़ शेष, बैंक शेष, देनदार, स्थायी सम्पत्तियों, स्टाक आदि के संबंध में सूचना प्रदान कर सम्पत्तियों के नियंत्रण में सहायक करता हैं।

13. **कर दायित्व का निपटारा करने में सहायकः** लेखांकन समुचित लेखा पुस्तकों के व्यवस्थित ढंग से रखरखाव के द्धारा प्राधिकारियों के साथ कर दायित्व के व्यवस्थापन अथवा निपटारा करने में सहायता करता हैं।

14. **व्यवसाय के मूल्य निर्धारण में सहायकः** लेखांकन व्यवसाय के किसी दूसरे संस्थान को हस्तान्तरण के समय मूल्य निर्धारण में सहायता करता हैं।

15. **ऋण लेने में सहायकः** ऐतिहासिक एवं प्रक्षेपित वित्तीय विवरण प्रदान कर लेखांकन ऋण लेने में सहायता करता हैं।

16. **विधिक साक्ष्य के रूप में कार्यः** व्यवस्थित ढ़ग से रखी गयी उचित लेखा पुस्तकें विवाद की स्थिति में विधिक साक्ष्य का कार्य करती हैं

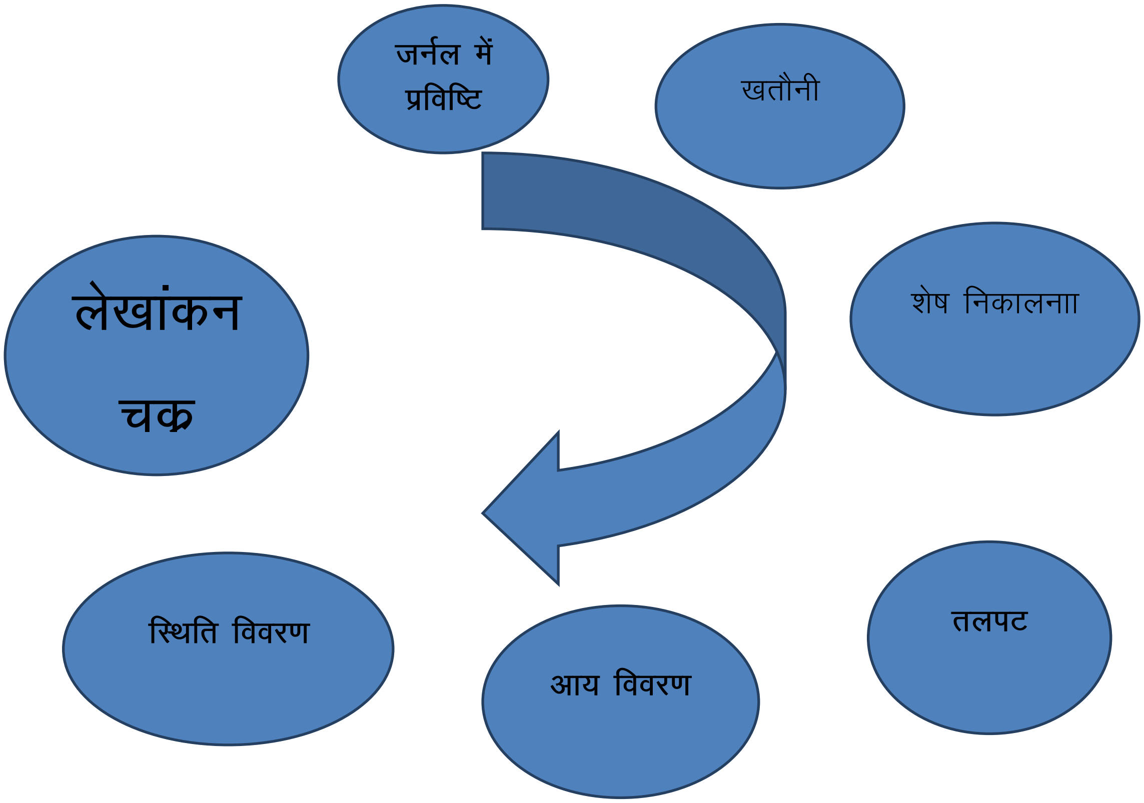

चित्र संख्या –1 : लेखांकन चक्र

वित्तीय विवरण

1. आर्थिक चिट्ठा या स्थिति विवरण
2. व्यापार और लाभ एवं हानि खाता या आय विवरण

1. आर्थिक चिट्ठा या स्थिति विवरण
   (अ) एक निश्चित तिथि को वित्तीय स्थिति का विवरण है।
   (ब) यह सम्पत्तियों, दायित्वों, पूँजी एवं संचय को प्रदर्शित करता है।
2. व्यापार और लाभ एवं हानि खाते का प्रारूप

ए0बी0सी0 लिमिटेड का व्यापार, लाभ एवं हानि खाता
31 मार्च 2012 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए

विवरण	धनराशि	विवरण	धनराशि
प्रारम्भिक रहतिया को	....	विक्रय से	
क्रय को	....	घटायाः वापसी	....
मजदूरी को	....	अंतिम रहतिया से	
प्रत्यक्ष व्यय को	....		....
सकल लाभ को	....		
	....		....

वेतन को	....	सकल लाभ से	....
कार्यालय किराया को	....	प्राप्त किराया से	....
ह्रास को	....	ब्याज से	....
कटौती को	....	कमीशन से	....
अप्रत्यक्ष व्यय को	....	लाभांश प्राप्त से	....
डूबत ऋण को	....		
प्लाण्ट के विक्रय पर लाभ को	....		
	....		
शुद्ध लाभ को			
	....		....

आर्थिक चिट्ठे का प्रारूप

ए0बी0सी0 लिमिटेड का आर्थिक चिट्ठा 31 मार्च 2012 को

दायित्व	धनराशि	सम्पत्तियॉ	धनराशि
अंश पूँजी :		**स्थायी सम्पत्तियॉ :**	
समता अंश पूँजी	**XXX**	भूमि एवंभवन	**XXX**
क अंश रू की दर से		प्लाट एवं मशीनरी	**XXX**
	XXX	फर्नीचर एवं फिक्सचर्स	**XXX**
पूर्वाधिकार अंश पूँजी		विनियोग	**XXX**
क अंश रू की दर से	**XXX**		
	XXX	**चालू सम्पत्तियॉ :**	
संचय एवं आधिक्य	**XXX**	रोकड़ एवं रोकड़ समान	
%ऋण पत्र	**XXX**		**XXX**
दीर्घकालीन ऋण		विविध देनदार	**XXX**
लाभ एवं हानि खाता (लाभ)	**XXX**	प्राप्त विपत्र	**XXX**
	XXX	अन्तिम रहतिया	**XXX**
चालू दायित्व :	**XXX**		
अदत्त व्यय		**अमूर्त सम्पत्तियॉ :**	
विविध लेनदार		ख्याति	
देयविपत्र			**XXX**
		पेटेन्ट	**XXX**
		रोकड़ हाथ में	**XXX**
		रोकड़ बैंक में	**XXX**
		काल्पनिक सम्पत्तियॉ :	**XXX**
		प्रारम्भिक व्यय	**XXX**
		स्थगित आगम व्यय	

	XXX		XXX

6.4 सारांश

वित्तीय लेखांकन वित्तीयलेन–देनों एवं घटनाओं की पहचान, मापन, अभिलेखन, वर्गीकरण, संक्षिप्तीकरण, विश्लेषण, निर्वचन एवं सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। वित्तीय लेखांकन का उद्देश्य लाभदायकता को ज्ञात करना और संगठन की वित्तीय स्थिति के विषय में सूचना प्रदान करना है। एक निश्चित अवधि से सम्बन्धित समस्त आयगत लेन–देनों को लाभदायकता ज्ञात करने के लिए आय और व्यय विवरण में अभिलिखित किया जाता है। आर्थिक चिट्ठा एक निश्चित तिथि को संगठन की वित्तीय स्थिति निर्धारित करने के लिए बनाया जाता है। समाज के समस्त हितधारक व्यक्ति जैसे देनदार, लेनदार निवेशकर्ता साहूकार बैंकर्स सरकार कर संग्रहणकर्ता अर्थशास्त्री, शोधकर्ता इत्यादि व्यवसाय की क्रियाओं को इसकी भाषा अर्थात लेखांकन से जान सकते हैं। लेखांकन सिद्धान्त मूलतः आवश्यक रूप से निर्णय के सामान्य नियम हैं जो लेखांकन तकनीको के विकास को शासित करते हैं। इन सिद्धान्तों को अवधारणाओं एवं परम्पराओं में वर्गीकृत किया जा सकता है।

अवधारणाऐं वैज्ञानिक नियम एवं विधान हैं, जिनके आधार पर लेखांकन किया जाता है, जबकि लेखांकन परम्पराऐं मूलतः वह रीति रिवाज हैं , जिन्हें लेखांकन में अनुसरण किया जाता है। लेखांकन में परस्पर संबंधित क्रियाओं की श्रृखंला सम्मिलित होती है। एक सूचना प्रणाली के रूप में लेखांकन कियाऐं चरण बद्ध प्रगति पथ निर्मित करती हैं जो अवलोकन से प्रारम्भ होकर फिर सूचनाओं का संकलन, अभिलेखन, विश्लेषण करती और अन्त में सूचनाओं का सम्प्रेषण इसके उपयोगकर्ताओं को करती हैं।

6.5 शब्दावली

ए०आई०सी०पी०ए०–अमेरिकन इन्सटीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक एकाउन्टेन्ट
डब्ल्यू0डी0वी0 –ह्रास अवशेष पद्धति,

6.6 बोध प्रश्न

बताइए निम्नांकित सत्य हैं अथवा असत्य

1. वित्तीय स्थिति से सम्बन्धित सूचनाऐं मुख्यतः आर्थिक चिट्ठों में प्रदर्शित की जाती हैं।
2. लेखांकन परम्पराऐं उतनी वैज्ञानिक नही है, जितनी अवधारणाऐं वैज्ञानिक हैं।
3. कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 209 के अनुसार एक कम्पनी को उपार्जन पर लेखे की पुस्तकें रखना अनिवार्य नहीं है।

6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य **2.** सत्य **3.** असत्य

6.8 स्वपरख प्रश्न

1. लेखांकन अवधारणाऐं एवं परम्पराऐं क्या हैं ? वित्तीय विवरणों को तैयार करने में इन अवधारणाओं एवं परम्पराओं के उपयोग को संक्षेप में समझाइऐ।

2. वित्तीय विवरणों से आप क्या समझतें हैं ? वित्तीय विवरणों को तैयार करने के क्या उद्देश्य है ?
3. लेखांकन सूचना के विभिन्न प्रकारों को समझाइऐ।
4. लेखांकन अवधारणाओं एवं परम्पराओं में अन्तर कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (अ) रोकड़ प्रवाह विवरण
   (ब) आय विवरण
   (स) प्रवृत्ति/पैटर्न विश्लेषण
   (द) तुलनात्मक विश्लेषण

6.9 सन्दर्भ पुस्तकें

1. **एस.एन.माहेश्वरी** ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. **आर.एल.गुप्ता** , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. **शुक्ला. एवं ग्रेवाल,** एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. **अग्रवाल एवं जैन,** एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. **एस.एन.माहेश्वरी** ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 7 वित्तीय लेखांकन एवं वित्तीय लेखांकन समंकों की उत्पत्ति

इकाई की रूपरेखा

7.1 वित्तीय विवरणों का अर्थ
7.2 व्यापार खाता
7.3 लाभ एवं हानि खाता
7.4 आर्थिक चिट्ठा
7.5 अन्तिम खातों के प्रस्तुतीकरण की विधियॉ
7.6 सारांश
7.7 शब्दावली
7.8 बोध प्रश्न
7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
7.10 स्वपरख प्रश्न
7.11 सन्दर्भ पुस्तकें

उद्धेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि –

- वित्तीय विवरणों का अर्थ समझ सकें।
- व्यापार खाता, लाभ एवं हानि खाता और आर्थिक चिट्ठे की मदों को समझ सकें।
- अन्तिम खातों के प्रस्तुतीकरण की विधियों का विवेचन कर सकेंगे।

7.1 वित्तीय विवरणों का अर्थ

मूल रूप में, वित्तीय लेखांकन उपक्रम की वित्तीय स्थिति एवं प्रदर्शन की विस्तृत सूचनाओं का संगठित सारांश हैं। परम्परागत रूप में, शब्द 'वित्तीय विवरण' केवल दो आधारभूत विवरणों, जिनका विवरण निम्नवत है, का उल्लेख करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है:

(अ) आर्थिक चिट्ठा (अथवा स्थिति विवरण) जो एक उपक्रम की वित्तीय स्थिति एक निश्चित समय पर प्रदर्शित करता है।

(ब) व्यापार और लाभ एवं हानि खाता (अथवा आय विवरण) जो व्यावसायिक क्रियाओं के वित्तीय प्रदर्शन को एक लेखांकन अवधि में प्रदर्शित करता है।

आजकल, इन दो आधारभूत वित्तीय विवरणों के अतिरिक्त व्यवहार में प्रतिधारित आय का विवरण, रोकड़ प्रवाह विवरण और मूल्य संवर्द्धन विवरण भी बनाए जाते हैं।

7.2 व्यापार खाता

एक लेखांकन अवधि में अन्त में एक तलपट को तैयार करने के पश्चात अगला चरण व्यापार खाते को तैयार करना होता है।

व्यापार खाते का अर्थ

व्यापार खाता वह वित्तीय विवरण है जो एक लेखांकन अवधि के अर्न्तगत माल और सेवाओं के क्रय और विक्रय के परिणामों को प्रदर्शित करता है।

व्यापार खाते का उद्देश्य

व्यापार खाता एक लेखांकन अवधि के अर्न्तगत सकल लाभ या सकल हानि ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। इस खाते को बनाने का आधार वस्तुओं और सेवाओं के विक्रय मूल्यों का विक्रय वस्तुओं और प्रदत्त सेवाओं की लागत से मिलान है। सकल लाभ का आशय संचालन आय का प्रत्यक्ष संचालनात्मक व्ययों पर अधिक्य है।

व्यापार खाते के तत्व

व्यापार खाते के डेविट (नाम) पक्ष में कई मदें प्रदर्शित होती है। व्यापार खाते को निम्नलिखित मदों से डेविट किया जाता है।

(अ) प्रारम्भिक रहतिया से आशय विगत लेखांकन अवधि के अन्त में विक्रय न हो पाये माल के अन्तिम रहतिये से है, जिसे चालू लेखांकन अवधि में आगे लाया गया है।

(ब) क्रय से आशय उस माल से है, जिसे पुनः विक्रय के लिए लाया गया है। क्रय में नकद के साथ–साथ उधार क्रय भी सम्मिलित है। निम्नलिखित मदों को क्रय की कुल धनराशि से घटाकर प्रदर्शित किया जाता हैः

i. क्रय वापसी अथवा वाह्य वापसी (अर्थात आपूर्तिकर्ता को वापस किया गया माल)

ii. व्यापारी द्वारा अपने व्यक्तिगत प्रयोग हेतु किया गया आहरण।

(iii) मुफ्त नमूनों के रूप में माल का विक्रय

(iv) दान के रूप में प्रदत्त माल

(स) प्रत्यक्ष व्ययों से आशय उन उन व्ययों से हैं जिन्हें क्रय की अवस्था से माल का विक्रय की दशा में लाने की अवस्था तक किया गया हैं। इन व्ययों में निम्नांकित सम्मिलित हैं :

(i) आन्तरिक भाड़ा

(ii) आयात कर

(iii) चुगीं

(iv) बाह्य भाड़ा और आन्तरिक ढुलाई

(v) मजदूरी

व्याापार खाते के जमा पक्ष में प्रदर्शित की जाने वाली मदें–

व्याापार खाते को निम्नांकित मदों से क्रेडिट किया जाता हैं :

(अ) विक्रय से आशय उन वस्तुओं से है जिन्हें पुनः विक्रय के लिए क्रय किया गया हैं। विक्रय में साथ–साथ उधार विक्रय भी सम्मिलित होता हैं। विक्रय वापसी अथवा आन्तरिक वापसी (अर्थात ग्राहकों के द्वारा लौटाया गया माल) को कुल विक्रय की धनराशि में से घटाकर प्रदर्शित किया जाता हैं।

(ब) अन्तिम रहतिया से आशय लेखांकन अवधि के अन्त में विक्रयन हो पाये माल के स्टाक से हैं। रूढ़िवादिता की परम्परा के अनुसार रहतिये को लागत अथवा शुद्ध वसूली मूल्य (एन0आर0वी0) में जो भी कम हो पर मूल्यांकित किया जाता हैं। उदाहरणार्थ यदि अन्तिम रहतिये की लागत 30,000 रू0 हैं किन्तु इसका इसका बाजार मूल्य 40,000 रू0 हैं, तो अन्तिम रहतिये को 40,000 रू0 माना जायेगा। इस व्यवहार के पीछे तर्क प्रत्याशित हानियों के लिए व्यवस्था करने से हैं।

व्यापार खाते को बनाना

व्यापार खाते को बनाने के लिए व्यापार खाते से सम्बन्धित समस्त मदों के खातों के शेषों को हस्तांतरित करने के लिए प्रविष्टियां करना आवश्यक हैं। इस हस्तान्तरण के लिए आवश्यक प्रविष्टिओं को अन्तिम प्रविष्टियाँ कहते हैं क्योंकि ऐसी प्रविष्टियों से समस्त सम्बन्धित खाते बन्द हो जायेंगे।

व्यापार खाते का प्रारूप

व्याापार खाते का एक सामान्य प्रारूप निम्नवत प्रदर्शित किया गया हैं :

व्याापार खाते का प्रारूप

व्यापार खाता.................को समाप्त होने वाली समयावधि के लिए

नाम **जमा**

विवरण	**धनराशि**	**विवरण**	**धनराशि**
प्रारंमिक रहतिया को	————	विक्रय से ,,,,,,,,,,,,,,,,,	————
क्रय को	————	घटाया वापसी ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	————
मजदूरी को	————	अन्तिम रहतिया से	————
प्रत्यक्ष व्यय को	————		————
सकल लाभ को	————		————
	————		————

7.3 लाभ एवं हानि खाता

व्याापार खाते तैयार करने के बाद, अगला चरण लाभ एवं हानि खाता तैयार करना है :

लाभ एवं हानि खाते का आशय

लाभ एवं हानि खाता वित्तीय विवरणों में से एक हैं। इसमें एक लेखांकन अवधि के अन्तर्गत व्यवसाय के वित्तीय परिणामों को प्रदर्शित किया जाता हैं।

लाभ एवं हानि खाते का उद्देश्य

लाभ एवं हानि खाता एक लेखांकन अवधि के अन्तर्गत लेखांकन इकाई के द्वारा अर्जित शुद्ध लाभ अथवा उत्पन्न हुई शुद्ध हानियों को निर्धारित करने के लिए बनाया जाता हैं।

शुद्ध लाभ

शुद्ध लाभ का अर्थ हैं समस्त आगमों (चाहे संचालनात्मक हो या गैर संचालनात्मक) का समस्त व्ययों एवं हानियों (चाहे संचालनात्मक हो या गैर संचालनात्मक) पर आधिक्य।

संचालनात्मक लाभ

संचालनात्मक लाभ का अर्थ हैं परिचालन आय का परिचालन व्ययों एवं हानियों पर आधिक्य। यह संचालनात्मक क्रियाओं को चलाने का परिणाम हैं।
परिचालन क्रियाऐं उपक्रम की प्रमुख आय–अर्जन क्रियाओं एवं अन्य क्रियाओं के, जो विनियोजन अथवा वित्तीय क्रियाऐं नहीं हैं, परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं। उदाहरण के लिए भवन निर्माताओं अथवा प्रापर्टी डीलरों के द्वारा भवनों का विक्रय संचालनात्मक क्रियाऐं हैं। तृतीय'पक्षकारों को उनके द्वारा ऋणों की स्वीकृति विनियोजन क्रियाऐं हैं। तृतीय पक्षकारों से उनके द्वारा ऋण लिया जाना वित्तीय क्रियाऐं हैं।

लाभ एवं हानि खाते के संघटक :

समस्त प्रत्यक्ष आय, व्यय हानियाँ (अर्थात व्यापार खाते के नाम पक्ष में प्रदर्शित मदों को छोडकर लाभ एवं हानि खाते के नाम पक्ष में प्रदर्शित की जाती हैं जबकि समस्त अप्रत्यक्ष आय (अर्थात लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में प्रदर्शित की गयी मदों को छोडकर) लाभ एवं हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में प्रदर्शित की जाती हैं।

लाभ एवं हानि खाते को तैयार करना :

लाभ एवं हानि खाते को तैयार करने के लिए आवश्यक हैं –
(अ) सकल लाभ/सकल हानि के नीचे लाना और (ब) लाभ एवं हानि खाते के समस्त सम्बन्धित मदों के खातों के शेषों के स्थानान्तरण हेतु आवश्यक प्रवष्टियाँ करना।

लाभ एवं हानि खातों प्रारूप :

लाभ एवं हानि खाते का एक सामान्य प्रारूप निम्नवत दिया गया है:

लाभ और हानि खाता

31 मार्च 201,,,,,,,,,, को समाप्त होने वाला वर्ण के लिए

विवरण	धनराशि	विवरण	धनराशि
सकल हानि नीचे लाये को	----	सकल लाभ नीचे लाये से	----
वेतन मजदूरी को	----	कटौती प्राप्त से	----
किराया, दरें एवं कर को	----	कमीशन अर्जित से	----
आग्नि बीमा प्रीमियम को	----	विपणन योग्य प्रतिभूनियों पर ब्याज से	----
मरम्मत एवं रखरखाव को	----	विपणन योग्य प्रतिभूतियों पर लाभ से	----
ह्रास को	----	किराया अर्जित से	----
अंकेक्षण शुल्क को	----	शुद्ध हानि*	----
बैंक व्यय को	----	पूंजी खाते में हस्तांतरित	----
कानूनी शुल्क	----		
व्यय को	----		

व्यय को वाह्य ढुलाई को वाह्य भाडा विक्रयकर्ता को कमीशन को यात्रा व्यय को मनोरंजन व्यय को विक्रय प्रवर्तन व्यय को विज्ञापन एवं प्रचार को डूबत ऋण को संवेष्ठन व्यय को ऋण एवं ब्याज को स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर हानि को शुद्ध लाभ को पूंजी खाते में हस्तांतरित	——— ——— ——— ——— ——— ——— ——— ——— ——— ——— ——— ——— ——— ———		
	———		———

नोट : शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि प्रदर्शित की जायेगी।

7.4 आर्थिक चिट्ठा

लाभ और हानि खाते को तैयार करने के बाद अगला चरण आर्थिक चिट्ठे को बनाना हैं।

आर्थिक चिट्ठा का अर्थ

एक आर्थिक चिट्ठा एक दी हुई तिथि को एक उपक्रम की वित्तीय स्थिति पर एक विवरण होता हैं जिसमें सम्पत्तियाँ, वाह्य दायित्व और पूँजी एवं संचय प्रदर्शित होता हैं। इसे आर्थिक चिट्ठा (तुलन प्राप्त) इसलिए कहा जाता हैं क्योंकि यह उन खातों के शेषों (अर्थात व्यक्तिगत वास्तविक एवं काल्पनिक सम्पत्तियों के खाते) का एक विवरण हैं, जिन्हें व्यापार एवं लाभ और हानि खाते के तैयार होने तक बन्द नहीं किया गया होता हैं।

आर्थिक चिट्ठे की विशेषताऐं

आर्थिक चिट्ठे की विशेषताऐं संक्षिप्त रूप में निम्नवत् हैं :

- एक आर्थिक चिट्ठा केवल एक विवरण हैं, खाता नहीं। इसका कोई नाम पक्ष या जमा पक्ष नहीं होता हैं। दो पक्षों को 'सम्पत्तियाँ' और 'दायित्व' कहा जाता हैं।
- एक आर्थिक चिट्ठा एक निश्चित समय बिन्दु पर बनाया जाता हैं और एक निश्चित समयावधि में नहीं। आर्थिक चिट्ठे में निहित सूचना उसी निश्चित समय बिन्दु पर ही सत्य हैं, जिस पर इसे बनाया गया हैं।
- एक आर्थिक चिट्ठा खाता बही के उन खातों के शेषों का सारांश हैं, जिन्हें व्यापार एवं लाभ और हानि खाते में हस्तान्तरण करने तक बन्द नहीं किया गया होता हैं।
- एक आर्थिक चिट्ठा सम्पत्तियों की प्रवृति मूल्य और दायित्वों की प्रकृति एवं मूल्य को एक दी हुई तिथि पर प्रदर्शित करता हैं।

आर्थिक चिट्ठे को तैयार करने की आवश्यकता

आर्थिक चिट्‌ठे को तैयार करने का उद्देश्य निम्नलिखित है :

- व्यवसाय की सम्पत्तियों की प्रकृति एवं मूल्य को निश्चित करना।
- व्यवसाय के दायित्वों की प्रवृति एवं धनराशि को निश्चित करना।
- उपक्रम की वित्तीय शोधन क्षमता को ज्ञात करना। एक उपक्रम को तब शोधन क्षमतावान माना जायेगा जबकि इसकी सम्पत्तियॉ इसके वाह्य दायित्वों से अधिक होती हैं।

आर्थिक चिट्‌ठे के संघटक :

भारत में हम प्रायः आर्थिक चिट्‌ठे को T फार्म में बनाते हैं जिसमें चिट्‌ठे के दायें पक्ष को 'सम्पत्ति' पक्ष और बायें पक्ष को 'दायित्व' पक्ष कहा जाता है, यद्यपि यह व्यवहार समस्त विश्व में समरूप नहीं हैं।

संपत्तियों और दायित्वों का समूहीकरण

'समूहीकरण' शब्द से तात्पर्य एक समान प्रकृति की मदों को समान शीर्षक के अन्तर्गत लाने से हैं। उदाहरणार्थ 'व्यापारिक लेनदार' शीर्षक के अन्तर्गत समस्त आपूर्तिकर्ताओं, जिनसे माल उधार क्रय किया गया हैं, के खातो के शेषों को प्रदर्शित किया जाता हैं। 'श्रेणीयन' शब्द से अभिप्राय उस क्रम से है जिसमें विभिन्न सम्पत्तियों एवं दायित्वों को आर्थिक चिट्‌ठे मे प्रदर्शित किया जायेगा। सम्पत्तियों एवं दायित्वों को या तो तरलता के क्रम में अथवा स्थायित्व के क्रम में दिखाया जा सकता हैं।

तरलता का क्रम

1. सम्पत्तियों को उनके तरलता के क्रम में अनुविन्यसित किया जाता है अर्थात सर्वाधिक तरल सम्पत्ति (जैसे रोकड़ हाथ में), को पहले दिखाया जायेगा। सबसे कम तरल सम्पत्ति (जैसे ख्याति) को अन्त में दिखाया जायेगा। सबसे कम तरल सम्पत्ति का अर्थ ऐसी सम्पत्ति नहीं है, जिसे नकदी में परिवर्तित नहीं किया जा सकता हैं।
2. दायित्वों को भुगतान की आवश्यकता के क्रम में अनुविन्यसित किया जाता हैं अर्थात सर्वाधिक आवश्यक भुगतानों (जैसे आल्पकालीन लेनदारों) को सर्वप्रथम दिखाया जाता हैं। सब से कम आवश्यक भुगतानों (जैसे दीर्घकालीन लेनदारों) को अन्त में दिखाया जाता हैं। साधारणतया, बैकिंग एवं वित्तीय संस्थानों एकल स्वामित्व और साझेदारी उपक्रमों के द्वारा अपने आर्थिक चिट्‌ठे तरलता के क्रम में बनाए जाते हैं।

आर्थिक चिट्‌ठे का प्रारूप

तरलता के क्रम में आर्थिक चिट्‌ठे का सामान्य प्रारूप नीचे दिया गया हैं :

दायित्व	धनराशि	सम्पत्तियॉ	धनराशि
<u>चालू दायित्व :</u>		<u>चालू सम्पत्तियॉ :</u>	
बैंक अधिविकर्ष	---	रोकड़ हाथ में	---
देयविपत्र	---	रोकड़ बैंक में	---
अदत्त व्यय	---	प्राप्त विपत्र	---
विविध लेनदार	---	विविध देनदार	---

अनुपार्जित आय	----	पूर्वदत्त व्यय	----
दीर्घकालीन दायित्व :		उपार्जित आय	----
ऋण	----	अन्तिम रहतिया	----
पूँजी		विनियोग	----
प्रारम्भिक शेष	----	स्थायी सम्पत्तियॉ :	
जोड़ा : शुद्ध लाभ	----	फर्नीचर एवं फिक्सचर्स	----
घटाया : शुद्ध हानि	----	प्लाट एवं मशीनरी	----
घटाया : आहरण	----	भवन	----
		भूमि	----
		ख्याति	----
	----		----

स्थायित्व का क्रम :

यह क्रम तरलता के क्रम का ठीक विपरीत है।

- सम्पत्तियों को उनके स्थायित्व के क्रम में अनुविन्यसित किया जाता है अर्थात सबसे कम तरल सम्पत्ति (जैसे ख्याति) को सर्वप्रथम दिखाया जाता है और सबसे अधिक तरल सम्पत्ति (जैसे रोकड़ हाथ में) को अन्त में दिखाया जाता है।
- किए जाने वाले सबसे कम आवश्यक भुगतान (जैसे स्वामियों का) सर्वप्रथम दिखाया जाता है और किए जाने वाले सर्वाधिक आवश्यक भुगतान (जैसे अल्पकालीन लेनदारों) को अन्त में दिखाया जाता है।
- कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत परिभाषित कम्पनी के लिए आर्थिक चिट्ठा स्थायित्व के क्रम में बनाया जाना आवश्यक है।

7.5 अन्तिम खातों के प्रस्तुतीकरण की विधियॉ

व्यापार एवं लाभ और हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा या तो क्षैतिज प्रारुप में अथवा लम्बवत प्रारुप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

(अ) क्षैतिज प्रारुप प्रस्तुतीकरण के इस प्रारुप में मदों को 'T'प्रारुप में प्रस्तुत किया जाता है।

(ब) लम्बवत प्रारुप प्रस्तुतीकरण के इस प्रारुप में, मदों को एक मात्र कॉलम विवरण में उद्देश्यपूर्ण क्रम में प्रस्तुतीकरण किया जाता है। आय विवरण और आर्थिक चिट्ठे के प्रस्तुतीकरण का लम्बवत प्रारुप निम्नवत प्रदर्शित है :

31 मार्च 2013 का समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ए0बी0सी0 लिमिटेड का आय–विवरण

विवरण	धनराशि	धनराशि

1.	**शुद्ध विक्रय**		
	विक्रय (सकल)	–––	
	घटाया : वापसी	–––	–––
2.	**बेचे गए माल की लागत**		
	प्रारंभिक रहतिया	–––	
	जोड़ा : क्रय	–––	
	घटाया : वापसी	–––	
	जोड़ा : प्रत्यक्ष व्यय	–––	–––
	ढुलाई / आन्तरिक भाड़ा		
	मजदूरी एवं वेतन	–––	
	विक्रय हेतु उपलब्ध माल की लागत	–––	
	घटाया : अन्तिम रहतिया	–––	–––
3.	**सकल लाभ (1–2)**		–––
4.	**संचालनात्मक व्यय / परिचालन व्यय**		
(अ)	**विक्रय व्यय :**		
	बाह्य भाड़ा	–––	
	कटौती स्वीकृत	–––	
	कमीशन स्वीकृत	–––	
	यात्रा व्यय	–––	
	मनोरंजन व्यय	–––	
	डूबत ऋण	–––	–––
(ब)	**कार्यालय एवं प्रशासनिक व्यय**		
	वेतन एवं मजदूरी	–––	
	किराया, दरें एवं कर	–––	
	मरम्मत	–––	
	बीमा	–––	
	छपाई एवं स्टेशनरी	–––	
	जल एवं विद्युत	–––	
	डाक एवं तार	–––	
	कर्मचारी कल्याण व्यय	–––	
	यात्रा व्यय	–––	
	विविध व्यय	–––	
	ह्रास	–––	–––
5.	**शुद्ध परिचालन लाभ / हानि (3–4)**		–––
6.	**शुद्ध गैर–परिचालन परिणाम**		
(अ)	**अर्जित ब्याज**		
	कमीशन प्राप्त	–––	
	कटौती प्राप्त	–––	

	विविध आय	———	———
(ब)	**गैर–परिचालन व्यय एवं हानियॉं**		
	ब्याज स्वीकृत	———	———
	स्थायी सम्पत्तियों के विक्रय पर हानि	———	———
	7.शुद्ध लाभ (5+6)		....

आर्थिक चिट्‌ठे का लम्बवत प्रारूप :

	विवरण		धनराशि	धनराशि
(अ)	**कोष के साधन**			
	(अ) स्वामीगत कोष		xxx	
	(ब) दीर्घकालीन ऋण		xxx	xxx
	कोषों का प्रयोग			
	(अ) शुद्ध कार्यशील पूॅंजी			
	(i) चालू सम्पत्तियां			
	रोकड़ हाथ में	xxx		
	रोकड़ बैंक में	xxx		
	प्राप्य विपत्र	xxx		
	अर्जित आय	xxx		
	देनदार	xxx		
	रहतिया	xxx		
	पूर्वदत्त व्यय	xxx	xxx	
	(ii) **घटाया : चालू दायित्व**			
	बैंक अधिविकर्ष	xxx		
	अदत्त व्यय	xxx		
	देय विपत्र	xxx		
	व्यापारिक लेनदार	xxx		
	अनुपार्जित आय	xxx	xxx	xxx
	(ब) विनियोग			xxx
	(स) स्थायी सम्पत्तियॉं			
	फर्नीचर एवं फिक्सचर्स	xxx		
	पेटेन्ट एवं ट्रेडमार्क	xxx		
	प्लान्ट एवं मशीनरी	xxx		
	भवन	xxx		
	भूमि	xxx		
	ख्याति	xxx	xxx	xxx

XXX

स्वामीगत कोषों को प्रदर्शित करने वाला विवरण

	विवरण		धनराशि	धनराशि
(अ)	पूँजी आरम्भ में			XXX
(ब)	जोड़ा : अतिरिक्त लगायी गयी पूँजी	XXX		
	पूंजी पर ब्याज	XXX		
	साझेदार को वेतन	XXX		
	चालू लेखांकन अवधि के लिए लाभ	XXX	XXX	XXX
(स)	घटाया : आहरण	XXX		
	आहरण पर ब्याज	XXX		
	चालू लेखांकन अवधि के लिए हानि	XXX		
(द)	वर्ष के अन्त में पूंजी (योग (अ)(ब)(स))			XXX

अन्तिम खातों में समायोजनाऐं : तलपट बनाते समय कई ऐसे लेन–देन होते है जिन्हें उनके घटित न होने अथवा कभी–कभी कुछ लेन–देनों के त्रुटिवश छूट जाने के कारण तलपट में सम्मिलित नहीं किया जाता हैं । लाभ एवं हानि का सही एवं उचित चित्र निर्धारित करने के लिए लेखाकार को यह आवश्यक हो जाता हैं कि वह ऐसे लेन देनों को ध्यान में रखे। तलपट के अन्त में दिए जाने वाले ऐसे लेन–देनों को समायोजनाऐं कहा जाता हैं।

अन्तिम खातों के तैयार करते समय समायोजनाऐं करने का औचित्य :

समायोजनाओं के साथ अन्तिम खाते तैयार करने में ध्यान में रखने योग्य महत्वपूर्ण बाते निम्नवत हैं :

(अ) आय की पहचान का सिद्धान्त जिसके द्वारा या आवश्यक हैं कि समान्यतया आय की उसी अवधि में पहचान की जानी चाहिए जिसमें विक्रय हुआ माना जाता हैं।

(ब) मिलान सिद्धान्त जिसके द्वारा यह आवश्यक हैं कि व्यय की उसी अवधि में पहचान की जानी चाहिए जिससे जिससे संबंधित आय हैं। व्यय की पहचान आय की पहचान से सम्बन्धित होती हैं। व्यय को आय का अनुसरण करने देना चाहिए।

सभी आयें, व्यय और आगम की प्रकृति की हानियॉ व्यापार एवं लाभ और हानि खाते में दिखायी जाती हैं। उपार्जन आधार पर व्यापार एवं लाभ और हानि खाता बनाते समय सामान्यतया व्यवहार में निम्नाकिंत मार्गनिर्देशों का अनुपालन किया जाता हैं :

(अ) कोई व्यय जिसका भुगतान हो चुका हो, किन्तु वह आगामी अवधि का हो, को सम्मिलित नहीं किया जाता हैं।

(ब) कोई व्यय जो चालू लेखांकन अवधि से सम्बन्धित हैं, चाहे नकद भुगतान किया गया हो या नहीं, सम्मिलित किया जाता हैं।

(स) आय अथवा प्राप्ति जो पहले ही प्राप्त हो गयी हैं, किन्तु आगामी अवधि की हो, को सम्मिलित नहीं किया जाता हैं।

(द) आय अथवा प्राप्ति जो चालू लेखांकन अवधि से सम्बन्धित हैं, चाहे नकद में प्राप्त हो या नहीं, सम्मिलित किया जाता हैं।

तलपट से बाहर प्रदर्शित समायोजनाओं की मदों को प्रविष्ट करना :
यदि समायोजन का कोई मद तलपट से बाहर प्रदर्शित किया गया हो, तो इसे अन्तिम खातों में दो उपयुक्त स्थानों पर प्रदर्शित किया जाता हैं।
तलपट से अन्दर प्रदर्शित समायोजनाओं की मदों को प्रविष्ट करना :
यदि समायोजन की कोई मद तलपट के अन्दर प्रदर्शित हो, तो इसे अन्तिम खातों में केवल एक उपयुक्त स्थान पर प्रदर्शित किया जाता हैं। ऐसी मदों की प्रविष्टि निम्नवत् प्रदर्शित की गई हैं :

(अ) अन्तिम रहतिया–चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में चालू सम्पत्तियों की तरह दिखाया जायेगा।
(स) पूर्वदत्त व्यय–संपत्ति पक्ष में चालू संपत्तियों की तरह दिखाया जायेगा।
(द) उपार्जित आय–संपत्ति पक्ष में चालू संपत्तियों की तरह दिखाया जायेगा।
(य) अनुपार्जित आय–दायित्व पक्ष में चालू दायित्वों की तरह दिखाया जायेगा।
(र) ह्यस को लाभ एवं हानि खाते के नाम पक्ष में पृथक मद के रुप में दिखाया जायेगा।

रोकड़ प्रवाह विवरण :

रोकड प्रवाह :रोकड़ प्रवाह के विषय में सूचना वित्तीय विवरणों द्वारा रोकड़ प्रवाह विवरण के माध्यम से प्रदान की जाती है। उपक्रम के रोकड़ प्रवाह के विषय में सूचना इसके विनियोजन, वित्तीय और संचालनात्मक क्रियाओं के एक निश्चित प्रतिवेदन अवधि के अर्न्तगत मूल्याकंन में उपयोगी होती है। यह सूचना उपयोगकर्ताओं को उपक्रम की रोकड़ या रोकड़ के समान सम्पत्तियों को सृजित करने की योग्यता एवं उपक्रम के द्वारा इन रोकड़ प्रवाहों का उपयोग करने की आवश्यकता का मूल्यांकन करने के लिए आधार प्रदान करने में उपयोगी होती है।

.................................को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए रोकड़ प्रवाह विवरण का प्रारुप

रोकड़ प्रवाह विवरण	₹	₹
संचालनात्मक क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
शुद्ध लाभ	xxx	
समायोजनाऐं :		
ह्रास (क्रियात्मक टिप्पणी (IV))	xxx	
प्लाट के विक्रय पर लाभ	xxx	
ब्याज पर व्यय	xxx	
कार्यशील पूॅजी में परिवर्तनों से पूर्व संचालनात्मक लाभ	xxx	
समायोजनाऐं :		
देनदारों में वृद्धि (प्रावधान घटाकर)	xxx	
रहतिया एवं चालू कार्य में वृद्धि	xxx	
लेनदारों में वृद्धि	xxx	
संचालनात्मक क्रियाओं से शुद्ध रोकड़		xxx

<u>विनियोजन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह</u>		
प्लाण्ट एवं मशीनरी का क्रय	xxx	
प्लाण्ट के विक्रय से प्राप्त धनराशि	xxx	
स्वायत्त सम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त धनराशि	xxx	
व्यापारिक निवेशों में वृद्धि	xxx	
<u>विनियोजन क्रियाओं में प्रयुक्त शुद्ध रोकड़ प्रवाह</u>		xxx
<u>वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह</u>		
	xxx	
ऋणपत्रों के कटौती पर निर्गमन की धनराशि	xxx	
	xxx	
ऋणपत्रों के ब्याज का भुगतान	xxx	
वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह		
रोकड़ का प्रारम्भिक शेष		xxx
		xxx
रोकड़ का अंतिम शेष		xxx

समस्यामूलक प्रश्न :

वर्ष के प्रारम्भ एवं अन्त में ए0बी0सी0 लिमिटेड के आर्थिक चिट्ठे से लिए गए खातों के शेषों में परिवर्तन निम्नाकिंत हैं :

विवरण	धनराशि में परिवर्तन नाम अथवा जमा
समता अशं पूँजी 30,000 अशं रू0 10 प्रति निर्गमित एवं पूर्ण प्रदान	0
पूँजी संचय	(49,200)
8%ऋण पत्र	(50,000)
ऋण कटौती	1,000
स्वायत्त भवन लागत पर/पुनर्मूल्यांकन	43,000
प्लाण्ट एवं मशीनरी लागत पर	60,000
प्लाण्ट एवं मशीनरी पर ह्रास	(14,400)
देनदार	50000
रहतिया एवं चालू कार्य	38500

लेनदार	(11800)
वर्ण के लिए शुद्ध लाभ	(76500)
पूर्ण वर्षो के सम्बन्ध में लाभांश भुगतान	30000
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	(3300)
व्यापारिक विनियोग लागत पर	47000
बैंक	(64300)

आपके निम्न सूचना दी गयी हैं :

(अ) वर्ष के अन्त में पूँजी संचय में एक स्वायत्त भवन के विक्रय पर अर्जित लाभ के साथ ही स्वायत्त भवन के पुर्नमूल्यांकन से उत्पन्न अवशेष सम्मिलित हैं।

(ब) वर्ष के अन्तर्गत रू0 18,000 की लागत का प्लाण्ट ,जिसके सापेक्ष रू0 13,500 का ह्रास प्रावधान किया गया था, रू0 7,000 में बेचा गया।

(स) वर्ष के मध्य में रू0 50,000 के ऋणपत्र रू0 1000 की कटौती पर नकदी में निर्गमित किए गए।

(द) वर्ष के शुद्ध लाभ की गणना प्लाण्ट के विक्रय पर लाभ को क्रेडिट करने तथा ऋण पत्रों का ब्याज घटाने के बाद की गयी हैं।

आपको एक विवरण तैयार करना है, जो यह व्याख्या कर सके कि वर्ष के दौरान अन्त तक रू0 64,300 का बैंक से उधार क्यों बढ़ गया हैं ? कर को छोड़ दीजिए।

उत्तर :

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,को समाप्त वर्ष लिए रोकड़प्रवाह विवरण

विवरण	**रू0**	**रू0**
संचालनात्मक क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह ˙ :		
शुद्ध लाभ	76,500	
समायोजनाऐं :		
ह्रास [क्रियात्मक टिप्पणी (iv)]27,000		
प्लाण्ट के विक्रय पर लाभ	(2500)	
ब्याज व्यय	2,000	
कार्यशील पूँजी परिवर्तन से पूर्व संचालन लाभ	1,03,900	
संचालन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़		**30,500**
विनियोजन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
प्लाण्ट और मशीनरी का क्रय	(78,000)	

प्लाण्ट के विक्रय की धनराशि	(7,000)	
फ्रीहोल्ड प्रापर्टी के विक्रय की धनराशि	(6,200)	
व्यापारिक विनियोग में वृद्धि	(47,000)	
विनियोजन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़		**(1,11,800)**
वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
ऋणपत्रों का कटौती पर निर्गमन से धनराशि	49,000	
ऋणपत्रों पर ब्यास का भुगतान	2,000	
पूर्ण वर्षो का लाभांश भुगतान	(30,000)	
वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध रोकड़		**17,000**
बर्हिप्रवाहों का अर्न्तप्रवाहों पर आधिक्य		**64,300**

क्रियात्मक टिप्पणियॉ :

इस प्रकार रू0 64,300 की कमी को बैंक उधार से पूरा किया गया हैं।

I. प्लांट एवं मशीनरी का अधिग्रहण

वृद्धि की धनराशि, लागत पर	60,000
जोडा : बेचे गए प्लाण्ट की लागत	18,000
क्रय किए गए प्लाण्ट एवं मशीनरी की लागत	78,000

II. प्लाण्ट के विक्रय पर लाभ =रू0 7,000–(रू0 18000–रू0 13,500)
=रू0 7,000–रू04500=रू0 2,500

III. फ्रीहोल्ड प्रापर्टी के विक्रय से धनराशि :

पूँजी संचय	49,200
घटाया : फ्रीहोल्ड प्रापर्टी में वृद्धि (दिया गया हैं)	43,000
विक्रय से धनराशि	6,200

IV. प्लाण्ट एवं मशीनरी पर वर्ष में लगाया गया ह्रास

ह्रास हेतु प्रावधान में वृद्धि (दिया गया है)	14,400
जोड़ा बेचे गए प्लाण्ट पर संचित ह्रास	13,500
वर्ष के लिए ह्रास	27,900

V. प्रासंगिक सूचना के अभाव में, विनियोग में वृद्धि को छोड़ दिया गया हैं।

व्यावहारिक प्रश्न एवं उनके उत्तर :

प्रश्न : निम्नांकित सूचना से बेचे गए माल की लागत एवं सकल लाभ भी ज्ञात कीजिए।

विवरण	**रू0**
प्रारंभिक रहतिया	15,000

क्रय	1,50,000
विक्रय	2,00,000
अन्तिम रहतिया	18,000
प्रत्यक्ष व्यय	5,000

उत्तर :

बेचे गए माल की लागत की गणना :

	रू0
प्रारम्भिक रहतिया	15,000
+ क्रय	1,50,000
+प्रत्यक्ष व्यय	5,000
–अन्तिम रहतिया	18,000
बेचे गए माल की लागत	**1,52,000**

व्यापार खाता

31 दिसम्बर, 2016 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए

विवरण	धनराशि	विवरण	धनराशि
प्रारम्भिक रहतिया को	15,000	विक्रय से	2,00,000
क्रय को	1,50,000	अंतिम रहतिया से	20,000
प्रत्यक्ष को	5,000		
सकल लाभ को	50,000		
	2,20,000		2,20,000

प्रश्न : ए0बी0सी0 लिमिटेड का 31 मार्च, 2008 का तलपट निम्नवत हैं :

31.3.2008 को तलपट

	डेबिट (रू0)	**क्रेडिट (रू0)**
पूँजी		20,000
रहतिया	8,000	
रोकड़	1,440	
मशीनरी	7,560	
क्रय	28,200	
मजदूरी	10,000	
वेतन	12,000	

कटौती	500	300
कार्यालय व्यय	2,000	
विक्रय		60,000
देनदार/लेनदार	1,600	5,400
	87,500	**85,700**

अतिंम रहतिया (31.3.2008) रू0 3000

आपको 31 मार्च 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ए0बी0सी0 लिमिटेड का व्यापार,लाभ एवं हानि खाता बनाया हैं।

उत्तर :

31 मार्च 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ए0बी0सी0 लिमिटेड का व्यापार, लाभ एवं हानि खाता

विवरण	धनराशि	विवरण	धनराशि
प्रारम्भिक रहतिया को	8,000	विक्रय से	60,000
क्रय को	28,200	अंतिम रहतिया से	3,00
मजदूरी को	10,000		
सकल लाभ को	16,800		
	63,000		**63,000**
वेतन को	12,00	सकल लाभ नीचे लाये से	16,800
कटौती को	500	कटौती से	300
संचालनात्मक व्यय को	2,000		
शुद्ध लाभ को	2,600		
	17,100		**17,100**

7.6 सारांश

वित्तीय लेखांकन उपक्रम की वित्तीय स्थिति एवं प्रदर्शन की विस्तृत सूचनाओं का संगठित सारांश हैं। व्यापार खाता एक लेखांकन अवधि के अन्तर्गत सकल लाभ या सकल हानि ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। व्यापार खाते को बनाने के लिए व्यापार खाते से सम्बन्धित समस्त मदों के खातों के शेषों को हस्तांतरित करने के लिए प्रविष्टियां करना आवश्यक हैं। इस हस्तान्तरण के लिए आवश्यक प्रविष्टिओं को अन्तिम प्रविष्टियाँ कहते हैं क्योंकि ऐसी प्रविष्टियों से समस्त सम्बन्धित खाते बन्द हो जायेंगे। लाभ एवं हानि खाता एक लेखांकन अवधि के अन्तर्गत लेखांकन ईकाई के

द्वारा अर्जित शुद्ध लाभ अथवा उत्पन्न हुई शुद्ध हानियों को निर्धारित करने के लिए बनाया जाता हैं। समस्त प्रत्यक्ष आय, व्यय हानियाँ (अर्थात व्यापार खाते के नाम पक्ष में प्रदर्शित मदों को छोडकर लाभ एवं हानि खाते के नाम पक्ष में प्रदर्शित की जाती हैं जबकि समस्त अप्रत्यक्ष आय (अर्थात लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में प्रदर्शित की गयी मदों को छोडकर) लाभ एवं हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में प्रदर्शित की जाती हैं। व्यापार एवं लाभ और हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा या तो क्षैतिज प्रारुप में अथवा लम्बवत प्रारुप में प्रस्तुत किया जा सकता है। तलपट के अन्त में दिए जाने वाले लेन–देनों को समायोजनाऐं कहा जाता हैं। यदि समायोजन की कोई मद तलपट के अन्दर प्रदर्शित हो, तो इसे अन्तिम खातों में केवल एक उपयुक्त स्थान पर प्रदर्शित किया जाता हैं, जबकिसमायोजन का कोई मद तलपट से बाहर प्रदर्शित किया गया हो, तो इसे अन्तिम खातों में दो उपयुक्त स्थानों पर प्रदर्शित किया जाता हैं। इन दो आधारभूत वित्तीय विवरणों के अतिरिक्त व्यवहार में प्रतिधारित आय का विवरण, रोकड़ प्रवाह विवरण और मूल्य संवर्द्धन विवरण भी बनाए जाते हैं।

7.7 शब्दावली

नाम पक्ष (डेबिट) या जमा (क्रेडिट) पक्ष, तलपट, पूर्वदत्त व्यय, उपार्जित आय, अनुपार्जित आय, सम्पत्तियाँ, दायित्व, एन0आर0वी0–शुद्ध वसूली मूल्य, रोकड़ प्रवाह विवरण।

7.8 बोध प्रश्न

बताइए निम्नांकित सत्य हैं अथवा असत्य

i. वित्तीय विवरण एक उद्यम की वित्तीय स्थिति एवं प्रदर्शन के विषय में विस्तृत सूचनाओं के संगठित सारांश हैं।

ii. 'वित्तीय विवरण 'शब्द आधारभूत विवरण' आर्थिक चिट्ठा को व्यक्त करता है।

iii. निर्माण खाता निर्माणी क्रियाओं में संलग्न एक उद्यम के द्वारा सकल लाभ को निर्धारित करने उद्देश्य से बनाया जाता हैं।

iv. एक आर्थिक चिट्ठा एक निश्चित लेखांकन अवधि के लिए एक उद्यम की सम्पत्तियों और दायित्वों का विवरण हैं।

v. एक समान शीर्षक के अन्तर्गत समान प्रकृति की मदों को साथ में लाना समूहीकरण कहलाता हैं।

vi. श्रेणीयन का आशय उस क्रम से हैं जिसमें सम्पत्तियों और दायित्वों को आर्थिक चिट्ठे में प्रदर्शित किया जाता हैं।

vii. तरलता के क्रम के अनुसार सर्वाधिक तरल सम्पत्ति को सर्वप्रथम दिखाया जाता हैं और सबसे आवश्यक भुगतान को अन्त में दिखाया जाता हैं।

viii. स्थायित्व के क्रम के अनुसार सबसे कम तरल संपत्तियों को सर्वप्रथम और सबसे कम आवश्यकता भुगतान को अन्त में दिखाया जाता हैं।

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.	सत्य	2.	असत्य	3.	सत्य	4.	सत्य
5.	सत्य	6.	सत्य	7.	सत्य	8.	असत्य

7.10 स्वपरख प्रश्न

1. वित्तीय विवरण क्या होता है?
2. व्यापार खाता हैं?
3. व्यापार खाते को तैयार करने की क्या आवश्यकता हैं?
4. निर्माण खाता क्या हैं? इसे बनाने का क्या उद्देश्य हैं?
5. लाभ एवं हानि खाता क्या होता हैं?
6. लाभ एवं हानि खाता बनाने की क्या आवश्यकता हैं?
7. आर्थिक क्या होता हैं।
8. आर्थिक चिट्ठे की क्या विशेषताऐं हैं?
9. आर्थिक चिट्ठा तैयार करने की क्या आवश्यकता हैं?
10. सम्पत्तियों एवं दायित्वों के समूहीकरण से क्या आशय हैं?
11. सम्पत्तियों एवं दायित्वों के श्रेणीयन से क्या आशय हैं?
12. उन रीतियों को बताइए जिनमें आर्थिक चिट्ठे का श्रेणीयन किया जा सकता हैं?
13. किस कीमत पर अन्तिम रहतिये का मूल्यांकन किया जाना चाहिए और क्यों?
14. किस कीमत पर अन्तिम स्थायी सम्पत्तियों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए और क्यों?
15. रहतिये के मूल्यांकन में निहित विधियों के नाम बताइये।
16. लम्बवत आर्थिक चिट्ठे के लाभ क्या हैं? इसे कैसे बनाया जाता हैं?

7.11 सन्दर्भ पुस्तकें

1. **एस.एन.माहेश्वरी** ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. **आर.एल.गुप्ता** , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. **शुक्ला. एवं ग्रेवाल,** एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. **अग्रवाल एवं जैन,** एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. **एस.एन.माहेश्वरी** ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई–8 अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना
8.2 आई0 एफ0 आर0 एस0 का अर्थ
 8.2.1 भारत में आई0 एफ0 आर0 एस0 के साथ सहयोग
8.3 भारत में आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने के अवसर
8.4 आई0 एफ0 आर0 एस0 को अपनाने में भारत की चुनौतियॉ
8.5 सारांश
8.6 शब्दावली
8.7 बोध प्रश्न
8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
8.9 स्वपरख प्रश्न
8.10 सन्दर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- आई0 एफ0 आर0 एस0 का अर्थ समझ सकें ।
- भारत में आई0 एफ0 आर0 एस0 को अपनाने के अवसरों की पहचान कर सकें।
- भारत में आई0 एफ0 आर0 एस0 की चुनौतियों की व्याख्या कर सकें।

8.1 प्रस्तावना

वित्तीय बाजारों के वैश्वीकरण से लेखांकन के अंतर्राष्ट्रीय मानकों की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित हुआ है और इससे लेखांकन मानकों के उच्च गुणवत्तापूर्ण, वैश्विक रूप में स्वीकार्य एकल लेखांकन मानक समूहों की ओर ले जाने वाली कोशिशें अधिक गहन हो गयी हैं। विभिन्न देशों में असमान नियमों के समूहों के अनुसार तैयार किये गये लेखांकन विवरणों का अर्थ है, मानकों के अनेकों राष्ट्रीय समूह होना, जिसमें एक समान लेन देनों के अपने स्पष्टीकरण हों, जिससे राष्ट्रों के मध्य वित्तीय विवरणों की तुलना, विश्लेषण और निर्वचन एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है।

8.2 आई0 एफ0 आर0 एस0 का अर्थ

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक (आई0 एफ0 आर0 एस0) अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक बोर्ड (आई0 एफ0 आर0 एस0) के द्वारा विकसित लेखांकन मानकों के समूह हैं, जो कंपनियों के वित्तीय विवरणें को बनाने में वैश्विक मानक माने जा रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक विश्व व्यापक मान्यता प्राप्त लेखांकन संरचना के प्रतिरूप बन चुके हैं। वर्ष 2001 में अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन बोर्ड (आई0ए0एस0बी0) ने

आई0 एफ0 आर0 एस0 को निर्धारित करने वाले उत्तरदायी संगठन अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक समिति (आई0ए0एस0सी0) का स्थान ग्रहण किया । आई0 एफ0 आर0 एस0 शब्द के संकुचित एवं व्यापक अर्थ दोनों हैं। संकुचित रूप में एफ0आर0एस0 घोषणाओं की नयी मानक संख्याओं की श्रृंखला को अभिव्यक्त करती है जिसे आई0ए0एस0बी0 ने अपने पूर्ववर्ती आई0ए0एस0 श्रृंखला से भिन्न रूप में निर्गमित किया है।

व्यापक रूप में, आई0 एफ0 आर0 एस0 से आशय आई0ए0एस0बी0, आई0एफ0आर0आई0सी0, आई0ए0एस0सी0 एवं एस0आई0सी0 सहित आई0ए0एस0बी0 की सम्पूर्ण संस्था द्वारा की गयी घोषणाओं से है।

आई0ए0एस0सी0 द्वारा निर्धारित मानकों को अंतर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक (आई0ए0एस0) को विचार हेतु सौंपा जाता है और आई0ए0एस0बी0 के द्वारा निर्धारित नये मानक आई0 एफ0 आर0 एस0 को विचारार्थ सौंपे जाते हैं। अब तक 29 आई0ए0एस0 और 9 आई0एफ0आर0एस0 निर्गमित किये गये हैं। आई0एफ0आर0एस0 की आधारभूत विशेषता है कि यह नियम आधारित की अपेक्षा सिद्धांत आधारित मानक है।

8.2.1 भारत में आई0 एफ0 आर0 एस0 के साथ सहयोग

वर्तमान में, राष्ट्रस्तरीय गैप (GAAP) वैश्विक पूंजी बाजारों के लगातार एकीकृत होने के कारण त्रुटिपूर्ण हो गये हैं और विभिन्न देश आई0 एफ0 आर0 एस0 की आर जा रहे हैं। वित्तीय प्रतिवेदन, अंकेक्षण एवं नीति के उच्च गुणवत्तायुक्त मानक उस विश्वास की नींव का निर्माण करते हैं, जो विनियोक्ता के द्वारा वित्तीय विवरणों के प्रति प्रदर्शित किया जाता है और इस प्रकार ये विभिन्न देशों की आर्थिक संवृद्धि एवं वित्तीय स्थायित्व के प्रति योगदान करने में एकीकरण की भूमिका का निर्वहन करते हैं। (व्यापार एवं विकास बोर्ड 2006)। वर्तमान में, 100 से अधिक देशों जैसे यूरोपीय संघ, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और रूस ने अपने देशों में आई0 एफ0 आर0 एस0 के प्रयोग की अनुमति प्रदान की है। भारत के संदर्भ में, यद्यपि भारतीय लेखांकन मानक आई0ए0एस0बी0 के द्वारा निर्गमित मानकों पर आधारित है, किन्तु, देश में व्यापक कानून एवं नियामक वातावरण, सैद्धांतिक मुद्‌दों और आर्थिक वातावरण आदि के कारण कुछ निश्चित भिन्नताऐं भी हैं। वर्ष 2007 में भारतीय चार्टर्ड लेखाकार संस्थान (आई0ए0सी0आई0) ने निश्चित किया कि भारत न्यायिक क्षेत्रों में बढते विकास के परिदृश्य में, जिसने आई0 एफ0 आर0 एस0 से एकीकरण के लिये समय सूची निश्चित कर दी है, आई0 एफ0 आर0 एस0 के साथ एक निर्धारित समय संरचना में सम्मिश्रण की कार्यवाही करे। आई0सी0ए0आई0 ने 2007 में स्थिति पत्र और 2009 में अवधारणा पत्र प्रस्तुत किया है। जनवरी 2010 में कंपनी मामलों के मंत्रालय (एम0सी0ए0) ने भारत में आई0 एफ0 आर0 एस0 के साथ अनिवार्यतः 1 अप्रेल 2011 से सम्मिश्रण करने की प्रक्रिया का रोडमैप निर्धारित किया। सामान्य शब्दों में, सम्मिश्रण या एकीकरण, शब्द का अर्थ आई0एस0आर0एस0 के साथ एकरूपता प्राप्त करता है। भारत ने जानबूझकर सम्मिश्रण या एकीकरण मॉडल को अपनाये जाने वाले मॉडल की तुलना में, प्राथमिकता देश की कानूनी एवं नियामक चुनौतियों के

साथ–साथ देश के व्यवसायिक एवं आर्थिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए प्रदान की है। यद्यपि इसे अब तक क्रियान्वित नही किया गया है और वर्ष 2004 से क्रियान्वित किया जाना प्रत्याशित है।

वर्तमान भारतीय लेखांकन मानकों का आई0एफ0आर0एस0 के साथ सैद्धांतिक मतभेद हैं। वर्तमान आई0ए0एस0 और उनके समान आई0 एफ0 आर0 एस0 के मध्य मतभेद के अंश को दृष्टिगत करते हुए सम्मिश्रण प्रक्रिया में उपरोक्त वर्णित चुनौतियों को पर्याप्त रूप में ध्यान में रखा गया है। भारत सरकार ने एक नये कम्पनी कानून को लेकर आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने के लिये अत्यधिक आवश्यक कानूनी एवं नियामक ढांचे में संशोधन प्रक्रिया आरम्भ की है। कम्पनी मामलों के मंत्रालय (एम0सी0ए0) की घोषणा के अनुसार कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 211(3C) के अन्तर्गत अब लेखांकन मानकों के दो भिन्न समूह होंगे, अर्थात आई0 एफ0 आर0 एस0 सम्मिश्रित या एकीकृत मानक , जिन्हें भारतीय ए0एस0 या इण्ड–ए0एस0 (IND-AS) नाम दिया गया है और वर्तमान में प्रचलित लेखांकन मानक । वैश्विक लेखांकन मानकों के साथ सम्मिश्रण किये जाने वाले लेखांकन मानक अर्थात आई0 एफ0 आर0 एस0 विभिन्न देशों में उपकमों के मध्य तुलनात्मकता की सुविधा प्रदान करते है(ए0एस0ए0 और सहयोगी 2011)।

8.3 भारत में आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने के अवसर

एकीकृत लेखांकन मानकों को अपनाने से भारतीय कम्पनियाँ जटिल एकीकरण एवं फाइलिंग प्रक्रिया से गुजरे बिना अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुॅच बनाने योग्य हो जायेंगी। आई0एफ0आर0एस0से एकीकरण का निर्णय एक मील के पत्थर की भांति निर्णय हैं और इससे महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध होने की प्रत्याशा है– जिन्हें निम्नवत समझाया गया है–:

1. संक्रमण हेतु चरणबद्ध दृष्टिकोंण :

एम0सी0ए0 जो भारत में कम्पनी एवं लेखांकन संस्थाओं का नियमन करता है, भारत में आई0एफ0आर0एस0 के एकीकरण के क्रियान्वयन हेतु अपने दृष्टिकोण में परामर्शात्मक कार्य पद्धतियों को अपनाता हैं। कई उद्योगों, नियामकों एवं नामित पेशेवरों के हितों को आई0एफ0आर0एस0 के क्रियान्वयन के प्रयास के समय ध्यान में रखा जाता हैं।

2. अन्तर्राष्ट्रीय रूप से संगत/अनुरूप वित्तीय विवरण :

भारतीय कम्पनी क्षेत्र को मुख्य लाभ यह होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगियों से की सरल तुलना एवं बैंचमार्किंग एक समान प्लेटफार्म पर हो सकेगी। (बारबोल ए0एन एवं अन्य, 2011)अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, हितधारक एवं उपयोगकर्ता भारतीय लेखांकन मानकों के आई0एफ0आर0एस0 से एकीकरण के पश्चात भारतीय कम्पनीयों के वित्तीय विवरणों का प्रभावपूर्ण ढंग से विश्लेषण कर पायेंगे। इस एकीकरण से इन विवरणों के उनके वैश्विक अग्रणी कम्पनियों के साथ तुलना की जा सकेगी। यह परीक्षण किया जा चुका है कि आई0एफ0आर0एस0 के अपनाने से वित्तीय विवरणों की तुलनात्मकता में सुधार हुआ है। (फ्रैंकोइस, ब्रोसैट एवं अन्य, 2011) इससे वैश्विक निवेशकर्ताओं की निर्णयन क्षमता भी सुधरेगी। परिणामस्वरूप, भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेशी पूँजी के

प्रवाह में भी वृद्धि होगी क्योकि अन्तराष्ट्रीय रूप में स्वीकृत लेखांकन व्यवहारों से ऐसे वित्तीय विवरणों की गुणवत्ता पर निवेशकर्ता का विश्वास भी सुधरेगा।

3. एकीकरण दृष्टिकोंण/सम्मिश्रण दृष्टिकोंण :

एकीकरण दृष्टिकोंण/सम्मिश्रण दृष्टिकोंण को इस प्रकार निश्चित किया गया है कि भारतीय मानक निर्धारक प्रचलित आई0एफ0आर0एस0मानकों का परीक्षण कर सकते हैं और यह निर्धारित करते हैं कि इन मानकों के अन्तर्गत कई विशिष्ट प्रावधान स्थनीय नियामक आवश्यकताओं या आथिक दशाओं के कारण भारत में लागू करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। आई0एफ0आर0एस0 से विचलन या पृथक होना भी तदनुसार निर्धारित किया जा सकता है, जहाँ भारतीय एकीकृत मानक आई0एफ0आर0एस0 मानकों के समान नहीं है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी बाजारों तक आसान पहुँच :

विश्व एक आर्थिक गाँव बन चुका है और वैश्विक आर्थिक मानचित्र पर भारत एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा हैं। जैसे–जैसे भारतीय कम्पनियाँ आगे बढ़ेगी और न केवल अन्य देशों में अपने प्लान्ट स्थापित करेंगी बल्कि विश्व के अन्य भागों में व्यवसायों का अधिग्रहण करेगी, वैसे ही भारतीय कम्पनियाँ आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने के लाभ प्राप्त करेंगी, इन भारतीय कम्पनियाँ के लिए सस्ते वित्तीय कोषों की मांग होगी, जो कि अन्य देशों जैसे अमेरिका, यूरोप और जापान में उपलब्ध होंगे। इन बाजारों की नियामक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारतीय कम्पनियों को अपने वित्तीय विवरण आई0एफ0आर0एस0 के अनुसार प्रस्तुत करने चाहिए, परिणामस्वरूप आई0एफ0आर0एस0 के क्रियान्वयन से न केवल वैश्विक पूँजी बाजारों के द्वार कोषों हेतु भारतीय कम्पनियों के लिए खुलेंगे बल्कि उन्हें कोष कम लागत पर भी प्राप्त होंगे। वैश्विक लेखांकन मानक पूँजी प्रवाह में बाधक तत्वों को समाप्त करेंगे एवं बाजारों में व्यापक एवं गहन निवेश का मार्ग प्रशस्त करेंगे।(डा0 चक्रवर्ती, के0सी0 2011)

4. उदारीकृत सीमा पार सूचीयन :

यह सभी के द्वारा समझा गया है कि लेखांकन के लिए एक वैश्विक भाषा को लाकर आई0एफ0आर0एस0 पूँजी एकल करने में बाजारों द्वारा वसूल किए जाने वाले जोखिम प्रीमियम को कम करेंगे क्योकि सूचना की बाधाऐं समाप्त हो जायेंगी।(डा0 कानन, आर 2009) जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि भारतीय कम्पनियों के लिए विस्तार योजनाओं की आवश्यकताऐं हैं जो कि भारत की नियामक और आर्थिक सीमाओं तक सीमित नहीं हैं। भारतीय कम्पनियाँ यूरोप एवं अन्य विदेशी पूँजी बाजारों में कोषों के एकत्रीकरण और वहाँ फर्मो के अधिग्रहण के द्वारा अपने को सूचीकृत कर रही हैं। इन बाजारों में सूचीकृत होने की प्रमुख पूर्व आवश्यकता आई0एफ0आर0एस0 आवश्यकताओं के अनुरूप खातों को बनाना है। कुछ भारतीय कम्पनियाँ, जिन्होंने यूरोपियन पूँजी बाजारों के माध्यम से कोष एकत्रित किए हैं, ने अपने वित्तीय विवरणें को आई0एफ0आर0एस0के अनुसार बनाना भी प्रारम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त, आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने से व्यक्तिगत निवेशकर्ताओं के द्वारा सीमा पार समता निवेशों को सुदृढ़ करने की संभावनाऐं भी हैं।

5. वित्तीय प्रतिवेदनों की सुधरी हुई गुणवत्ता :

आई0एफ0आर0एस0 के द्वारा अपनाए गये लेखांकन सिद्धान्त अत्यधिक संगत हैं, क्योकि उन्हें एक अकेली संस्था अर्थात आई0ए0एस0बी0 तैयार कर रही है। ये मानक अत्यधिक विश्वसनीय हैं और वित्तीय प्रतिवेदन की बेहतर गुणवत्ता को सुनिश्चित करते हैं। अनेक आधुनिक प्रवृत्ति आधारित सिद्धान्तों में से, आई0एफ0आर0एस0 उचित मूल्य दृष्टिकोंण को अपनाता हैं, जो भारतीय कम्पनियों को अपने वित्तीय प्रतिवेदनों में सम्मिलित सम्पत्तियों के सही मूल्य को प्रदर्शित करने हेतु समर्थन प्रदान करता हैं। आई0एफ0आर0एस0 को अनिवार्यतः अपनाने से शुद्धता के पूर्वानुमान एवं सूचना वातावरण की गुणवत्ता के अन्य मापों में महत्वपूर्ण सुधार होगा।

6. विविध प्रतिवेदन का उन्मूलनः

विभिन्न समूह उपक्रमों के द्वारा, आई0एफ0आर0एस0 से एकीकरण से प्रबन्ध समूह के सभी संघटकों को एकमात्र वित्तीय रिपोर्टिंग प्लेटफार्म में साथ लाने के योग्य हो जाता है। इससे विविध प्रतिवेदनों और समेकित वित्तीय विवरणों को तैयार करने में महत्वपूर्ण समायोजन करने अथवा विभिन्न स्कन्ध विपणियों में वित्तीय विवरण दाखिल करने की आवश्यकता समाप्त हो जायेगी। (ए0एस0ए0 एवं सहयोगी, 2011)। भारत में वृहत व्यावसायिक धराने जैसे टाटा, बिड़ला एवं रिलायंस की भारत में सूचीकृत कम्पनियाँ एवं अन्य विदेशी पूँजी बाजारों में पंजीकृत कम्पनियाँ भी है। भारत में पंजीकृत कम्पनियाँ भारतीय लेखांकन मानकों के अनुसार खाते तैयार करती हैं जबकि अन्य देशों में पंजीकृत कम्पनियाँ संबंधित देशों के प्रतिवेदन मानकों के अनुसार अपने वित्तीय प्रतिवेदन तैयार करती हैं। आई0एफ0आर0एस0 के क्रियान्वयन से इन कम्पनियों के द्वारा विविध वित्तीय प्रतिवेदन मानकों का उन्मूलन होना सुनिश्चित होता है।

7. पेशेवरों को लाभः–

सी0ए0 और सी0एफ0ए0 जैसे पेशेवरों, जिन्हें आई0एफ0आर0एस0 की सुदृढ़ और व्यावहारिक ज्ञान एवं विशेषज्ञता है, को उद्योग में अधिक अवसरों के मिलने की संभावनाऐं हैं।

आई0एन0डी0–ए0एस0 की सूची : लेखांकन मानकों पर राष्ट्रीय परामर्शवादी समिति (NACAS) की संस्तुति पर 1 अप्रैल 2011 को लागू समस्त आई0एफ0आर0एस0/आई0ए0एस0के समान 35 भारतीय लेखांकन मानक (इण्ड–ए0एस0)को कम्पनी मामलों के मंत्रालय ने अन्तिम रूप में स्वीकृत किया है और अपनी वैबसाइट में स्थान दिया है। यह मानक एक चरणबद्ध ढ़ग से उस तिथि से, जिसे एम0सी0ए0 के द्वारा कर एवं अन्य मुद्दों के समाधान के पश्चात् पृथक से अधिसूचित किया जाना है, क्रियान्वित किया जायेगा।

निम्नांकित एकीकृत (converged) भारतीय लेखांकन मानक (इण्ड–ए0एस0) हैं, जिन्हें एम0सी0ए0ने अपनी वैबसाइट में प्रदर्शित किया हैः

1. भारतीय लेखांकन मानक के अनुसार वित्तीय विवरणों को बनाने एवं प्रस्तुतीकरण हेतु संरचना
2. इण्ड ए0 एस0 101 भारतीय लेखांकन मानक को प्रथम बार अपनाना
3. इण्ड ए0 एस0 102 अंश आधारित भुगतान

4. इण्ड ए0 एस0 103 व्यावसायिक संयोजन
5. इण्ड ए0 एस0 104 बीमा संविदायें
6. इण्ड ए0 एस0 105 विक्रय एवं बन्द किए गए व्यवसायों में धारित गैर चालू सम्पतियाँ
7. इण्ड ए0 एस0 106 खनिज संसाधनों की खोज एवं मूल्यांकन
8. इण्ड ए0 एस0 107 वित्तीय लेखपत्रःप्रकटीकरण
9. इण्ड ए0 एस0 108 परिचालन खण्ड
10. इण्ड ए0 एस0 1 वित्तीय विवरणों का प्रस्तुतीकरण
11. इण्ड ए0 एस0 2 रहतिया
12. इण्ड ए0 एस0 7 रोकड़ प्रवाह विवरण
13. इण्ड ए0 एस0 8 लेखांकन नीतियाँ,लेखांकन पूर्वानुमानों में परिवर्तन एवं त्रुटियाँ
14. इण्ड ए0 एस0 10 प्रतिवेदन अवधि के बाद की घटनाऐं
15. इण्ड ए0 एस0 11 निर्माण संविदायें
16. इण्ड ए0 एस0 12 आयकर
17. इण्ड ए0 एस0 16 सम्पत्ति, प्लाट एवं उपकरण
18. इण्ड ए0 एस0 17 पट्टे
19. इण्ड ए0 एस0 18 आय
20. इण्ड ए0 एस0 19 कर्मचारी लाभ
21. इण्ड ए0 एस0 20 सरकारी अनुदानों के लिए लेखांकन एवं सरकारी सहायता का प्रकटीकरण
22. इण्ड ए0 एस0 21 विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन का प्रभाव
23. इण्ड ए0 एस0 23 ऋण लेने की लागत
24. इण्ड ए0 एस0 24 सम्बन्धित पक्ष प्रकटीकरण
25. इण्ड ए0 एस0 27 समेकित एवं पृथक वित्तीय विवरण
26. इण्ड ए0 एस0 28 सहायक कम्पनियों में विनियोग
27. इण्ड ए0 एस0 29 तीव्रस्फीतिक अर्थव्यवस्थायों में वित्तीय प्रतिवेदन करना
28. इण्ड ए0 एस0 31 संयुक्त उपक्रमों में हित
29. इण्ड ए0 एस0 32 वित्तीय लेखपत्र : प्रस्तुतीकरण
30. इण्ड ए0 एस0 33 प्रति अंश आय
31. इण्ड ए0 एस0 34 आन्तरिक वित्तीय प्रतिवेदन
32. इण्ड ए0 एस0 36 सम्पत्तियों का क्षय
33. इण्ड ए0 एस0 37 प्रावधान , सांयोगिक दायित्व एवं सांयोगिक सम्पत्तियाँ
34. इण्ड ए0 एस0 38 अमूर्त सम्पत्तियाँ
35. इण्ड ए0 एस0 39 वित्तीय लेखपत्रः पहचान एवं मापन
36. इण्ड ए0 एस0 40 विनियोग सम्पति

नोटः– इण्ड ए0 एस0 की उपरोक्त सूची आई0सी0ए0आई0 के रिसोर्स पोर्टल से ली गयी हैं।

नोट्सः–1 अप्रैल 2011 से लागू आई0एफ0आर0एस0की इण्ड ए0एस0 से तुलना एम0सी0ए0 वैबसाइट पर प्रदर्शित की गयी है।

निम्नांकित सारिणी आई0ए0एस0/आई0एफ0आर0एस0 तथा आई0एफ0आर0एस0 के एकीकरण हेतु आई0सी0ए0आई0 द्वारा तैयार किए गये समान **इण्ड–ए0एस0** के विषय में जानकारी प्रदान करती हैं।

क्रम संख्या	आई0एफ0आर0एस0/ आई0ए0एस0क्रमांक	समान भारतीय लेखांकन मानक	नाम
1	आई0ए0एस01	इण्ड ए0 एस01	वित्तीय विवरणों का प्रस्तुतीकरण
2	आई0ए0एस02	इण्ड ए0 एस02	रहतिया
3	आई0ए0एस07	इण्ड ए0 एस07	रोकड़ प्रवाह विवरण
4	आई0ए0एस08	इण्ड ए0 एस08	लेखांकन नीतियाँ, लेखांकन पूर्वानुमानों में परिवर्तन एवं त्रुटियाँ
5	आई0ए0एस010	इण्ड ए0 एस010	प्रतिवेदन अवधि के उपरांत की घटनाऐं
6	आई0ए0एस011	इण्ड ए0 एस011	निर्माण अनुबन्ध
7	आई0ए0एस012	इण्ड ए0 एस012	आय –कर
8	आई0ए0एस016	इण्ड ए0 एस016	संपत्ति, प्लांट एवं उपकरण
9	आई0ए0एस017	इण्ड ए0 एस017	पट्टे
10	आई0ए0एस018	इण्ड ए0 एस018	आय
11	आई0ए0एस019	इण्ड ए0 एस019	कर्मचारी लाभ
12	आई0ए0एस020	इण्ड ए0 एस020	सरकारी अनुदानों हेतु लेखांकन एवं सरकारी सहायता का प्रकटीकरण
13	आई0ए0एस021	इण्ड ए0 एस0 21	विदेशी विनिमय दरों में परिवर्तन का प्रभाव
14	आई0ए0एस023	इण्ड ए0 एस0 23	ऋण लेने की लागत
15	आई0ए0एस024	इण्ड ए0 एस0 24	सम्बन्धित पक्ष प्रकटीकरण
16	आई0ए0एस026		अधिवर्षता लाभ योजनाओं का लेखांकन एवं प्रतिवेदन करना
17	आई0ए0एस027	इण्ड ए0 एस0 27	समेकित एवं पृथक वित्तीय विवरण
18	आई0ए0एस028	इण्ड ए0 एस0 28	सहायक कम्पनियों में विनियोग
19	आई0ए0एस029	इण्ड ए0 एस0 29	तीव्र स्फीतिक अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय प्रतिवेदन करना
20	आई0ए0एस031	इण्ड ए0 एस0 31	संयुक्त उपक्रमों में हित
21	आई0ए0एस032	इण्ड ए0 एस0 32	वित्तीय लेखपत्रः प्रस्तुतीकरण

22	आई0ए0एस033	इण्ड ए0 एस0 33	प्रति अशं आय
23	आई0ए0एस034	इण्ड ए0 एस0 34	अन्तरिम वित्तीय प्रतिवेदन
24	आई0ए0एस036	इण्ड ए0 एस0 36	सम्पत्तियों का क्षय
25	आई0ए0एस037	इण्ड ए0 एस0 37	प्रावधान, सांयोगिक दायित्व एवं सांयोगिक सम्पत्तियाँ
26	आई0ए0एस038	इण्ड ए0 एस0 38	अमूर्त सम्पत्तियाँ
27	आई0ए0एस039	इण्ड ए0 एस0 39	वित्तीय लेखपत्रः पहचान एवं मापन
28	आई0ए0एस040	इण्ड ए0 एस041	विनियोग सम्पत्तियाँ
29	आई0ए0एस041		कृषि
30	आई0एफ0आर0एस01	इण्ड ए0 एस0101	भारतीय लेखांकन मानकों का प्रथम बार अंगीकरण
31	आई0एफ0आर0एस02	इण्ड ए0 एस0102	अंश आधारित भुगतान
32	आई0एफ0आर0एस03	इण्ड ए0 एस0103	व्यावसायिक संयोजन
33	आई0एफ0आर0एस04	इण्ड ए0 एस0104	बीमा संविदायें
34	आई0एफ0आर0एस05	इण्ड ए0 एस0105	विक्रय एवं समाप्त व्यवसायों में धारित गैर चालू सम्पतियाँ
35	आई0एफ0आर0एस06	इण्ड ए0 एस0106	खनिज संसाधनों की खोज एवं मूल्यांकन
36	आई0एफ0आर0एस07	इण्ड ए0 एस0107	वित्तीय लेखपत्रः प्रकटीकरण
37	आई0एफ0आर0एस08	इण्ड ए0 एस0108	परिचालन खण्ड
38	आई0एफ0आर0एस09		वित्तीय लेखपत्र

स्रोतः—www.mca.gov.in

- आई0एफ0आर0एस0 शब्द में ए0एस0बी0द्वारा निर्गमित केवल अन्तराष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक(आई0एफ0आर0एस0)सम्मिलित हैं। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक (आई0ए0एम0), आई0एफ0आर0आई0सी0एवं एस0आई0सी0भी सम्मिलित हैं।
- आई0ए0एस0 26 के समान इण्ड ए0एस0 अधिवर्षता लाभ योजनाओं का लेखांकन एवं प्रतिवेदन को एम0सी0ए0 ने अपनी वैवसाइट में स्थान नहीं दिया हैं क्योंकि यह मानक कम्पनियों पर लागू नहीं होता हैं।
- आई0ए0एस041 के समान इण्ड ए0एस0, कृषि को पुनः उल्लिखित किया जा रहा हैं।
- यह निश्चित किया गया है कि आई0एफ0आर0एस09 के समान इण्ड ए0एस0 वित्तीय लेखपत्र,को निर्गत नहीं किया जाना चाहिए क्योकि यह अनुभव किया गया कि यह अपूर्ण था; इस मानक के स्थान पर इण्ड ए0एस0 36 को निर्गत किया गया है।

8.4 आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने में भारत की लिए चुनौतियाँ

आई0एफ0आर0एस0 का एकाधिकार इसके प्रादुर्भाव से ही अलाभप्रद है, क्योकि यह वैकल्पिक व्यवहारों की तुलना करने के अवसर को समाप्त कर देता हैं। इससे अतिरिक्त यह वित्तीय प्रतिवेदन में आर्थिक, व्यावसायिक, वाणिज्यिक, वैधानिक अंकेक्षण संबधी, नियामक और वैश्विक सुशासन संबंधी आदि में स्थानीय विचलनों के अनुरूप परिवर्तनों की अनुमति नहीं देता है।(सुन्दर श्याम 2011)। भारत ने आई0एफ0आर0एस0 के साथ अपने लेखांकन मानकों को एकीकृत किया है, किन्तु कुछ चुनौतियाँ हैं, जिनका भारतीय अर्थव्यवस्था सामना कर रही है। इन्हें निम्नवत सूचीकृत किया जा रहा हैः

1. अनुपालन की संभावित उच्च लागत

यद्यपि एकीकरण दृष्टिकोंण 'पृथकीकरण' (carveant)के निर्गमन की लोचशीलता की अनुमति प्रदान करता है किन्तु इससे आई0ए0एस0बी0 के द्वारा निर्गमित आई0एफ0आर0एस0के साथ भारतीय एकीकृत मानकों से हट जाने की संभावना उत्पन्न होती है। कम्पनियों एवं निवेशकर्ताओं की आवश्यकता आई0एफ0आर0एस0 की तुलना में किए गए महत्वपूर्ण परिवर्तनों के कारण विभिन्नता की सीमा के निर्धारण के साथ–साथ प्रभावपूर्ण निर्णयन में इसके प्रभाव का आकलन करने की है। यह प्रक्रिया अनुपालन की अतिरिक्त लागत की ओर ले जाती हैं।

2. आई0एफ0आर0एस0 में परिवर्तनों के साथ गति बनाए रखने के लिए नियामक संशोधन

भारतीय नियमनकर्ता आई0एफ0आर0एस0 के कारण परिवर्तनों से अब भी जूझ रहे हैं। भारतीय रेवेन्यू सेवाऐं यह निर्धारित करने की प्रक्रिया में हैं कि क्या भारतीय कम्पनियों को संशोधित भारतीय एकीकृत मानकों के अन्तर्गत कर–विवरणियाँ दाखिल करने की अनुमति दी जाय अथवा वर्तमान भारतीय मानकों के अन्तर्गत अनुमति दी जाय। इस सम्बन्ध में, भारतीय चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्रस संस्थान (आई0सी0ए0आई0) ने एकीकरण से उत्पन्न प्रत्यक्ष कर संबंधी मुद्दों की पहचान के लिए संस्थान की परिषद एवं भारतीय कर प्रशासन संस्था (सी0बी0डी0टी0) के सदस्यों को सम्मिलित करते हुए एक समूह गठित किया है। हाल ही में, इस समूह ने प्रमुख कर मुद्दों (जैसे रहतिये के मूल्यांकन के समय अन्तरालों, ह्रास, कर मुद्दों को रोकने, न्यूनतम वैकल्पिक कर के प्रभावों आदि) पर जोर देते हुए एक स्थिति–पत्र तैयार किया है और समस्त कम्पनियों में समता तथा आय तटस्थता प्राप्त करने के लिए सरकार को कतिपय विकल्प संस्तुत किए हैं। किन्तु, विभिन्न नियमनकारी आवश्यकताओं के प्रति बिलम्बित संशोधनों से आई0एफ0आर0एस0 के क्रियान्वयन के संभावित कर–प्रभावों पर भारत के लिए अनिश्चितता बनी हुई है।

3. वित्तीय परिणामों एवं प्रकटीकरण पर प्रभाव

वित्तीय विवरणों में अनेक परिवर्तन किए जायेंगे। उदाहरणार्थ, ह्रास लगाने के व्यवहार में भिन्नताऐं हैं। अतः कम्पनी की सम्पत्तियों का मूल्य एवं लाभदायकता में उच्चावचन हो सकता हैं, परिणामस्वरूप शुद्ध मूल्य भी प्रभावित होगा। वित्तीय सूचनाओं के प्रकटीकरण ने अधिक जोर मात्रात्मक सूचना जैसे विक्रय का विस्तृत विवरण,

सम्बन्धित पक्षों से लेन–देनों की संख्या, उत्पादन क्षमताऐं और विदेशी मुद्रा में आय एवं व्यय आदि पर दिया हैं दूसरी ओर,आई0एफ0आर0एस0 में गुणात्मक सूचना पर अधिक ध्यान दिया गया हैं।(खली, जीमल एवं मास्टर, अकील, 2009)

4. अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन व्यवहारों के प्रति जागरूकता

आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने से विभिन्न प्रतिवेदन मानकों का एक पूर्ण सैट उपलब्ध हो जायेगा। इन प्रतिवेदन मानकों के प्रति हितधारकों जैसे–फर्म, बैंक, स्कन्ध विपणि और उपज विपाणि में अब भी जागरूकता नहीं हैं। इन मानकों के विषय में इन पक्षों में पूर्ण जागरूकता लाना एक अत्यंत दुष्कर कार्य है। परिवर्तित प्रतिवेदन प्रारूप के लिए प्रभावित पक्षों में इन नवीन प्रमापों एवं प्रणाली की जागरूकता आवश्यक होगी। मानक निर्धारण हेतु आई0एफ0आर0एस0 एक सिद्धान्त आधारित दृष्टिकोंण है। अमेरिका के 'गैप' (GAPP) की तुलना में यह चमकीली रेखाओं और विस्तृत नियमों पर कम निर्भर करता है। (प्रो0डा0शर्मा, रवि, 2010)

5. प्रशिक्षण

आई0एफ0आर0एस0 के सफल क्रियान्वयन हेतु पेशेवर लेखाकारों की ओर देखा जाता है। इन लेखाकारों के साथ, सरकार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मुख्य सूचना अधिकारी भी सुचारू अंगीकरण प्रक्रिया हेतु उत्तरदायी हैं। इस बृहत समूह के प्रशिक्षण हेतु भारत में प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी हैं। यह अवलोकित किया गया है कि भारत में आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने के कार्य को संचालित करने के लिए भारत में पर्याप्त संख्या में पूर्णतया प्रशिक्षित पेशेवर नहीं हैं।

6 करारोण

जिस प्रकार आई0एफ0आर0एस0के क्रियान्वयन से वित्तीय विवरणों की अधिकांश मदें प्रभावित होंगी, उसी प्रकार इसके परिणामस्वरूप कर दायित्वों का भी रूपान्तरण हो जायेगा। वर्तमान में, भारतीय कर कानून लेखांकन मानकों को मान्यता नहीं देते हैं। कर कानूनों को पूर्णतः परिवर्द्धित करने की आवश्यकता है और यह एक प्रमुख चुनौती है, जिसका भारतीय कानून निर्माताओं को तत्काल सामना करना होगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कर प्राधिकारी आई0एफ0आर0एस0 अनुकूल वित्तीय विवरणों को मान्यता दें, कर कानूनों में पर्याप्त बदलाव की आवश्यकता है, अन्यथा कम्पनियों के लिए इससे प्रशासकीय कार्य का दोहराव हो जायेगा।

7. उचित मूल्य का प्रयोग

आई0एफ0आर0एस0 में उचित मूल्य की अवधारणा का प्रयोग अधिकांश मदों, जिनसे वित्तीय विवरणों में अत्यधिक उच्चावचन एवं वस्तुपरकता का समावेश हो जाता है, के मापन में करता है। परिणामस्वरूप, उचित मूल्य में समायोजन से लाभ अथवा हानियाँ उत्पन्न होती हैं। जिन्हें लाभ और हानि खाते में प्रस्तुत किया जाता है और मूल्यांकन को वित्तीय स्थिति के विवरण में प्रदर्शित किया जाता है। भारतीय कम्पनियाँ जो अपने वित्तीय विवरण ऐतिहासिक लागत आधार पर तैयार करती है, को उचित मूल्य लेखांकन को प्रतिस्थापित करने से कठिनाइयों का सामना करना होगा।

8. भारतीय बैंकिग उद्योग पर प्रभाव

आई0एफ0आर0एस0 के क्रियान्वयन का महत्वपूर्ण प्रभाव ऋणों, विनियोगों, वित्तीय लेखपत्रों, 'हैज' लेखांकन मूल्यांकनों के साथ नियामक अनुपालनों, सूचना तकनीक प्रणालियों, कर गणनाओं एवं बैंकिग क्षेत्र के अन्य भागों पर पड़ेगा। इससे शुद्ध मूल्य, पूँजी पर्याप्तता, अग्रिम स्थिति, 'डेरीवेटिब्स' का मूल्यांकन, वित्तीय लेखपत्र इत्यादि प्रतिवेदन व्यवहारों पर प्रभाव पड़ेगा। इसका भारतीय बैंकिग उद्योग के वित्तीय प्रदर्शन के मापन पर भी प्रभाव होगा। (सी0ए0मोहम्मद फीरोज एवं अन्य 2011)

9. आर्थिक वातावरण

आर्थिक वातावरण एवं भारत में प्रचलित रीति–रिवाज एवं व्यवहार कुछ दशाओं में आई0एफ0आर0एस0में निहित निर्दिष्ट दृष्टिकोंण को अपनाने में सहायक नहीं हो सकते हैं। (व्यापार एवं विकास बोर्ड, 2006)।

अन्त में, हम कह सकते हैं कि आई0ए0एस0बी0 के द्वारा आई0एफ0आर0एस0 में परिवर्तनों के कारण आई0एफ0आर0एस0 एकीकृत मानकों में अनेक परिवर्तनों से कम्पनियों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। आई0एफ0आर0एस0 को सही भावना के साथ क्रियान्वित करने हेतु कम्पनियों को स्वयं को नवीनतम मानकों से परिचित रखना होगा।

8.5 सारांश

विभिन्न देशों में असमान नियमों के समूहों के अनुसार तैयार किये गये लेखांकन विवरणों से लेखांकन के अंतर्राष्ट्रीय मानकों की ओर ध्यान केन्द्रित हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक (आई0 एफ0 आर0 एस0) अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक बोर्ड (आई0 एफ0 आर0 एस0) के द्वारा विकसित लेखांकन मानकों के समूह हैं, जो कंपनियों के वित्तीय विवरणें को बनाने में वैश्विक मानक माने जा रहे है। अब तक 29 आई0ए0एस0 और 9 आई0एफ0आर0एस0 निर्गमित किये गये हैं। आई0एफ0आर0एस0 की आधारभूत विशेषता है कि यह नियम आधारित की अपेक्षा सिद्धांत आधारित मानक है। आई0एफ0आर0एस0से एकीकरण के कम्पनियों के लिए अनेक लाभ एवं अवसर है। किन्तु,आई0एफ0आर0एस0 में परिवर्तनों के कारण आई0एफ0आर0एस0 एकीकृत मानकों में अनेक परिवर्तनों से कम्पनियों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं। भारत ने आई0एफ0आर0एस0 के साथ अपने लेखांकन मानकों को एकीकृत किया है, किन्तु कुछ चुनौतियाँ हैं, जिनका भारतीय अर्थव्यवस्था सामना कर रही है। आई0एफ0आर0एस0से एकीकरण हेतु आवश्यकता यह है कि भारतीय कम्पनियाँ स्वयं को नवीनतम मानकों से परिचित रखकर इसके अवसरों का लाभ उठाऐं।

8.6 शब्दावली

- आई0ए0एस0– अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक;
- आई0एफ0आर0एस0–अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय लेखांकन मानक;
- इण्ड ए0एस0–आई0एफ0आर0एस0 एकीकृत भारतीय मानक;
- सी0बी0डी0टी0–सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेज;

- आई0एफ0आर0एस0–अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन बोर्ड द्वारा निर्धारित वैश्विक मानक हैं।
- सम्मिश्रण अथवा एकीकरण मॉडल–आई0एफ0आर0एस0के साथ एकरूपता स्थापित करने वाला मॉडल हैं।

8.7 बोध प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करिएः

i. भारत में आई0एफ0आर0एस0 एकीकृत लेखांकन मानक_______ से लागू किए गए हैं।

ii. भारत में लेखांकन संस्थाओं एवं कम्पनियों की नियामक संस्था _____ हैं।

(ब) सत्य/असत्य लिखिएः

i. आई0एफ0आर0एस0 गुणात्मक सूचना पर अधिक ध्यान संकेन्द्रित करता हैं।

ii. आई0एफ0आर0एस0 अपनाने से फर्मो के मध्य वित्तीय विवरणों की तुलनात्मकता में सुधार होता हैं।

8.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) i. 1 अप्रैल 2011 ii. एम0सी0ए0

(ब) i. सत्य ii. सत्य

8.9 स्वपरख प्रश्न

1. आई0एफ0आर0एस0 से आप क्या समझते हैं? आई0एफ0आर0एस0 के एकीकरण एवं अंगीकरण में क्या अन्तर है?
2. आई0एफ0आर0एस0 के क्रियान्वयन में भारत के समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं?
3. लेखांकन मानक (जो वर्तमान में भारत में लागू हैं) और अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक (आई0एफ0आर0एस0) में क्या अन्तर हैं?

8.10 सन्दर्भ पुस्तकें

1. बारबोल ए0एन0 ऋषिकेश ए0 साह एवं बुर्ला नितिन निरंजन,जनवरी–4/2011, कन्वर्जेन्स विद आई0एफ0आर0एस0 बैनेफिट एण्ड चैलेन्जेज फॉर इण्डियन स्टेकहोल्डर्स, इन दि प्रोसीडिंग्स ऑफ एट्रथ ए0आई0एम0एस0इन्टर नेशनल कान्फ्रेन्स ऑन मैनेजमैन्ट।
2. ब्रुग्मैन,उल्फ,डास्के,होल्जर,कार्सटन एवं पोप,पीटर एफ0,आर्च,2011,हाऊ डू इन्डिविजुअल इन्वैस्टर्स रिएक्ट टू ग्लोबल एडाप्सन ऑफ आई0एफ0आर0एस0,एच0टी0पी0पी0//रिसर्च एम0बी0ए0सी0यू0के0/एकाउन्टिंग फायनॉन्स/पोर्टल्स ।
3. C. Richard Baker and Elena M. Barbu., 2007, *Trends in Research on International Accounting Harmonization*, The International Journal of Accounting, 42, 272–304.
4. CA. Mohammad Firoz, Prof. A. Aziz Ansari and Kahkashan Akhtar., March 2011, *IFRS Impact on the Indian Banking Industry*, International Journal of Business and Management, 6, 3.

5. Dr Chakrabarty, K. C., March 2011, *Banking and Beyond: New Challenges before Indian Financial System*, http://www.rbi.org.in/scripts/BS_SpeechesV iew. aspx?id=553, March 2011.
6. Dr. Kanan, R., June 2009, *Report of the Committee on IFRS Compliance in Indian Insurance Industry*, www.irdaindia.org/press_release/ifrs_report.pdf.
7. Dr Chakrabarty, K. C., February 2011, *Introduction of IFRS- Issues and Challenges*, http://rbidocs.rbi.org.in/rdocs/Speeches/PDFs /SKC140211F.pdf.
8. Francois, Brochet, Jagolinzer, Alan D.and Riedl, Edward J., April 2011, *Mandatory IFRS Adoption and Financial Statement Comparability*, Working Paper 11-109, Harward Business School.
9. Horton, J., Serafeim, George and Serafeim, Ioanna., 2009, *Does Mandatory IFRS Adoption Improve The Information Environment?*, Working Paper 11-029, Harward Business School, http://www.hbs.edu/research/pdf/11-029.pdf.
10. Jain, P., March 2011, *IFRS Implementation in India: Opportunities and Challenges*, World Journal of Social Sciences, 1, 1, 125 – 136.
11. Khatri, Jameel and Master, Akeel., April 2009, *Convergence with IFRS: Impact on the Fundamental Accounting Practices and Regulatory Framework in India*, Bombay Chartered Accountant Journal 41-A.
12. Khurshid, Salman, April 2010, *IFRS and India*, Knowledge for Markets, 1, 3.
13. Prof. Dr. Sharma, Ravi, June 2010, *IFRS The Way Ahead*, International Referred Research Journal, I, 9.
14. Sunder, Shyam, August 2011, *IFRS Monopoly: The Pied Piper of Financial Reporting*, Accounting and Business Research, 41, 3, 291–306.
15. Singh, Simardeep, *Convergence with IFRS*, http://xa.yimg.com/kq/groups/22830576/49 6919880/name/IFRS_new.pdf.
16. Trade and Development Board, October 2006, *Review of Practical Implementation Issues of International Financial Reporting Standard: Case Study of India*, United Nations Conference on Trade and Development.
17. Taking Stock Indian IFRS, February, 2011, http://www.indodutchconnect.com/app/webroot/ pdf/newslatter/issue49/taking_stock.pdf.

इकाई–9 वित्तीय लेखांकन एवं प्रतिवेदन : नवीनतम विकास

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना
9.2 अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक (आई0एफ0आर0एस0)
9.3 विस्तार योग्य व्यावसायिक प्रतिवेदन भाषा (एक्स0बी0आर0एल0)
9.4 कानूनी वैज्ञानिक परीक्षण (फोरेन्सिक) लेखांकन
9.5 मानव संसाधन लेखांकन
9.6 पर्यावरण लेखांकन / हरित लेखांकन
9.7 सारांश
9.8 शब्दावली
9.9 बोध प्रश्न
9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
9.11 स्वपरख प्रश्न
9.12 संदर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात इस योग्य हो सकेगें कि :

- अन्तराष्ट्रीय वित्तीय लेखांकन मानकों की पृष्ठभूमि को समझ सकें।
- फोरन्सिंक, मानव संसाधन एवं पर्यावरण लेखांकन के अर्थ एवं प्रासंगिकता को रेखांकित कर सकें।
- विस्तारण योग्य व्यावसायिक प्रतिवेदन भाषा की व्याख्या कर सकें।

9.1 प्रस्तावना

वैश्वीकरण के अभ्युदय के पश्चात समूचा विश्व अधिक निकट आ गया हैं और देशों की सीमायें व्यापार एवं वाणिज्य में कम से कम बाधाऐं नहीं समझी जा रहीं हैं। यदि आप भारतीय अर्थव्यवस्था को देखें, तो आपको ज्ञात होगा कि कई भारतीय कम्पनियों के व्यवसाय देश के बाहर चल रहें हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि बाजारों का वैश्वीकरण हुआ हैं और वे एक दूसरे के निकट आ रहे हैं। इस वैश्वीकरण से क्षेत्रीय सीमाओं का उन्यूलन हुआ हैं और विश्व के प्रत्येक भाग में कम्पनियॉं अपने देश की तरह का वातावरण अनुभव कर रही हैं। इससे व्यवसाय का वातावरण परिवर्तित हुआ है एवं उद्यमियों के सामने अनोखी चुनौतियॉं प्रस्तुत हुई हैं। इसमें से एक महत्वपूर्ण चुनौती विश्व के विभिन्न भागों में प्रचलित भिन्न–भिन्न नीतियों, मुद्रा, लेखांकन व्यवहार के कारण लेखांकन एवं इसका प्रतिवेदन करने के सम्बन्ध में हैं। इस समस्या के समाधान के लिए सम्पूर्ण विश्व में समान वित्तीय प्रतिवेदन पद्धतियों को सुनिश्चित करने के लिए आई0एस0ए0सी0 ने आई0एफ0आर0एस0 निर्गमित किए हैं। आई0एस0आर0एस0 के अतिरिक्त अनेक ऐसे परिवर्तन हुए हैं जिसने वित्तीय लेखांकन एवं प्रतिवेदन का स्वरूप ही, वास्तव में, परिवर्तित कर दिया हैं।

नवीनतम परिवर्तन :

नवीनतम परिवर्तन जिन्हें वित्तीय लेखांकन एवं प्रतिवेदन के क्षेत्र में उभरती हुई प्रवृत्तियाँ भी कहा जाता हैं, निम्नांकित हैं :

- (आई0एफ0आर0एस0) अन्तराष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक
- विस्तारणयोग्य व्यवयाय प्रतिवेदन भाषा (एक्स0बी0आर0एल0) एवं संशोधित सूची इ IV
- फोरेंसिक लेखांकन
- मानव व्यवहार लेखांकन

आइए, एक–एक कर लेखांकन एवं प्रतिवेदन के क्षेत्र में उभरती प्रवृत्तियों की विवेचना करें :

9.2 अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक (आई0एफ0आर0एस0)

यदि हम लेखांकन एवं वित्तीय प्रतिवेदन पर विचार करें, तो वर्ष 2011 को भारत के वित्तीय प्रतिवेदन एवं नियामक धरातल पर एक परिवर्तन बिन्दु माना जा सकता हैं। भारत में कानूनवेत्ताओं और लेखांकन पेशे के नियामक ढांचे के द्वारा पुराने एवं कतिपय अप्रचलित आवश्यकताओं को नवीनीकृत कर अन्तराष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानकों (आई0एफ0आर0एस0) में समेकित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक (आई0एफ0आर0एस0) अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय लेखांकन मानक बोर्ड (आई0ए0एस0बी0) द्वारा विकसित लेखांकन मानकों के वे समूह हैं जो कम्पनियों के वित्तीय विवरणों को बनानें में वैश्विक मानक बन गए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक विस्तृत वैश्विक मान्यता के साथ लेखांकन ढांचे का प्रतिरूप बन गया हैं। वर्ष 2001 में, अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन बोर्ड (आई0ए0एस0बी0) ने आई0एफ0आर0एस0 को निर्धारित करने वाले उत्तरदायी संगठन के रूप में अन्तराष्ट्रीय लेखांकन मानक समिति को प्रतिस्थापित किया हैं। आई0एफ0आर0एस0 शब्द के संकुचित एवं व्यापक दोनों अर्थ हैं। संकुचित रूप में, अन्तर्राष्ट्रीय आई0एफ0आर0एस0 घोषित मानकों की नवीन संख्याओं की श्रृंखला को व्यक्त करता है जो इसके पूर्ववर्ती संगठनों के द्वारा निर्गमित आई0ए0एस0 श्रृंखला से भिन्न हैं।

विस्तृत रूप में आई0एफ0आर0एस0, आई0ए0एस0बी0, आई0एफ0आर0आई0सी0 एवं एस0आई0सी0 के द्वारा अनुमोदित मानकों एवं निर्वचनों सहित आई0ए0एस0बी0 घोषणाओं के सम्पूर्ण ढांचे को व्यक्त करता हैं।

आई0ए0एस0बी0 द्वारा निर्धारित मानकों को अन्तराष्ट्रीय लेखांनक मानक (आई0ए0एस0) कहा जाता हैं और आई0ए0एस0बी0 द्वारा निर्धारित नवीन मानकों को आई0एफ0आर0एस0 कहा जाता जाता हैं। आई0एफ0आर0एस0 की मूलभूत अनोखी विशेषता यह है कि ये सिद्धान्त आधारित हैं, नियम आधारित नहीं।

विद्यमान भारतीय लेखांकन मानकों का आई0एफ0आर0एस0 से अवधारएणागत मतभेद हैं। वर्तमान आई0एस0एस0 और उनके समवर्ती आई0एफ0आर0एस0 के मध्य विभिन्नता की सीमा के दृष्टिगत, एकीकरण प्रक्रिया में

निहित उपरोक्त वर्णित चुनौतियों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया हैं। नए कम्पनी अधिनियम को लेकर, भारत सरकार ने वैधानिक एवं नियामक ढांचे को संशोधित करने की पहल की हैं, जो आई0एफ0आर0एस0 के लिए अत्यधिक आवश्यक हैं। कम्पनी मामलों के मन्त्रालय (एम0सी0ए0) की घोषणा के अनुसार कम्पनी अधिनियम की धारा 211 (3 सी) के अन्तर्गत लेखांकन मानकों के दो पृथक समूह होंगे, जैसे पहले आई0एफ0आर0एस0 एकीकृत मानक हैं, जिन्हें (IND-AS) आई0एन0डी0–ए0एस0 नाम दिया गया हैं और दूसरे विद्यमान लेखांकन मानक हैं। वैश्विक लेखांकन मानकों जैसे आई0एफ0आर0एस0 ऐसे उद्यमों, जो विभिन्न देशों में संचालित किए जा रहे हैं, में तुलना की सुविधा प्रदान करते हैं। लेखांकन मानकों पर राष्ट्रीय परामर्शदाता समिति की सिफारिशों के बाद 35 भारतीय लेखांकन मानकों (आई0एन0डी0ए0एम0) जो 1 अप्रैल 2011 से लागू समस्त आई0एफ0आर0एस0/आई0ए0एस0 के समान होगें, को अन्तिम रूप प्रदान किया गया हैं तथा कम्पनी मामलों के मन्त्रालय के द्वारा अपनी वैबसाइट में स्थान दिया गया हैं। यह मानक कर एवं अन्त संबंधित मामलों के समाधान के पश्चात एम0सी0ए0 द्वारा घोषित की जाने वाली तिथि से चरणबद्ध ढंग से क्रियान्वित किए जाऐंगे।

नोट : आई0एफ0आर0एस0 की सूची तथा भारत में आई0एफ0आर0एस0 को अपनाने में निहित चुनौतियों को ईकाई–15 में विस्तार से समझाया गया हैं।

9.3 ई0 विस्तारण योग्य व्यवसायिक प्रतिवेदन भाषा (एक्स0बी0आर0एल0)

भारतीय परिदृश्य में आई0एफ0आर0एस0, प्रत्यक्ष कर कोडऔर जी0 एस0 टी0 जैसी बिलम्बताओं के मध्य, कम्पनी मामलों के मन्त्रालय (एम0सी0ए0) द्वारा कई नवीन आवश्यकताओं को लाया गया है जो उन तरीकों जिनमें कम्पनियाँ वित्तीय सूचनाओं को एकलित, प्रस्तुत एवं फाइल करती हैं, को परिवर्तित कर देंगी। इसमें आर्थिक चिट्ठे और लाभ एवं हानि खाने के निर्दिष्ट प्रारूप में परिवर्तन के साथ–साथ कम्पनी की वार्षिक विवरणी की फाइलिग हेतु ई–विस्तारण योग्य व्यवसायिक प्रतिवेदन भाषा को लाना भी सम्मिलित हैं। यह दोनों, एक बड़ें परिवर्तन जिसे अपनाया जाना प्रत्याशित हैं, के लिए सही दिशा में उठाये गए कदम हैं।

आर्थिक चिट्ठे और लाभ एवं हानि खाते का प्रारूप :

भारतीय कम्पनियों के लिए भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 की अनुसूची VI में निर्दिष्ट वित्तीय विवरणों के प्रारूप के प्रयोग को आवश्यक किया गया है और चूँकि कई दशकों तक पूर्व प्रारूप मुख्यतया अपरिवर्तित रहे हैं, अतः भारतीय कम्पनियों के वित्तीय विवरण विश्व के अन्य भागों में अवस्थित कम्पनियों की तुलना में पुरानें पड़ गए हैं। एम0सी0ए0 ने अन्ततः संशोधित अनुसूची vi (नवीन अनुसूची) प्रारम्भ की हैं, जिसके द्वारा चालू अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार के समरूप प्रारूप निर्दिष्ट किया गया हैं, और जो साथ ही आई0एफ0आर0एस0 के साथ अधिकांशतः संगत हैं। इस बीच, एम0सी0ए0 ने नवीन अनुसूची का एक और पृथक प्राारूप आई0एफ0आर0एस0भी निर्मित किया हैं, जो भारत में आई0एफ0आर0एस0 एकीकृत मानकों के लाये जाने पर लागू कर दिया जाएगा।

नवीन अनुसूची 1 अप्रैल 2011 से लागू हो गयी है इसके द्वारा संक्रमणकालीन वर्षो में इस प्रारूप के अनूसार तुलनात्मक सूचना को पुनः प्रस्तुत करना भी आवश्यक किया गया हैं। इससे आगे जाकर, उन कम्पनियों पर विभिन्न तुलनात्मक अवधियों में सूचना को प्रस्तुत करने की आवश्यकता भी लागू हो जायेगी जो 1 अप्रैल 2012 से समता अंशो के निर्गमन के लिए पूँजी बाजार में प्रवेश कर रही हैं।

इसमें क्या भिन्नता है?

नवीन अनुसूची निम्नांकित महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ लायी जा रही है :

- आर्थिक चिट्ठे की संरचना लम्बवत प्रारूप में होगी तथा लाभ एवं हानि खाते व्यय की प्रकृति का प्रयोग कर तैयार किए जायेंगे।
- **आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्तियों और दायित्वों का चालू एवं गैर–चालू वर्गीकरण :** सम्पत्तियों एवं दायित्वों को चालू एवं गैर–चालू वर्गों में वर्गीकृत करने की एक महत्वपूर्ण नवीन आवश्यकता हैं। एक चालू सम्पत्ति अथवा एक चालू दायित्व में क्या सम्मिलित होगा, इसे परिभाषित किया गया हैं। आवश्यक रूप से, ऐसी सम्पत्तियाँ अथवा दायित्व जिनके आर्थिक चिट्ठे से 12 माह भीतर प्राप्त अथवा पूर्ण होने या देय होने की प्रत्याशा हैं,'चालू' अथवा 'चल' में वर्गीकृत की जाती हैं।
- प्रस्तुतीकरण में इस परिवर्तन के कारण अनेक सम्पत्तियाँ और दायित्व अब चालू की तरह वर्गीकृत किए जाऐगें, उदाहरणार्थ एक दीर्घकालीन ऋण भी, जो आर्थिक चिट्ठे से 12 माह के भीतर पुर्नभुगतान किया जाना हो, चालू दायित्व की तरह दर्शाया जायेगा, इसका प्रतिवेदित वित्तीय अनुपातों जैसे चालू पूँजी, चालू सम्पत्तियाँ और ऋण–समता अनुपात पर प्रभाव पड़ सकता हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्वाभाविक रूप में ऋण की अन्य शर्तों–ब्याज की दर अथवा पुर्नभुगतान शर्तों पर भी असर पड. सकता हैं।
- अशं पूँजी जिनमें 5% से अधिक अंशों को धारित करने वाले अंशधारियों के नाम भी सम्मिलित हैं, पर अतिरिक्त प्रकटीकरण आवश्यकताऐं
- दीर्घकालीन उधार पर अतिरिक्त प्रकटीकरण
- अतिदेय हो गए विविध देनदारों पर प्रकटीकरण
- रहतिए, अनुज्ञापित एवं स्थापित क्षमता इत्यादि पर मात्रात्मक सूचना से सम्बन्धित कतिपय अप्रचालित आवश्यकताओं नयी अनुसूची कम्पनियों के द्वारा निर्बाध क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने हेतू संकेद्रित प्रयास को आवश्यक बना देगी। वित्तीय प्रतिवेदन की प्रक्रिया में संलग्न कार्मिकों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त , कम्पनियों को सूचना तकनीक (आई0टी0) और स्रोत पर आवश्यक सूचना को संकलित करने वाली अन्य प्रतिवेदन प्रणालियों में परिवर्तन करना आवश्यक हो जायेगा। इसके अतिरिक्त, कम्पनियों को अपनी संविदात्मक व्यवस्थाओं पर नयी आवश्यकताओं के प्रभाव का अनुश्रवण करना भी आवश्यक हो जायेगा जैसे ऋण संविदायें इत्यादि क्योंकि इन परिवर्तनों से प्रमुख वित्तीय अनुपातों के प्रभावित होने की संभावना होगी।

संशोधित अनुसूची VI केप्रभाव भिन्न–भिन्न हैं और यह बडी कम्पनियों के लिए अनेक कियान्वयन संबंधी चुनौतियाँ खडी कर सकती हैं। इसमें नयी आवश्यकताओं के पूरा करने के लिए पहले की तुलनात्मक समयावधियों के वित्तीय विवरणों को पुनः प्रस्तुत करना भी सम्मिलित हैं।

संशोधित अनुसूची vi को प्रारम्भ किया जाना स्थानीय वित्तीय प्रतिवेदन पद्धतियों को वैश्विक पद्धतियों में समेकित करने के लिए सही दिशा में उठाया गया कदम हैं और वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं को लाभान्वित करेगा। सुचारू एवं सुसंगत कियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए, जहाँ भी आवश्यक हो, नियामकों को अग्रेतर मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।

विभिन्न विवरणियों को फाइल करने के लिए एक्स0बी0आर0एल0 :

कम्पनी मामले के मंत्रालय ने यह निर्देशित किया है कि भारत में निर्धारित कम्पनियाँ 31 मार्च 2011 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए एक्स0बी0आर0एल0 के प्रयोग के द्वारा एम0सी0ए0 को अपने वार्षिक वित्तीय विवरण दाखिल करेंगी। एक्स0बी0आर0एल0 के प्रयोग के द्वारा वित्तीय सूचना को मशीन के द्वारा पढें जाने योग्य आंकडों में परिवर्तित करने की प्रणाली विश्व के अन्य देशों जैसे अमेरिका और ब्रिटेन में उपयोग में लायी जा रही हैं।

एक्स0बी0आर0एल0, अर्थात e विस्तारणयोग्य व्यवसाय प्रतिवेदन भाषा, जिसे एस0ई0सी0 के द्वारा 'अन्र्तकियात्मक डाटा' के नाम से भी जाना जाता हैं, व्यावसायिक सूचनाओं के लिए डिजायन की गयी निःशुल्क (अधिकार शुल्क रहित) अन्तर्राष्ट्रीय सूचना प्रारूप हैं। एक्स0बी0आर0एल0 के पीछे निहित विचार सरल हैं : व्यावसायिक सूचना को आलेख के खण्ड (ब्लाक) की तरह लेने, जैसा कि मुद्रित पेपर प्रपत्र अथवा मानकीकृत इंटरनैट पेज में होता है, के स्थान पर यह व्यवसायिक प्रतिवेदनों में प्रकटीकरण की प्रत्येक व्यक्तिगत मद के लिए एक अनोखा इलेक्ट्रानिक रूप में पढे जाने जाने योग्य टैग प्रदान करता हैं।

1998 में एक अकेले सी0पी0एस0 चार्ली हॉफमैन, जिन्होंने वाशिगंटन राज्य में एक छोटी सी0पी0ए0 फर्म में कार्य किया था, ने व्यावसायिक प्रतिवेदन के तरीके को पूर्णतः रूपान्तरित करने का विचार प्रदान किया था।

चार्ली ने विश्व के प्रत्येक देश में लेखांकन नियमों के अनुसार व्यवसासिक प्रतिवेदनों को डिजिटल प्रारूप में लाने हेतु प्रमाणपत्र एक्स0एम0एल0 आधारित भाषा प्रदान करने के उद्देश्य से एक्स0बी0आर0एल0 को विकसित करने में ए0आई0सी0पी0ए0 का समर्थन प्राप्त किया।

एक्स0बी0आर0एल0 को व्यवसायिक एवं वित्तीय आकडों के विस्तृत क्षेत्र में उपयोग किया जा सकता हैं। अन्य बातों के अतिरिक्त यह निम्नाकिंत में प्रयुक्त किया जा सकता हैं:

- कम्पनी के आन्तरिक एवं वाह्य वित्तीय एवं व्यवसायिक प्रतिवेदन

- विभिन्न प्रकार के नियामकों के अन्तर्गत व्यवसायिक प्रतिवेदन एवं सूचना का आदान–प्रदान, जिसमें कर एवं वित प्राधिकारियों, केन्द्रीय बैंक एवं सरकारें सम्मिलित हैं।

एक्स0बी0आर0एल0 को प्रयोग करने के लाभ :

- एक्स0बी0आर0एल0 के प्रयोग के द्वारा कम्पनियाँ अपने वित्तीय आंकडों के संकलन को स्वचालित कर सकती हैं। उदाहरणार्थ, कम्पनियों के विभिन्न प्रभागों के भिन्न–भिन्न लेखांकन प्रणालियों वाले आंकड़ों को सही समय आधार पर और बहुत कम लागत पर अनुविन्यसित किया जा सकता हैं, यदि सूचना के स्रोतों को इस नवीन भाषा में उच्चीकृत (अपग्रेड) कर दिया जाय।
- एक्स0बी0आर0एल0 निर्णयन हेतु व्यवसायिक एवं वित्तीय प्रतिवेदनों को तैयार करने के कार्य को सुव्यवस्थित करने में भी सहायता करेगा। यह विनियोजकों, नियामकों विश्लेषकों, ऋणदाताओं एवं अन्य प्रमुख हितधारकों को अधिक सारांकित एवं प्रत्यक्ष रूप में वित्तीय सूचना के प्रकाशन करने की लेखाकार की योग्यता में महत्वपूर्ण रूप में सुधार करेगा।
- एक्स0बी0आर0एल0 जनता के विभिन्न वर्गो में वित्तीय सिद्धान्तों को एकीकृत करने की योग्यता के द्वारा लेखांकन मानकों के एकीकरण को सुविधा प्रदान कर सकता हैं।
- एक्स0बी0आर0एल0 सिद्धान्त आधारित लेखांकन की सुविधा प्रदान करता हैं, क्योकि यह सिद्धान्त आधारित हैं एवं नियम आधारित नहीं हैं।
- एक्स0बी0आर0एल0 पूँजी बाजारों में निवेशकर्ताओं की पहुँच में सुधार करके एवं लधु एवं वृहत दोनों प्रकार कम्पनियों की कम्पनियों को विश्लेषकों से आच्छादित करने में उनकी आच्छादन लागत में कमी करके सार्वजनिक हित को संरक्षित करने के अपने प्रमुख ध्येय की प्राप्ति के प्रति लेखांकन पेशे को बेहतर ढंग से सक्षम बनाता हैं।

9.4 कानूनी वैज्ञानिक परीक्षण (फोरेन्सिक) लेखांकन

कानूनी वैज्ञानिक परीक्षण लेखांकन मूलतः लेखांकन, अंकेक्षण और अनुसन्धानात्मक दक्षताओं का व्यवस्थित रूप में एकीकरण हैं।'फोरेन्सिक लेखांकन' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम मौरिस ई0 पीलाओबैट के द्वारा किया गया जिन्होंने इसकी "वित्तीय विवरणों में फोरेन्सिक लेखांकन की कुछ विशेताएँ होती हैं किन्तु सभी नहीं" के रूप में व्याख्या की। यदि हम इसके शब्दकोणीय अर्थ में जायें, तो ' फोरेन्सिक' शब्द का अर्थ हैं न्यायालयों में अथवा के द्वारा प्रयुक्त'।

इस प्रकार कानूनी वैज्ञानिक परीक्षण लेखांकन का एक विशेष व्यावहारिक क्षेत्र है, जो लेखांकन विश्लेषण प्रदान करे, जो न्यायालयों को स्वीकार हो और जो अन्ततः विवादों का निपटारा करने लिए विवेचन एवं बहस के आधार की संरचना करे। फोरेन्सिक लेखांकन संख्याओं मात्र से अलग तरीके से देखता है और मुख्यतया परिस्थिति की सही वास्तविकता पर सभी तीन बातों अर्थात बुद्धिमता, भावनात्मकता और सामाजिकता के मापदण्डों का उपयोग करके ध्यान को केन्द्रित करता हैं।

फोरेन्सिक लेखांकन में विचित्रता, अनियमितता और असामान्य प्रकृति के लेन–देनों की जांच एवं नियन्त्रण की कोई प्रमाणित कार्य पद्धति इन कपटों की खोज के लिए नहीं हैं क्योंकि प्रत्येक प्रकार का कपट अपनी प्रकृति में अनोखा और प्रथम दृष्टया होता हैं, इसे खोज निकालना अत्यधिक कठिन होता हैं। किन्तु इस बीच, यह अंकेक्षक कर्तव्य है कि वह इन बिन्दुओं को रेखांकित करे तथा इन्हें प्रबन्ध की जानकारी में लाये।

कम्पनी (अंकेक्षक की रिपोर्ट) आदेश, 2003 के अनुसार अन्य बातों के साथ अंकेक्षक को यह रिपोर्ट करना आवश्यक हैं कि "क्या वर्ष के अन्तर्गत कम्पनी पर अथवा कम्पनी के द्वारा किसी कपट को रिपोर्ट किया गया हैं। यदि हाँ, तो उसकी प्रकृति एवं धनराशि इंगित करना आवश्यक हैं।" भारतीय परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए 'फोरेन्सिक लेखांकन' ने इस पृष्ठभूमि में अत्यधिक महत्व प्राप्त कर लिया हैं। 'फोरेन्सिक लेखांकन' शब्द में विस्तृत प्रकार की क्रियाऐं निहित होती है, जिसमें निम्नांकित सम्मिलित हैं :

- **विशेषज्ञ गवाह–** कोर्ट में दाखिल करने के लिए औपचारिक रिपोर्ट तैयार करने और एक विशेषज्ञ के रूप में साक्ष्य प्रदान करना।
- **मुकदमा लडने के लिए परामर्श–**मुकदमेबाजी में संलग्न वकीलों एवं उनके मुवक्किलों के साथ कार्य करना।
- साक्ष्यों, रणनीति एवं केस प्रस्तुतीकरण में सहयोग करना।
- **कपट का पता लगाना–**कर्मचारियों एवं अन्यों के द्वारा किए गए कपट का पता लगाने तथा कोषों का दुरूपयोग चिन्हित करने में मुवक्किलों के साथ सहयोग करना।
- **'कम्प्यूटर फोरेन्सिक्स'–**इलेक्ट्रानिक डाटा रिकवरी और बौद्धिक सम्पदा (आई0पी0) अधिकारों आदि में सहयोग करना।

फोरेन्सिक लेखांकन के आयाम :

फोरेन्सिक लेखांकन को निम्नांकित तीन मुख्य वर्गीकरणों में विभाजित कर समझा जा सकता हैं :

- दीवानी विवादों से सम्बन्धित विशिष्ट संलग्नताओं जैसे कम्पनी अधिग्रहण से सम्बन्धित मतभेद यथा व्यावसायिक मूल्यांकन, हानियों का मात्राकरण एवं गणना करना तथा अनुबन्ध खण्डन से आर्थिक क्षतिपूर्ति आदि।
- अंशधारी एवं साझेदारी विवाद जिसमें विवादिप मुद्दे के मात्राकरण हेतु कई वर्षो के लेखांकन अभिलेख का विस्तृत विश्लेषण सम्मिलित होता हैं।
- साइबर अपराध जैसे केडिट कार्ड कपट, ए0टी0एम0 कार्ड कपट, साइबर उत्पीड.न से प्राप्तियाँ, साइबर स्टाकिंग अर्थात ई–माध्यम से चुपचाप पीछा करना, साइबर फिशिंग अर्थात अनचाहे ई–मेल भेजना और साधारण तकनीकों से संवेदनशील सूचनाओं का संकलन।

- फोरेन्सिक लेखांकन लेखांकन पेशेवर लापरवाही के दावों के क्षेत्रों, जिनमें अन्य पेशेवरों के कार्य का मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन सम्मिलित होता हैं, से भी सम्बन्धित हैं। इसमें अनुसंधान भी सम्मिलित है कि क्या सामान्यता स्वीकृत लेखांकन और/अथवा अंकेक्षण सिद्धान्तों का खण्डन किया गया हैं।
- व्यावसायिक अनुसंधान, जिसमें कोषों को चिन्हित करना, सम्पत्तियों की पहचान करना और वसूली करना और फोरेन्सिक जानकारी संकलित करना तथा समुचित पूर्व उपायों का परीक्षण आदि सम्मिलित हैं।
- कार्मिक कपट अनुसंधान जिसमें कपट की विद्यमानता, प्रकृति एवं सीमा को निर्धारित करने की कार्य पद्धतियाँ सम्मिलित हैं और अपराधकर्ता की पहचान भी सम्मिलित की जा सकती हैं।
- व्यावसायिक आर्थिक हानियाँ जैसे संविदा विवाद, ट्रेडमार्क एवं पेटेन्ट अतिक्रमण, प्रतियोगिता न करने के वाक्यों के खण्डन से उत्पन्न हानियाँ आदि।
- चिकित्सा बीमा दावों, अनुचित चिकित्सा व्यवहारों सम्बन्धी प्रकरण जिसका परिणाम आर्थिक हानियों में हो ।
- वैकल्पिक विवाद निस्तारण संरचनाओं में मध्यस्थता एवं पंच निर्णय, जो फोरेन्सिक लेखांकारों के कानूनी प्रकरणों एवं कार्य पद्धतियों की जानकारी होने, विवादों का निपटारा न्यूनतम कठिनाई एवं समय की न्यूनतम हानि से करने में व्यक्तियों एवं व्यवसायों की सहायता करने के कारणों से सम्भव होते हैं।

सामान्यतया फोरेन्सिक लेखांकन में दो शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं जैसे फोरेन्सिक अनुसन्धान एवं फोरेन्सिक अंकेक्षण।

फोरेन्सिक अनुसंधान : इसका आशय जाँच करने में अनुसंधानात्मक दक्षताओं का इस तरह उपयोग करना ताकि परिणामा को कानूनी न्यायालय में प्रयोग किया जा सके। फोरेन्सिक अनुसंधान लेखांकन चिकित्सा अथवा अभियांत्रिकी जैसे क्षेत्रों में किया जाता हैं।

फोरेन्सिक अंकेक्षण : इसका आशय किसी कपट या माने गए कपट का अनुसंधान साक्ष्य एकत्रित करने के उद्देश्य से करना जिसे कानूनी न्यायालय में प्रस्तुत किया जा सके। यह आवश्यक रूप में औचित्य, अनुसंधानात्मक नियमितता एवं वित्तीय अंकेक्षण का मिश्रण हैं। इसका उद्देश्य यह निश्चित करना हैं कि क्या वित्तीय विवरणों में व्यवसाय का सही मूल्य प्रदर्शित किया गया है और परीक्षण के अन्तर्गत यह ज्ञात करना कि क्या कपट हुआ हैं।

फोरेन्सिक लेखांकन के आलोचनात्मक पक्ष भी हैं जिन्हें पूर्व उपायों एवं समुचित देखभाल के दृष्टिकोण के द्वारा दूर किया जा सकता हैं :

- फोरेन्सिक लेखांकन का उद्देश्य लेखों की शुद्धता को निर्धारित करना है और यह देखना कि कोई कपट किया है अथवा नहीं।

- उपयोग में लायी जाने वाली कुछ तकनीकें विगत प्रवृत्तियों का विश्लेषण अर्थात चुने हुए लेन–देनों की पर्याप्त एवं गहन जाँच हो सकती हैं।
- वैधानिक अंकेक्षण के विपरीत समयावधि की कोई सीमा नहीं होती हैं और इस प्रकार लेखों का परीक्षण विस्तृत रूप में उनके प्रारंभ से किया जा सकता हैं।
- रहतिये का सत्यापन, चालू सम्पत्तियों के वसूली मूल्य या दायित्व का अनुमान आदि, दशाओं में चुने हुए/संदिग्ध मदों का स्वतन्त्र सत्यापन किया जा सकता हैं।
- आर्थिक चिट्ठे से बाहर की मदों जैसे संविदाओं की दशा में इन लेन–देनों की नियमितता एवं औचित्य का परीक्षण किया जा सकता हैं।
- विपरीत निष्कर्षों की दशा में कपट का वैधानिक निर्धारण एवं कपट के लिए उत्तरदायी व्यक्ति का नाम बताना इत्यादि संभावनाओं पर सोच–विचार किया जा सकता हैं।

यद्यपि समूची लेखांकन बिरादरी ने फोरेन्सिक लेखांकन के रूप में लेखांकन के इस नए आयाम को स्वीकार किया हैं किन्तु किए जाने वाले कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए इसे फोरेन्सिक लेखांकन की अपेक्षा फोरेन्सिक अंकेक्षण कहा जाना चाहिए। यह भी हमें भली–भांति ज्ञात है कि जब तक एक अंकेक्षक लेखांकन का भली–भांति जानकार नहीं होता, वह अंकेक्षण कार्य सफलतापूर्वक नहीं कर सकता है और अपनी राय नहीं दे सकता है कि वित्तीय विवरण उपक्रम का सही एवं उचित चित्र प्रदर्शित कर रहे हैं।

अतः लेखाकार के द्वारा, एक लेखाकार के जिन कर्तव्यों का निर्वहन किया जा सकता हैं, वह उसके अंकेक्षण कार्य का भाग हैं। अतः इसे फोरेन्सिक लेखांकन की अपेक्षा फोरेन्सिक अंकेक्षण कहा जाना बेहतर हैं।

9.5 मानव संसाधन लेखांकन

मानव संसाधन लेखांकन संगठन में कार्यरत व्यक्तियों (जैसे कर्मचारी एवं प्रबंधकों) की लागत एवं मूल्य का मापन करता हैं। यह कार्यशक्ति की नियुक्ति, प्रशिक्षण एवं विकास में होने वाली लागत की गणना करता हैं।

यह उसके कर्मचारियों एवं प्रबन्धकों के वर्तमान आर्थिक मूल्य को भी ज्ञात करता हैं। इसके कर्मचारियों एवं प्रबन्धकों की लागत एवं मूल्य की गणना करने के उपरान्त, लेखाकार एक प्रतिवेदन तैयार करता हैं, जिसे एच0आर0ए0 रिपार्ट कहा जाता हैं। इसे उच्च प्रबन्धन को आवश्यक कार्यवाही हेतु सौंपा जाता हैं।

मानव संसाधन लेखांकन की विधियाँ :

मानव संसाधन लेखांकन की विभिन्न विधियाँ हैं, जिनमें से कुछ निम्नांकित हैं :

- वास्तविक लागत विधि
- प्रतिस्थापन लागत विधि
- प्रमाप लागत विधि, इत्यादि।

परिभाषा

अमेरिकन एकाउन्टिंग एसोसिएसन के अनुसार,"एच0आर0ए0 मानव संसाधनों के विषय में आंकडों की पहचान एवं मापन करने तथा इस सूचना को रूचि रखने वाले पक्षों को सम्प्रेषित करने की प्रक्रिया हैं।"

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि यह लेखांकन की वह शाखा है जो एक संगठन के मानव संसाधनों के वित्तीय आंकडों की पहचान एवं मापन करती है और मानव संसाधनों में निहित लागत की गणना करती हैं।

मानव संसाधन के लाभ : मानव संसाधन लेखांकन के लाभ निम्नलिखित हैं :

1. **यह मानव शक्ति नियोजन हेतु आगतें प्रदान करना है :** एच0आर0ए0 मानव संसाधनों की लागत एवं मूल्य के विषय में उपयोगी जानकारी प्रदान करता हैं। यह मानव संसाधनों की शक्तियों एवं कमजोरियों को भी इंगित करता हैं, जिससे प्रबन्धको को नियोजन में तथा मानव संसाधनों के विषयों में सही निर्णय लेने में सहायता प्राप्त होती हैं।
2. **मानव संसाधन नीतियों के निरूपण हेतु सूचनायें :** एच0आर0ए0 कर्मचारियों की पदोन्नति कार्य के अनुकूल वातावरण, कार्य सन्तोष और मानव संसाधन प्रबंध के कई अन्य आयामों के विषय में स्थायी कार्मिक नीतियों के निरूपण हेतु उपयोगी सूचनायें प्रदान करता हैं।
3. यह मानव संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को सुनिश्चित करता हैं।
4. मानव संसाधन लेखांकन संगठन के कर्मचारियों एवं प्रबन्धकों के मनोबल एवं अभिप्रेरण में वृद्धि करता हैं।

निष्कर्ष रूप में, हम कह सकते हैं कि मानव संसाधन लेखांकन मानव संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग एवं मानव पूँजी के मूल्यांकन को सुनिश्चित करता हैं।

9.6 पर्यावरणीय लेखांकन/हरित लेखांकन

पर्यावरणीय लेखांकन' एक शब्द है जो लेखांकन की उभरते क्षेत्रों के विभिन्न पक्षों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह एक संगठन के द्वारा निर्माण एवं व्यापार में होने वाली पर्यावरणीय लागतों की पहचान करने एवं मापन करने तथा उन्हें प्रबन्धकों को सम्प्रेषित करने की एक प्रक्रिया हैं।

पर्यावरणीय लेखांकन के दो पक्ष हैं यथा; प्रबन्धकीय पक्ष एवं वित्तीय पक्ष । इसके अनुसार इसे पर्यावरण प्रबन्ध लेखांकन (ई0एम0ए0) और पर्यावरणीय वित्तीय लेखांकन (ई0एफ0ए0)नाम दिया गया है। ई0एम0ए0 रूपी उपकरण मूलभूत रूप में एक प्रबन्धकीय लेखांकन उपकरण है जिसको मुख्यतः आन्तरिक व्यावसायिक निर्णयों के निरूपण एवं निर्णयन मे, विशेषतः संगठन के पर्यावरणीय प्रबन्धन क्रियाओं हेतु उपयोग में लाया जाता हैं।

ई0एम0ए0 का विकास पर्यावरणीय लागतों, परिणामें एवं प्रभाव के प्रति परंपरागत प्रबन्धकीय लेखांकन के दृष्टि कोणों की कतिपय सीमाओं की पहचान करने के लिए किया गया। उदाहरणार्थ उपरिव्यय लेखे भूतकाल में कई पर्यावरणीय लागतों का गन्तव्य केन्द्र थे। लागत आबंटन अशुद्ध होता था और उसे फिर से प्रक्रियाओं, उत्पाद

अथवा प्रक्रिया रेखाओं में पहचाना नहीं जा सकता था। उत्पादन के दौरान क्षतिग्रस्त कच्ची सामग्री का अशुद्ध लेखांकन किया जाता था।

प्रबन्ध लेखांकन एवं पर्यावरणीय प्रबन्ध लेखांकन में अन्तरः

प्रबन्ध लेखांकन का संगठनात्मक निर्णयन के लिए लागत अथवा अन्य सूचना की पहचान, संकलन, पूर्वानुमान, विश्लेषण एवं उपयोग से है। पर्यावरणीय प्रबन्ध लेखांकन सामग्री एवं ऊर्जा बहाव/प्रवाह की सूचना पर एवं पर्यावरणीय लागत सूचना पर ध्यान केन्द्रित करने वाला प्रबधकीय लेखांकन हैं।

वित्तीय लेखांकन एवं पर्यावरणीय लागत लेखांकन में अन्तर

वित्तीय लेखांकन में वाह्य पक्षों जैसे हित धारकों एवं बैंकरो को विकास एवं संगठनात्मक प्रतिवेदन करना सम्मिलित है। पर्यावरणीय वित्तीय लेखांकन पर्यावरणीय उत्तरदायित्व लागतों एवं अन्य महत्वपूर्ण लागतों पर प्रतिवेदन पर ध्यान केन्द्रित करते हुए वित्तीय लेखांकन पर निर्मित किया जाता हैं। पर्यावरणीय प्रबन्ध लेखांकन सम्पूर्ण विश्व में उद्योग, सरकार एवं समाज को लाभों के साथ लेखांकन का उभरता हुआ स्वरूप है। जैसे–जैसे कम्पनियाँ अपने निर्णयन में पर्यावरणीय प्रभाव को देखने की ओर अग्रसर होंगी, ई0एम0ए0 का मूल्य उतना ही बढ़ता चला जायेगा।

9.7 सारांश

वर्ष 2011 में अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानकों (आई0एफ0आर0एस0) को लागू कर दिए जाने से इस वर्ष को भारत के वित्तीय प्रतिवेदन एवं नियामक धरातल पर एक परिवर्तन बिन्दु माना जा सकता हैं। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक (आई0एफ0आर0एस0) अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय लेखांकन मानक बोर्ड (आई0ए0एस0बी0) द्वारा विकसित लेखांकन मानकों के वे समूह हैं जो कम्पनियों के वित्तीय विवरणों को बनानें में वैश्विक मानक बन गए हैं। एम0सी0ए0 की घोषणा के अनुसार कम्पनी अधिनियम की धारा 211 (3 सी) के अन्तर्गत लेखांकन मानकों के दो पृथक समूह–आई0एफ0आर0एस0 एकीकृत मानक हैं, जिन्हें (IND-AS) आई0एन0डी0–ए0एस0 नाम दिया गया हैं और दूसरे विद्यमान लेखांकन मानक हैं। वैश्विक लेखांकन मानकों जैसे आई0एफ0आर0एस0 ऐसे उद्यमों, जो विभिन्न देशों में संचालित किए जा रहे हैं, में तुलना की सुविधा प्रदान करते हैं। लेखांकन मानकों पर राष्ट्रीय परामर्शदाता समिति की सिफारिशों के बाद 35 भारतीय लेखांकन मानकों को 1 अप्रैल 2011 से लागू किया गया हैं तथा कम्पनी मामलों के मन्त्रालय ने अपनी वैबसाइट में स्थान दिया गया हैं। यह मानक कर एवं अन्तर्संबंधित मामलों के समाधान के पश्चात एम0सी0ए0 द्वारा घोषित की जाने वाली तिथि से चरण बद्ध ढंग से कियान्वित किए जाऐंगे।

अन्य नवीनतम परिवर्तनों में जिन्हें वित्तीय लेखांकन एवं प्रतिवेदन के क्षेत्र में उभरती हुई प्रवृत्तियाँ भी कहा जाता हैं, विस्तारणयोग्य व्यवयाय प्रतिवेदन भाषा (एक्स0बी0आर0एल0) एवं संशोधित सूची इ IV, फोरेंसिक लेखांकन एवं मानव व्यवहार लेखांकन आतें हैं। एक्स0बी0आर0एल0 , सी0पी0एस0 चार्ली हॉफमैन द्वारा प्रतिपादित है। एम0सी0ए0 के द्वारा भारत में निर्धारित कम्पनियों को 31 मार्च 2011 को समाप्त

होने वाले वर्ष के लिए एक्स0बी0आर0एल0 के प्रयोग को अपने वार्षिक वित्तीय विवरण दाखिल करन हेतु आवश्यक किया गया है। यह व्यवसायिक प्रतिवेदनों में प्रकटीकरण की प्रत्येक व्यक्तिगत मद के लिए एक अनोखा इलेक्ट्रानिक रूप में पढे जाने जाने योग्य टैग प्रदान करता हैं। एक्स0बी0आर0एल0 के प्रयोग के द्वारा कम्पनियाँ अपने वित्तीय आंकडों के संकलन को स्वचालित कर सकती हैं। मानव संसाधन लेखांकन, लेखांकन की वह शाखा है जो एक संगठन के मानव संसाधनों के वित्तीय आंकडों की पहचान एवं मापन करती है और मानव संसाधनों में निहित लागत की गणना करती हैं। प्रबन्ध लेखांकन का संगठनात्मक निर्णयन के लिए लागत अथवा अन्य सूचना की पहचान, संकलन, पूर्वानुमान, विश्लेषण एवं उपयोग से है। पर्यावरणीय लेखांकन' एक शब्द है जो लेखांकन की उभरते क्षेत्रों के विभिन्न पक्षों का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। पर्यावरणीय प्रबन्ध लेखांकन सामग्री एवं ऊर्जा बहाव/प्रवाह की सूचना पर एवं पर्यावरणीय लागत सूचना पर ध्यान केन्द्रित करने वाला प्रबधकीय लेखांकन हैं। यह एक संगठन के द्वारा निर्माण एवं व्यापार में होने वाली पर्यावरणीय लागतों की पहचान करने एवं मापन करने तथा उन्हें प्रबन्धकों को सम्प्रेषित करने की एक प्रक्रिया हैं।

9.8 शब्दावली

- आई0ए0एस0बी0–अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक बोर्ड; आई0एफ0आर0एस0–अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रतिवेदन मानक;
- एम0सी0ए0–कम्पनी मामलों का मंत्रालय, आई0एन0डी0–ए0एस0–आई0एफ0आर0एस0एकीकृत मानक;
- सी0पी0ए0 चार्टर्ड पब्लिक एकाउन्टेन्ट्रस;
- एच0आर0ए0 मानव संसाधन लेखांकन;
- ई0एम0ए0–पर्यावरणीय प्रबंध लेखांकन
- **एक्स0बी0आर0एल0–**ई–विस्तारण योग्य व्यवसायिक प्रतिवेदन भाषा है, जिससे व्यावसायिक सूचनाओं हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सूचना प्रारूप डिजायन किया गया हैं।यह निःशुल्क एवं सरल है।
- **चालू एवं गैर चालू सम्पत्तियाँ एवं दायित्व–** ऐसी सम्पत्तियाँ एवं दायित्व हैं, जिन्हें आर्थिक चिट्ठे की तिथि से 12 माह के भीतर अर्जित होने अथवा पूर्ण होने की प्रत्याशा हैं।

9.9 बोध प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए :

i. भारत में लेखांकन एवं वित्तीय रिपोर्टिंग में वर्ष .... को परिवर्तन का बिंदु समझा जाता हैं।

ii. आई0ए0एस0बी0 के द्वारा निर्धारित नवीन मानकों को .... कहा जाता हैं।

(ब) सत्य/असत्य लिखिए :

i. फोरेंसिक लेखांकन में समयावधि की कोई सीमा नहीं होती हैं।

ii. एक्स0बी0आर0एल0 नियम आधारित हैं, सिद्धान्त आधारित नहीं।

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ)	(i) 2011	(ii) आई0एफ0आर0एस0
(ब)	(i)सत्य	(ii) असत्य

9.11 स्वपरख प्रश्न

1. आई0एफ0आर0एस0 शब्द को समझाइए। वैश्विकस्तर पर लेखांकन के क्षेत्र में आई0एफ0आर0एस0 के क्या लाभ हैं ?
2. भारतीय परिदृश्य में संशोधित अनुसूची IV पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. ई–विस्तारणयोग्य व्यावसायिक प्रतिवेदन भाषा क्या हैं? एक्स0बी0आर0एल0 के वित्तीय लेखांकन के क्षेत्र में क्या लाभ हैं ?
4. मानव संसाधन लेखांकन क्या हैं? मानव संसाधन लेखांकन के लाभ बताइए।

9.12 संदर्भ पुस्तकें

1. बारबोल ए0एन0 ऋषिकेश ए0 साह एवं बुर्ला नितिन निरंजन,जनवरी–4/2011, कन्वर्जेन्स विद आई0एफ0आर0एस0 बैनेफिट एण्ड चैलेन्जेज फॉर इण्डियन स्टेकहोल्डर्स, इन दि प्रोसीडिंग्स ऑफ एट्रथ ए0आई0एम0एस0इन्टर नेशनल कान्फ्रेन्स ऑन मैनेजमैन्ट।
2. ब्रुग्मैन,उल्फ,डास्के,होल्जर,कार्सटन एवं पोप,पीटर एफ0,आर्च,2011,हाऊ डू इन्डिविजुअल इन्वैस्टर्स रिएक्ट टू ग्लोबल एडाप्सन ऑफ आई0एफ0आर0एस0,एच0टी0पी0पी0//रिसर्च एम0बी0ए0सी0यू0के0/एकाउन्टिंग फायनॉन्स/पोर्टल्स ।
3. C. Richard Baker and Elena M. Barbu., 2007, *Trends in Research on International Accounting Harmonization*, The International Journal of Accounting, 42, 272–304.
4. CA. Mohammad Firoz, Prof. A. Aziz Ansari and Kahkashan Akhtar., March 2011, *IFRS Impact on the Indian Banking Industry*, International Journal of Business and Management, 6, 3.
5. Dr Chakrabarty, K. C., March 2011, *Banking and Beyond: New Challenges before Indian Financial System*, http://www.rbi.org.in/scripts/BS_SpeechesV iew. aspx?id=553, March 2011.
6. Dr. Kanan, R., June 2009, *Report of the Committee on IFRS Compliance in Indian Insurance Industry*, www.irdaindia.org/press_release/ifrs_report.pdf.
7. Dr Chakrabarty, K. C., February 2011, *Introduction of IFRS- Issues and Challenges*, http://rbidocs.rbi.org.in/rdocs/Speeches/PDFs /SKC140211F.pdf.

8. Francois, Brochet, Jagolinzer, Alan D.and Riedl, Edward J., April 2011, *Mandatory IFRS Adoption and Financial Statement Comparability*, Working Paper 11-109, Harward Business School.
9. Horton, J., Serafeim, George and Serafeim, Ioanna., 2009, *Does Mandatory IFRS Adoption Improve The Information Environment?*, Working Paper 11-029, Harward Business School, http://www.hbs.edu/research/pdf/11-029.pdf.
10. Jain, P., March 2011, *IFRS Implementation in India: Opportunities and Challenges*, World Journal of Social Sciences, 1, 1, 125 – 136.
11. Khatri, Jameel and Master, Akeel., April 2009, *Convergence with IFRS: Impact on the Fundamental Accounting Practices and Regulatory Framework in India*, Bombay Chartered Accountant Journal 41-A.
12. Khurshid, Salman, April 2010, *IFRS and India*, Knowledge for Markets, 1, 3.
13. Prof. Dr. Sharma, Ravi, June 2010, *IFRS The Way Ahead*, International Referred Research Journal, I, 9.
14. Sunder, Shyam, August 2011, *IFRS Monopoly: The Pied Piper of Financial Reporting*, Accounting and Business Research, 41, 3, 291–306.
15. Singh, Simardeep, *Convergence with IFRS*, http://xa.yimg.com/kq/groups/22830576/49 6919880/name/IFRS_new.pdf.
16. Trade and Development Board, October 2006, *Review of Practical Implementation Issues of International Financial Reporting Standard: Case Study of India*, United Nations Conference on Trade and Development.
17. Taking Stock Indian IFRS, February, 2011, http://www.indodutchconnect.com/app/webroot/ pdf/newslatter/issue49/taking_stock.pdf.

इकाई 10 उद्देश्य, प्रकटीकरण आवश्यकताऐं एवं कम्पनी प्रतिवेदनों का सम्मिश्रण

इकाई की रूपरेखाः

10.1 प्रस्तावना
10.2 कम्पनी के वित्तीय प्रतिवेदन का अर्थ
10.3 कम्पनियों के प्रतिवेदनों के उद्देश्य
10.4 प्रकटीकरण की आवश्यकताऐं
10.5 कम्पनी अधिनियम, 1956
10.6 लाभ एवं हानि खाता
10.7 वर्णनात्मक विवरण पत्र
10.8 पूरक विवरण पत्र
10.9 रोकड़. प्रवाह विश्लेषण
10.10 कम्पनी के वार्षिक प्रतिवेदनों का सामन्जस्यीकरण/सम्मिश्रण
10.11 सारांश
10.12 शब्दावली
10.13 बोध प्रश्न
10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर
10.15 स्वपरख प्रश्न
10.16 संदर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई की व्याख्या के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- कम्पनी या निगमों के वित्तीय प्रतिवेदन का अर्थ समझ सकें ।
- कम्पनी या निगमों के प्रतिवेदनों के प्रकार की व्याख्या कर सकें ।
- कम्पनी या निगमों के प्रतिवेदनों के उद्देश्यों का वर्णन कर सकें ।
- कम्पनी या निगमों के प्रतिवेदनों के विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताऐं समझ सकें ।
- प्रकटीकरण आवश्यकताओं के विषय में सैद्धान्तिक संरचना की व्याख्या कर सकें ।
- निगमों के प्रतिवेदन व्यवहारों में सामन्जस्य की आवश्यकता समझ सकें ।
- अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक समिति की भूमिका की व्याख्या कर सकें ।

10.1 प्रस्तावना

कम्पनी प्रतिवेदन गतिविधियों के विषय में कई प्रकार के हितधारकों जैसे अंशधारी, कर्मचारी, लेनदार, सरकार और सामाजिक संगठनों आदि के लिए सूचना का मुख्य स्रोत है। विभिन्न हितधारक कम्पनी प्रतिवेदनों को अपनी विभिन्न सूचना आवश्यकताओं के लिए उपयोग करते हैं। यद्यपि कम्पनी प्रतिवेदनों के सही उद्देश्यों के

विषय में एक बडी बहस चल रही हैं, यह स्वीकार किया जाता हैं कि कम्पनी प्रतिवेदनों का सामान्य उद्देश्य वित्तीय स्थिति, वित्तीय प्रदर्शन एवं वित्तीय स्थिति में परिवर्तनों के विषय में सूचना आवश्यकताओं की पूर्ति करना हैं।

इसके अतिरिक्त, उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताऐं भिन्न–भिन्न होती हैं किन्तु उनमें कम्पनियों से सूचना प्राप्त करने के प्राधिकार का अभाव होता हैं। सूचना आवश्यकताओं के दृष्टिगत, भारत के चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स संस्थान ने वित्तीय विवरणों की विषय सामग्री के विषय में प्रावधानों को समाविष्ट करते हुए एक सैद्धान्तिक संरचना निर्गमित की हैं, जिसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्ताओं की सूचना की आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित करना हैं।

सम्मिश्रण या एकीकरण का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में कम्पनियों के प्रकटीरण व्यवहारों में एकरूपता लाना हैं। वैश्विक स्तर पर कम्पनियों के प्रतिवेदनों में एकीकरणको लाने के लिए लेखांकन मानक समिति वैश्विक स्तर पर बनायी गयी हैं।

10.2 कम्पनियों के वित्तीय प्रतिवेदन का अर्थ

कम्पनियों का वित्तीय प्रतिवेदन सम्प्रेषण का माध्यम हैं। इसका संबंध विभिन्न प्रकार के उपयोगकर्ताओं को व्यवसाय के वित्तीय लेन–देनों के अभिलेखन एवं प्रतिवेदन के विषय में सूचना प्रदान करने से हैं। कम्पनियों के निहित क्रियाओं की श्रृंखला में वित्तीय लेन–देनों का अभिलेखन, वर्गीकरण, संक्षिप्तीकरण एवं इन सूचनाओं को वित्तीय विवरणों के माध्यम से सामान्य जनता तक पहुँचाना हैं।

कम्पनियों के वित्तीय प्रतिवेदन के प्रकार

उपयोगकर्ताओं की सूचना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आय–विवरण, आर्थिक चिट्ठा एवं रोकड. प्रवाह विवरण सामान्य उद्देश्य के कम्पनी प्रतिवेदन हैं, जिन्हें कम्पनियाँ तैयार करती हैं।

आर्थिक चिट्ठा

आर्थिक चिट्ठा कम्पनी की वित्तीय स्थिति का एक विवरण हैं। यह व्यवसाय के स्वामित्व में विद्यमान सम्पत्तियों के मूल्य, दायित्वों की धनराशि अर्थात बाहरी व्यक्तियों के प्रति कम्पनी की देनदारी और पूँजी का मूल्य अर्थात कम्पनी के अंशधारियों द्वारा प्रदान की गयी धनराशि को प्रतिवेदित करता है।

आय–विवरण

आय विवरण संगठन के वित्तीय प्रदर्शन को प्रतिवेदित करने के लिए तैयार किया जाने वाला विवरण हैं। यह वर्ष के दौरान कम्पनी द्वारा अर्जित आय और किए गये व्ययों का एक विवरण हैं। यह विवरण लाभ का प्रतिवेदन करता हैं यदि अर्जित आय, किये गए व्ययों से अधिक होती हैं और इसके विपरीत स्थिति में हानियाँ को प्रतिवेदिन करता हैं।

रोकड़ प्रवाह विवरण

इस विवरण को कम्पनी की तरलता की स्थिति प्रतिवेदित करने के लिए तैयार किया जाता है और यह आच्छादित अवधि में रोकड. के प्रवाह पर आधारित होता हैं। यह विवरण रोकड़ के अर्न्तप्रवाह और वाह्य प्रवाह की सूचना का अभिलेखन करता हैं और उपयोग–कर्ताओं को संगठन की तरलता की स्थिति के आकलन में सहायता

करता हैं और निश्चित समयावधि में तरलता की स्थिति में परिवर्तन के कारणों को भी ज्ञात करने में भी सहायता करता हैं।

10.3 कम्पनियों के प्रतिवेदनों के उद्देश्य

अमेरिकी वित्तीय लेखांकन परिषद ने कम्पनी प्रतिवेदनों के निम्नांकित उद्देश्यों की पहचान की हैं :

1. वर्तमान एवं भावी विनियोगकर्ताओं, लेनदारों एवं अन्य उपयोगकर्ताओं कों विवेकपूर्ण निवेश, ऋण एवं अन्य निर्णय लेने में उनकी सहायता के उद्देश्य से उपयोगितापूर्ण सूचना को उपलब्ध कराना।
2. उपक्रम के भावी रोकड. की धनराशि, समय एवं अनिश्चितता का आकलन करने हेतु वर्तमान एवं विनियोजकों, लेनदारों एवं अन्य उपयोगकर्ताओं को सूचना प्रदान करना।
3. उपक्रम के आर्थिक संसाधनों, उन संसाधनों के प्रति दावों के विषय में सूचना प्रदान करना और लेन–देनों, घटनाओं और परिस्थितियों जिनसे संसाधनों एवं उन संसाधनों पर दावों में परिवर्तन होता हैं, के प्रभावों पर भी प्रतिवेदन करना।
4. एक समयावधि में उपक्रम के वित्तीय प्रदर्शन के विषय में सूचना प्रदान करना।
5. आय की मदों द्वारा प्रदत्त उपक्रम के वित्तीय प्रदर्शन के विषय में सूचना प्रदान करना।
6. यह सूचना प्रदान करना कि उपक्रम ने रोकड़ प्राप्त की हैं और कैसे इसे खर्च किया गया हैं, इसके ऋणों एवं ऋणों के पुर्नभुगतान के विषय में, पूँजी संबंधी लेन–देनों के विषय में, उपक्रम के संसाधनों को उसके स्वामियों में वितरण और अन्य कारकों के विषय में जो उपक्रम की तरलता एवं शोधनक्षमता को प्रभावित करते हैं।
7. निर्णयन के लिए प्रबन्धकों को उपयोगी सूचना प्रदान करना ।
8. प्रबंध ने उसे सौंपी गयी सम्पत्तियों के उपयोग के विषय में प्रबंधन के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन किस प्रकार किया हैं, के विषय में सूचना प्रदान करना ।

10.4 प्रकटीकरण की आवश्यकताऐं

कम्पनी प्रतिवेदनों में सूचना का प्रकटीकरण अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह एक मात्र माध्यम हैं, जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार के अनेक उपयोगकर्ता सूचना की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। उद्देश्यों में विभिन्नता के कारण विभिन्न उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताऐं भी भिन्न होती हैं। इस कारण, कम्पनी प्रतिवेदनों के एकमात्र प्रारूप को निर्धारित करना बहुत कठिन हैं, जो सभी उपयोगकर्ताओं की सूचनाओं की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। विभिन्न प्रकार के उपयोगर्ताओं में विनियोजक जोखिम पूँजी के प्रमुख प्रदानकर्ता हैं और मुख्य उपयोगकर्ता माने जाते हैं। आई0सी0ए0आई0 के द्वारा प्रतिपादित सैद्धान्तिक संरचना

जो कम्पनी प्रतिवेदनों की प्रकटीकरण आवश्यकताओं को देखती हैं, ने यह उल्लिखित किया हैं कि कम्पनी प्रतिवेदन जो विनियोजकों की आवश्यकताऐं पूरी करते हैं, वह उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को भी अवश्य पूरा करेंगे।

कम्पनी प्रतिवेदन में निहित आधारभूत मुद्दे

कम्पनी प्रतिवेदनों के द्वारा प्रकटीरण की जाने वाली सूचानाओं को निर्धारित करने में व्यावयायिक उपक्रम के प्रबन्ध, विशेषतः कम्पनी उपक्रमों को निम्नांकित मुद्दों को निर्धारित करना होता हैं :

1. कम्पनी प्रतिवेदनों के उपयोगकर्ता कौन हैं अथवा किनके लिए सूचना दी जानी हैं?
2. कौन सी सूचना का प्रकटीकरण होना चाहिए?
3. कितनी मात्रा में सूचना का प्रकटीकरण किया जाना चाहिए?
4. सूचना का कब प्रकटीकरण होना चाहिए?
5. सूचना का कब प्रकटीकरण होना चाहिए?

कम्पनी प्रतिवेदनों में सूचना प्रकटीरण के सम्बन्ध में वैधानिक संरचना

भारत में कम्पनियो के प्रकटीकरण व्यवहार केन्द्र सरकार के द्वारा कम्पनी अधिनियम, 1956, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के मार्ग निर्देशों और पेशेवर लेखांकन संस्था अर्थात आई0सी0ए0आई0 के मार्गनिर्देशों से शासित होते हैं। कम्पनी अधिनियम,1956 इससे पंजीकृत समस्त कम्पनियों के लिए प्रकटीकरण की आवश्यकताऐं निर्दिष्ट करता हैं। इसके अतिरिक्त, एस0ई0बी0आई0 (सेबी) ने सूचीकृत कम्पनियों पर कुछ प्रतिवेदन आवश्यकताऐं लागू की हैं। इसके साथ ही, उपरोक्त दो संस्थाओं के द्वारा प्रतिवेदन आवश्यकताऐं लागू करने के अतिरिक्त पेशेवर लेखांकन संस्था अर्थात आई0सी0ए0आई0 ने अनेक लेखांकन मानकों का निर्गमन और सैद्धान्तिक संरचना जो कम्पनी प्रकटीकरण की विषय सामग्री को देखती हैं, निर्मित की हैं।

10.5 कम्पनी अधिनियम,1956

कम्पनी वार्षिक प्रतिवेदनों की विषय सूची के सम्बन्ध में विस्तृत मार्गनिर्देशों को कम्पनी अधिनियम, 1956 में सूचीबद्ध किया गया हैं। अधिनियम लेखे की पुस्तकों के रखरखाव एवं अन्तिम खातों को बनाने संबंधी विस्तृत मार्ग निर्देश प्रदान करता हैं। यह कम्पनी प्रतिवेदनों में प्रतिवेदन की जाने वाली सामग्री को निर्दिष्ट करता हैं और सूचना के प्रकटीकरण के सम्बन्ध में निदेशक मण्डल के उत्तरदायित्वों को भी निर्धारित करता हैं। कम्पनी प्रतिवेदनों की विषय सूची उल्लिखित करने के साथ ही, अधिनियम द्वारा निर्धारित मुख्य आवश्यकता यह हैं कि कम्पनी प्रतिवेदनों को कम्पनी के वित्तीय प्रदर्शन एवं वित्तीय स्थिति का सत्य एवं उचित चित्र प्रस्तुत करना चाहिए। **'सत्य एवं उचित'** शब्दों का अर्थ अधिनियम में नहीं दिया गया हैं। किन्तु, धारा 211(5) उल्लिखित करती हैं कि यदि आर्थिक चिट्ठा लाभ एवं हानि खाता अनुसूची VI या केन्द्र सरकार की किसी अन्य अधिसूचना के द्वारा आवश्यक सूचना का प्रकटीकरण नहीं करता है, तो कम्पनी प्रतिवेदनों को 'सत्य एवं उचित' चित्र व्यक्त करने में असफल माना जायेगा। कम्पनी अधिनियम के द्वारा यह आवश्यक किया गया है कि

कम्पनी को पुस्तकों का रखरखाव निम्नाकिंत सूचना के अभिलेखन के लिए करना चाहिए :

- समस्त प्राप्तियाँ और धनराशि का विवरण और वह सभी प्रकरण जिनके सम्बन्ध में प्राप्तियाँ एवं विवरण किए गए हैं।
- कम्पनी के माल के सभी विक्रय और क्रय
- कम्पनी की सम्पत्तियाँ एवं दायित्व (धारा 209)
  इसके अतिरिक्त, 1998 तक कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार कम्पनी प्रतिवेदन तैयार करते समय कम्पनियों द्वारा लेखांकन मानकों का अनुपालन अनिवार्य नहीं था। किन्तु, 1988 में कम्पनी अधिनियम में किए गए संशोधन के माध्यम से धारा 211 में धारा 3ए, 3बी एवं 3सी जोडी गयी हैं। इन धाराओं के द्वारा लेखांकन मानकों का अनुपालन अनिवार्य कर दिया गया हैं।

कम्पनी अधिनियम, 1956 के अनुसार प्रकटीकरण आवश्यकताऐं :

प्रारम्भ में, कम्पनी उपक्रमों को केवल दो वित्तीय विवरण अर्थात आर्थिक चिट्ठा और लाभ एवं हानि खाता बनाना एवं प्रस्तुत करना आवश्यक था। भारतीय कम्पनियों में से अधिकांश को अब रोकड़ प्रवाह विवरण भी तैयार करना आवश्यक है और उपरोक्त वर्णित दो मुख्य वित्तीय विवरणों के साथ–साथ वित्तीय एवं गैर–वित्तीय मदों की संख्या पर प्रतिवेदन तैयार करना भी आवश्यक है।

कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों और/अथवा लेखांकन मानकों के अनुसार आवश्यक रूप से प्रकटीकृत की जाने वाली अनिवार्य सूचना का विवरण निम्नवत हैं :

1. आर्थिक चिट्ठा
2. आय और व्यय का विवरण
3. वर्णनात्मक प्रकटीकरण
4. रोकड. प्रवाह विवरण
5. अंकेक्षक का प्रतिवेदन
6. निदेशकों का प्रतिवेदन
7. पूरक विवरण

आर्थिक चिट्ठा

कम्पनी अधिनियम के द्वारा आवश्यक है कि लेखांकन वर्ष के अंत में बनाये जाने वाले कम्पनी के प्रत्येक आर्थिक चिट्ठे को कम्पनी की वित्तीय स्थिति का सत्य एवं उचित चित्र प्रस्तुत करना चाहिए इसे धारा 211 की अनुसूची VI के खण्ड–1 (संशोधित) के द्वारा निर्दिष्ट अथवा परिस्थितियों के अनुसार निकटतम होना चाहिए। अनुसूची VI में प्रदत्त आर्थिक चिट्ठे और लाभ एवं हानि खाते के प्रारूप को कम्पनी मामलों के मन्त्रालय की दिनांक 28 मार्च,2011 की अधिसूचना के द्वारा संशोधित किया गया है। संशोधित अनुसूची VI 1 अप्रैल 2011 को अथवा से प्रारंभ होने वाले वित्तीय वर्ष हेतु लागू होगी। अनुसूची VI में संशोधन का मुख्य उद्देश्य भारतीय लेखांकन मानकों का आई0एफ0आर0एम0 के साथ एकीकरण हैं। उपरोक्त सन्दर्भित अधिसूचना

के अनूसार उल्लिखित आर्थिक चिट्ठे एवं विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणी को निम्नवत दिया गया है :

आर्थिक चिट्ठे का संशोधित प्रारूप

कम्पनी का नाम ....

आर्थिक चिट्ठा तिथि को ....

(रूपये में............................)

विवरण	नोट संख्या	चालू प्रतिवेदन अवधि के अन्त में आंकड़ें	पूर्व प्रतिवेदन अवधि के अन्त में आंकड़े
1	2	3	4
(I) समता एवं दायित्व 1.अंशधारियों का कोष अंश पूँजी संचय एवं आधिक्य अंश अधिपत्र के सापेक्ष प्राप्त धनराशियाँ **2. आबंटन के निर्णयाधीन अंश आवेदन** **3.गैर चालू दायित्व** (अ) दीर्घकालीन ऋण (ब) आस्थगित कर देयताऐं(शुद्ध) (स) दीर्घकालीन दायित्व (द) दीर्घकालीन प्रावधान **4.चालू दायित्व** (अ) अल्पकालीन ऋण (ब) व्यापारिक देय पत्र (स) अन्य चालू दायित्व (द) अल्पकालीन प्रावधान **(II) सम्पत्तियाँ** 1.गैर–चालू सम्पत्तियाँ (अ) स्थायी सम्पत्तियाँ दृश्य सम्पत्तियाँ अदृश्य सम्पत्तियाँ पूँजीगत चालू कार्य विकासोन्मुखअदृश्य सम्पत्तियाँ **(ब) गैर–चालू विनियोजन** (स) आस्थगित कर सम्पत्तियाँ (शुद्ध) (द) दीर्घकालीन ऋण एवं अग्रिम (य) अन्य गैर–चालू सम्पत्तियाँ **2. चालू सम्पत्तियाँ** (अ) चालू विनियोग (ब) रहतिया (स) व्यापारिक प्राप्य विपत्र			

(द) रोकड. एवं रोकड. समान चालू संपत्तियाँ (य) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम (र) अन्य चालू सम्पत्तियाँ योग			

आर्थिक चिट्ठे को बनाने हेतु सामान्य मार्गनिर्देश :

1. एक सम्पत्ति को चालू में वर्गीकृत किया जायेगा जब वह निम्नांकित मापदण्ड में से किसी एक को पूरा करती है :

(अ) कम्पनी के सामान्य परिचालन चक्र में इसके वसूल होने की अपेक्षा हो, या विक्रय अथवा उपभोग का इरादा हो ,

(ब) इसे प्रारंभिक रूप में व्यापार के उद्देश्य से धारित किया गया हो,

(स) प्रतिवेदन की अवधि के पश्चात 12 माह के भीतर इसके वसूल होने की अपेक्षा हो या

(द) जब तक इसे विनिमय होने या जब तक प्रतिवेदन अवधि के पश्चात के 12 माह हेतु इसे विनिमय होने अथवा एक दायित्व को समाप्त करने में प्रयुक्त होने से प्रतिबन्धित नहीं किया गया हो, यह रोकड़ या रोकड़ के समान है।

अन्य सभी सम्पत्तियों को गैर चालू में वर्गीकृत किया जायेगा।

2. एक परिचालन चक्र प्रक्रियन हेतु सम्पत्तियों के अधिग्रहण एवं उनके रोकड़ या रोकड़ समान में वसूली होने के मध्य का समय हैं। जहाँ सामान्य परिचालन चक्र की पहचान नहीं हो सकती हैं, इसे 12 माह की अवधि का माना जाता हैं।

3. एक दायित्व को चालू में वर्गीकरण किया जायेगा, जब वह निम्नाकिंत मापदण्ड को पूरा करता हैं :

(अ) इसके कम्पनी के सामान्य परिचालन चक्र में भुगतान होने की प्रत्याशा हो,

(ब) इसे प्रारंभिक रूप में व्यापार के उद्देश्य से धारित किया गया हो,

(स) इसको प्रतिवेदन की अवधि के पश्चात 12 माह के भीतर भुगतान के द्वारा समाप्त किया जाना हो,

(द) कम्पनी को प्रतिवेदन की तिथि के पश्चात न्यूनतम 12 माह के लिए किसी दायित्य भुगतान को स्थगित रखने का शर्तरहित अधिकार नहीं होता हैं, दायित्व की शर्तें जो विपक्षी पक्षकार के विकल्प पर समता अंशो के द्वारा इसके भुगतान की हों, इसके वर्गीकरण को प्रभावित नहीं करती हैं। अन्य सभी दायित्वों को गैर चालू दायित्व में वर्गीकरण किया जाता हैं।

4. एक प्राप्त विपत्र को 'व्यापारिक प्राप्य' में वर्गीकृत किया जायेगा यदि यह व्यवसाय की साधारण प्रगति में बेचे गए माल या प्रदान की गयी सेवा के विषय में देय धनराशि के सम्बन्ध में हो।

5. एक प्राप्त विपक्ष को 'व्यापारिक देय' में वर्गीकृत किया जायेगा यदि यह व्यवसाय की साधारण प्रगति में क्रय किए गए माल या प्रदान की गयी सेवा के विषय में देय धनराशि के संबन्ध में हो।

6. एक कम्पनी खातों की टिप्पणियों में निम्नांकित का प्रकटीकरण करेगी :

(अ) **अंश पूँजी**

अंश पूँजी के प्रत्येक वर्ग के लिए (पूर्वाधिकार अंशों के विभिन्न वर्गो का पृथक से उल्लेख किया जायेगा)

i. अधिकृत अंशों की संख्या एवं धनराशि ।

ii. निर्गमित, आवेदन एवं पूर्णदत्त तथा आवेदन किन्तु पूर्ण प्रदत्त नहीं ।

iii. प्रतिअंश सम मूल्य ।

iv. प्रतिवेदित अवधि के प्रारम्भ एवं अन्त में अदत्त अंशों की संख्या का समाशोधन।

v. अंशों के प्रत्येक वर्ग से सम्बद्ध अधिकार, पूर्वाधिकार एवं प्रतिबन्ध जिसमें लाभांशों के वितरण एवं पूँजी के पुर्न भुगतान के प्रतिबन्ध सम्मिलित हैं।

vi. कम्पनी की सूत्रधारी कम्पनी या इसकी अनन्तिम सूत्रधारी कम्पनी द्वारा धारित कम्पनी में प्रत्येक वर्ग के अंश, उन अंशो को सम्मिलित करते हुए जो सहायक कम्पनियों अथवा सूत्रधारी कम्पनी की सहयोगियों अथवा अनन्तिम सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा धारित हैं।

vii. कम्पनी में प्रत्येक ऐसे अंशधारी जिनके पास 5% अंशों से अधिक धारित अंश हैं, के द्वारा धारित अंशों की संख्या ।

viii. विकल्प के अन्तर्गत और अंशों के विक्रय/अविनियोग के लिए संविदा/प्रतिबद्धताओं के अन्तर्गत निर्गमन के लिए सुरक्षित अंश, निर्गमन की शर्तो एवं धनराशि को सम्मिलित करते हुए ।

ix. आर्थिक चिट्ठे को बनाने की तिथि के ठीक पूर्व के 5 वर्षों की अवधि के लिए :

- बिना भुगतान की संविदाओं के पूर्ण करने तक पूर्ण प्रदत्त आबंटित अंशों की कुल संख्या एवं धनराशि जो रोकड़ में प्राप्त हो रही हैं।
- बोनश अंशों के द्वारा पूर्ण प्रदत्त होने वाले आबंटित अंशों की कुल संख्या एवं वर्ग।
- पुनः क्रय किये गये अंशों की कुल संख्या एवं वर्ग ।

x. समता/पूर्वाधिकार अंशों में परिवर्तनशील निर्गमित प्रतिभूतियों की शर्ते, अवरोही क्रम में परिवर्तन की सबसे पहले की तिथिके साथ, ऐसी सबसे बाद की तिथि से प्रारम्भ करते हुए ।

xi. भुगतान की गयी याचनाऐं (निदेशकों एवं अधिकारियों द्वारा भुगतान की गयी याचनाओं के कुल मूल्य को प्रदर्शित करते हुए)

xii. हरण किए गये अंश (मूल रूप में भुगतान की गयी धनराशि)

संचय एवं आधिक्य

i. संचय एवं आधिक्य को निम्नवत वर्गीकृत किया जायेगा :

(अ) पूँजी संचय

(ब) पूँजी शोधन संचय

(स) प्रतिभूतियों का प्रब्याजि संचय

(द) ऋणपत्र शोधन संचय
(य) पुर्नमूल्यांकन संचय
(र) अंश विकल्प अदत्त खाता
(ल) अन्य संचय–(प्रत्येक संचय की प्रकृति और उद्देश्य तथा संबंधित का स्पष्टया उल्लेख करते हुए)

(a) आधिक्य अर्थात लाभ एवं हानि के विवरण का शेष, आबंटनों एवं नियोजनों जैसे लाभांश, बोनस अंशों और संचय से/ को हस्तांतरण इत्यादि का प्रकटीकरण करते हुए ।

ii. एक संचय विशेष रूप से चिन्हित विनियोग का प्रतिनिधित्व करता हैं, उसे 'कोष' कहा जायेगा।

iii. लाभ एवं हानि के विवरण का डेबिट शेष 'आधिक्य' शीर्षक के अर्न्तगत एक ऋणात्मक अंक की तरह दर्शाया जायेगा। इसी प्रकार 'संचय एवं आधिक्य' के शेष को, ऋणात्मक आधिक्य के शेष को समायोजित करने के पश्चात (यदि कोई हो), को 'संचय एवं आधिक्य' शीर्षक के अन्तर्गत ही दर्शाया जायेगा, चाहे इस प्रकार आई राशि ऋणात्मक ही क्यों न हो।

(b) दीर्घकालीन ऋण

i. दीर्घकालीन ऋणों को निम्नवत वर्गीकृत किया जायेगा :

(अ) बाण्ड्रस/ऋणपत्र
(ब) सावधि ऋण

- बैंक से
- अन्य पक्षों से

(स) स्थगित भुगतान दायित्व
(द) जमायें
(य) सम्बन्धित पक्षों से ऋण एवं अग्रिम
(र) पट्टे के दायित्वों के वित्तीयन हेतु दीर्घकालीन ऋण
(ल) अन्य ऋण एवं अग्रिम (प्रकृत्ति का उल्लेख करें)

ii. ऋणों को पुनः सुरक्षित एवं असुरक्षित में उप–वर्गीकरण किया जायेगा। प्रत्येक अंशो में जमानत की प्रकृति को पृथक रूप उल्लिखित किया जायेगा।

iii. जहाँ ऋणों की गारन्टी निदेशकों या अन्य के द्वारा दी गयी है, ऐसे ऋणों की कुल धनराशि को प्रत्येक शीर्षक में प्रकटीकरण किया जायेगा।

iv. बाण्डों एवं ऋणपत्रों (ब्याज की दर और शोधन या परिवर्तन जैसी भी स्थिति हो के विवरण सहित) को अवरोही क्रम मे, परिपक्वता या परिवर्तन के अनुसार, सबसे दूर की शोधन या परिवर्तन तिथि से प्रारम्भ करते हुए, जैसा भी प्रकटण हो, दिखाया जायेगा। जहाँ बाण्डों/ऋणपत्रों का शोधन किस्तों में होना हो, इस उद्देश्य के लिए परिपक्ता की तिथि को माना जायेगा जिसमें पहली किस्म देय हुई हो।

v. किसी शोधित बाण्ड/ऋणपत्र , जिसे कम्पनी को पुर्ननिर्गमन की शक्ति हो ,प्रकटीकरण किया जायेगा।

vi. सावधि ऋणों एवं अन्य ऋणों के पुर्नभुगतान की शर्तों को उल्लिखित किया जायेगा।

vii. चिट्ठे की तिथि को ऋणों एवं ब्याज के पुर्नभुगतान में सतत त्रुटियों की अवधि एवं धनराशि को प्रत्येक प्रकरण में पृथक रूप से उल्लिखित किया जायेगा।

(D) अन्य दीर्घकालीन दायित्व

अन्य दीर्घकालीन दायित्वों को निम्नवत वर्गीकृत किया जायेगा :

(अ) व्यापारिक देय विपत्र

(ब) अन्य

(E) दीर्घकालीन प्रावधान

धनराशियों को निम्नवत वर्गीकृत किया जायेगा :

(अ) कर्मचारियों के लाभों हेतु प्रावधान

(ब) अन्य (प्रकृति का उल्लेख करें)

(F) अल्पकालीन ऋण

i. अल्पकालीन. ऋणों को निम्नवत् किया जायेगा :

(अ) मांग पर पुर्नभुगतान वाले ऋण

- बैंको से
- अन्य पक्षों से

(ब) सम्बन्धित पक्षों से ऋण एवं अग्रिम

(स) जमाऐं

(द) अन्य ऋण एवं अग्रिम (प्रकृति का उल्लेख करें)

ii. ऋणों को पुनः सुरक्षित एवं असुरक्षित में उपवगीकृत किया जायेगा, जमानत की प्रकृति को प्रत्येक प्रकरण में पृथक से उल्लिखित किया जायेगा।

iii. जहाँ ऋण की गारन्टी निदेशक या अन्य के द्वारा दी गयी हो, ऐसे ऋणों की प्रत्येक शीर्षक के अन्तर्गत कुल धनराशि को प्रकटीकृत किया जाएगा।

iv. आर्थिक चिट्ठे की तिथि को ऋण एवं ब्याज के पुर्नभुगतान की त्रुटि की अवधि एवं धनराशि को प्रत्येक प्रकरण में पृथक से उल्लिखित किया जायेगा।

(G) अन्य चालू दायित्व

धनराशियों को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगा :

(अ) दीर्घकालीन ऋण की चालू परिपक्वताऐं ।

(ब) वित्तीय पट्टों के दायित्वों की चालू परिपक्वताऐं।

(स) ऋणों पर उपार्जित किन्तु अदेय ब्याज ।

(द) अग्रिमों पर प्राप्त आय ।

(य) चुकाया न गया लाभांश।

(र) प्रतिभूतियों के आबंटन हेतु प्राप्त आवेदन धनराशि तथा भुगतान वापसी की देयता एवं उस पर उपार्जित ब्याज।

कुछ आवेदन धनराशि में अंश पूँजी के आबंटन के प्रति अग्रिम सम्मिलित होता हैं। निर्गमन हेतु प्रस्तावित अंशो की संख्या, प्रब्याजि की धनराशि, यदि कोई हो, और वह अवधि जिससे पूर्व अंशों का आबंटन किया जायेगा, को सम्मिलित कारते हुए नियमों एवं शर्तो का प्रकटीकरण किया जायेगा। यह भी प्रकटीकरण किया जायेगा कि कम्पनी के पास, अंशों के आबंटन के फलस्वरूप आयी अंश पूँजी की धनराशि को आच्छादित करने के लिए पर्याप्त अधिकृत अंश पूँजी हैं। इसके अतिरिक्त, वह जिसके लिए अंश आवेदन धनराशि, अंशों हेतु आवेदन आमंत्रण के प्रपत्र में वर्णित आबंटन अवधि से परे रोकी गयी हो, उन कारणों सहित जिसके लिए अंश आवेदन धनराशि विचाराधीन रही हैं, का प्रकटीकरण किया जायेगा। निर्गमित पूँजी से अनधिक अंश आवेदन राशि और वह सीमा जहाँ तक यह वापस नहीं की जाती हैं, को समता एवं अशं आवेदन शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जायेगा और वापसी की सीमा तक अंश आवेदन राशि अर्थात याचित पूँजी से अधिक धनराशि को या यदि न्यूनतम अभिदान की आवश्यकताओं का पालन नहीं किया गया हैं, को 'अन्य चालू दायित्व' शीर्षक के अन्तर्गत पृथक से दिखाया जायेगा।

(ल) भुगतान न की गयी जमाऐं एवं उन पर उपार्जित ब्याज।

(व) भुगतान किए गए परिपक्व ऋणपत्र और उन पर उपार्जित ब्याज।

(श) अन्य देयताऐं (प्रकृति का उल्लेख करें)।

(H) अल्पकालीन प्रावधान

i. धनराशियों को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगाः

(अ) भूमि

(ब) भवन

(स) प्लान्ट एवं उपकरण (यन्त्र एवं संयंत्र)

(द) फर्नीचर एवं फिक्सचर्स

(य) वाहन

(र) कार्यालय उपकरण

(ल) अन्य (प्रकृति का उल्लेख करें)

ii. पट्टे के अन्तर्गत संपत्तियों को पृथक से प्रत्येक संपत्ति वर्ग के अन्तर्गत उल्लिखित किया जाएगा।

iii. प्रतिवेदित अवधि के प्रारम्भ एवं अंत में प्रत्येक वर्ग की संपत्तियों की सफल एवं शुद्ध आगे ले जायी गयी धनराशियों का एक समाशोधन अभिवृद्धियों, व्यवस्थापनों,व्‍ यवसाय संयोजन के माध्यम से अधिग्रहणों और सम्बन्धित ह्रास एवं क्षतिग्रस्त हानियों/अदला बदली को दर्शाते हुए पृथक से प्रकटीकरण किया जाएगा।

iv. जहाँ धनराशियाँ पूँजी में कमी अथवा सम्पत्तियों के पुर्नमूल्यांकन पर अपलिखित की गयी हों अथवा जहाँ धनराशियाँ सम्पत्तियों के पुर्नमूल्यांकन पर

जोड़ी गयी हों, ऐसे अपलेखन अथवा अभिवृद्धि की तिथि के पश्चात् बनाई गयी प्रत्येक आर्थिक चिठ्ठे में कम की गयी अथवा बढ़ायी गयी राशियों को , जो लागू हो दिखाया जाएगा और एक टिप्पणी के द्वारा कमी अथवा अभिवृद्धि जो लागू हो की धनराशि को तिथि सहित ऐसी कमी या अभिवृद्धि की तिथि से पांच वर्षो तक दर्शाया जाएगा।

I. **अमूर्त(अदृश्य सम्पत्तियाँ)**

वर्गीकरण इस प्रकार किया जाएगा :

(अ)ख्याति।

(ब) ब्राण्ड्स/ट्रेडमार्क।

(स) कम्प्यूटर साफ्टवेयर।

(द) मुख्य शीर्षक एवं प्रकाशित शीर्षक।

(य)खनिज अधिकार।

(र)कापीराइट और पेटेन्ट और अन्य बौद्धिक सम्पदा अधिकार, सेवाऐं और परिचालन अधिकार।

(ल)पाक विधियाँ, फार्मूले, मॉडल, डजायन और प्रोटोटाइप्स।

(व)लाइसेन्स एवं फ्रेंचाइजी।

(श)अन्य (प्रकृति का उल्लेख करें)

II. प्रतिवेदित अवधि के प्रारम्भ और अन्त में प्रत्येक वर्ग की सम्पत्तियों की सकल एवं शुद्ध आगे ले जायी जाने वाली धनराशियों का एक समाशोधन, अभिवृद्धियों, व्यवस्थापनों, व्यवसाय संयोजनों के माध्यम से अधिग्रहणों, और अन्य समायोजनाओं तथा संबंधित एवं क्षतिग्रस्त हानियों/अदला–बदली को पृथक से प्रकटीकरण किया जाएगा।

III. पूँजी में कमी अथवा सम्पत्तियों के पुर्नमूल्यांकन पर अपलिखित की गयी हों अथवा जहाँ धनराशियाँ सम्पत्तियों के पुर्नमूल्यांकन पर जोड़ी गयी हों, ऐसे अपलेखन अथवा अभिवृद्धि की तिथि के पश्चात् बनाई गयी प्रत्येक आर्थिक चिठ्ठे में कम की गयी अथवा बढ़ायी गयी राशियों जो लागू हो दिखाया जाएगा और एक टिप्पणी के द्वारा कमी अथवा अभिवृद्धि जो लागू हो की धनराशि को तिथि सहित ऐसी कमी या अभिवृद्धि की तिथि से पांच वर्षो तक दर्शाया जाएगा।

(K) **गैर चालू विनियोग**

i. गैर चालू विनियोगों को व्यापारिक विनियोगों और अन्य विनियोगों में वर्गीकृत किया जाएगा एवं तत्पश्चात निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगाः–

(अ) विनियोग सम्पत्तियाँ।

(ब) समता अंशों में विनियोग।

(स) पूर्वाधिकार अंशों में विनियोग।

(द) सरकारी एवं ट्रस्ट प्रतिभूतियों में विनियोग।

(य) ऋणपत्रों एवं बाण्ड़ो में विनियोग।

(र) म्युचुअल फन्डों में विनियोग।

(ल) साझेदारी फर्मो में विनियोग।
(व) अन्य गैर चालू विनियोग (प्रकृति का उल्लेख करें)।
प्रत्येक वर्गीकरण के अन्तर्गत निगमित संस्थानों के नामों का विस्तृत विवरण दिया जायेगा कि ऐसी संस्थाऐं (i)सहायक (ii) सम्बद्ध (iii) संयुक्त उपक्रम अथवा (iv) नियंन्त्रित(विशेष उद्देश्य वाली संस्थाऐं) जिसमें विनियोग किया गया है और इस प्रकार किए गए इन संस्थाओं में विनियोग की प्रकृति और सीमा। (आंशिक प्रदत्त विनियोगों को प्रथक से दर्शाते हुए)साझेदारी फमों की पूँजी में विनियोग के सम्बन्ध में,फर्म के नाम (सभी साझेदारों के नामों, कुल पूँजी और प्रत्येक साझेदारी के अंशों सहित) दिया जाना होगा।
(iii)निम्नांकित को भी प्रकटीकृत किया जाएगाः
(अ)व्यक्तिगत विनियोगों के मूल्यांकन का आधार
(ब)उद्धृत दरों वाले विनियोगों की कुल धनराशि एवं उनका बाजार मूल्य।
(स)गैर उद्धृत दरों वाले विनियोगों की कुल धनराशि ।
(द)विनियोग के मूल्य में कमी हेतु कुल प्रावधान।

(L) <u>दीर्घकालीन ऋण एवं अग्रिम</u>

(i) दीर्घकालीन ऋणों एवं अग्रिमों को निम्नवत वर्गीकृत किया जायेगा :
(अ) पूँजी अग्रिम;
(ब) प्रतिभूति जमाऐं;
(स) सम्बन्धित पक्षों को ऋण अग्रिम (विस्तृत विवरण दिया जाना है) ;
(द) अन्य ऋण एवं अग्रिम (प्रकृति का उल्लेख करें)

(ii) उपरोक्त को पृथक रूप से उप वर्गीकृत किया जाएगा :
(अ) सुरक्षित, अच्छे माने गए;
(ब) असुरक्षित, अच्छे माने गए;
(स) संदिग्ध

(iv) कम्पनी के निदेशकों अथवा अन्य अधिकारियों अथवा उनमें से किसी के क्षरा व्यक्तिगत अथवा किसी अन्य व्यक्ति के साथ देय ऋण एवं अग्रिम अथवा फर्मो या व्यक्तिगत कम्पनियों के द्वारा देय धनराशि जिसमें निदेशक एक साझेदार या एक निदेशक या सदस्य हो, को पृथक रूप से उल्लिखित किया जाएगा।

(M) <u>अन्य गैर – चालू सम्पत्तियाँ</u>

अन्य गैर – चालू सम्पत्तियों को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगाः

(i) दीर्घकालीन व्यापारिक प्राप्त विषय (स्थगित साख शर्तो पर व्यापारिक प्राप्त विषयों को सम्मिलित करते हुए)

(ii) अन्य (प्रकृति का उल्लेख करें)

(iii) दीर्घकालीत व्यापारिक प्राप्त विषयों के निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगा :

(i) (अ) सुरक्षित, अच्छे माने गए;
(ब) असुरक्षित,अच्छे माने गये;

(स) संदिंग्ध

(ii) डूबत एवं संदिग्ध ऋणों हेतु छूट को पृथक से संबंधित शीर्षकों में प्रकटीकरण किया जाएगा

(iii) कम्पनी के निदेशकों अथवा अन्य अधिकारियों अथवा उनमें से किसी के क्षरा व्यक्तिगत अथवा किसी अन्य ब्यक्ति के साथ देय ऋण एवं अग्रिम अथवा फर्मो या व्यक्तिगत कम्पनियों के द्वारा देय धनराशि जिसमें निदेशक एक साझेदार या एक निदेशक य सदस्य हो, को पृथक रूप से उल्लिखित किया जाएगा।

(N) चालू विनियोग

(i) चालू विनियोगोंको निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगाः

(अ) समता लेखपत्रो में विनियोग;

(ब) पूर्वाधिकार अंशों में ;

(स) सरकारी या ट्रस्ट प्रतिभूतियों के में विनियोग;

(द) ऋण या बाण्डों में विनियोग

(य) पारस्परिक फण्डों (एम0 एफ0) में विनियोग;

(र) साझेदारी फर्मो में विनियोग;

(ल) अन्य विनियोग (प्रकृतिका उल्लेख करें);

प्रत्येक वर्गीकरण के अन्तर्गत कम्पनी संस्थाओं के नामों का विस्तृत उल्लेख किया (यह उल्लेख करते हुए कि क्या ऐसे निकाय/संस्थाऐं

(i) सहायक (ii) सहकारी (iii) संयुक्त उपक्रम या (iv) विशेष उद्देश्य से नियन्त्रित हैं, को शामिल करते हुए) और प्रत्येक निगमित निकाय में किया गया विनियोग और किए गए विनियोग की प्रकृति एवं सीमा

(आंशिक प्रदत्त विनियोंगों को पृथक से दर्शाते हुए);

साझेदारी फर्मो की पूँजी में विनियोग के सम्बन्ध में, फर्मो का नाम (उनके साझेदारों के नाम, साझेदारो की कुल पूँजी एवं अंश का विवरण दिया जाएगा)।

(ii) निम्नलिखित को प्रकटीकृत किया जाएगाः

(अ) व्यक्तिगत विनियोगों के मूल्यांकन का आधार;

(ब) मूल्य निर्धारित विनियोगों की कुल धनराशी एवं उनके बाजार मूल्य ;

(स) गैर मूल्य निर्धारित विनियोगों की कुल धनराशि;

(द) विनियोगों के मूल्य में कमी हेतु निर्मित कुल प्रावधान;

(O) रहतिया

(i) रहतिया को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगा;

(अ) कच्चा माल ;

(ब) चालू कार्य ;

(स) निर्मित माल;

(द) व्यापारिक रहतिया (व्यापार के लिए प्राप्त माल की दशा में)

(य) स्टोर्स एवं स्पेयर्स;

(र) खुले हुए उपकरण
(ल) अन्य (प्रकृति का उल्लेख करें)

(ii) मार्ग में माल को रहतिये के सम्बन्धित उपवर्गो में प्रकटीकरण किया जाएगा,

(iii) मूल्यांकन की विधि को उल्लिखित किया जाएगा।

(P) व्यापारिक प्राप्य विपत्र

(i) भुगतान हेतु देय तिथि से छः माह से अधिक अवधि के लिए अदत्त व्यापारिक प्राप्त विपत्रों की कुल धनराशि को पृथक से उल्लिखित किया जाना चाहिए।

(ii) व्यापारिक प्राप्य विपत्रों को उप वर्गीकृत किया जाएगाः
(अ) सुरक्षित, अच्छे माने गए;
(ब) असुरक्षित, अच्छे माने गए;
(स) संदिग्ध

(iii) डूबत एवं संदिग्ध ऋणों हेतु प्रावधान को पृथक से संबंधित शीर्षकों में प्रकटीकरण किया जाएगा।

(iv) कम्पनी के निदेशकों अथवा अन्य अधिकारियों अथवा उनमें से किसी के द्वारा व्यक्तिगत अथवा किसी अन्य ब्यक्ति के साथ देय ऋण एवं अग्रिम अथवा फर्मो या व्यक्तिगत कम्पनियों के द्वारा देय धनराशि जिसमें निदेशक एक साझेदार या एक निदेशक या सदस्य हो, को पृथक रूप से उल्लिखित किया जाएगा।

(Q) रोकड़ एवं रोकड़ समान समपत्तियाँ

(i) रोकड़ एवं रोकड़ समान सम्पत्तियों को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगाः
(अ) बैंक के साथ शेष;
(ब) चैक एवं ड्राफ्ट हाथ में;
(स) रोकड़ हाथ में;
(द) अन्य (प्राकृति का उल्लेख करें)

(ii) बैंको के साथ निर्धारित किया गया शेष (उदाहरणार्थ –भुगतान न किए गए लाभांश हेतु) को पृथक रूप से दिखाया जाएगा।

(iv) ऋणों प्रतिभूतियों एवं अन्य वायदों के सापेक्ष मार्जिन धनराशि अथवा प्रतिभूति की भांतिरखें गए बैंक शेष की सीमा को पृथक से प्रकटीकरण किया जाएगा

(iv) रोकड़ एवं बैंक शेषों के सम्बन्ध में देश से बाहर प्रत्यावर्तित करने के प्रतिबन्धों, यदि कोई हों, सहित प्रकटीकरण किया जाएगा।

(v) 12 माह से अधिक परिपक्व बैंक जमाऐ पृथक से प्रकटीकृत होंगी।

(R) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिम

(i) अल्पकालीन ऋण एवं अग्रिर्मों को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगाः
(अ) ऋण एवं अग्रिम सम्बन्धित पक्षों को (विस्तृत विवरण सहित)
(ब) अन्य (प्रकृति का उल्लेख करें)

(ii) उपरोक्त को उपवर्गीकृत किया जाएगाः

(अ) सुरक्षित, अच्छे माने गए;
(ब) असुरक्षित, अच्छे मानेगए;
(स) संदिग्ध

(iii) डूबत एवं संदिग्ध ऋणो एवं अग्रिमों हेतु छूट को पृथक से सम्बन्धित शीर्षकों में दिखाया जाएगा।

(iv) कम्पनी के निदेशकों अथवा अन्य अधिकारियों अथवा उनमें से किसी के द्वारा व्यक्तिगत अथवा किसी अन्य ब्यक्ति के साथ देय ऋण एवं अग्रिम अथवा फर्मो या व्यक्तिगत कम्पनियों के द्वारा देय धनराशि जिसमें निदेशक एक साझेदार या एक निदेशक या सदस्य हो, को पृथक रूप से उल्लिखित किया जाएगा।

(S) अन्य चालू सम्पत्तियाँ(प्राकृति का उल्लेख करें)

यह शीर्षक **'सर्व समाहित'** है जिसमें वे सभी चालू सम्पत्तियाँ सम्मिलित होंगी, जो अन्य शीर्षकों में अन्य संपत्ति वर्गो में सम्मिलित होने के अनुकूल नही है।

(T) सांयोगिक दायित्व एवं प्रतिबद्धताऐं (प्रावधान न की गयी सीमा तक)

(i) सांयोगिक दायित्वों को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगाः
(अ) कम्पनी के सापेक्ष दावे जिन्हें ऋण नहीं माना गया है;
(ब) प्रतिभूति (गारण्टी);
(स) अन्य धनराशि जिसके लिए कम्पनी संयोगिक रूप में उत्तरदायी है।

(U)समता एवं पूर्वाधिकार अंशधारियों को अवधि के लिए प्रस्तावित लाभांश की धनराशि एवं प्रति अंश संबंधित धनराशि को पृथक से प्रकटीकरण किया जायेगा। स्थायी संचयी लाभांश (पूर्वाधिकार अंशों पर) का अवशेष पृथक से प्रकटीकरण किया जाएगा।

(V) जहाँ प्रतिभूतियों का निर्गमन विशिष्ट उद्देश्य से किया गया है, आर्थिक चिट्ठे की तिथि को विशिष्ट उद्देश्य के लिए प्रयुक्त न होने वाली सम्पूर्ण अथवा आंशिक धनराशि को एक टिप्पणी के साथ उल्लेख किया जाना होगा कि इस अप्रयुक्त धनराशि को किस प्रकार उपयोग में लाया जाएगा अथवा विनियोग किया जाएगा।

(W) यदि, बोर्ड के विचार में, स्थायी सम्पत्ति से भिन्न कोई सम्पत्ति और गैर चालू विनियोग व्यवसाय की साधारण प्रगति में वसूली पर कोई मूल्य नहीं प्रदान करतें हैं या कम से कम अपने अंकित मूल्य के समान धनराशि नहीं प्रदान करतें है, तब बोर्ड की सम्मति का तथ्य उल्लिखित होगा।

10.6 लाभ एवं हानि खाता

कम्पनियों को उनके लाभ और हानि खाते की मदों को संशोधित अनुसूची vi के खण्ड –2 कम्पनी अधिनियम, 1956 की धाराशि के अनुसार निर्धारित करना आवश्यक है। कम्पनी के लाभ और हानि खाते का प्रारुप एवं तत्सम्बन्धी विस्तृत अनुदेशों, जिन का प्रकटीकरण आवश्यकताओं के सम्बन्ध में अनुपालन आवश्यक है, को निम्नवत दिया गया हैः

लाभ एवं हानि खाते के विवरण का प्रारुप

कम्पनी का नाम...लाभ एवं हानि विवरण पत्र समाप्त होने वाले वर्ष के लिए...

विवरण			नोट संख्या	चालू प्रतिवेदन अवधि के अन्त में धनराशियाँ	विगत पगतिवेदन अवधि के अन्त में धनराशियाँ
(i)	परिचालन से आय			XXX	XXX
(ii)	अन्य आय			XXX	XXX
(iii)	कुल आय	(i+ii)		XXX	XXX
(iv)	व्यय :				
	उपभोग किए गए माल की लागत			XXX	XXX
	व्यापारिक रहतिये का क्रय			XXX	XXX
	निर्मित माल के रहतिए में परिवर्तन			XXX	XXX
	चालू कार्य एवं व्यापारिक रहतिया			XXX	XXX
	कर्मचारी लाभों के व्यय			XXX	XXX
	वित्तीय लागतें			XXX	XXX
	ह्रास एवं व्यय			XXX	XXX
	अन्य व्यय			XXX	XXX
	<u>कुल व्यय</u>				
(v)	अपवाद युक्त एवं असाधारण मदों के पूर्व लाभ	(iii+iv)		XXX	XXX
(vi)	अपवाद युक्त मदें			XXX	XXX
(vii)	असाधारण मदों के पूर्व लाभ	(v-vi)		XXX	XXX
(viii)	असाधारण मदें			XXX	XXX
(ix)	कर से पूर्व लाभ	(vii-viii)		XXX	XXX
(x)	कर संबंधी व्यय :				
	1. चालू कर			XXX	XXX
	2. स्थगित कर			XXX	XXX
(xi)	चालू क्रियाओं से लाभ हानि संबंधित अवधि के लिए	(vii-viii)		XXX	XXX
(xii)	बन्द क्रियाओं से लाभ/हानि			XXX	XXX
(xiii)	बन्द क्रियाओं का कर संबंधी व्यय			XXX	XXX
(xiv)	बन्द क्रियाओं से लाभ/हानि			XXX	XXX
	(कर के पश्चात)	(xii-xiii)			
(xv)	संबंधि अवधि के लिए लाभ (हानि)	(xi+xiv)		XXX	XXX
(xvi)	प्रति समता अंश आय ;				
	1. आधारभूत			XXX	XXX
	2. विलयित			XXX	XXX

<u>लाभ और हानि खाते को तैयार करने के सम्बन्ध में सामान्य निर्देश :</u>

1. इस भाग का प्रावधान कम्पनी अधिनियम की धारा 210 की उपधारा (2) में सन्दर्भित आय एवं व्यय खाते पर उसी प्रकार लागू होगा जिस प्रकार लाभ एवं हानि के विवरण पर लागू होता है।
2. (अ) वित्तीय कम्पनी से भिन्न एक कम्पनी के सम्बन्ध में परिचालन से आय में पृथक रुप से टिप्पणी में प्रकटीकरण किया जायेगा।

से आय :

(अ) उत्पादों का विक्रय

(ब) सेवाओं का विक्रय

(स) अन्य परिचालन आय

घटाया :

(द) उत्पाद कर

(ब) वित्तीय कम्पनी की दशा में 'परिचालन से आय' में आय सम्मिलि की जायेगी :

(अ) ब्याज एवं

(ब) अन्य वित्तीय सेवाऐं

एवं प्रति अंश सम्बन्धित धनराशि को पृथक से प्रकटीकरण किया जायेगा। उपरोक्त प्रत्येक शीर्षक के अन्तर्गत आय का पृथक से लागू सीमा तक खाता टिप्पणियों के माध्यम से प्रकटीकरण किया जाएगा।

3. **वित्तीय लागत**

वित्तीय लागत को निम्नवत वर्गीकृत किया गया है:

(अ) ब्याज व्यय ;

(ब) अन्य ऋण लागतें ;

(स) लागू शुद्ध लाभ/हानि (विदेशी विनिमय लेन–देनों एवं अनुवाद पर)।

4. **अन्य आय**

अन्य आय को निम्नवत वर्गीकृत किया जाएगा:

(अ) ब्याज आय (वित्तीय कम्पनी से भिन्न कम्पनी की दशा में);

(ब) लाभांश आय

(स) विनियोग के विक्रय पर शुद्ध लाभ/हानि

(द) अन्य गैर परिचालन आय (ऐसी आय से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित व्ययों के पश्चात शुद्ध)

5. **अतिरिक्त सूचनायें :**

एक कम्पनी टिप्पणियों के माध्यम से कुल व्यय एवं आय के सम्बन्ध में निम्नांकित मदों पर अतिरिक्त सूचनाओं के द्वारा प्रकटीकरण करेगी।

(i) (अ) कर्मचारी लाभों संबंधी व्यय ((i) वेतन एवं मजदूरी (ii) प्राविडेन्ट फण्ड एवं अन्य फण्डों में योगदान (iii) कर्मचारी स्टाक विकल्प योजना (ई0एस0ओ0पी0) और कर्मचारी स्टाक क्रय योजना (ई0एस0पी0पी0) पर व्यय, (iv) कर्मचारी कल्याण व्यय को पृथक से उल्लिखित करते हुए)

(ब) ह्रास एवं

(स) आय या व्यय की कोई मद जो 'परिचालन से आय' के 1 % से अधिक या एक लाख रु0 दोनों में जो अधिक हो ;

(द) अन्य आय ;

(स) ब्याज व्यय ;

(र) लाभांश आय ;

(ल) विनियोगों के विक्रय पर शुद्ध लाभ/हानि

(व) विनियोगों की राशि को आगे ले जाने पर समायोजनाऐं

(प) विदेशी मुद्रा के लेन–देनों एवं अनुवाद पर शुद्ध लाभ या हानि (मानी गयी वित्तीय लागत को छोड़कर)

(फ) अंकेक्षक को (अ) अंकेक्षक (ब) कर संबंधी प्रकरणों (स) कम्पनी कानून संबंधी प्रकरणों (द) प्रबंधकीय सेवाओं (य) अन्य सेवाओं (र) व्ययों को प्रतिपूर्ति के रुप

(भ) अपवादयुक्त एवं असाधारण मदों का विवरण ;

(म) पूर्व की अवधि की मदें ;

(ii) (अ) निर्माणी कम्पनी की दशा में :

1. वृहत शीर्षकों के अन्तर्गत कच्चा माल ;
2. वृहत शीर्षकों के अन्तर्गत क्रय किया गया माल ;

(ब) व्यापारिक कम्पनियों की दशा में, व्यापार किए गए माल के सम्बन्ध में क्रय वृहत शीर्षकों में ;

(स) सेवायें प्रदान करने या आपूर्ति करने वाली कम्पनियों की दषा में, सेवाओं से प्राप्त सकल आय सेवायें प्रदान करने या आपूर्ति के अन्तर्गत वृहत शीर्षकों में;

(द) ऐसी कम्पनी की दषा में जो उपर्युक्त वर्णित (अ)(ब)(स) वर्गों में एक से अधिक में आती है, आवश्यकता के उपबन्ध का यह पर्याप्त अनुपालन होगा यदि क्रय विक्रय, और कच्चे माल का उपयोग तथा सेवाओं के प्रदान करने से सकल आय को वृहत शीर्षकों में प्रदर्शित किया जाय;

(य) अन्य कम्पनियों की दषा में सकल आय वृहत शीर्षकों में;

(iii) चालू कार्य वाले सभी उपक्रमों में चालू कार्य को वृहत शीर्षकों में;

(iv) (अ) यदि किसी धनराशि को पृथक से रखने, संचय के लिए पृथक रखा गया हो या प्रस्ताव किया गया हो किन्तु चिट्ठे की तिथि को किसी विशिष्ट दायित्व, सांयोगिकताओं अथवा ज्ञात विद्यमान वायदों को पूरा करने के लिए बनाये गये प्रावधान को छोड़कर, की कुल धनराशि;

(ब) ऐसे संचयों से आहरित कोई धनराशि का योग, यदि महत्वपूर्ण हो;

(v) (अ) विशिष्ट दायित्वों, सांयोगिकताओं या वायदों के लिए पृथक की गयी या बनाया गया प्रावधान, यदि महत्वपूर्ण हो की कुल राशि;

(ब) ऐसे संचयों से आहरित कोई धनराशि का योग, यदि महत्वपूर्ण हो।

(vi) निम्नांकित में से प्रत्येक मद पर किया गया व्यय, पृथक रुप से प्रत्येक मद के लिए ;

(अ) स्टोर्स एवं स्पेयर पार्टस का उपयोग
(ब) शक्ति एवं ईधन
(स) किराया
(द) भवन की मरम्मत
(य) मशीनरी की मरम्मत
(र) बीमा
(ल) कर एवं दरें, आयकर को छोड़कर
(व) विविध व्यय

(vii) (अ) सहायक कम्पनी से लाभांश
(ब) सहायक कम्पनियों की हानियों हेतु प्रावधान

(viii) लाभ और हानि खाते में निम्नांकित सूचना के लिए टिप्पणी के रुप में सम्मिलित किया जाएगाः

(अ) कम्पनी के द्वारा वित्तीय वर्ष के अन्तर्गत सी0आई0एफ0 आधार पर आयाों के मूल्यों की गणना के सम्बन्ध में :

- कच्ची सामग्री ;
- पुर्जे एवं स्पेयर–पार्ट्स ;
- पूंजीगत माल ;

(ब) वित्तीय वर्ष के अन्तर्गत रायल्टी, तकनीकी जानकारी, पेशेवर एवं परामर्श शुल्क ब्याज एवं अन्य प्रकरणों के संबंध में विदेशी मुद्रा में व्यय;

(स) आयातित कच्चे माल, स्पेयर पार्ट्स और पुर्जों का वित्तीय वर्ष के अन्तर्गत उपयोग एवं कुल मूल्य तथा अन्तर्देशीय (घरेलू) कच्चे माल, स्पेयर पार्ट्स एवं पुर्जों का उपभोग एवं कुल मूल्य और कुल उपयोग में प्रत्येक का प्रतिशत;

(द) लाभांश के लिए विदेशी मुद्रा में वर्ष के अन्तर्गत प्रेषित धनराशि, अनिवासी अंशधारियों की कुल संख्या उनके द्वारा धारित अंशों की संख्या जिन पर लाभांशदेय था तथा वह वर्ष जिस से लाभांश सम्बन्धित था, को विशेष रुप से दर्शाते हुए ;

(य) विदेशी विनिमय की आय को निम्नांकित शीर्षकों में वर्गीकृत किया जाएगा;

- एफ0ओ0बी0 आधार पर गणना किए गऐ माल का निर्यात
- रायल्टी, तकनीकी जानकारी, पेशेवर एवं परामर्श शुल्क
- ब्याज एवं लाभांश
- अन्य आय, उनकी प्रकृति का उल्लेख करते हुए

अन्य सामान्य अनुदेश

1. जहाँ कम्पनी अधिनियम के अनुसार लागू लेखांकन मानकों सहित, अधिनियम की आवश्यक्ताओ के अनुपालन में वित्तीय विवरणों या उनका भाग बनने वाले विवरणों में किसी परिवर्तन या शीर्षकों उप शीर्षकों में जोड़ने, संशोधन, प्रतिस्थापन, हटाने सहित प्रकटीकरण या अन्य परिवर्तनों की आवश्यकता है, तो उन्हे किया जाएगा और अनुकसूची 6 की आवश्यकताऐं तद्नुसार संशोधित होंगी,

2. इस अनुसूची के भाग एक एवं भाग 2 में निर्दिष्ट प्रकटीकरण आवश्यकताऐ कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत निर्दिष्ट लेखांकन मानकों की प्रकटीकरण आवश्यकताओं के अतिरिक्त हैं और उनका प्रतिस्थापन नही हैं, लेखांकन मानकों में निर्दिश्ट अतिरिक्त प्रकटीकरणों को लेखों को टिप्पणियों या अतिरिक्त विवरणों के माध्यम से किया जायेंगे जब तक कि वित्तीय विवरणों के मुख्य पृष्ठ पर ऐसा करना आवश्यक न हो, इसी प्रकार इस अनुसूची में निर्धारित आवश्यकताओं के अतिरिक्त कम्पनी अधिनियम के अनुसार आवश्यक समस्त प्रकटीकरणों को लेखो की टिप्पणियों में किया जाएगा,
3. लेखों की टिप्पणियों में वित्तीय विवरणों में प्रदशित सूचनाओं के अतिरिक्त सूचनायें होंगी और जहाँ आवश्यक हो (अ) उन विवरणों में पहचानी गयी मदों का वर्णनात्मक आख्या या मदों का उपविभाजान और (ब) उन मदों की सूचनाऐं जो उन विवरणों में ऐनयता हेतु अर्ह नहीं है, को प्रदान किया जाएगा, अधिक चिट्ट्ठे और लाभ एंव हानि खते के मुख पृश्ठ पर प्रत्येक मद को टिपपणियों में किसी सम्बन्धित सूचना के साथ परस्पर संदर्भित किया जायेगा। लेखों की टिप्पणियों सहित वित्तीय विवरणों को बनाने में, अत्यधिक विवरण प्रदान करने जिससे उपयोगकर्ता को कोई सहायता नहीं हो सकती है और अत्यधिक एकीकरण के कारण महत्वचूर्ण सूचनाओं को न प्रदान करने के मध्य एक संतुलन सीापित किया जाना चाहिए,
4. कम्पनी के टर्नओवर के अनुसार, वित्तीय विवरणों में सम्मिलित आंकड़ो को निम्नवत उपसादित किया जा सकता है,
   i. एक सौ करोंड़ रूपयें से कम होने पर : निकटतम सौ, हजार, लाख या दस लाख (मिलियन)या उसके दशमलव तक।
   ii. एक सौ करोड़ रूपयें से अधिक होने पर : लाख, दस लाख (मिलियन) या करोड़ या उसके दशमलव तक।

एक बार एक माप का प्रयोग किए जाने पर उसे वित्तीय विवरणों में समान रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

5. कम्पनी के समक्ष (उसके समामेलन के पश्चात) प्रस्तुत प्रथम स्थिति विवरण को छोड़कर वित्तीय विवरणों में प्रदर्शित सभी मदों के सापेक्ष विगत प्रतिवेदन अवधि के समवर्ती तुलनात्मक धनराशियों को भी टिप्पणियों सहित प्रदर्शित किया जाएगा।
6. इस अनुसूची के उद्देश्य के लिए, यहा पर प्रयुक्त शब्द लागू लेखांकन मानकों के अनुसार होंगे।

10.7 वर्णनात्मक विवरण पत्र

वित्तीय विवरणों में प्रदत्त विस्तृत विवरण के अतिरिक्त, कम्पनियों के लिए वर्णनात्मक विवरण देना भी आवश्यक है। वर्णात्मक विवरणों को देने की आवश्यकता कमपनी अधिनियम 1956 के और लेखांकन मानकों प्रावधानों से उत्पन्न हुई है।

वर्णनात्मक विवरणों में मात्रात्मक एवं गुणात्मक सूचनाऐं सम्मिलित हो सकती हैं। वर्णनात्मक विवरणों में प्रदत्त सूचनाऐं निम्नांकित दो व्यापक वर्गो में वर्गीकृत की जा सकती हैं अर्थात लेखांकन नीतियाँ और लेखों पर टिप्पणियाँ।

1. **लेखांकन नीतियाँ**

लेखांकन मानक – एक के अनुसार वित्तीय विवरणों को बनाने में अपनायी गयी लेखांकन नीतियों के प्रकटीकरण आवश्यक हैं। यह मानक यह आवश्यक करता है कि वित्तीय विवरणों को बनाने में अपनायी गयी सभी महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियों का प्रकटीकरण होना चाहिए। महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियाँ वित्तीय विवरणों का भाग होनी चाहिए, लेखांकन नीतियां में सभी परिवर्तनों जिनसे चालू वर्ष पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने जा रहा है अथवा आने वाले वर्षो में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने जा रहा है, को परिवर्तनों के वर्ष मेंप्रकटीकरण किया जाना चाहिए। ऐसी दशा में, जब लेखांकन नीतियों से चालू वर्ष पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने जा रहा है तब इस परिवर्तन से समस्त मदों पर पड़ने वाले मौद्रिक स्वरूप के प्रभावों को अधिकतम सम्भव सीमा तक प्रकटीकरण किया जाना चाहिए।

2. **लेखों पर टिप्पणियाँ**

लेखों पर टिप्पणियाँ वित्तीय विवरणों के अभिन्न अंग हैं। लेखांकन अनुभाग को टिप्पणियों के द्वारा कम्पनियाँ बहुत बड़ी मात्रा में सूचनाओं का प्रकटीकरण करती हैं। अनेक सूचनाओं का ऐसा निर्दिष्ट वर्ग है जिसे लेखांकन अनुभाग की टिप्पणियों में कम्पनी के लिए प्रकटीकरण अनिवार्य है। किन्तु कुछ कम्पनियाँ इस खण्ड का प्रयोग स्वैच्छिक सूचनाओं के प्रकटीकरण के लिए करती हैं। इस खण्ड में प्रकटीकरण हेतु अनिवार्य सूचना में निम्नांकित सम्मिलित हैं:

1. सांयोगिक दायित्व
2. प्रबन्धकीय पारिश्रमिक
3. लघु स्तरीय उद्योग से सम्बन्धित सूचना
4. पूँजी प्रतिबद्धताऐं
5. प्रबन्धकीय पारिश्रमिक हेतु लाभ की गणना का विवरण
6. अंकेक्षकों का पारिश्रमिक
7. उत्पादन क्षमता एवं उत्पादन विषयक मात्रात्मक सूचना
8. आयात का मूल्य
9. विदेशी विनिमय में आय
10. पूर्व अवधि की मदें
11. एकीकरण
12. असाधारण मदें
13. सम्बन्धित पक्ष लेन देन
14. पट्टे
15. संयुक्त उपक्रमों में हित का प्रकटीकरण

16. प्रति अंश आय का प्रकटीकरण
17. आय पर करों का प्रकटीकरण

10.8 पूरक विवरण पत्र

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 212 में पूरक विवरणों के विषय में सूचना निहित है। समस्त सूत्रधारी कम्पनियों के लिए यह आवश्यक है किवे अपनी सहायक कम्पनियों के विषय में कुछ सूचना पूरक विवरणों के रूप में प्रदान करें। धारा 212 के अनुसार यह आवश्यक है कि सूत्रधारी कम्पनियाँअपने आर्थिक चिट्ठे के साथ निम्नांकित प्रपत्र संलग्न करें:

1. सूत्रधारी सहयक कम्पनी के नवीनतम आर्थिक चिट्ठे की एक प्रति ।
2. सहायक कम्पनी के नवीनतम लाभ एवं हानि खाते की एक प्रति।
3. सहायक कम्पनी के संचालक मण्डल की नवीनतम रिपोर्ट की एक प्रति ।
4. सहायक कम्पनी के अंकेक्षकों के नवीनतम प्रतिवेदन की एक प्रति ।
5. उपरोक्त सूचना के अतिरिक्त सूत्रधारी कम्पनी के लिए सहायक कम्पनी में हित की सीमा तथा सूत्रधारी कम्पनी के वर्तमान और गत वर्ष के लाभों में अंश की सूचना पृथक रूप में प्रदान करना आवश्यक है।

10.9 रोकड़ प्रवाह विवरण

कम्पनी अधिनियम 1956 कम्पनियों के द्वारा रोकड़ प्रवाह विवरण को तैयार करना अनिवार्य नही करता है, किन्तु आ0 सी0 ए0 आई0 ने लेखांकन मानक ए0 एस0 3 निर्गमित किया है जो कम्पनी हेतु आर्थिक चिट्ठे और लाभ एवं हानि खाते के साथ रोकड़ प्रवाह के एक विवरण को तैयार करना एवं प्रस्तुत करना आवश्यक करता है। ए0 एस0–3 के अतिरिक्त सूचीयन के लिए भी रोकड़ प्रवाह विवरण को बनाना एवं तैयार करना आवश्यक ह।

एक रोकड़ प्रवाह विवरण में, गतिविधियाँ/क्रियाऐं जो रोकड़ प्रवाह सृजित करती है, को तीन वर्गो में वर्गीकृत किया गया है अर्थात संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह, विनियोग क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह तथा वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह। संचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह व्यावसायिक गतिविधियों से सम्बन्धित अर्न्तप्रवाहों एवं बर्हिप्रवाहों को आच्छादित करता है, विनियोग क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह स्थायी सम्पत्तियों के क्रय ओर विक्रय से रोकड़ अर्न्तप्रवाह एवं बर्हिप्रवाह को आच्छादित करता है।

कम्पनी प्रतिवेदनों की विषय सामग्री के संबंध में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के मार्गनिर्देश

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड भारत में अंशधारियों के हितो के संरक्षण एवं प्रतिभूति बाजार के नियमन एवं प्रवर्तन के उद्देश्यों सें स्थापित किया गया है। 'सेबी' (एस0 ई0 बी0 आई0) ने सूचीकृत कम्पनियों पर कई प्रकटीकरण मार्ग निर्देशों को लागू किया है। अनिवार्य मार्गनिर्देशों का संबंध निम्नांकित से हैं :

1. रोकड़ प्रवाह विवरण का प्रकटीकरण (उपवाक्य 32)

2. वास्तविक परिणामों एवं कीमत संवेदनशील सूचना का प्रकटीकरण (उपवाक्य 36)
3. अधिग्रहण कोड के साथ प्रकटीकरण (उपवाक्य 40 इ)
4. अंकेक्षण रहित अन्तरिम वित्तीय विवरणों का प्रकटीकरण (उपवाक्य 41)
5. कम्पनी सुशासन प्रतिवेदन (उपवाक्य 49)
6. आई0 सी0 ए0 आई0 द्वारा निर्गत लेखांकन मानकों का अनुपालन (उपवाक्य 50)
7. सूचीकरणशुल्क की स्थिति एवं प्रतिभूति विपणि, जहाँ कम्पनी सूचीकृत है, की सूचना का प्रकटीकरण (उपवाक्य 48 वी0)

10.10 कम्पनी के वार्षिक प्रतिवेदनों का सामन्जस्यीकरण

अर्थ

'लेखांकन मानकों का सामन्जस्यीकरण' को यह सुनिश्चित करने की सतत प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है कि सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों (गैप) को अन्तर्राष्ट्रीय उत्तम व्यवहार पद्धतियों (अन्य देशों में गैप) में घरेलू परिस्थितियों के अनुसार उचित संशोधनों एवं सम्मिश्रणों के साथ निरूपित एकीकृत एवं नवीनीकृत किया गया है।

सामान्य भाषा में, लेखांकन सामन्जस्यीकरण के द्वारा लेखांकन मानकों, कार्य पद्धतियों एवं व्यवहारो के मध्य राष्ट्रों में विद्यमान अन्तरों को न्यूनीकृत करना है।

शिक्षाशास्त्री, नियामक एवं सरकारें घरेलू लेखांकन मानकों (ए0 एस0) को ब्रिटेन में अवस्थित अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक बोर्ड (आई0 ए0 एस0 बी0) के द्वारा निर्गमित अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानकों के साथ लगातार सामन्जस्य करने के लिए प्रयासरत रही हैं। आई0 ए0 एस0 बी0 1973 से अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन सिद्धान्तों के सामंजस्य हेतु प्रयास कर रहा है।

सामंजस्यीकरण की आवश्यकता

लेखांकन सामंजस्यीकरण का विषय तब अधिक महत्वपूर्ण हुआ जब कि इसे सूचना तकनीकी की क्रान्ति एवं तीव्र गति से वैश्वीकरण की प्रगति के सापेक्ष ध्यान में रखा गया । एक भली–भांति जुड़ी हुई विश्व अर्थव्यवस्था में, लेखांकन सामंजस्यीकरण से विनियोजकों को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को समझने में तुलनीयता की सुविधा के रूप में सहयता की प्रत्याशा हैं। सामंजस्यीकरण क कुछ लाभ निम्नवत है :

- उच्च गुणवत्तायुक्त प्रतिवेदन एवं प्रकटीकरण को सुनिश्चित करना
- कम्पनी के वित्तीय प्रदर्शन की तुलना उसके घरेलू एवं अन्तर्राष्ट्रीय अग्रजों के सापेक्ष सम्भव एवं अर्थपूर्ण हुआ है।
- विभिन्न देशों में सहायक कम्पनियों वाले बहुराष्ट्रीय निगमों के वित्तीय प्रदर्शन के व्यवस्थित परीक्षण एवं मूल्यांकन को संचालित करने में यह सहायता करता है।
- वित्तीय कोषों हेतु अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी बाजारों तक पहुँच सरल हुई है।
- कम्पनियों को वैश्विक स्थिति प्राप्त करने में सहायता करता है।

- एक समान व्यावसायिक धरातल उपलब्ध कराना जब कि घरेलू लेखांकन मानकों के कारण कोई भी देश लाभान्वित या गैर लाभान्वित नहीं है।
- कम्पनी अधिनियम की नवीनतम संशोधित अनुसूची 6 जो 1 अप्रेल 2011 से लागू हो गयी है, भारतीय लेखांकन व्यवहारों के अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन व्यवहारों के साथ सामन्जस्यीकरण की दिशा में एक प्रयास है।

10.11 सारांश

वित्तीय लेखांकन का मुख्य उद्देश्य उपक्रम के वित्तीय प्रदर्शन एवं वित्तीय स्थिति के सम्बन्ध में उपयोग कर्ताओं की सूचनाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। कम्पनी अधिनियम, 1956 की अनुसूची 6 धारा 211 वित्तीय विवरणों की विषय सामग्री के प्रकटीकरण का विस्तृत विवरण प्रदान करती है। कम्पनी अधिनियम 1956 के अतिरिक्त भारत का प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड सूचीकृत कम्पनियों पर कुछ प्रकटीकरण आवश्यकताओं को लागू करता है। इसके अतिरिक्त, विश्व के लेखाकारों के समक्ष मुख्य मुद्दा विश्व के विभिन्न देशों के द्वारा अनुसरण की गयी लेखांकन पद्धतियों में अन्तर का है। अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक बोर्ड के नाम से जानी जाने वाली एक संस्था अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित की गयी है, जिसका कार्य लेखांकन व्यवहारों के वैश्विक सामन्जस्यीकरण का प्रवर्तन करना है।

10.12 शब्दावली

सेबी– भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड;

ए0 एस0 – लेखांकन मानक;

आई0 ए0 एस0 बी– अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक बोर्ड;

गैप– सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्त।

सामन्जस्यीकरण – लेखंकन मानकों, कार्य पद्धतियों एवं व्यवहारों में राष्ट्रों के मध्य विचलनों के न्यूनीकरण की प्रक्रिया है।

रोकड़ प्रवाह विवरण– कम्पनी की क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ के अर्न्तप्रवाहों एवं बर्हिप्रवाहों को प्रदर्शित करने वाला विवरण पत्र है।

10.13 बोध प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) कम्पनी अधिनियम की धारा ....कम्पनी प्रतिवेदनों के प्रारूप एवं विषय सामग्री का निर्धारण करती है।

(2) लेखांकन मानक ....रोकड़ प्रवाह विवरण बनाने हेतु मार्गनिर्देश प्रदान करता है।

(3) लेखांकन मानकों का अनुसरण उपधारा .... को समाहित करने के द्वारा अनिवार्य किया गया है।

(4) आई0 ए0 एस0 बी0 अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कम्पनी प्रतिवेदनों के सामंजस्यीकरण हेतु वर्ष.....................................से कार्य कर रहा है।

(5) 'सेबी' का उपवाक्य.. कम्पनी सुशासन पर प्रतिवेदन तैयार एवं प्रस्तुत करना कम्पनियों के लिए आवश्यक करता है।

(ब) सत्य अथवा असत्य लिखिएः

(1) कम्पनी वित्तीय प्रतिवेदन सम्प्रेषण का माध्यम है।

(2) संशोधिन अनुसूची 5 को आई0 एफ0 आर0 एस0 में समानता को लाने के लिए निर्गत किया गया है।

(3) कम्पनी प्रतिवेदन केवल निवेशकर्ताओं की सूचनाओं की सूचनाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्मित किए जाते हैं।

(4) 'मालमार्ग में' आर्थिक चिट्ठे के रोकड़ और रोकड़ समान सम्पत्तियाँ शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाता है।

(5) अनुसूची 5 की अधिसूचना 28 मार्च, 2011 को निर्गत की गयी।

10.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) (1) 211 (2) 3 (3) 3ए, 3बी0 एवं 3सी0 धारा 211 में (4)1973 (5) 49

(ब) (1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) असत्य (5) सत्य

10.15 स्वपरख प्रश्न

1. कम्पनी प्रतिवेदनों से आप क्या समझते हैं? कम्पनी प्रतिवेदनों के उद्देश्यों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
2. कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 2011 के भाग– एक में प्रदत्त आर्थिक चिट्ठे के प्रारूप का विस्तार से वर्णन कीजिए। कम्पनी के आर्थिक चिट्ठे को बनाने में अनुसरण किए जाने वाले सामान्य अनुदेशों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
3. कम्पनी अधिनियम,1956 की धारा 211 के भाग– दो में प्रदत्त लाभ एवं हानि खाते के संशोधित प्रारूप को विस्तार से समझाइए।
4. कम्पनी प्रतिवेदनों की विषय सामग्री एवं प्रारूप के नियमन में आई0 सी0 ए0 आई0 की भूमिका को समझाइए।
5. कम्पनी प्रतिवेदनों की विषय सामग्री के नियमन में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड की भूमिका को समझाइए।

10.16 संदर्भ पुस्तकें

1. **एस.एन.माहेश्वरी** ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
2. **आर.एल.गुप्ता** , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. **शुक्ला. एवं ग्रेवाल,** एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. **अग्रवाल एवं जैन,** एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. **एस.एन.माहेश्वरी** ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 11 कम्पनियों के एक समूह के लिए वित्तीय प्रतिवेदन

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना
11.2 परिभाषाऐं
11.3 कम्पनियों के एक समूह के द्वारा वित्तीय सूचनाओं के प्रस्तुतीकरण के सम्बन्ध में वैधानिक आवश्यकताऐं
11.4 लेखांकन मानक –21 – वित्तीय विवरणों को समेकित या एकीकृत करना
11.5 अन्य मदों का लेखांकन व्यवहार
11.6 सारांश
11.7 शब्दावली
11.8 बोध प्रश्न
11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर
11.10 स्वपरख प्रश्न
11.11 सन्दर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- कम्पनियों के समूहों को वित्तीय प्रतिवेदन से सम्बन्धित विभिन्न शब्दों का अर्थ समझ सकें।
- कम्पनियों के समूह के वित्तीय प्रतिवेदन के सम्बन्ध में कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों को समझ सकें।
- वित्तीय विवरणों के समेकन के सम्बन्ध में लेखांकन प्रमाप 21 के प्रावधानों को समझ सकें।
- कम्पनियों के समूह हेतु एकीकृत वित्तीय विवरण तैयार कर सकें।

11.1 प्रस्तावना

'कम्पनियों के समूह' से आशय दो या अधिक कम्पनियों का समूह है, जहाँ एक कम्पनी सूत्रधारी कम्पनी है और शेष कम्पनियाँ सहायक कम्पनियाँ है। सूत्रधारी कम्पनी वह है, जिसके पास अन्य कम्पनियों के निर्णयन को प्रभावित करने तथा उनके प्रबन्धकीय कार्यो के नियंत्रण करने की शक्ति है। सहायक कम्पनियाँ वह कम्पनियाँ हैं, जिनके कार्यो को इस तरह नियंत्रित किया जाता है।

वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण के युग में व्यावसायिक उपक्रम प्रगति हेतु पूर्ण स्वायत्तता का उपयोग कर रहें है। वे चहुँमुंखी प्रगति कर रहे है। उनमें से अधिकांश के द्वारा यह संवृद्धि संविलयन, अधिग्रहण, एकीकरण आदि के माध्यम से प्राप्त की जा रही है। उदाहरणार्थ टाटा मोटर्स ने जगुआर लैण्ड रोवर्स, का अधिग्रहण किया, बैंक ऑफ राजस्थान का विलय आई0 सी0 आई0 सी0 आई0 बैंक में हुआ, सैंचुरियन बैंक ऑफ पंजाब का विलय एच0 डी0 एफ0 सी0 बैंक में किया गया। संवृद्धि के लिए कम्पनियों के द्वारा अपनाया गया सर्वाधिक सामान्य दृष्टिकोण सहायक कम्पनियों को

खोलना अथवा अन्य कम्पनियों के अंशों में 50 प्रतिशत से अधिक अंश अधिग्रहीत करना, या दूसरी कम्पनी के संचालक मण्डल पर नियंत्रण प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त करना, अन्य कम्पनियों में मताधिकार शक्ति प्राप्त करना आदि रहे हैं। कम्पनियाँ जो एक – दूसरे से इस प्रकार जुड़ी हैं, को सम्मिलित रूप में कम्पनियों का समूह कहा जाता है। भारत में कम्पनियों के समूह को कम्पनी वार्षिक रिपोर्ट को तैयार करना कम्पनी अधिनियम की धारा 212 के प्रावधानों तथा भारतीय चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स संस्थान के द्वारा निर्गत लेखांकन मानक – 21 के द्वारा शासित होता है। इस इकाई में, हमने वित्तीय विवरणों के एकीकरण से सम्बन्धित शब्दों के अर्थ, कम्पनी समूहों के वित्तीय प्रतिवेदनों के संबंध में कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों, वित्तीय विवरणों के एकीकरणके संबंध में लेखांकन मानक –21 के मार्गनिर्देशों को समझाया है। एकीकृत वित्तीय विवरणों को तैयार करने की प्रक्रिया को उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से समझाया गया है।

उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के इस युग में, व्यावसायिक संवृद्धि के मार्ग अधिक सुगम हो गए हैं और वह विस्तार हेतु सरल तरीके प्रस्तुत कर रहे हैं। संविलयन, अधिग्रहण, एकीकरण, नये व्यवसाय की विद्यमान या नये उद्यमियों के द्वारा स्थापना एक सामान्य घटना हो गयी है। इन दिनों विस्तारण के लिए एक सामान्य दृष्टिकोंण जिसे व्यावसायिक गृहों के द्वारा अपनाया गया है, वह अपनी स्वयं की सहायक कम्पनियाँ प्रारम्भ करना अथवा दूसरी कम्पनी के पर्याप्त संख्या में अंश क्रय कर नियन्त्रणीय हित प्राप्त करना हैं। यह दृष्टिकोंण अधिग्रहण करने वाली कम्पनी को अपने व्यवसाय का विस्तार करने और साथ ही अपनी पहचान भी बनाए रखने के योग्य बनाता है। नियन्त्रण करने वाली कम्पनी को सूत्रधारी कम्पनी के नाम से जाना जाता है और जिस कम्पनी की गतिविधियों का इस प्रकार नियंत्रण होता है, उसे सहायक कम्पनी कहा जाता है। कम्पनियाँ जो इस प्रकार से जुड़ जाती हैं उन्हे 'कम्पनियों का समूह' एक इकाईके रूप में कहा जाता है। इन सम्बन्धित कम्पनियों की दशा में इनकी सूचनाओं/वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता सम्पूर्ण समूह की एकीकृत वित्तीय स्थिति एवं प्रदर्शन को जानने में रूचि रखते हैं क्योंकि सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा सहायक कम्पनियों में किया गया विनियोग इसके अंशधारियों का होता है।

विश्व के कुछ देशों में सूत्रधारी कम्पनियों के लिए यह अनिवार्य है कि वे समूह के एकीकृत वित्तीय विवरण तैयार करें एवं प्रस्तुत करें। भारत में कम्पनी अधिनियम की धारा 212 और लेखांकन मानक – 21 कम्पनियों के समूह के प्रतिवेदन हेतु संरचना प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक 27 भी कम्पनियों के समूह के वित्तीय विवरणों को समेकित करने हेतु, संरचना प्रदान करता है।

11.2 परिभाषाऐं

<u>एकीकृत वित्तीय विवरण</u>ः समूह के वित्तीय विवरण अर्थात सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनी के स्थिति विवरण एक एकल आर्थिक इकाई की तरह बनाए एवं प्रस्तुत किए जाते हैं। यह विवरण सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा इसकी सहायक कम्पनियों के वित्तीय विवरणों को एकल स्वरूप के वित्तीय विवरणों में समाहित करके बनाए एवं प्रस्तुत किए जाते है और सम्पूर्ण समूह के द्वाराएक एकल इकाई के रूप में प्रस्तुतीकरण किया

जाता है। एकीकृत वित्तीय विवरण सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा समस्त कम्पनियों, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में पैतृक कम्पनी के द्वारा नियन्त्रित की जाती है, की ओर से बनाए एवं प्रस्तुत किए जाते है।

नियन्त्रण यह एक इकाई की वित्तीय एवं परिचालन नीतियों को शासित करने की शक्ति है, ताकि इसकी गति विधियों से लाभ प्राप्त कर सके। नियंत्रण तब विद्यमान होता है, जब पैतृक सूत्रधारी कम्पनी के पास निम्नांकित में से एक हो:

(1) स्वामित्व नियंत्रण : 50 प्रतिशत से अधिक मताधिकार शक्ति का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायक कम्पनियों के माध्यम से स्वामित्व नियंत्रण हो।

(2) अन्य कम्पनियों के निदेशक मण्डल के गठन की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण करने की शक्ति प्राप्त हो ताकि उपक्रम से अधिक लाभ प्राप्त किए जा सकें ।

समूह: सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनियों को एक साथ 'समूह' के नाम से जाना जाता है।

अनियन्त्रणकारी हित (अल्पसंख्यक हित) : नियंत्रणकारी हित सत्रधारी (पैतृक) कम्पनी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सम्बन्धित न की जा सकने वाली सहायक कम्पनियों की समता (पूँजी) है।

पैतृक या सूत्रधारी कम्पनी: पैतृक कम्पनी वह संस्था है जिसकी एक या अधिक सहायक कम्पनियाँ है।

पृथक वित्तीय विवरण:यह वे वित्तीय विवरण हैं, जो एक पैतृक, सहायक कम्पनी में एक निवेशकर्ता या एक संयुक्त रूप से नियंत्रित संस्था में उद्यमकर्ता के द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनमें प्रतिवेदित परिणामों और निवेशकर्ता की शुद्ध सम्पत्तियों के आधार के स्थान पर, प्रत्यक्ष समता हित के आधार पर विनियोगों को अभिलिखित किया जाता है।

सहायक कम्पनी: एक सहायक कम्पनी, किसी असमामेलित संख्या जैसे साझेदारी फर्म को सम्मिलित करते हुए, वह संस्था है जिसे अन्य संस्था के द्वारा नियंत्रित किया जाता है (इसे पैतृक या सूत्रधारी के नाम से जाना जाता है)।

11.3 कम्पनियों के एक समूह के द्वारा वित्तीय सूचनाओं के प्रस्तुतीकरण के सम्बन्ध में वैधानिक आवश्यकताऐं

कम्पनी अधिनियम, 1956

कम्पनी अधिनियम की धारा 212 के अनुसार यह आवश्यक है कि एक सूत्रधारी कम्पनी, जिसकी सहायक कम्पनी या कम्पनियाँ हों, को वित्तीय वर्ष के अन्त में जब सूत्रधारी कम्पनी का आर्थिक चिट्ठा बनाया जाता है, अपने आर्थिक चिट्ठे के साथ ऐसी सहायक कम्पनी या ऐसी समस्त एवं प्रत्येक कम्पनियों, जैसी भी स्थिति हो, के सम्बन्ध में निम्नांकित प्रपत्र संलग्न करने होंगे:

(अ) सहायक कम्पनी के आर्थिक चिट्ठे की एक प्रति;

(ब) लाभ एवं हानि खाते की एक प्रति;

(स) इसके निदेशक मण्डल की रिपोर्ट की एक प्रति;

(द) इसके अंकेक्षकों के प्रतिवेदन की एक प्रति;

(य) उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रावधान के अनुसार सहायक कम्पनी में सूत्रधारी कम्पनी के हित का एक विवरण;

(र) एक विवरण जिसे धारा 212 की उपधारा (5) में सन्दर्भित किया गया है, यदि कोई हो;

(ल) प्रतिवेदन जिसे धारा 212 की उपधारा (6) में संदर्भित किया गया है, यदि कोई हो।

उपरोक्त संदर्भित (य) में सूत्रधारी कम्पनी के हित के संम्बन्ध में विवरण में निम्नांकित सूचना होनी चाहिए:

(अ) सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष के अन्त में सहायक कम्पनी में सूत्रधारी कम्पनी के हित की सीमा ;

(ब) सहायक कम्पनी की हानियों को घटाने के पश्चात सहायक कम्पनी के लाभों की शुद्ध कुल धनराशि या इसके विपरीत, जहाँ तक इसका सम्बन्ध सूत्रधारी कम्पनी के सदस्यों से है और कम्पनी के लेखों में इसे ध्यान में नहीं लिया गया है :

(1) पूर्व व्यक्त, सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष या वर्षों हेतु ;

(2) जब से यह सहायक कम्पनी बनी है, उसके पूर्व वित्तीय वर्षो के लिए;

(स) सहायक कम्पनियों की लाभों को घटाने के पश्चात सहायक कम्पनी के लाभों की शुद्ध कुल धनराशि, या इसके विपरीत;

(1) पूर्व व्यक्त, सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष या वर्षो हेतु;

(2) जब से यह सहायक कम्पनी बनी है, उसके पूर्व वित्तीय बर्षो के लिए;

जहाँ तक सूत्रधारी कम्पनी के लेखों में इन लाभों को ध्यान में लिया गया है या उन हानियों के लिए प्रावधान किया गया है।

उपरोक्त (ब) एवं (स) में संदर्भित लाभों एवं हानियों में केवल आयगत लाभ सम्मिलित हैं।

धारा 212 की उप धारा 5 के अनुसार यह आवश्यक है कि जहाँ सहायक कम्पनी का वित्तीय वर्ष या के वित्तीय वर्ष सूत्रधारी कम्पनी के वित्तीय वर्षो से संयोगवश एक समान नही है, सूत्रधारी कम्पनी के आर्थिक चिट्ठे के साथ निम्नांकित विषयों की सूचना का एक विवरण संलग्न किया जायेगा:

(अ) सहायक कम्पनी के खातों को बन्द करने तथा आर्थिक चिट्ठे की तिथि के मध्य सहायक कम्पनी में सूत्रधारी कम्पनी के हितों में किसी परिवर्तन की दशा में, ऐसे परिवर्तन की प्रकृति एवं सीमा का एक विवरण।

(ब) सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष के अन्त अथवा अन्तिम वित्तीय वर्ष के अन्त तथा सूत्रधारी कम्पनी के वित्तीय वर्ष के अंत के मध्य की अवधि में हुए निम्नलिखित के संबंध में किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन का विस्तृत विवरण :

(1) सहायक कम्पनी की स्थायी सम्पत्तियाँ;

(2) इसके विनियोग;

(3) इसके द्वारा ऋण के रूप में दी गयी धनराशि;

(4) इसके द्वारा ऋण ली गयी राशि जो चालू दायित्वों की पूर्ति के अतिरिक्त उद्देश्य के लिए हो।

11.4 लेखांकन मानक 21– वित्तीय विवरणों को समेकित या एकीकृत करना

लेखांकन मानक 21 को चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स संस्थान के द्वारा जारी किया गया है। यह दिनांक 01/04/2001 से प्रभावी हुआ है। इसके द्वारा यह आवश्यक किया गया है कि कम्पनियाँ अपने समेकित वित्तीय विवरण इस मानक के प्रावधानों के अनुसार तैयार एवं प्रस्तुत करें। इस मानक की आधारभूत अवधारणा यह है कि सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के विषय में वित्तीय विवरण, एक एकल आर्थिक इकाई के विवरणों की तरह प्रस्तुत किए जाने चाहिए और इन्हें समूह के द्वारा नियन्त्रित संसाधनों तथा समूह के द्वारा देय दायित्वों का प्रकटीकरण करना चाहिए।
एकीकृत या समेकित वित्तीय विवरणों में समस्त सहायक कम्पनियों, चाहे यह घरेलू या विदेशी सहायक कम्पनियाँ हो, के विषय में सूचना सम्मिलित होना आवश्यक है। किन्तु निम्नांकित दशाओं में समेकन आवश्यक नहीं है :

(अ) जब सहायक कम्पनी पर सूत्रधारी कम्पनी का नियंत्रण अस्थायी प्रकृति का है अथवा

(ब) जब सहायक कम्पनी कठोर दीर्घकालीन प्रतिबन्धों, जिसके परिणामस्वरूप सूत्रधारी (पैतृक) कम्पनी को कोष हस्तांतरण के अयोग्य हो, के अन्तर्गत परिचालन कर रही हो।

ऐसी असमेकित सहायक कम्पनियों का लेखा ए0 एस0 –31 के अनुसार किया जाना चाहिए।

समेकन या एकीकरण कार्य –विधियाँ :

1. सूत्रधारी (पैतृक) एवं इसकी सहायक कम्पनियों के वित्तीय विवरणों का समेकन एक –एक लाइन के आधार पर सम्पत्तियों, दायित्वों, आय एवं व्यय की एक समान मदों को एक– साथ जोड़कर किया जाता है।
2. विनियोगों की तिथि को सहायक कम्पनी के लेखें में विनियोग (सूत्रधारी/ पैतृक कम्पनी की पुस्तकों में) तथा सहायक कम्पनी की समता पूँजी में सूत्रधारी कम्पनी का अंश छोड़ दिया जाना चाहिए।
3. इस प्रकार छोड दिए जाने से आया अन्तर, यदि काई हो, ख्याति की तरह दिखाया जाएगा यदि सहायक कम्पनी में किये गये विनियोग की धनराशि सहायक कम्पनी में अधिग्रहीत शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य से अधिक हो। दूसरी ओर अन्तर को पूँजी संचय खाते में लिखा जायेगा यदि सहायक कम्पनी में किये गये विनियोग का मूल्य, सहायक कम्पनी में अधिग्रहीत सम्पत्तियों के मूल्य से कम हो।

   टिप्पणी : (1) यदि दो या अधिक विनियोग एक समयावधि में किए गए है तो विनियोग की तिथि को सहायक कम्पनी की समता चरणबद्ध ढंग सेनिर्धारित की जायेगी ।

   (2) यदि एक समयावधि के अन्तर्गत लघु विनियोग किए गए हैं और तब एक और विनियोग किया गया है, जिससे नियंत्रण स्थापित होता है, ऐसे नवीनतम

विनियोग की तिथि, जिससे सूत्रधारी कम्पनी का सहायक कम्पनी पर नियंत्रण स्थापित हुआ है, को विनियोग की तिथि माना जा सकता है।

4. सहायक कम्पनी के अंशो में वाह्य अंशधारियों का अंश अल्पमत हित कहलाता है। इसे एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जाता है,

नोटः यदि किसी वित्तीय वर्ष में हानि में वाह्य अल्पमत अंशधारियों का अंश उनके समता में अंश से अधिक होता हे, तो एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में अल्पमत हित को शून्य दिखाया जायेगा। अल्पमत हित की ऐसी अशोधित हानि को एकीकृत लाभ एवं हानि खाते में हस्तान्तरित किया जाएगा।

किन्तु, बाद के वर्षों में, लाभ में अल्पमत हित के अंश की पहचान तब तक नहीं की जायेगी जब तक ऐसी अशोधित हानि को पूर्णतया वसूल नहीं कर लिया जाता है।

5. समूह लाभों को समस्त सहायक कम्पनियों के एकीकृत लाभ में से अल्पमत अंशधारियों के हित को घटाने के बाद निकाला जाता है।

6. देनदारों/ लेनदारों, प्राप्त विपत्रों/देय विपत्रों और लेन–देनों जैसे विक्रय/क्रय/ब्यय/आय के सम्बन्ध में अर्न्त समूह शेषों को पूर्णतया समाप्त किया जाता है। अर्न्तसमूह लेन–देनों से उत्पन्न 'अनर्जित लाभ' को ऐसे न वसूल हूए लाभ के लिए संचय बनाकर समाप्त किया जाना चाहिए, ऐसे संचय अल्पमत हित को प्रभावित नहीं करते हैं।

इसी प्रकार, न वसूल हुई हानियाँ जिन्हें वसूल नहीं किया जा सकता है, को समाप्त किया जाता है।

7. सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनी की विभिन्न प्रतिवेदन तिथियों के सम्बन्ध में :

(अ) सूत्रधारी कम्पनी के आर्थिक चिट्ठे की तिथि को समेकन/एकीकरण किया जाता है।

(ब) दोनों तिथियों के मध्य घटित घटनाओं एवं लेन–देनों के लिए समायोजन किए जाने चाहिए।

(स) प्रतिवेदन तिथियों में 6 माह से अधिक का अंतर नहीं होना चाहिए।

8. <u>समान लेखांकन नीतियाँः</u> सहायक एवं सूत्रधारी कम्पनियों के द्वारा अपनायी गयी लेखांकन नीतियों के बीच विचलनों की दशा में, लेखांकन नीतियों में एकरूपता की दृष्टि से सहायक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में समेकन से पूर्व समायोजन किया जाना चाहिए, किन्तु साथ ही, एकीकृत वित्तीय विवरणों को बनाते समय पर्याप्त समायोजन किए जाने चाहिए।

उदाहरणार्थ, एक सूत्रधारी कम्पनी का अन्तिम रहतिया रू. 20000 एवं सहायक कम्पनी का रहतिया रू. 2500 है। सूत्रधारी कम्पनी रहतिये के मूल्यांकन के लिए फीफो (FIFO) विधि का अनुसरण करती है और सहायक कम्पनी रहतियें के मूल्यांकन के लिए भारित औसत विधि अपनाती है। यदि सहायक कम्पनी भी रहतिए के मूल्यांकन के लिए 'फीफो' विधि ही अपनाती, तो ऐसी दशा में सहायक कम्पनी के रहतिये का मूल्य रू.20000 होगा। ऐसी स्थिति में,

एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में अन्तिम रहितया रू. 40000 अर्थात (20000 +20000) दिखाया जाएगा।

नोट : यदि विभिन्न लेंखांकन नीतियों के कारण एकीकृत विवरणों को समायोजित करना सम्भव नहीं है, तो इस तथ्य को एकीकृत वित्तीय विवरणों में उन सभी मदों की धनराशि के साथ प्रकटीकरण किया जाना चाहिए जिनके संबंध में विभिन्न लेखांकन नीतियाँ अपनायी गयी है।

9. अधिग्रहण के पश्चात लाभ/हानि (सहायक कम्पनियों का) को एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में नीचे दिखाया जाएगा।

10. संचय एवं आधिक्य को अल्पमत हितों के अंश के समायोजन के पश्चात समूह लाभों/हानियों के रूप में।

11. सहायक कम्पनियों में विनियोंग का व्यवस्थापन

(अ) यदि सूत्रधारी – सहायक कम्पनी सम्बन्ध समाप्त होता है, तो ऐसी सहायक कम्पनी के लाभ व्यवस्थापन की तिथि तक ही एकीकृत लाभ एवं हानि खातें में सम्मिलित किए जायेंगे।

(ब) व्यवस्थापन पर लाभ/हानि की एकीकृत लाभ एवं हानि खातें के साथ–साथ सूत्रधारी कम्पनी के पृथक लाभ–हानि खाते में भी पहचान की जाएगी।

(स) एक उद्यम में विनियोग, जो एक सहायक कम्पनी के रूप में जिस तिथि से समाप्त हो रही है, को ए0 एस0–13 एवं ए0 एस0 –21 ,जैसी भी दशा हो, के अनुसार व्यवह्रत किया जाएगा।

12. वाह्य व्यक्तियों के द्वारा धारित पूर्वाधिकार अंशः

(अ) अल्पमत हित में प्रत्येक अंश का चुकता मूल्य जोड़ा जाएगा।

(ब) सहायक कम्पनी के लाभो में सूत्रधारी कम्पनी का अंश पूर्वाधिकार लाभांश की अवशिष्ट धनराशि घटाने के पश्चात निकाला जाएगा। किन्तु, यदि लाभ अवशिष्ट राशि भुगतान करने के लिए अपर्याप्त हैं (अल्पमत अधिकारियों के सम्बन्ध में) तों इस सूचना को एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में टिप्पणी के रूप में प्रकटीकरण किया जाएगा।

13. <u>प्रकटीकरण आवश्यकताऐं:</u>

(अ) समस्त सहायक कम्पनियों की सूची उनके नाम, समामेलन अथवा निवास के देश, स्वामित्व हित का अनुपात और, यदि मताधिकार शक्ति का भिन्न–2 अनुपात धारित किया गया है, तो उसे एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में प्रकटीकरण किया जाएगा।

(ब) एकीकृत वित्तीय विवरणों में, जहाँ लागू हो

(1) सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनी के मध्य सम्बन्ध की प्रकृति, यदि सूत्रधारी कम्पनी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में इसकी सहायक कम्पनियों के माध्यम से सहायक कम्पनी में आधे से अधिक मताधिकार शक्ति की स्वामी नहीं है;

(2) प्रतिवेदन की तिथि को सहायक कम्पनी की वित्तीय स्थिति पर अधिग्रहण एवं व्यवस्थापन का प्रभाव, प्रतिवेदन अवधि हेतु परिणामोंऔर विगत अवधि हेतु समवर्ती राशियों पर प्रभाव, और

(3) सहायक कम्पनियों के नाम, जिनके सम्बन्ध में प्रतिवेदन की तिथि सूत्रधारी कम्पनी से भिन्न है और प्रतिवेदन तिथियों में अन्तर।

एकीकृत वित्तीय विवरणों को तैयार करने की चरणबद्ध प्रक्रियाः

एकीकृत वित्तीय विवरणें को तैयारकरने की प्रक्रिया उदाहरण की सहायता से प्रत्येक चरण के अनुसार निम्नवत समझायी गयी हैः

ख्याति या पूँजी संचय की गणना

कभी–कभी सूत्रधारी कम्पनी सहायक कम्पनी में नियन्त्रणीय हित प्राप्त करते समय अधिग्रहीत सम्पत्तियों के मूल्य से अधिक धनराशि का भुगतान बदले में करती है। ऐसी दशा में जबकि विनियोजित धनराशि, प्राप्त की गयी समपत्तियों के मूल्य के बदले में अधिक होती है, तो विनियोग की गयी अधिक धनराशि को 'ख्याति' के नाम से जाना जाता है। विनियोग की गयी अधिक धनराशि के प्राप्त सम्पत्तियों के मूल्य के बदले में कम होने की दशा में, इस अन्तर को 'पूँजी संचय' कहा जाता है। ख्याति अथवा पूँजी संचय के मूल्य की गणना की प्रक्रिया को उदाहरण 18.1 और 18.2 की सहायता से निम्नवत समझाया गया हैः

उदाहरण 11.1

एक्स लि0 ने जेड लि0 में 22 रू. अंश की दर से 60प्रतिशत अंश अधिग्रहीत (प्राप्त) किए। जेड लि0 के आर्थिक चिट्ठे का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है। आपको एकीकृत वित्तीय विवरणों में अभिलिखित की जाने वाली ख्याति अथवा पूँजी संचय के मूल्य की गणना करनी है।

	रू0	
10,00,000 समता अंश	1,00,00,000	
10% ऋणपत्र	10,00,000	
लेनदार	6,00,000	
स्थायी सम्पत्तियाँ		75,00,000
विनियोग		45,00,000
चालू सम्पत्तियाँ		63,00,000
ऋण एवं अग्रिम		19,00,000

उसी दिन जेड लि0 ने 10 प्रतिशत की दर से लाभांश घोषित किया। दोनों पक्ष स्थायी सम्पत्तियों पर 10 प्रतिशत की दर से ह्रास लगाने पर सहमत हो गए। विनियोगों का रू 55,00,000 के बाजार मूल्य पर लिया जाना है।

उत्तर :

ख्याति/पूँजी संचय की गणना

(अ) अधिग्रहीत हित के मूल्य की गणना	रू0
स्थायी सम्पत्तियाँ ह्रास के पश्चात(75,00,000– 7,50,000)	67,50,000
चालू सम्पत्तियाँ	63,00,000

ऋण एवं अग्रिम	19,00,000
बाजार मूल्य पर विनियोग	55,00,000
कुल सम्पत्तियाँ	**2,04,50,000**
घटाया वाह्य पक्षों के प्रति दायित्वः	
ऋण	10,00,000
लेनदार	6,00,000
व्यवसाय का शुद्ध मूल्य	**1,84,50,000**
(ब) जेड लि0 में एक्स लि0 का हित (1,84,50,000 का 60%)	1,10,70,000
(स) 60% हित अधिग्रहीत करने के लिए विनियोजित धनराशि (6,00,000×22)	1,32,00,000
(द) लाभांश प्राप्त (600000×2)	12,,00,000

नोटः सूत्रधारी कम्पनी की एक से अधिक सहायक कम्पनी होने की दशा में ख्याति और पूँजी संचय को एकीकृत चिट्ठा बनाते समय निकाला जा सकता है।

ख्याति अथवा पूँजी संचय की गणना जब विनियोग किश्तों में किया गया है :

सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा सहकारी कम्पनी पर नियंत्रण प्राप्त करने की तिथि की अपेक्षा जब सूत्रधारी कम्पनी सहायक कम्पनी का नियंत्रण प्राप्त करने के लिए विनियोग को किश्तों में करती है, तो इसे एकीकृत वित्तीय विवरणों को बनाते समय प्रत्येक चरण के अनुसार ध्यान में रखा जाता है। ऐसी स्थिति में ख्याति अथवा पूँजी संचय की गणना करने की प्रक्रिया को उदाहरण संख्या 11.2 की सहायता से समझाया गया हैः

उदाहरण 11.2

पी0 लिमिटेड ने क्यू लिमिटेड में रू. 11 प्रति अंश की दर से 40% अंश क्रय किए। तीन वर्षों के पश्चात पी0 लिमिटेड ने क्यू लि0 में 40% अतिरिक्त अंश क्रय किए।क्यू लि0 की कुल पूँजी दस करोड़ रू. है जो 10 रू0 वाले 1,00,00,000 अंशों में विभाजित है। क्रय समझौते को निम्नांकित शर्तों पर अनुमोदित किया गयाः

1. क्रय मूल्य रू0 8.70 प्रति अंश है।
2. क्यू लि0 की कुल सम्पत्तियों का मूल्य रू0 11,20,00,000 है। बाजार मूल्य में रू0 50,00,000 से वृद्वि हुई है।
3. वाह्य पक्षों के प्रति कुल दायित्व रू0 2,60,00,000 हैं। एक लेनदार जिसे रू. 20,00,000 की धनराशि देय थी , की मृत्यु हो गयी ओर अब उसे कुछ भी देय नही है।

ख्याति या पूँजी संचय, जैसी भी स्थिति हो, की गणना कीजिएः

उत्तर :

(अ) अधिग्रहीत नियंत्रणकारी हित का मूल्य	रू0
क्यू लि0 की सम्पत्तियों का बाजार मूल्य	11,70,00,000
घटायाः क्यू लि0 के दायित्व	2,40,00,000
क्यू लि0 का शुद्ध मूल्य	**9,30,00,000**

पी0 लि0 द्वारा अधिग्रहीत शुद्ध सम्पत्ति का 80% मूल्य	7,44,00,000
(ब) पी0लि0 में विनियोजित धनराशि	
(40,00,000×11+40,00,000×8.70)	7,88,00,000
ख्याति (ब) – (अ)	44,00,000

अल्पमत हितः

अल्पमत हित सहायक कम्पनी में वाह्य व्यक्तियों/पक्षों का हित होता है। दूसरे शब्दों में, इसे सहायक कम्पनी के अंशों में सूत्रधारी कम्पनी के अतिरिक्त अन्य अंशधारियों के द्वारा धारित अंशों के मूल्य के रूप में वर्णित किया जा सकता है। अल्पमत हित एकीकृत आर्थिक चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है। अल्पमत हित की गणना करते समय निम्नांकित बिन्दुओं पर सावधानीपूर्वक ध्यान दिया जाना चाहिएः

1. सहायक कम्पनी के अधिग्रहण से पूर्व एवं पश्चात के लाभों में अल्पमत अंशधारियों के हित के अशं की गणना की जानी चाहिए और अल्पमत हित में जोड़ा जाना चाहिए।
2. अदत्त पूर्वाधिकार अंश पूँजी को दर्शाने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। वाह्य पक्षों के द्वारा धारित पूर्वाधिकार अंश पूँजी को अल्पमत हित में जोड़ना चाहिए। संचयी पूर्वाधिकार लाभांश के लिए समायोजनाऐं करनी चाहिए। लाभांश घोषित हुए हों अथवा नहीं, इसे ध्यान में न रखते हुए इसकी समायोजनाऐं की जानी चाहिए।
3. सहायक कम्पनियों की शुद्ध सम्पत्ति में अल्पमत हित का मूल्यांकन एवं एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में पैतृक अंशधारियों की समता एवं दायित्वों से पृथक रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। सहायक कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियों में अल्पमत हित में निम्नांकित सम्मिलित होते हैं :

    (1) अल्पमत अंशधारियों के द्वारा धारित समता पूँजी का मूल्य उस तिथि को, जिसमें सहायक कम्पनी में विनियोग किया गया और

    (2) सूत्रधारी – सहायक कम्पनी के सम्बन्ध के अस्तित्व में आने की तिथि से समता अंश पूँजी में अल्पमत अंशधारियों के अंश में परिवर्तन ।

    अल्पमत हित की गणना करने की प्रक्रिया को उदाहरण 18.3 की सहायता से निम्नवत समझाया गया है।

उदाहरण 11.3

ए0 लिमिटेड के आर्थिक चिट्ठे का निम्नांकित विवरण दिया गया हैः

	रू0
अधिग्रहण से पूर्व का लाभ	10,00,000
अधिग्रहण से पश्चात का लाभ	8,00,000
सामान्य संचय	7,00,000
ए0 लि0 की अंश पूँजी (5लाख अंश 10रू प्रति अंश की दर से)	50,00,000
पूर्वाधिकार अंश पूँजी	10,00,000

बी0 लि0 जो ए0 लि0 की सूत्रधारी कम्पनी हे, ने ए0 लि0 में 75 % अंशों का अधिग्रहण 30% प्रीमियम पर किया।
आपको अल्पमत हित की गणना उपरोक्त सूचना के आधार पर करनी है:
अल्पमत हित की गणना:

	रू
अधिग्रहण के पूर्वलाभ में अल्पमत हित	2,00,000
अधिग्रहण के पश्चात के लाभ में अल्पमत हित	2,50,000
सामान्य संचय में अल्पमत हित	1,75,000
पूर्वाधिकार पूँजी में अल्पमत हित	10,00,000
समता पूँजी में अल्पमत हित	12,50,000
अल्पमत हित	**28,75,000**

टिप्पणी: हानि की दशा में हानियों में अल्पमत हित को उनके मूल्य से घटाया गया है, जब तक कि अल्पमत हित शून्य नहीं है। अधिकाधिक हानि की दशा में अर्थात कम्पनी में अल्पमत अंशधारियों द्वारा धारित अंशों के मूल्य से हानियों में अंशधारियों के अंश से अधिक हो जाने पर, अधिक हानि को समेकित समूह लाभों से समायोजित किया जाता है। अल्पमत अंशधारियों की हानियों में अंश को उस दशा में समेकित समूह लाभों से समायोजित नहीं किया जाता है, जबकि अल्पसंख्यक अंशधारियों का बाध्यकारी दायित्व है ओर वे हानियों का पूरा करने की स्थिति में हैं।
इसके अतिरिक्त, किसी वर्ष में हानियों में अल्संख्यक अंशधारियों के अंश को समेकित समूह लाभों से समायोजित कर दिये जाने की दशा में, इसे बाद के वर्षों के लाभों से समायोजन के द्वारा प्रतिपूरित किया जाएगा अर्थात जब सहायक कम्पनी बाद के वर्षो में लाभ अर्जित करती है, अल्पमत अंशधारियों के लाभों में अंश को बहुसंख्यक अंश में उस सीमा तक जोड़ा जाता है, जहाँ तक विगत वर्षो में उनके द्वारा अल्पमत अंशधारियों की हानियों का अवशोषण किया गया है।
उदाहरणार्थ, एक वर्ष में अल्पमत की हानि का अंश रू 35 लाख है और उनकी पूँजी 35 लाख रू. है। इस वर्ष 5 लाख रू. मूल्य की अल्पमत अंशधारियों के अंश की हानियों को समेकित समूह लाभों से समायोजित किया जाएगा । यदि आगामी वर्ष में समूह लाभों में अल्पमत का अंश 10 लाख रू. है । इन 10 लाख रू के लाभों में से 5 लाख रू समेकित समूह लाभों मे जोड़े जोयेंगे क्योंकि गत वर्ष में अल्पमत अंशधारियों की 5 लाख रू. की हानि को समेकित समूह लाभों के द्वारा वहन किए जाने के कारण समूह की क्षतिपूर्ति की गयी है।

11.5 अन्य मदों का लेखांकन व्यवहार

जब सूत्रधारी कम्पनी और सहायक कम्पनियां परस्पर माल के क्रय और विक्रय के व्यवसाय में संलग्न हों , तो अर्न्त–कम्पनी सौदों से किन्हीं अनर्जित लाभों के प्रभाव को एकीकृत वित्तीय विवरणों से निस्तारित कर देना चाहिए। अनर्जित लाभों सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा सहायक कम्पनी से या सहायक कम्पनी द्वारा सूत्रधारी कम्पनी से अर्जित लाभों का वह भाग है जो एक दूसरे को विक्रय किए गए माल को अपने

अधिकार में रखने पर उत्पन्न होता है और जो अनर्जित इस कारण से है क्योंकि ऐसा माल या उसका कोई भाग क्रेता कम्पनी के पास बिना विक्रय के पड़ा है।

उदाहरण : आर0 लिमिटेड ने एस0 लिमिटेड को रू. 10,000 का माल विक्रय किया। आर0 लिमिटेड की सहायक कम्पनी है। आर0 लिमिटेड ने माल का विक्रय बिक्री पर 20%सकल लाभ पर किया है। एकीकृत आर्थिक चिट्ठे की तिथि पर एस0 लिमिटेड के पास आर0 लिमिटेड से क्रय किए गए माल में से रू. 2,000 का मालबिना विक्रय के पड़ा था।

उपरोक्त वर्णित बिना विक्रय के माल में अनर्जित लाभ रू400 (2,000 X20/100)है।

एकीकृत आर्थिक चिट्ठे में अन्तिम रहतिया रू1600(2,000 –400) अर्थात अनर्जित लाभ घटाने के बाद दिखाया जाएगा।

प्रतिवेदन तिथि :जहां तक सम्भव हो, सूत्रधारी कम्पनी और सहायक कम्पनियो की प्रतिवेदन तिथि समान होनी चाहिए। अपरिहार्य कारणों से सूत्रधारी कम्पनी और सहायक कम्पनियो की प्रतिवेदन तिथि में अन्तर होने की दशा में सहायक कम्पनियो और सूत्रधारी कम्पनीकी प्रतिवेदन तिथियों के बीच हुए सौदों के प्रभाव को निर्धारित किया जाना चाहिए और एकीकृत वित्तीय विवरणों को ऐसे सौदों के प्रभाव को दिखाते हुए समायोजित किया जाना चाहिए। किसी भी स्थिति में, दो कम्पनियों की प्रतिवेदन तिथियों के बीच 6 माह से अधिक अन्तर नहीं होना चाहिए।

सहायक कम्पनी में विनियोग का निस्तारण :

उदाहरण 11.4 एवं 18.5 की सहायता से निम्नवत समझाया गया है :

उदाहरण 11.4 :

ए0 लिमिटेड ने बी0 लिमिटेड में रू. 20 लाख की लागत पर 40% अंश अधिग्रहीत किए। अधिग्रहण की तिथि पर बी लिमिटेड की सम्पत्तियों का मूल्य रू20 लाख था। वर्ष के दौरान ए0 लिमिटेड ने बी0 लिमिटेड में अपने अंश को रू 34 लाख में बेच दिया। अपने अंश के विक्रय की तिथि को बी0 लिमिटेड की शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य रू 40 लाख था। आपको एकीकृत वित्तीय विवरणों में अभिलेखन हेतु सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा अर्जित लाभ या हानि की गणना करनी है।

उत्तर :

सहायक कम्पनी में विनियोग के विक्रय पर लाभ /हानि की गणना

(अ) विक्रय तिथि पर विनियोगों का मूल्य(40,00,000 X70/100)	रू0 28,00,000
(ब)सहायक कम्पनी में विनियोग का विक्रय मूल्य	रू0 34,00,000
(स)**विनियोग के विक्रय पर लाभ (ब)–(अ)**	**रू0 6,00,000**
(द)**एकीकृत वित्तीय विवरणों में ख्याति**	
(1)क्रय तिथि पर विनियोगों का मूल्य	14,00,000
(2)विनियोगोंकी प्राप्ति के लिए मूल्य का भुगतान	20,00,000
ख्याति	**रू0 6,00,000**
(य)**विनियोग के निस्तारणपर लाभ /हानि(स)–(द)**	**0**

उदाहरण 11.5 :

ए0 लिमिटेड ने बी0 लिमिटेड में रू. 10 लाख की लागत पर 70% अंश अधिग्रहीत किए। अधिग्रहण की तिथि पर बी लिमिटेड की सम्पत्तियों का मूल्य रू 20 लाख था। वर्ष के दौरान ए0 लिमिटेड ने बी0 लिमिटेड में अपने अंश को रू 34 लाख में बेच दिया। अपने अंश के विक्रय की तिथि को बी0 लिमिटेडकी शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य रू 40 लाख था।आपको एकीकृत वित्तीय विवरणों में अभिलेखन हेतु सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा अर्जित लाभ या हानि की गणना करनी है।

उत्तर :

सहायक कम्पनी में विनियोग के विक्रय पर लाभ /हानि की गणना

(अ) विक्रय तिथि पर विनियोगों का मूल्य(40,00,000 X70/100)	रू0 28,00,000
(ब)सहायक कम्पनी में विनियोग का विक्रय मूल्य	रू0 34,00,000
(स)**विनियोग के विक्रय पर लाभ (ब)–(अ)**	**रू0 6,00,000**
(द)**एकीकृत वित्तीय विवरणों में पूँजी संचय**	
(1)क्रय तिथि पर विनियोगों का मूल्य	14,00,000
(2)विनियोगों की प्राप्ति के लिए मूल्य का भुगतान	10,00,000
पूँजी संचय(2)–(1)	**रू04,00,000**
(य)**विनियोग के निस्तारण पर लाभ /हानि (स)+(द)रू0**	**10,00,000**

प्रकटीकरण आवश्यकताऐं

प्रकटीकरण की जाने वाले क्षेत्रों को उदाहरण 18.6 की सहायता से निम्नवत समझाया गया है।

उदाहरण 11.6 :

एक्स0, वाई0, जेड0 सूत्रधारी कम्पनी ए0 लिमिटेड की सहायक कम्पनियां हैं। ए0 लिमिटेड के 31 दिसम्बर 2012 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये खाते बनाये गये हैं और सहायक कम्पनियों से लाभांश के रूप में प्राप्त आय, यदि कोई हो, को खाते में अभिलिखित किया गया है।

सहायक कम्पनियों से प्राप्त सूचना निम्नांकित है :

विवरण	एक्स लि0 रू0	वाई लि0 रू0	जेड लि0 रू0
वित्तीय वर्ष समाप्ति की तिथि	31 मार्च	31 दिसम्बर	31 अक्टूबर
समता अंश पूंजी @ 10 रू0 प्रति अंश	1,00,00,000	1,00,00,000	1,00,00,000
ए0 लि0 द्वारा धारित अंश पूंजी का प्रतिशत 31.3.2012 को	80	60	60
विगत वर्ष के संबंध में ए0 लि0 द्वारा 2010–11 में प्राप्त लाभांश			1,00,000
पूर्व वर्षों के संबंध में ए0 लि0 द्वारा प्राप्त लाभांश 201–11 में	2,10,000		
गत वर्ष के लिये कुल विभाजनयोग्य लाभ	2,00,000	2,50,000	4,00,000
विगत वर्षों का संचयी लाभ जब से कम्पनियां ए0 लि0 की सहायक बनी हैं	9,00,000	9,00,000	17,00,000

अन्य सूचनाऐं :

1. गत वर्ष में सूत्रधारी कम्पनी ने कोई भी नये अंश तीनों में से किसी भी सहायक कम्पनी में नहीं क्रय किये हैं।
2. अंतिम आर्थिक चिट्ठे की तिथि से वाई लि0 ने 5,00,000 रू0 की सम्पत्ति क्रय की और सरकारी प्रतिभूतियों में रू0 1,20,000 विनियोग किये हैं।
3. जेड लि0 ने विगत आर्थिक चिट्ठे की तिथि से रू0 2,00,000 की सम्पत्ति क्रय की। आपको एक विवरण बनाना है जिसे कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 212 की आवश्यकताओं के अनुसार एकीकृत वित्तीय विवरणों के साथ संलग्न किया जाना है।

उत्तर :

धारा 212 की आवश्यकताओं के अनुसार एकीकृत वित्तीय विवरणों से संलग्न किया जाने वाला विवरण :

क0सं0	विवरण	एक्स0 लि0	वाई लि0	जेड लि0
1.	सहायक कम्पनियों के वित्तीय वर्ष समाप्ति की तिथि	31.3.12	31.12.11	31.10.11
2.	(अ) वित्तीय वर्ष के अन्त में सूत्रधारी कम्पनी के द्वारा धारित अंशों की संख्या	8,00,000	60,000	60,000
	(ब) अंशधारण का प्रतिशत	80%	60%	60%
3.	स्हयक कम्पनी जहां तक यह ए0 लि0 से संबंध रखती है, का शुद्ध लीभ/हानि का योग			
	(अ) 31 मार्च 2012 को समाप्त वर्ष के लिये ए0 लि0 में नहीं लिया गया			
	(i) सहायक कम्पनी के समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के लिये उपरोक्त (1) के अनुसार	1,60,000	1,50,000	1,40,000
	(ii) ए0 लि0 की सहायक कम्पनी बनने से पूर्व के वित्तीय वर्षों के लिये	5,10,000	5,40,000	10,20,000
	(ब) 31 मार्च 2012 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये ए0 लि0 के खातों में लिया गया			
	(i) सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष (उपरोक्त (1) के अनुसार) के लिये			1,00,000
	(ii) ए0 लि0 की सहायक कम्पनी बनने के पूर्व के वित्तीय वर्षों के लिये	2,10,000		

4.	ए0 लि0 के हित में परिवर्तन; (सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष की समाप्ति और 31 मार्च 2012 के बीच) (अ) अंशों की संख्या	शून्य	शून्य	शून्य
	(ब) अंशधारण का प्रतिशत	शून्य	शून्य	शून्य
5.	सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष की समाापि्त और 31.3. 2012 के बीच महत्वपूर्ण परिवर्तन (अ) स्थिर सम्पत्तियां		5,00,000	2,00,000
	(ब) विनियोग		1,20,000	

<u>विस्तृत उदाहरण :</u>

उदाहरण 11.7

सूत्रधारी कम्पनी ए0 लि0 और इसकी सहायक कम्पनी बी0 लि0 की निम्नांकित आर्थिक चिट्ठों से 31.3.2012 को एकीकृत आर्थिक चिट्ठा बनाइये।

31 मार्च 2012 को ए0 लि0 लिमिटेड तथा बी0 लि0 लिमिटेड का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	ए0लि0 रू0	बी0 लि0 रू0	सम्पत्तियां	ए0 लि0 रू0	बी0 लि0 रू0
समता अंश पूंजी 100 रू0 प्रति अंश की दर से	12,00,000	2,00,000	मशीनरी	6,00,000	1,80,000
संचय	4,00,000	1,50,000	फर्नीचर	3,00,000	34,000
लाभ एवं हानि खाता	2,00,000	50,000	अन्य गैर चालू सम्पत्तियां	8,80,000	3,00,000
लेनदार	3,00,000	1,14,000	विनियोग : बी0 लि0 के अंश 1600 अंश 200रू0 /अंश की दर से	3,20,000	
योग	**21,00,000**	**5,14,000**		**21,00,000**	**5,14,000**

<u>अतिरिक्त सूचनाऐं :</u>

1. बी0 लि0 का संचय एवं लाभ 1.4.2011 को जब ए0 लि0 ने बी0 लि0 में 80% भाग अधिग्रहीत किया, क्रमशः 50,000 रू0 एवं रू0 30,000 था।

2. बी0 लि0 में अंशों के अधिग्रहण की तिथि को मशीनरी का मूल्य रू0 1,00,000 से बढ़ाया गया और फर्नीचर का मूल्य रू0 10,000 से ह्रासित किया गया। ह्रास की दर मशीनरी पर 10% तथा फर्नीचर पर 15% थी।

उत्तर :

31 मार्च 2012 को A लि0 और उसकी सहायकB लि0 का एकीकृत आर्थिक चिट्ठा :

दायित्व	धनराशि रू0	सम्पत्ति	धनराशि रू0
		ख्याति	24,000
समता अंश पूंजी	12,00,000	मशीनरी	8,70,000
संचय	4,80,000	फर्नीचर	3,25,500
लाभ	2,09,200	अन्य गैर चालू सम्पत्तियां	11,80,000
लेनदार	4,14,000		
अल्पमत हित	96,300		
	23,99,500		**23,99,500**

क्रियात्मक टिप्पणियां :

1. **बी0 लि0 का अधिग्रहण से पूर्व के लाभ एवं संचय**

	रू0
लाभ	30,000
संचय	50,000
योग	80,000
अधिग्रहण से पूर्व के लाभों में ए0 लि0 का अंश (80%)	64,000
अल्पमत हित का अंश (20%)	16,000

2. **बी0 लि0 की सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ**

मशीनरी	1,00,000
फर्नीचर (ह्रास)	10,000
पुनर्मूल्यांकन पर शुद्ध लाभ	90,000
पुनर्मूल्यांकन लाभों में से ए0लि0 का अंश (80%)	72,000
अल्पमत हित का अंश (20%)	18,000

3. **बी0 लि0 का अधिग्रहण के पश्चात् का लाभ**

चालू अर्थिक चिट्ठे के अनुसार संचयी लाभ	50,000
घटाया : गत वर्ष के आर्थिक चिट्ठे के अनुसार लाभ	30,000
चालू वर्ष का लाभ	20,000
ह्रास के लिये समायोजन	
जोड़ा : फर्नीचर पर लगाया गया अधिक ह्रास (15%रू0 10,000 का)	1,500
घटाया : मशीनरी पर लगाया गया कम ह्रास	10,000
ह्रास के समायोजन के पश्चात् चालू वर्ष का लाभ	**11,500**

बी0 लि0 अधिग्रहण के पश्चात् के लाभों में ए0 लि0 का अंश(80%) 9,200

अधिग्रहण के पश्चात् के लाभों में अल्पमत अंश (20%) 2,300

4. <u>बी0 लि0 के अधिग्रहण के पश्चात् के संचय</u>

चालू अर्थिक चिट्ठे के अनुसार संचय 1,50,000

घटाया : गत वर्ष के आर्थिक चिट्ठे के अनुसार संचय 50,000

अधिग्रहण के पश्चात् 1,00,000 अधिग्रहण

के पश्चात् के लाभों में ए0 लि0 का अंश(80%) 80,000

अधिग्रहण के पश्चात् के लाभों में अल्पमत अंश (20%) 20,000

5. <u>अल्पमत हित :</u> रु0

अल्पमत के द्वारा धारित चुकता अंशों का मूल्य 40,000

अल्पमत अंश–अधिग्रहण से पूर्व के लाभों एवं संचय में (क्रियात्मक टिप्पणी 1) 16000

सम्पत्तियों के पुर्नमूल्यांकन में अल्पमत हित (20प्रतिशत)(क्रियात्मक टिप्पणी 2) 18,000 . अधिग्रहण

के पश्चात के लाभों में अल्पमत हित (20प्रतिशत)(क्रियात्मक टिप्पणी 3) 2,300

अधिग्रहण के पश्चात के संचयों में अल्पमत हित (20प्रतिशत)(क्रियात्मक टिप्पणी 4) 20,000

योग 96,300

6. **ख्याति की गणना**

ए.लिमिटेड द्वारा धारित 1600 अंशों का 10 रु. प्रति अंश की दर से चुकता मूल्य 1,60,000

पूर्व अधिग्रहण लाभों एवं संचय में अंश 64,000

पूर्नमूल्यांकन संचय में अंश 72,000

अधिग्रहण तिथि को अंशों का आन्तरिक मूल्य 2,96,000

अंश अधिग्रहण हेतु भुगतान किया गया मूल्य 3,20,000

ख्याति 24,000

उदाहरण 11.8

ए. लिमिटेड तथा इसकी सहायक कम्पनी बी. लिमिटेड की निम्नांकित सूचनाओं से आपको एकीकृत लाभ एवं हानि खाता तैयार करना है :

विवरण	ए. लिमिटेड	बी लिमिटेड	विवरण	ए. लिमिटेड	बी. लिमिटेड
प्रारम्भिक रहतिया को क्रय को सकल लाभ को	21,00,000 18,00,000 42,00,000	2,00,000 9,00,000 11,00,000	विक्रय से अंतिम रहतिया से	50,00,000 31,00,000	10,00,000 12,00,000
योग	**81,00,000**	**22,00,00**	**योग**	**81,00,000**	**22,00,000**
मजदूरी एवं बेतन को प्रशासनिक व्यय को विक्रय एवं वितरण व्यय को ह्रास को शुद्ध लाभ	4,00,000 3,50,000 1,50,000 80,000 32,20,000	2,00,000 1,00,000 80,000 20,000 7,00,000	सकल लाभ से	42,00,000	11,00,000

योग	42,00,000	11,00,000	योग	42,00,000	11,00,000

31–03–2012 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये ए.लिमिटेड एवं इसकी सहायक कम्पनी बी. लिमिटेड का लाभ और हानि खाता

अतिरिक्त सूचनायें :

1. ए. लिमिटेड ने बी. लिमिटेड को रु. 5 लाख के मूल्य का माल विक्रय पर 20 प्रतिशत लाभ पर बेचा । बी. लि. के रहतिए में ए. लिमिटेड से क्रय किया हुआ रु. एक लाख का माल जो उसके पास बिना विक्रय के पडा है, सम्मिलित है।
2. बी. लि. के प्रशासनिक व्ययों में ए. लि. को सलाहकारी सेवाओं हेतु भुगतान किये गये रु. 50,000 सम्मिलित हैं। विक्रय एवं वितरण व्ययों में बी. लि. को एजेन्सी कमीशन के रुप में भुगतान किए गए रु. 10,000 सम्मिलित हैं।
3. ए. लि. का बी. लि. में 80 प्रतिशत अंश धारित है।

उत्तर :

31–03–2012 को एकीकृत लाभ एवं हानि खाता

विवरण	ए. लिमिटेड धनराशि		विवरण	ए. लिमिटेड धनराशि
प्रारम्भिक रहतिया को क्रय को सकल लाभ को	23,00,000 22,00,000 52,20,000		विक्रय से अंतिम रहतिया से	54,40,000 42,80,000
योग	**97,20,000**		**योग**	**97,20,000**
मजदूरी एवं बेतन को प्रशासनिक व्ययों को विक्रय एवं वितरण व्यय को ह्रास को शुद्ध लाभ	6,00,000 4,00,000 2,20,000 100,000 39,00,000		सकल लाभ से	52,20,000
योग	**52,20,000**		**योग**	**52,20,000**

क्रियात्मक टिप्पणियाँ :

1.	विक्रय से आय की गणना	रु.
	ए. लि.	50,00,000
	बी. लि.	10,00,000
	योग	**60,00,000**
	घटाया : अर्न्त कम्पनी विक्रय एवं अन्य आय	
	अर्न्त कम्पनी विक्रय	5,00,000

	ए. लि. द्वारा बी, लि, से प्राप्त सलाहकारी शुल्क		50,000
	एजेन्सी कमीशन (बी.लि. द्वारा ए. लि. से प्राप्त)		10,000
	एकीकृत लाभ और हानि खाते हेतु विक्रय व अन्य आय की राशि		**54,40,000**
2.	**अन्तिम रहतिये में सम्मिलित अनर्जित लाभ :**		
	बी. लि. के पास रखे हुए बिना विक्रय के माल जो ए. लि. से क्रय किया गया, का मूल्य		1,00,000
	इस बिना विक्रय हुए माल मे सम्मिलित अनर्जित लाभ (1,00,000 ×20 / 100)		20,000
3.	**अंतिम रहतिए का मूल्य जिसे एकीकृत लाभ हानि खाते में अभिलिखित किया गया है:**		
	ए. लि.	31,00,000	
	बी. लि.	12,00,000	
	घटाया : अनर्जित लाभ	20,000	
		42,80,000	
4.	**प्रशासनिक व्यय**		
	ए. लि.		3,50,000
	बी. लि.		1,00,000
	घटाया : सलाहकारी शुल्क बी. द्वारा ए. लि. को		50,000
एकीकृत लाभ हानि खाते हेतु योग			**4,00,000**
5.	**विक्रय एवं वितरण व्यय** :		
	ए. लि.		1,50,000
	बी. लि.		80,000
	घटाया : एजेन्सी शुल्क ए. से बी. लि. को		10,000
	एकीकृत लाभ –हानि खाते हेतु योग		**2,20,000**

11.6 सारांश

अन्य कम्पनियों में 50 प्रतिशत से अधिक अंश पूँजी धारित करने वाली कम्पनियाँ सूत्रधारी कम्पनियाँ कही जाती हैं। अपने उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि के लिये सूत्रधारी कम्पनियों को एकीकृत वित्तीय विवरण तैयार एवं प्रस्तुत करना आवश्यक है। धारा 212 एवं लेखांकन मानक 21 एकीकृत वित्तीय विवरणों को बनाने एवं प्रस्तुत करने की संरचना प्रदान करते हैं। वित्तीय विवरणों को तैयार करने के लिए सूत्रधारी कम्पनियों को चरणबद्ध कार्य पद्धति का अनुपालन करना होता है। एकीकृत वित्तीय विवरण बनाते समय लेखांकन में ध्यान दिये जाने वाले मुख्य मुद्दों मे ख्याति अथवा पूँजी संचय, जैसी भी स्थिति हो, का निर्धारण, अल्पमत हित की गणना, अर्न्तसमूह लेन–देनों का निस्तारण , लेखांकन नीतियों एवं प्रतिवेदन तिथियों में अन्तर का समायोजन सम्मिलित है।

11.7 शब्दावली

फीफो (FIFO): पहले आना, पहले जाना,

ए0एस021: लेखांकन मानक 21,

आई0सी0एआई0: भारतीय चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स संस्थान

समूहः सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनियों को एक साथ 'समूह' के नाम से जाना जाता है।

अनियन्त्रणकारी हित (अल्पसंख्यक हित) : नियंत्रणकारी हित सूत्रधारी (पैतृक) कम्पनी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में सम्बन्धित न की जा सकने वाली सहायक कम्पनियों की समता (पूँजी) है।

सूत्रधारी कम्पनीः सूत्रधारी कम्पनी वह संस्था है जिसकी एक या अधिक सहायक कम्पनियाँ है।

सहायक कम्पनीः एक सहायक कम्पनी, किसी असमामेलित संख्या जैसे साझेदारी फर्म को सम्मिलित करते हुए, वह संस्था है जिसे अन्य संस्था के द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

11.8 बोध प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(I) कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा .... सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनियों के वित्तीय विवरणों के एकीकरण से संबन्ध रखती है।

(II) धारा .... की उपधारा .... उन महत्वपूर्ण परिवंर्तनों के प्रकटीकरण को आवश्यक करती है जो सहायक कम्पनी के वित्तीय वर्ष की समाप्ति या वित्तीय वर्षों में से अन्तिम वित्तीय वर्ष की समाप्ति और सूत्रधारी कम्पनी के वित्तीय वर्ष की समाप्ति के बीच निम्नांकित के सम्बन्ध में उत्पन्न हुए हों (1) सहायक कम्पनी की स्थायी सम्पत्तियाँ (2) इसके विनियोग (3) इसके द्वारा ऋण दी गयी राशि (4) इसके द्वारा ऋण ली गयी राशि , चालू दायित्वों के भुगतान के अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों हेतु।

(III) सहायक कम्पनी में गैर नियन्त्रणीय हित को जाना जाता है................................ ....।

(IV) एक या अधिक कम्पनियों के मामलों के नियंत्रण की शक्ति धारण करने वाली कम्पनी को .... के नाम से जाना जाता है।

(V) अन्य कम्पनियों के मामलों के प्रबन्ध पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिये पैतृक कम्पनी को ....से अधिक मताधिकार प्राप्त होना आवश्यक है।

(ब) सत्य / असत्य बताइए :

(I) अल्पमत हित को एकीकृत आर्थिक चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।

(II) सूत्रधारी कम्पनी और सहायक कम्पनी की प्रतिवेदन तिथियों के मध्य अन्तर छः माह से अधिक अनुमन्य किया जाता है।

(III) लेखांकन मानक 16 एकीकृत वित्तीय विवरणों को बताने से संबन्ध रखते हैं।

(IV) सहायक कम्पनी मे अधिग्रहीत सम्पत्तियों के मूल्य का सूत्रधारी कम्पनी में विनियोजित धनराशि पर आधिक्य को ख्याति कहा जाता है।

(V) अल्पमत हित को अधिग्रहण के पश्चात के लाभों पर कोई अधिकार नहीं होता है।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) (I) 212 (II) धारा 212 एवं उपधारा 5 (III) अल्पमत हित (IV) सूत्रधारी कम्पनी (V) 50 प्रतिशत

(ब)) (I) असत्य (II) असत्य (III) असत्य (IV) असत्य (V) असत्य

11.10 स्वपरख प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनियों के वित्तीय विवरणों के प्रस्तुतीकरण के सम्बन्ध में कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों को विस्तार से समझाइए।
2. लेखांकन मानक 21 में प्रदत्त एकीकृत वित्तीय विवरणों को बताने एवं प्रस्तुतीकरण करने की संरचना को समझाइए।
3. एकीकृत वित्तीय विवरणों के लाभों पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. निम्नांकित की गणना की प्रक्रिया पर टिप्पणी लिखिए –
   (अ) नियन्त्रण की लागत
   (ब) अल्पमत हित
   (स) रहतिए के अन्र्त कम्पनी विक्रय पर अनर्जित लाभ

11.11 सन्दर्भ पुस्तकें

1. राबर्ट एन0 एन्थोनी, ग्लीवॉन ए0 वैल्स एण्ड जेम्स एस0 रीस, फण्डामैंटल्स ऑफ मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, हार्वर्ड बिजनैस स्कूल प्रैस।
2. ग्राहम मॉट, मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग फॉर डिसीजन मेकर्स, पिटमैन।
3. रवि एम0 किशोर, एडवांस्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, टैक्समैन एलाइड सर्विसेज लि0।
4. के0 एस0 शास्त्री एण्ड नन्द धमीजा, द प्रैक्टिस ऑफ मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, व्हीलर पब्लिशिंग।
5. मधु विज, मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, एक्सैल बुक्स।
6. एम0 ई0 तुकाराम राव, कास्ट एझड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, न्यू एज इण्टरनेशनल (प्रा0) लि0।
7. एम0 ईज्जामेल एण्ड एच0 हार्ट, एडवांस्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, एन आर्गनाइजेशनल इमफैसिस, कैसेल।
8. विलियमसन इंकेन, कॉस्ट एण्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, प्रोन्टिस हॉल।

इकाई – 12 प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली एवं उत्तरदायित्व लेखांकन

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली

12.2.1 अर्थ

12.2.2 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के तत्व

12.2.3 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली का महत्व

12.2.4 एक प्रभावी नियंत्रण प्रणाली की विशेषताऐं

12.2.5 स्पष्ट उद्देश्य

12.2.6 भविष्योन्मुखी

12.2.7 न्यूनतम नियंत्रण हानियां

12.3 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के प्रकार

12.4 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के संघटक

12.4.1 औपचारिक नियंत्रण प्रक्रिया

12.4.2 अनौपचारिक नियंत्रण प्रक्रिया

12.5 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के दृष्टिकोण

12.5.1 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के प्रति साइबरनेटिक दृष्टिकोण

12.5.2 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के प्रति सांयोगिक दृष्टिकोण

12.5.3 व्यूहनीति एवं नियंत्रण प्रणालियां

12.6 एम0सी0एस0 के प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारक

12.7 उत्तरदायित्व लेखांकन

12.7.1 उत्तरदायित्व केन्द्रों के प्रकार

12.7.2 उत्तरदायित्व लेखांकन के उद्देश्य

12.7.3 उत्तरदायित्व लेखांकन की प्रक्रिया

12.7.4 उत्तरदायित्व लेखांकन का महत्व

12.8 हस्तांतरण कीमत निर्धारण

12.9 सारांश

12.10 शब्दावली

12.11 बोध प्रश्न

12.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.13 स्वपरख प्रश्न

12.14 संदर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के अर्थ एवं विशेषताओं को समझ सकें।
- प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के लाभों को समझ सकें ।

- प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के निरूपण एवं क्रियान्वयन में निहित मुद्दों की व्याख्या कर सकें।
- उत्तरदायित्व लेखांकन के अर्थ एवं प्रकारों को समझ सकें ।
- प्रबंध नियंत्रण प्रणाली एवं उत्तरदायित्व लेखांकन के मध्य संबंध स्थापित कर सकें।

12.1 प्रस्तावना

प्रबंध नियंत्रण प्रणाली एवं उत्तरदायित्व लेखांकन वह प्रणाली है, जो व्यावसायिक उपक्रमों के स्वामियों को अपने अधीनस्थों को संगठन के हित में कार्य करने हेतु प्रभावित करती है। समय बीतने के साथ–साथ तथा उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के प्रारम्भ होने और व्यवसायिक उपक्रमों के प्रारूपों में परिवर्तन जैसे संयुक्त प्रमण्डल कम्पनियां, बहुराष्ट्रीय निगम इत्यादि के कारणों से भी व्यावसायिक संगठनों के प्रबंध करने की शैलियों में भी परिवर्तन उत्पन्न हुआ है। आजकल एक व्यावसायिक संगठन एक बडे स्तर पर परिचालन करता है। इस कारण यह अत्यधिक कठिन या लगभग असम्भव हो गया है कि व्यावसायिक प्रबंधक व्यवसाय के दिन प्रतिदिन के कार्यों का प्रबंधन कर सकें और साथ ही दैनिक रूप में सम्पर्क में रह सकें। संगठन के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिये उन्हें अपने अधीनस्थों को नीचे की ओर निर्णयन शक्ति का प्रत्यायोजन करना आवश्यक हो जाता है। आजकल के इस व्यावसायिक प्रबंध के युग में जहां प्रबंध का स्वामित्व से पृथक्करण हो गया है, प्रबंध नियंत्रण प्रणाली एवं उत्तरदायित्व लेखांकन ऐसी तकनीकें हैं, जो अधीनस्थों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने तथा संगठनात्मक उद्देश्यों के अनुरूप अधीनस्थों के प्रदर्शन को जोड़ने में प्रबंध की सहायता करता है। साथ ही ऐसी भी स्थितियां हैं, जबकि उपक्रम को प्रभावी नियंत्रण प्रणाली के अभाव में करोड़ों रूपयों की हानियां उठानी पडी हैं। इस इकाई में प्रबंध नियंत्रण प्रणाली एवं उत्तरदायित्व लेखांकन के अर्थ, विशेषताओं, उपयोगिता, संघटकों एवं प्रकारों आदि की व्याख्या का प्रयास किया गया है।

12.2 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली

12.2.1 अर्थ

प्रबंध नियंत्रण प्रणाली वह तकनीक है जो संगठनात्मक क्रियाओं को संगठनात्मक उद्देश्यों की ओर गतिमान करने में प्रबंध की सहायता करती है। यह तकनीक संगठन के नियंत्रण में विद्यमान मानवीय एवं अन्य संसाधनों की सूचना को इन संसाधनों का प्रभावशाली एवं कार्यक्षमतापूर्ण उपयोग करने के उद्देश्य से संकलन एवं उपयोग करती है। प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली औपचारिक अथवा अनौपचारिक हो सकती है। राबर्ट ए0 एन्थोनी के शब्दों में–"प्रबंध नियंत्रण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्रबंधक संगठन के अन्य सदस्यों को संगठनात्मक व्यूहनीतियों के क्रियान्वयन हेतु प्रभावित करते हैं। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली प्रबंध के लिये संगठन को उसके व्यूहनीतिक उद्देश्यों एवं तुलनात्मक लाभ की ओर गतिमान करने में उपकरण हैं। प्रबंधकीय

नियंत्रण अनेकों उपकरणों में से एक हैं जो प्रबंधक वांछित व्यूहनीतियों के क्रियान्वयन में उपयोग करते हैं। किन्तु व्यूहनीतियों का क्रियान्वयन, प्रबंध नियंत्रण, संगठनात्मक संरचना, मानवीय संसाधनों के प्रबंध तथा संस्कृति के माध्यम से किया जता है।" एन्थोनी एवं यंग के अनुसार, " प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली एक ब्लैक बॉक्स है। ब्लैक बॉक्स शब्द को एक ऐसे कार्य के वर्णन में प्रयोग किया जाता है, जिसकी प्रकृति का अवलोकन नहीं हो सकता है। एम0सी0एस0 प्रबंधकों के व्यवहार से संबंध रखता है और इन व्यवहारों को समीकरणों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।"

हार्नग्रेन ने एम0सी0एस0 को निम्नवत् परिभाषित किया है–"प्रबंध नियंत्रण प्रणाली कर्मचारियों के व्यवहार को अभिप्रेरित करने तथा प्रदर्शन का मूल्यांकन करने में सूचना के एकत्रीकरण एवं उपयोग की एक एकीकृत तकनीक है।"

साइमन्स के अनुसार, "प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली संगठनात्मक क्रियाओं की प्रकृति के रखरखाव या इसे रूपांतरित करने हेतु प्रबंधकों के द्वारा उपयोग किये जाने वाले औपचारिक सूचना आधारित नैत्यिक कार्य एवं कार्य पद्धतियां हैं।"

मैक्यारिलो के शब्दों में– "प्रबंध नियंत्रण का संबंध समन्वय, संसाधन आबंटन, अभिप्रेरण, एवं प्रदर्शन के मापन से है। प्रबंध नियंत्रण का व्यवहार और प्रबंध नियंत्रण प्रणाली का निरूपण अनेक शैक्षणिक अनुशासनों से लिया गया है। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली में विस्तृत मापन समाहित हैं और इसलिए यह प्रबंध लेखांकन से संबंधित है और इसे प्रबंध लेखांकन से विशेष रूप में योगदान लेने की आवश्यकता पडती है। दूसरे, इसमें संसाधन आबंटन निर्णय करने पडते हैं। और इस कारण इसे अर्थशास्त्र और विशेष रूप से प्रबंधकीय अर्थशास्त्र से योगदान लेने की आवश्यकता होती है। तीसरे, इसमें संप्रेषण और अभिप्रेरण भी सम्मिलित है, जिसका अर्थ यह है कि यह मनोविज्ञान से भी संबंधित है और इसे मनोविज्ञान और विशेष रूप से संगठनात्मक व्यवहार से भी योगदान लेना चाहिये।"

इस प्रकार, प्रबंध नियंत्रण प्रणाली को औपचारिक और अनौपचारिक कार्य पद्धतियों के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो प्रबंध को प्राकृतिक एवं मानव निर्मित संसाधनों के प्रभावशाली एवं कार्यक्षमतापूर्ण उपयोग के माध्यम से संगठनात्मक प्रयत्नों को संगठनात्मक लक्ष्यों की ओर गतिमान करने में सहायता करता है।

12.2.2 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के तत्व

1. **पहचानकर्ता** : इसे सेंसर भी कहा जाता है। सेंसर का प्रमुख कार्य संगठनात्मक क्रियाओं के विषय में सूचनाओं का संकलन करना है। यह प्रबंध को परिस्थितियों के विषय में सूचना प्रदान करता है।
2. **मूल्यांकनकर्ता** :मूल्यांकनकर्ता का कार्य प्रमापों एवं बैंचमार्कों के सापेक्ष उत्तरदायित्व केन्द्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना है। इस तुलना से निर्धारित प्रमापों से वास्तविक परिणामों के अनुकूल एवं प्रतिकूल विचलनों को

ज्ञात करने में सहायता मिलती है। साधारण शब्दों में, यह भी कहा जा सकता है कि मूल्यांकनकर्ता सुधार के क्षेत्रों को खोजने में सहायता करते है।

3. **प्रभावकर्ता** :प्रभावकर्ता का मुख्य कार्य वास्तविक एवं प्रत्याशित परिणामों के बीच के अंतराल को कम करना है। इस स्तर पर वास्तविक परिणामों के निर्धारित प्रमापों के सापेक्ष विचलनों के कारणों को ज्ञात करने की आवश्यकता होती है। विचलन के कारण व्यवसायिक उपक्रम के नियंत्रण के परे भी हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में प्रमापों को संशोधित करना पडता है। यदि विचलन लापरवाही के कारण हुए हैं तो ऐसे प्रयास सुनिश्चित किये जाने चाहिये, ताकि ऐसी त्रुटियों को भविष्य में दोहराने से रोका जा सके।
4. **सम्प्रेषण प्रणाली** :सम्प्रेषण प्रणाली की भूमिका, पहचानकर्ता, मूल्यांकनकर्ता एवं प्रभावकर्ता के मध्य एक सूत्रधार की तरह कार्य करने की होती है।

12.2.3 प्रबंध नियंत्रण प्रणाली का महत्व :

1. **संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रबंध की सहायता करती है** :प्रबंध नियंत्रण प्रणाली संगठन को इसके लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करती है। यह संगठन की क्रियाओं की सतत् रूप में जांच करती है और वास्तविक क्रियाओं के विचलन की दशा में जिससे संगठन अपने ध्येय से भटक जाता है, प्रबंध का मार्गदर्शन करती है।
2. **दीर्घकालीन नियोजन को सही मार्ग पर रखने में सहायता करती है :** दीर्घकालीन नियोजन के अनुरूप संगठन को अपनी क्रियाओं को सही परिपथ पर बनाये रखने में प्रबंध नियंत्रण प्रणाली संगठन की सहायता करती है। भूतकाल में यह देखा गया है कि लम्बी अवधि के कारण संगठन के अपने दीर्घकालीन लक्ष्यों से भटकने की अत्यधिक संभावनाऐं होती हैं। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली प्रबंध को नियोजित लक्ष्यों से विचलनों के विषय में लगातार संदेश देती रहती है।
3. **अधिकार सत्ता के प्रत्यायोजन में सहायता करती है** :वर्तमान युग में जबकि व्यावसायिक संगठन बृहद् पैमाने पर कार्य कर रहे हैं और उन्होंने बहुराष्ट्रीय एवं परराष्ट्रीय निगमों का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। संगठन के सुचारू संचालन के लिये संगठनात्मक प्रकार्यों का विकेन्द्रीयकरण अपरिहार्य है। किन्तु साथ ही प्रबंध को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि नीचे की ओर अधिकार सत्ता अथवा प्राधिकार का प्रत्यायोजन अधीनस्थों के द्वारा उचित रूप में उपयोग किया जाये। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली प्रबंध को उस कार्य क्षमता एवं गंभीरता के मूल्यांकन में सहायता करती है जिसे अधीनस्थों के द्वारा उन्हें सौपे गये प्राधिकारों की शक्ति में उपयोग किया गया है। चूंकि प्रत्यायोजित प्राधिकार के सही उपयोग को सुनिश्चित करने की प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली विद्यमान होती है, फलस्वरूप यह प्रबंध को प्राधिकार के प्रत्यायोजन में सहायता प्रदान करती है।
4. **अपवादों के द्वारा प्रबंध की अवधारणा पर कार्यकरण के द्वारा प्रदर्शन में सुधार में प्रबंध की सहायता करती है** :प्रबंध को व्यवसाय के **प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यांकन**

एवं कार्य के द्वारा अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिये बल्कि अपना ध्यान क्रान्तिक क्षेत्रों की ओर केन्द्रित करना चाहिये। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली क्रान्तिक क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता प्रदान करती है। जिसमें प्रबंध के द्वारा विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है और इस प्रकार यह अपवादजनक क्षेत्रों में अपना ध्यान देकर उपक्रम का प्रबंध करने के दृष्टिकोण का अनुसरण करने में प्रबंध की सहायता करती हैं।

5. **समन्वय का प्रवर्तन करना** :संगठन विभिन्न विभागों में विभक्त होता है तथा प्रत्येक विभाग को विभिन्न उत्तरदायित्व आबंटित किये जाते है। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली संगठन के विभिन्न विभागों के कार्यों एवं संगठनात्मक लक्ष्यों के मध्य सामन्जस्य स्थापित करती है।

6. **प्रभावोत्पादकता एवं कार्य क्षमता में सुधार** : प्रभावोत्पादकता का आशय है– वस्तुओं को सही करना एवं कार्यक्षमता का आशय है– एक दिये हुए आगत से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना अथवा एक दिये हुए उत्पादन में न्यूनतम आगत या संसाधनों का प्रयोग करना। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली संगठनात्मक कियाओं एवं लक्ष्यों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना सुनिश्चित करके अधिकतम प्रभावोत्पादकता को सुनिश्चित करती है। इसके अतिरिक्त परिणामों का विश्लेषण करके यह अधिकतम कार्यक्षमता को प्राप्त करने में सहायता करती है। प्रोत्साहन एवं दण्डों को प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के अंतर्गत अच्छा प्रदर्शन करने वालों के अभिप्रेरण एवं बुरा प्रदर्शन करने वालों को दण्डित करने के लिये अनुकूल एवं प्रतिकूल विचलनों से जोडा जा सकता है।

12.2.4 एक आदर्श एवं प्रभावशाली प्रबंध नियंत्रण प्रणाली की विशेषताऐं:

एक प्रभावशाली प्रबंध नियंत्रण प्रणाली अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा संगठन को सफल बनाने में बहुत दूर तक जाती है। एक प्रभावशाली नियंत्रण प्रणाली का यहां पर आशय यह है कि संगठनात्मक उद्देश्यों को बहुत स्पष्ट रूप में बिना किसी भ्रम के कर्मचारियों को सम्प्रेषित किया गया है और कर्मचारियों की सहायता के लिये एक प्रणाली स्थापित की गयी है जिससे वे यह मूल्यांकन कर सकें कि क्या उनका प्रदर्शन सही दिशा में है या नहीं और कार्य को अच्छी प्रकार से सम्पन्न करने में उनमें आत्मविश्वास का प्रवर्तन हो रहा है। एक प्रभावशाली प्रबंध नियंत्रण प्रणाली महत्वपूर्ण संगठनात्मक संसाधनों जैसे रोकड़, रहतिया, प्राप्य विपत्र, उत्पादन प्रणाली और मानवीय संसाधनों आदि के प्रभावशाली प्रबंध के लिये आवश्यक है। एक प्रभावशाली प्रबंध नियंत्रण प्रणाली की निम्नांकित विशेषताऐं हैं :

12.2.5 स्पष्ट उद्देश्य:

एक सफल प्रबंध नियंत्रण प्रणाली की आधारशिला उस स्पष्टता पर निर्भर करती है, जिसके द्वारा संगठन के उद्देश्य निरूपित किये गये हैं। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के निरूपण एवं सफलतापूर्वक संचालन हेतु संगठनात्मक उद्देश्यों की स्पष्टता अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सभी संगठनात्मक प्रभागों एवं व्यक्तियों को संगठन के उद्देश्यों के प्रकाश में अपनी भूमिकाओं के विषय में स्पष्टता होनी चाहिये। एक अच्छा नियंत्रण तब तक स्थापित नहीं किया जा सकता है, जब तक एक विशिष्ट कार्य के

अनेक उद्देश्यों को पृथक से ध्यान में नहीं रखा जाता है। उदाहरणार्थ उत्पादन विभाग को स्पष्ट रूप से संगठन की उत्पादन नीति एवं गुणवत्ता नियंत्रण नीति के विषय में जानकारी होनी चाहिये। जैसे रैमण्ड कम्पनी जो वस्त्र उद्योग में कार्यरत है, ग्राहकों के प्रीमियम वर्ग के वस्त्रों की आवश्यकताओं को बनााने का उद्देश्य निर्धारित करती है। उत्पादन विभाग को गुणवत्तापूर्ण प्रीमियम वस्त्र उत्पादन के लक्ष्य पर ही ध्यान देना चाहिये। एक अमेरिकी फार्मा कम्पनी को अपनी दवाओं के लिये संवेष्ठन सामग्री निर्मित करने का प्रस्ताव प्राप्तहुआ है। इस प्रस्ताव को इस कारण अस्वीकृत कर दिया गया क्योकि यह समाज की दवाओं की आवश्यकता को पूर्ण करने के कम्पनी के अद्देश्य के अनुरूप नहीं था।

12.2.6 भविष्योन्मुखी :

प्रबंध नियंत्रण प्रणाली अपने भावी लक्ष्यों को प्राप्त करने में संगठन की सहायता के लिये निर्मित की जाती है। इसलिये प्रबंध नियंत्रण प्रणाली को भविष्य पर ध्यान देना चाहिये और इसे भावी संगठनात्मक परिदृश्य एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निरूपित किया जाना चाहिये।

12.2.7 न्यूनतम नियंत्रण हानियां :

प्रबंध नियंत्रण प्रणाली को सही रूप में स्थापित करने में लागत निहित होती है। नियंत्रण प्रणाली जितनी गहन होगी, उसे स्थापित करने एवं रखरखाव की लागतें भी उतनी ही अधिक होंगी। नियंत्रण प्रणाली को निरूपित करते समय समुचित लागत लाभ विश्लेषण कर लेना चाहिये, जब लाभ लागतों से अधिक हों। किन्तु यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाना चाहिये कि हानि न्यूनतम हो और वह भी उन क्षेत्रों में जो संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में उतनी महत्वपूर्ण नहीं।

12.3 प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के प्रकार

एक संगठन में प्रयुक्त नियंत्रण प्रणाली को दो क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है अर्थात औपचारिक प्रबंध नियंत्रण प्रणालियां एवं अनौपचारिक प्रबंध नियंत्रण प्रणालियां । औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रबंध नियंत्रण प्रणालियों का विस्तृत विवरण निम्नवत् है :

औपचारिक नियंत्रण प्रणाली : औपचारिक नियंत्रण प्रणाली नियंत्रण की वह प्रणाली है जो संगठन के प्रबंध के द्वारा स्थापित की जाती है। यह लिखित होती है। इसे प्रबंध का पूर्ण समर्थन प्राप्त होता है और यह संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने में कर्मचारियों के व्यवहार को प्रभावित करती है। औपचारिक नियंत्रण प्रणालियों का उल्लंघन करने पर उत्तरदायी कर्मचारियों को प्रबंध का कोपभाजन बनना पडता है। औपचारिक नियंत्रण के उदाहरण बजट, प्रमाप एवं नीतियां आदि हैं। प्रबंधकीय हस्तक्षेप के आधार पर औपचारिक नियंत्रणों को आगे तीन प्रकारों में उप–विभाजित किया जा सकता है, जिसका विवरण निम्नवत् है :

आगत नियंत्रणः इन नियंत्रणों को निवारक नियंत्रण प्रणालियां भी कहा जा सकता है क्योंकि यह नियोजित क्रिया के कियान्वयन से पूर्व हीकम्पनी द्वारा उठाए गये कदम होते हैं। इन नियंत्रणों का उपयोग कम्पनी के द्वारा कार्य की सही प्रक्रिया को चयनित करने में किया जाता है। आगत नियंत्रण के उदाहरणों में चयन मापदण्ड का निरूपण,

भर्ती प्रकिया, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन, मानव संसाधन आवंटन अर्थात् सही कार्य पर सही व्यक्ति की तैनाती, व्यूहनीतिक योजनाओं की स्थापना आदि सम्मिलित है।

प्रकिया नियंत्रण : प्रकिया नियंत्रण का संबंध विचलनों को ठीक करना है। इन नियंत्रणों में निश्चित मुख्य चरों की पहचान, विचलनों का मूल्यांकन, यदि कोई हो, जो वास्तविक परिणामों एवं प्रत्याशित परिणामों के बीच है, और इन चरों के प्रसंग में जब भी निर्धारित मानकों से कोई विचलन हो, को ठीक करने के लिये सुधारात्मक कदम उठाना सम्मिलित है। प्रकिया नियंत्रण प्रबंधकीय हस्तक्षेप है जो कि तब घटित होती है जब रूपांतरण की प्रकिया गतिमान हो और पूरी नहीं हो पायी हो तथा उत्पादन अब तक तैयार नहीं हो। **प्रकिया नियंत्रण कियाओं पर लागू होते हैं, अंतिम परिणामों पर नहीं।**

उत्पादन नियंत्रण प्रणाली :प्रकिया नियंत्रण जिन्हें रूपांतरण प्रकिया के गतिमान होने की स्थिति में प्रयोग किया जाता है, के विपरीत परिणामों का मूल्यांकन करने के लिये प्रयुक्त किया जाता है। परिणाम नियंत्रण में वास्तविक परिणामों की प्रत्याशित परिणामों से तुलना की जाती है। इस प्रकार के नियंत्रणें का प्रयोग तब किया जाता है, जबकि प्रबंध यह अनुभव करता है कि कर्मचारियों में वांछित कियाओं को प्रभावपूर्ण एवं कार्यक्षमता ढंग से सम्पन्न करने के लिये आवश्यक कौशल, ज्ञान एवं अभिवृत्ति है। इसके अतिरिक्त ऐसे नियंत्रण तब लागू होते हैं, जब परिणाम का मापन सरल एवं कम व्यय साध्य हो और जब अनिश्चितता के तत्व सीमित हों।

अनौपचारिक नियंत्रण प्रणाली : अनौपचारिक नियंत्रण कार्मिकों के स्तर पर उत्पन्न होते हैं। ये मूलभूत रूप में कर्मचारियों के द्वारा प्रारम्भ संरचनाऐं होती हैं, जो व्यवसायिक इकाइयों में व्यक्तियों अथवा समूहों को प्रभावित करती है। इन्हें लिखित रूप में व्यक्त नहीं किया जाता है। अनौपचारिक प्रणालियों को तीन व्यापक वर्गों में निम्नांकित विवरणानुसार वर्गीकृत किया गया है :

आत्म नियंत्रण :इन नियंत्रणों को कर्मचारियों के द्वारा स्वयं अपने लिये स्थापित किया जाता है। कई बार कर्मचारी अपने व्यक्तिगत लक्ष्य बना लेते हैं और उन लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति अपनी प्रगति का सतत् अनुश्रवण करते हैं। जब भी अवश्यकता पडे, वे इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये अपने व्यवहार को समायोजित करते हैं। संगठन के लिये इस प्रकार के नियंत्रण तब अत्यंत उपयोगी होते हैं, जब कर्मचारियों की प्राथमिकताऐं एवं लक्ष्य संगठनात्मक लक्ष्य समान होते हैं। किन्तु यदि लक्ष्य परस्पर समान नहीं होते हैं, तो इससे कर्मचारी का प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है।

सामाजिक नियंत्रण : सामाजिक नियंत्रणों को भी समूह नियंत्रण कहा जा सकता है। फर्म में उपसमूह सामूहिक प्राथमिकताओं एवं लक्ष्यों को विकसित करते हैं। यह नियंत्रण समूह मूल्यों तथा इन लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धताओं से उत्पन्न होते हैं। समूह अनौपचारिक रूप में उनके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में हुई प्रगति एवं प्रयत्नों का अनुश्रवण करते हैं। तथा प्रतिकूल विचलन होने पर उन्हें अग्रजों के दबाव के माध्यम से सुधारात्मक कदम उठाते हैं। समूह की प्राथमिकताओं की संगठनात्मक

लक्ष्यों से समानता होनी चाहिये अन्यथा यह संगठनात्मक सफलता के लिये विध्वंशकारी हो सकता है।

<u>सांस्कृतिक नियंत्रण</u> :सांस्कृतिक नियंत्रण अनौपचारिक नियंत्रणों का एक और अलग वर्ग है। विलियम जी0 आऊची के अनुसार "संस्कृति एक व्यापक मूल्य एवं आदर्शात्मक प्रवृति है जो कर्मचारी व्यवहार को समस्त संगठन के भीतर मार्ग निर्देशित करती है।" सामाजिक अंतर्क्रिया को मानक, कथाऐं, रीति–रिवाज तथा संगठन से संबंधित महत्वपूर्ण व्यक्ति आदि सांस्कृतिक नियंत्रण निर्धारित करते हैं।

12.4 प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के संघटक

औपचारिक एवं अनोपचारिक नियंत्रण प्रणालियों के विभिन्न संघटक होते हैं। औपचारिक एवं अनौपचारिक नियंत्रण प्रणालियों को निम्नवत् समझाया गया हैः

12.4.1 औपचारिक नियंत्रण प्रकिया :औपचारिक नियोजन एवं औपचारिक प्रतिवेदन देना औपचारिक नियंत्रण प्रणाली के दो संघटक हैं। **<u>औपचारिक नियोजन</u>** के भी दो भाग अर्थात व्यूहनीतिक नियोजन एवं परिचालन नियोजन होते हैं। व्यूहनीतिक नियोजन की प्रकृति दीर्घकालीन होती है और यह परियोजना नियोजन एवं नियंत्रण में संगठन की सहायता करने के लिये आवश्यक है। व्यूहनीतिक नियोजन का लक्ष्य संगठन को उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यूहनीतियां निर्धारित करने में सहायता करता है।

<u>औपचारिक प्रतिवेदन</u> का संबंध विस्तृत प्रतिवेदनों को बनाने से संबंधित है जो संगठन को उसके व्यूहनीतिक परिचालन नियोजन की प्रगति के मूल्यांकन में सहायता करता है। साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक एवं वार्षिक प्रतिवेदन संगठन को उसके परिणामों की सावधिक प्रगति के मूल्यांकन एवं लिये जाने वाले अगले कार्यों की प्रक्रिया के चयन में सहायता करता है। नियोजन एवं प्रतिवेदन दोनों को अधिकतम संभव सीमा तक एकीकृत किया जाना चाहिये क्योकि यह योजनाओं के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करता है।

12.4.2 अनौपचारिक नियंत्रण प्रकिया : अनौपचारिक नियंत्रण प्रक्रिया में दो उप प्रणालियां सम्मिलित होती हैं अर्थात तदर्थ दल एवं अनौपचारिक सम्प्रेषण प्रणाली। इन नियंत्रणों को व्यक्तियों के मध्य अंतर्क्रिया के आधार पर निर्मित किया जाता है। प्रबंधकीय नियंत्रण व्यवसाय के विस्तृत औपचारिक अध्ययन एवं आर्थिक वातावरण तथा अनौपचारिक कारकों जैसे आत्माभिव्यक्ति, अनुभव एवं संस्कृति पर आधारित होते हैं। अनौपचारिक नियंत्रण की एक महत्वपूर्ण उप–प्रणाली तदर्थ दल हैं। यह दल कई संगठनात्मक दलों से लिये गये सदस्यों से गठित होते है जो एक विशिष्ट मुवक्किल, उत्पाद या बाजार से संबंधित समस्या के समाधान हेतु समन्वय के आधार पर कार्य करते हैं।

अनौपचारिक सम्प्रेषण प्रणालियां इसलिये विकसित होती हैं, क्योकि कर्मचारियों में लगाातार अंतक्रियाऐं एवं कार्य संबंध होते हैं। अनौपचारिक सम्प्रेषण को विकसित करना प्रभावशाली अनौपचारिक नियंत्रणों को बनाये रखने हेतु आवश्यक होता है क्योकि यह संगठन के महत्वपूर्ण मूल्यों के समर्थन में सहायक होता है।

12.5 प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण

- **प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के प्रति साइबरनैटिक दृष्टिकोण**
- **प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के प्रति सांयोगिक दृष्टिकोण**
- **व्यूहनीति एवं नियंत्रण प्रणालियां**

12.5.1 प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के प्रति साइबरनैटिक दृष्टिकोण :

'साइबरनैटिक्स' का संबंध स्वशासित सिद्धांतों से है और इसे "नियंत्रण एवं सम्प्रेषण सिद्धांत के सम्पूर्ण क्षेत्र" के अध्ययन के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इसमें मानव निर्मित उपकरण जैसे मशीन या प्रकृति निर्मित तत्व जैसे– पशु एवं मानव दोनों आच्छादित होते हैं। 'साइबरनैटिक्स' ग्रीक शब्द **काइबरनेट्स (kybernetes)** जो 'स्टीयर्समैन' के लिये प्रयुक्त होता है, से मूलरूप में उद्भव हुआ है। 'स्टीयर्समैन' एक ऐसा व्यक्ति होता है, जो समुद्री जहाज की गति को एक निर्धारित योजना के अनुसार या निर्धारित दिशा में संचालित करता है। भाषायी अनुवाद, स्वचालित मशीन उपकरण नियंत्रण, रडार नियंत्रण, पशु जीन विज्ञान, क्रिप्टोग्राफी एवं अध्यापन मशीनें, कृत्रिम बुद्धिमता, रोबोटिक्स, के विविध क्षेत्रों में व्यापक अनुप्रयोग के कारण 'साइबरनैटिक्स' सामान्यतः प्रणाली सिद्धांत निर्माताओं में आत्मानुशासन के एकीकृत सिद्धांत के रूप में लोकप्रिय हो रहा है। 'साइबरनैटिक्स' की नवीन प्रवृत्तियों में लक्ष्योन्मुख नियंत्रण प्रक्रिया, जिसमें नियोजन, निर्णयन एवं नियंत्रण तथा जो नियंत्रण पदसोपान क्रम से संचालित होती है, को सम्मिलित किया जाता है।

12.5.2 प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के प्रति सांयोगिक दृष्टिकोण :

सांयोगिकता का अर्थ निर्भरता है और इस कारण यह सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि नियंत्रण प्रणालियों का निरूपण एवं उपयोग संगठन विशिष्ट है और विशेष संगठनात्मक स्थितियों पर निर्भर करता है। यह सिद्धांत यह व्यक्त करता है कि विभिन्न नियंत्रण प्रणालियों की उपयुक्तता व्यवसायिक स्थितियों पर निर्भर करती है। फिशर ने पांच सांयोगिक नियंत्रण चरों की पहचान की है –**अनिश्चितता, तकनीकी एवं अंतर्निर्भरता, उद्योग फर्म एवं इकाई चर, प्रतियोगितात्मक व्यूहनीति और ध्येय एवं दृश्य कारक**, जो एक संगठन में नियंत्रण प्रणालियों के प्रारूप एवं प्रयोग को प्रभावित कर सकती है। यह सिद्धांत संगठन और इसके वातावरण के बीच अंतर्क्रिया पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है।

12.5.3 व्यूहनीति एवं नियंत्रण प्रणालियां :

व्यूहनीति संगठन को संगठनात्मक लक्षणों को व्यक्त करने में सहायता करती है और नियंत्रण को संगठन के द्वारा लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करने के लिये निरूपित किया जाता है। प्रबंध नियंत्रण प्रणालियां वह उपकरण हैं जो व्यूहनीतियों के क्रियान्वयन में सहायता करती है। व्यूहनीतियों को एक संगठन के दो स्तरों पर ध्यान में रखा जाता है। जैसे कम्पनी व्यूहनीति एवं व्यवसायिक इकाई व्यूहनीति नियंत्रण प्रणाली का प्रारूप एवं प्रयोग में आ रही व्यूहनीति पर निर्भर करता है। जैसे कम्पनी या व्यवसायिक इकाई चूंकि नियोजन एवं नियंत्रण आवश्यकताऐं विभिन्न कम्पनी

व्यूहनीतियों के लिये भिन्न–भिन्न होती है। अतः उनका निरूपण कम्पनी व्यूहनीतियों के अनुसार किया जाना चाहिये।

12.6 एम0सी0एस0 के प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारक

प्रबंध नियंत्रण प्रणालियों का प्रारूप एवं प्रयोग संगठन में कई कारकों के द्वारा प्रभावित होता है। कुछ महत्वपूर्ण कारक एवं उनके प्रबंध नियंत्रण प्रणालियों पर प्रभाव कोनिम्नवत् समझााया गया है :

1. **प्रबंधकीय शैली एवं नियंत्रण प्रणालियों का प्रारूप**

   प्रबंधकों के द्वारा अपने कर्मचारियों के प्रबंधन में विभिन्न प्रबंधकीय शैलियां प्रयुक्त होती
   हैं। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के प्रारूप का चयन संगठन में अपनायी गयी प्रबंधकीय शैली
   पर निर्भर करता है। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली एवं प्रबंधकीय शैली में विचलन से संगठन में संधर्ष उत्पन्न हो सकते हैं। विभिन्न प्रबंधकीय शैलियां, जो प्रबंध नियंत्रण प्रणालियों को प्रभावित करती हैं, वे वाह्य नियंत्रण, आन्तरिक नियंत्रण और मिश्रित नियंत्रण हैं। वाह्य नियंत्रण कर्मचारियों के लिए कठिन लक्ष्य तय करके कर्मचारियों को विभाजित करने के सिद्धान्त पर कार्य करता है। आन्तरिक नियंत्रण इस मान्यता पर कार्य करता है कि कर्मचारियों को निर्णयन प्रकिया में सम्मिलित किया जाना चाहिए जो कि एक अभिप्रेरणात्मक शक्ति होगी। मिश्रित नियंत्रण वाह्य एवं आन्तरिक नियंत्रण की शक्तिशाली विशेषताओं का मिश्रण होता है।

2. **कम्पनी संस्कृति एवं नियंत्रण प्रणाली**

   कम्पनी संस्कृति एवं अपनायी गयी नियंत्रण प्रणाली में एक प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के प्रारूप को निश्चित करते समय कम्पनी संस्कृति को ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है। नियंत्रण प्रणाली का प्रारूप निर्धारण संगठन की विद्यमान संस्कृति के अनुसार होना चाहिए।उन मूल्यों पर ध्यान दिया जाना चाहिए जिन्हें प्रबन्ध कर्मचारियों के द्वारा अपनाना चाहता है। औपचारिक नियंत्रण प्रणालियों को इस प्रकार परिवर्तित किया जाना चाहिए ताकि वह उन मूल्यों को कर्मचारियों में डाल सके जिन्हें वह कर्मचारियों के द्वारा अपनाया जाना चाहता है।

3. **विकेन्द्रीयकरण एवं नियंत्रण प्रणाली का प्रारूप निर्धारण**

   विकेन्द्रीयकरण का सम्बन्ध प्राधिकार के प्रत्यायोजन से है। किसी संगठन में विकेन्द्रीयकरण का अंश जितना अधिक होगा उतना ही नियंत्रण प्रणाली का महत्व भी अधिक होगा। क्योंकि नियंत्रण प्रणाली का उद्देश्य संगठन की उप इकाइयों को साथ में लाना है। केन्द्रीयकृत नियंत्रण प्रणाली के अभाव में ऐसा कर पाना कठिन होगा।

4. **हितधारकों के नियंत्रण एवं नियंत्रण प्रणाली का निरूपण**

   हितधारकों की एक बड़ी संख्या व्यावसायिक उपक्रम से अपने विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करती है। संगठन के इन हितधारकों में सरकार,

आपूर्तिकर्ता, नियामक संस्थाऐं, उद्योग परिषदें, निवेशकर्ता, उपभोक्ता, कर्मचारी एवं सामान्य जनता सम्मिलित होते हैं। संगठन के लिये नियंत्रण प्रतिक्रियाओं का निरूपण विभिन्न हितधारकों के भिन्न–भिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखतें हुए आवश्यक है।

5. **सम्प्रेषण संरचनाऐं और नियंत्रण प्रकिया**

सम्प्रेषण संरचनाऐं और नियंत्रण प्रकिया के प्रारूप और संप्रेषण संरचना के मध्य संबंध नियंत्रण प्रकिया के सफल संचालन के लिये बहुत आवश्यक है। संगठन सम्प्रेषण के औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रणालियों दोनों का उपयोग करते हैं। जैसा कि नियंत्रण प्रकिया प्रमुख परिणामों के क्षेत्रों, उन प्रमुख क्षेत्रों में परिणामों के मूल्यांकन वास्तविक परिणामों के प्रत्याशित परिणामों से विचलनों का परीक्षण करने से संबंध रखती हैं किन्तु इसे संगठन में सम्प्रेषण संरचना को स्थापित करके किया जाता है। नियंत्रण प्रकिया के प्रभावी संचालन के लिये आवश्यक विविध सूचनाओं को सम्प्रेषण संरचना के द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। अतः नियंत्रण प्रकिया का प्रारूप संगठन के प्रयोग में आ रही सम्प्रेषण संरचना को ध्यान में रखने के बाद विकसित किया जाना चाहिये।

12.7 उत्तरदायित्व लेखांकन

उत्तरदायित्व लेखांकन प्रबंधकीय नियंत्रण तकनीक में से एक है। इस तकनीक में संगठन को विभिन्न केन्द्रों, संसाधनों में विभाजित किया जाता है और इन केन्द्रों को प्राधिकार का हस्तांतरण किया जाता है और उत्तरदायित्व निश्चित किया जाता है। उत्तरदायित्व लेखांकन इन केन्द्रों के वास्तविक परिणामों का प्रत्याशित परिणामों से तुलना करके प्रदर्शन के मूल्यांकन में सहायता करता है। विभिन्न शोधकर्ताओं के द्वारा उत्तरदायित्व लेखांकन को विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया गया है। उत्तरदायित्व लेखांकन को समुचित रूप में समझाने के लिये पाठक की सहायता करने वाली कुछ परिभाषाऐं जो जाने माने शोधकर्ताओं द्वारा दी गयी है, निम्नवत् हैः

चार्ल्स टी0 हार्नग्रेन के अनुसार उत्तरदायित्व लेखांकन अथवा लाभदायकता लेखांकन या गतिविधि लेखांकन जिसका आशय समान है, एक ऐसी प्रणाली है जो सम्पूर्ण संगठन में विभिन्न निर्णयों या उत्तरदायित्व केन्द्रों की पहचान करती है और लागतों (और आय सम्पत्तियों एवं दायित्वों) को व्यक्तिगत प्रबंधकों से चिन्हित करती है, जो प्रश्नगत लागतों के विषय में निर्णय लेने हेतु प्राथमिक रूप में उत्तरदायी होते हैं। राबर्ट ऐन्थोनी ने उत्तरदायित्व लेखांकन को उस प्रकार के प्रब्रधकीय लेखांकन की तरह परिभाषित किया है जो नियोजित एवं वास्तविक दोनों लेखांकन सूचनाओं को उत्तरदायित्व केन्द्रों में संकलित एवं प्रतिवेदित करता है।

सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि उत्तरदायित्व लेखांकन उत्तरदायित्व केन्द्रों के वास्तविक एवं नियोजित परिणामों को आगतों के प्रयोग एवं उत्पाादित उत्पाद के शब्दों में संकलित एवं प्रतिवेदित करता है। कच्चे माल ,श्रम आदि के शब्दों में प्रयुक्त विभिन्न आगतों के मापन की इकाई को सामान्य विभाजक तक न्यूनीकृत

किया जाता है और मुद्रा के शब्दों में उत्तरदायित्व लेखांकन उन केन्द्रों जिन्हें उत्तरदायित्व केन्द्र कहा जाता है कि योजनाओं एवं प्रदर्शन (परिणामों) को अभिलिखित करने में प्रबंधकों को सक्षम बनाता है, जो उन्हें सौंपे गये हैं और जो उसके दायित्व क्षेत्र में आते हैं। उत्तरदायित्व केन्द्रों के प्रदर्शन का मापन लागत, लाभ, विनियोग या गुणवत्ता के शब्दों में अर्थात संगठन के द्वारा उस विभाग के लिये निर्धारित लक्ष्य के अनुसार किया जा सकता है।

12.7.1 : उत्तरदायित्व केन्द्रों के प्रकार –

मौद्रिक लागतों एवं उत्पाद की प्रकृति के अनुसार उत्तरदायित्व केन्द्रों को निम्नांकित में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. आय केन्द्र
2. लागत केन्द्र
3. विपणन केन्द्र
4. लाभ केन्द्र
5. विनियोग केन्द्र

1. **आय केन्द्र** :ऐसा केन्द्र आय को बढ़ाने के लिये प्रतिबद्ध होता है और उत्पादन हेतु उत्तरदायित्व ग्रहण करता है। आय केन्द्र का परिणाम (उत्पादन) मौद्रिक रूप में पाया जाता है। यह केन्द्र विपणन केन्द्र होते हैं और यह लाभों के लिये प्रत्यक्ष रूप में उत्तरदायी नहीं होते है। आय केन्द्रों का मुख्य उद्देश्य आय को अधिकतम करना है। उदाहरणार्थ विपणन संगठन एक विक्रय आय केन्द्र होते हैं।
2. **लागत केन्द्र** :लागत केन्द्र आधारभूत रूप में लागतों से संबंधित होते हैं। लागत केन्द्रों का संगठन की आय या सम्पत्तियों और उत्तरदायित्वों से कोई मतलब नहीं होता। यह एक पृथक संगठनात्मक इकाई है जिसके लिये पृथक लागत आवंटन होता है। एक लागत केन्द्र लागत मापन बजटिंग एवं नियंत्रण के लिये लागत अभिलेखों के निर्माण आधार निर्धारित करता है।
3. **विपणन केन्द्र** :विपणन केन्द्र विपणन क्रियाओं के लिये उत्तरदायी होते हैं। विपणन केन्द्रों का मूल्यांकन कठिन होता है क्योंकि विपणन विभाग का आर्थिक दशाओं अथवा प्रतियोगियों की क्रियाओं पर कोई नियंत्रण नहीं होता। विपणन केन्द्र का वास्तविक परिणाम परिवर्तित विपणन दशाओं एवं आर्थिक पर्यावरण के कारण, प्रत्याशित परिणामों से भिन्न हो सकता है। विपणन केन्द्रों में, जिनमें परीक्षण विपणन, विक्रय, कर्मचारी परीक्षण, विज्ञापन, विक्रय प्रवर्तन आदि सम्मिलित है, की क्रियाऐं सम्मिलित है।
4. **लाभ केन्द्र** :लाभ केन्द्र लाभ के लिये उत्तरदायी होते हैं। उनका प्रदर्शन लाभ के शब्दों में मापन किया जाता है। लाभ को आगम (उत्पादन) एवं व्ययों (आगतों) के मध्य संख्यात्मक अंतर के शब्दों में मापा जाता है। एक लाभ केन्द्र को लाभार्जन का उत्तरदायित्व दिया जाता है। यह उत्पादन के विनिर्माण एवं विक्रय में संलग्न होता है। केन्द्र के प्रभारी प्रबंधक की कार्यक्षमता का निर्धारण भी लाभ केन्द्र के द्वारा किया जाता है। यह प्रब्रधकों को अपने नियंत्रण वाले

क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन करने के लिये अभिप्रेरित करता है तथा प्रब्रधकों को पहलपूर्ण प्रयास करने के लिये प्रोत्साहित भी करता है।

5. **विनियोग केन्द्र** :यह ऐसा उत्त्तरदायित्व केन्द्र है जिसमें आय व्यय एवं समुचित विनियोग आधार होता है। इसका विक्रय आय एवं परिचालन लागतों तथा लाभों के सृजन में प्रयुक्त सम्पत्तियों पर नियंत्रण होता है। एक विनियोग इकाई प्रब्रधक को विनियोग के आकार एवं लाभ चरों को प्रभावित करने की स्थिति में होना चाहिये। इस केन्द्र का उद्देश्य लाभों को अधिकतम करना होता है, यदि लाभ के सृजन हेतु आवश्यक विनियोग की धनराशि प्रदत्त हो।

12.7.2 उत्तरदायित्व लेखांकन के उद्देश्य :

उत्तरदायित्व लेखांकन प्रबंध की वह तकनीक है जो संगठन को इसके लक्ष्यों को प्राप्त करने में संगठन को उपइकाईयों में विभाजित करके सहायता करती है। उत्तरदायित्व लेखांकन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नवत् हैं :

1. अपवादों द्वारा प्रबंध के दृष्टिकोण के अनुपालन के द्वारा कम्पनी के प्रबंधन परिणामों में सुधार करने में प्रबंध की सहायता करना। यह कमजोर परिणाम देने वाले उत्तरदायित्व केन्द्रों को प्रकाश में लाकर उत्तरदायित्व लेखांकन के द्वारा किया जाता है।
2. संगठनात्मक उत्तरदायित्व केन्द्रों के दायित्वों के मध्य सामन्जस्य स्थापित करके प्रबंध की सहायता करना।
3. एक विभाग/केन्द्र, एक उपइकाई के रूप में सम्पूर्ण संगठन को क्या योगदान कर सकता है, यह निर्धारित करना।
4. प्रभागीय प्रबंधकों के प्रदर्शन के मूल्यांकन हेतु आधार प्रदान करना।
5. ऐसे प्रभागीय/केन्द्र प्रबंधकों, जिनका प्रदर्शन मानकानुसार है, के लिये अभिप्रेरणात्मक उपकरण के रूप में कार्य करना।

12.7.3 उत्तरदायित्व लेखांकन की प्रकिया :

उत्तरदायित्व लेखांकन की प्रक्रिया में छः चरण सम्मिलित होते हैं, जो निम्नवत् हैं :

1. **संगठन उत्तरदायित्व केन्द्रों में विभाजित किया जाता है :** यह उत्तरदायित्व लेखांकन का प्रथम चरण है। सम्पूर्ण संगठन को उत्तरदायित्व केन्द्रों में विभाजित किया जाता है। यह केन्द्र लागत केन्द्रों, लाभ केन्द्रों या विनियोग केन्द्रों का स्वरूप ग्रहण कर सकते हैं। प्रत्येक कर्मचारी के उत्तरदायित्व को निश्चित करने के प्रयास किये जाते हैं।
2. **प्रत्येक विभाग के उद्देश्य का निर्धारण :** यह उत्तरदायित्व लेखांकन में दूसरा चरण है। संगठन के कार्य को उपलक्ष्यों में विभाजित किया जाता है तथा उन उपलक्ष्यों को विभागों/प्रभागों/उत्तरदायित्व केन्द्रों में संगठन के भीतर आवंटित किया जाता है। व्यक्तिगत विभागों में उस प्रकार कार्य आवंटन से प्रबंधन को उनकी जवाबदेही के निर्धारण एवं प्रत्येक प्रभाग के परिणामों के परीक्षण में सहायता प्राप्त होती है।

3. **वास्तविक प्रदर्शन का मापन** :तीसरे चरण में प्रत्येक प्रभाग/उत्तरदायित्व केन्द्र के वास्तविक प्रदर्शन के मापन के प्रयास किये जाते है। प्रत्येक उत्तरदायित्व केन्द्र के प्रदर्शन का परिणाम उसे सौंपे गये उत्तरदायित्व के सापेक्ष किया जाता है। अर्थात् लागत केन्द्र के परिणाम का मापन वास्तविक लागतों के शब्दों में, लाभ केन्द्रों के परिणामों का मापन अर्जित लाभों के रूप में तथा विनियोग केन्द्रों के परिणामों का मापन किये गये विनियोग के आधार पर किया जाता है।
4. **वास्तविक परिणामों की तुलना नियोजित परिणामों से करना** : इस चरण में प्रभागों को वास्तविक परिणाम की तुलना नियोजित परिणाम से की जाती है। इस तुलना के विचार का मन्तव्य कमजोर संगठनात्मक क्षेत्रों का पहचान करता है, ताकि उनके सुधार हेतु आवश्यक कदम उठाये जा सके।
5. **विचरणांश के मूल्य की गणना** : इस चरण में कम्पनी विचरणांश की गणना करती है। अर्थात् कर्मचारी प्रभागों/केन्द्रों के वास्तविक परिणाम का प्रमाणित परिणाम से विचलन विचरांश अनुकूल हो सकता है, यदि वास्तविक परिणाम कम्पनी द्वारा लक्ष्य से उत्तम है।
6. **सुधारात्मक उपाय** :उत्तरदायित्व लेखांकन प्रक्रिया में यह अंतिम चरण है। कमजोर प्रदर्शन करने वाले विभागों/प्रभागों/केन्द्रों/कर्मचारियों की पहचान करने के बाद तथा प्रतिकूल विचलनों को ज्ञात करने के पश्चात् इस चरण में यह सुनिश्चित करने के लिये सुधारात्मक कदम उठाये जाते हैं कि ऐसे प्रतिकूल विचलन पुनः घटित न हों। ऐसी दशा में जबकि प्रतिकूल विचलन कर्मचारियों के स्तर की लापरवाही के कारण हो तो इससे उन्हें पदावनति, स्थानांतरण, वेतन वृद्धियों का निरस्तीकरण आदि के रूप में प्रबंधन का कोपभाजन बनना पड़ता है।

12.7.4 उत्तरदायित्व लेखांकन का महत्व :

उत्तरदायित्व लेखांकन एक प्रभावशाली प्रबंधकीय नियंत्रण तकनीक के रूप में उभरा है। यह तकनीक, इससे संबंधित निम्नांकित लाभों के कारण व्यापक रूप में व्यवहार में लाये जाते हैं :

1. **सरल पहचान हो सकना** :उत्तरदायित्व लेखांकन संगठनों को उपइकाईयों में विभाजित करने तथा इसके पश्चात् उपइकाई के आधार पर उत्तरदायित्व निश्चित करने की प्रणाली पर आधारित है। यह संतोषजनक अथवा असंतोषजनक प्रदर्शन करने वाले व्यक्तिगत प्रबंधकों की पहचान को सरल बना देता है।
2. **आंकड़ों की उपलब्धता** :चूंकि प्रबंध कमजोर क्षेत्रों की पहचान के द्वारा परिणामों के मूल्यांकन में हमेशा रूचि रखता है। उत्तरदायित्व लेखांकन प्रबंधन को सरलता से आंकड़े उपलब्ध कराकर ऐसा करने में उसकी सहायता करता है। उत्तरदायित्व लेखांकन प्रदर्शन समंकों के प्रस्तुतीकरण की एक संरचना है। इस आधार पर प्रबंधकों को उपक्रम के सर्वोत्तम हित में कार्य

करने के लिये अभिप्रेरित करने के साथ ही प्रबंधकीय प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणाली को स्थापित किया जा सकता है।

3. **नियोजन एवं निर्णयन** :उत्तरदायित्व लेखांकन नियंत्रण में नहीं बल्कि नियोजन में और निर्णयन में भी सहायता करता है।

4. **प्रत्यायोजित प्राधिकार के प्रयोग के प्रति रोकथाम करना** :वृहत्स्तरीय व्यावसायिक संगठन प्राधिकार के प्रायोजन के माध्यम से कार्य करते हैं। प्रत्यायोजित प्रधिकारी उन्हें सौंपे गये प्राधिकार का प्रयोग कर रहे हैं अथवा नहीं, इसमें उत्तरदायित्व लेखांकन सहायता करता है।

5. **अभिप्रेरणात्मक संरचना की तरह कार्य करता है** :उत्तरदायित्व लेखांकन अच्छे और कमजोर प्रदर्शन करने वालों को चिन्हित करके कर्मचारियों को अभिप्रेरित करने में सहायता करता है। प्रबंध इसका उपयोग अच्छे प्रदर्शन कर्ताओं को पुरस्कृत करने एवं कमजोर प्रदर्शन कर्ताओं को दण्डित करने में कर सकते है।

12.8 हस्तांतरण कीमत – निर्धारण

हस्तांतरण आय को लाभ केन्द्रों के मूल्यांकन के लिये प्रयोग किया जाता है। यह वह कीमत है जो कम्पनी के अन्दर एक लाभ केन्द्र से अन्य उत्तरदायित्व केन्द्रों को उपलब्ध कराये गये वस्तु एवं सेवाओं के मूल्य के मापन में प्रयोग की जाती है। लाभ केन्द्र में लाभ का मूल्यांकन एक कठिन कार्य है, क्योंकि हस्तांतरण कीमत निर्धारण की समस्या होती है। हस्तांतरण कीमत विक्रय प्रभाग के लिये आय का श्रोत है और केता/प्राप्तकर्ता प्रभाग के लिये लागत का तत्व है । अतः हस्तांतरण कीमत को निर्धारण करने का आय एवं लागतों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और इस कारण उत्तरदायित्व केन्द्र के लाभ पर भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार सही हस्तांतरण कीमत का निर्धारण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हस्तांतरण कीमत के निर्धारण की कई विधियां है। हस्तांतरण कीमत निर्धारण के प्रकारों में लागत आधारित एवं बाजार आधारित विधियां हैं। लागत और बाजार कीमतों के आधार पर हस्तांतरण कीमत की पांच आधारभूत विधियां हैं अर्थात लागत विधि, लागत में सामान्य लाभ जोडकरहस्तांतरण कीमत, वृद्धिशील लागत, बाजार कीमत एवं सौदाकारी कीमत।

12.9 सारांश

प्रबंध नियंत्रण प्रणाली प्रबंध की एक तकनीक है, जो संगठनात्मक प्रयासों एवं संगठनात्मक तथ्यों के सामन्जस्य में सहायता करती है। प्रबंध नियंत्रण प्रणाली मानकों को निर्धारित करके तथा प्रतिकूल विचलनों, यदि कोई हो, का पता लगाने एवं उन्हें ठीक करने के द्वारा संगठनात्मक प्रदर्शन में सुधार करने में सहायता करती है। संगठन में प्रयुक्त प्रबंध नियंत्रण तकनीकों को औपचारिक एवं अनौपचारिक वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। दूसरी ओर उत्तरदायित्व लेखांकन प्रबंधकीय नियंत्रण की एक तकनीक है, जो संगठन को लाभों, लागतों, विनियोगों एवं बाजार कीमतों में विभक्त करने और उत्तरदायित्व को निश्चित करने के द्वारा संगठन के प्रदर्शन में सुधार में सहायता करती है।

12.10 शब्दावली

साइबरनैटिक,एम0सी0ए 0–प्रबंध नियंत्रण प्रणाली,

लाभ केन्द्र : लाभ के लिये उत्तरदायी होते हैं एवं इनका प्रदर्शन लाभ के शब्दों में मापन किया जाता है।

सेंसर : इसका प्रमुख कार्य संगठनात्मक क्रियाओं के विषय में सूचनाओं का संकलन करना है।

हस्तांतरण आय – वह कीमत है जो कम्पनी के अन्दर एक लाभ केन्द्र से अन्य उत्तरदायित्व केन्द्रों को उपलब्ध कराये गये वस्तु एवं सेवाओं के मूल्य के मापन में प्रयोग की जाती है।

12.11 बोध प्रश्न

(अ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

1. उत्तरदायित्व लेखांकन में ....चरण निहित होते है।
2. उत्तरदायित्व लेखांकन संगठन को ....भागों में विभक्त कार्य करता है।
3. लाभकेन्द्र ....के लिये उत्तरदायी होता है।
4. हस्तांतरण कीमत अवधारणा केवल.................................केन्द्रों के लिये प्रासंगिक है।
5. हस्तातरण कीमत विधियों की मुख्य रूप से ....श्रेणियां होती हैं।

(ब) सत्य अथवा असत्य लिखिये :

1. प्रबंधकीय शैलियां, प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के प्रारूप को प्रभावित करती है।
2. प्रबंध नियंत्रण प्रणाली औपचारिक एवं अनौपचारिक वर्गों में विभाजित की जाती है।
3. प्रबंध नियंत्रण प्रणाली के तीन दृष्टिकोंण होते हैं।
4. साइबरनैटिक का उद्गम ग्रीक शब्द काइबरनैटिक से हुआ।
5. एड–हॉक या तदर्थ दल औपचारिक प्रकार के नियंत्रणों की श्रेणी है।

12.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

(अ) (i) 6 (ii) केन्द्र (iii) लाभ (iv) लाभ (v) 2

(ब) (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) असत्य

12.13 स्वपरख प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली के लाभ समझाइये।
2. "प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली संगठनात्मक प्रयासों और संगठनात्मक लक्ष्यों में सामन्जस्य लाने में सहायता करती है"। इस कथन को समझाइये।
3. प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणालियां लघु–स्तरीय उपक्रमों के लिये कहां तक प्रासांगिक है? ज्वलंत उदाहरणों की सहायता से समझाइये।

4. “उत्तरदायित्व लेखांकन का प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली से कोई संबंध नहीं है” । इस कथन की व्याख्या कीजिये।

12.14 संदर्भ पुस्तकें

1. राबर्ट एन0 एन्थोनी, ग्लीवॉन ए0 वैल्स एण्ड जेम्स एस0 रीस, फण्डामैंटल्स ऑफ मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, हार्वर्ड बिजनैस स्कूल प्रैस।
2. ग्राह्म मॉट, मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग फॉर डिसीजन मेकर्स, पिटमैन।
3. रवि एम0 किशोर, एडवांस्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, टैक्समैन एलाइड सर्विसेज लि0।
4. के0 एस0 शास्त्री एण्ड नन्द धमीजा, द प्रैक्टिस ऑफ मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, व्हीलर पब्लिशिंग।
5. मधु विज, मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, एक्सैल बुक्स।
6. एम0 ई0 तुकाराम राव, कास्ट एझड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, न्यू एज इण्टरनेशनल (प्रा0) लि0।
7. एम0 ईज्जामेल एण्ड एच0 हार्ट, एडवांस्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, एन आर्गनाइजेशनल इमफैसिस, कैसेल।
8. विलियमसन इंकेन, कॉस्ट एण्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, प्रोन्टिस हॉल।

इकाई 13 कम्पनी सामाजिक लेखांकन

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना
13.2 कम्पनी सामाजिक लेखांकन का अर्थ
13.3 कम्पनी सामाजिक लेखांकन के उद्देश्य
13.4 कम्पनी सामाजिक लेखांकन की आवश्यकता
13.5 कम्पनी सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन के उपयोग
13.6 कम्पनी सामाजिक लेखांकन का क्षेत्र
13.7 सामाजिक लाभ एवं सामाजिक लागतें
13.8 सामाजिक लागतों एवं लाभों का मापन
13.9 कम्पनी सामाजिक लेखांकन के दृष्टिकोंण
13.10 कम्पनी सामाजिक लाभ प्रतिवेदन के लाभ
13.11 कम्पनी सामाजिक प्रतिवेदन की सीमाऐं
13.12 भारत में कम्पनी सामाजिक प्रकटीकरण पद्धतियाँ
13.13 सारांश
13.14 शब्दावली
13.15 बोध प्रश्न
13.16 बोध प्रश्नों के उत्तर
13.17 स्वपरख प्रश्न
13.18 सन्दर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- कम्पनी सामाजिक लेखांकन को परिभाषित कर सकें एवं इसकी आवश्यकता एवं उद्देश्यों को समझा सकें।
- कम्पनी सामाजिक लेखांकन के क्षेत्र एवं दृष्टिकोणों का विवेचन कर सकें।
- सामाजिक लागतों एवं लाभों के मापन के दृष्टिकोणों को समझ सकें।

13.1 प्रस्तावना

परंपरागत वित्तीय लेखांकन दो या अधिक व्यावसायिक फर्मो के मध्य हुए व्यावसायिक लेन–देनों के मापन एवं उनके प्रतिवेदन करने पर ही मुख्य रूप से अपना ध्यान केन्द्रित करता है। वित्तीय लेखांकन के अर्न्तगत तैयार किए गए वित्तीय विवरण मूलतः अंशधारियों एवं भावी निवेशकों की सुदृढ़ आर्थिक निर्णय लेने की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए होते हैं। फर्म और उसके सामाजिक पर्यावरण के मध्य विनिमय को व्यावहारिक रूप में छोड़ दिया जाता है। परम्परागत वित्तीय प्रतिवेदन प्रणाली व्यावसायिक उपक्रमों के सामाजिक परिणामों की सूचना पर ध्यान दिए बिना वित्तीय परिणामों एवं परिचालनात्मक सांख्यिकी को संकलित, सम्पादित एवं प्रतिवेदित करती है। वित्तीय लेखांकन की इस प्रकृति ने हाल के वर्षों में एक गम्भीर बहस को जन्म

दिया है कि व्यावसायिक क्रियाओं को सामाजिक रूप में वांछनीय परिणामों के साथ सुसंगत होना चाहिए, जैसे उत्पाद उपयोगकर्ताओं के लिए हानिकारक नहीं होने चाहिए, सामाजिक सरोकारों के द्वारा लाभार्जन की भावना एक सीमा में रहनी चाहिए, पर्यावरण को विभिन्न प्रकार के औद्योगिक विपरीत व्यवहारों से जनित प्रदूषण से सुरक्षित किया जाना चाहिए तथा कर्मचारियों को रोजगार सुरक्षा का अधिकार होना चाहिए। जिस प्रकार व्यावसायिक उपक्रम नवीन आयामों, जैसे सामाजिक मानवीय एवं पर्यावरणीय दबावों के प्रति प्रतिक्रिया करते है, उसी प्रकार यह आवश्यक नहीं है कि वह आवश्यक रूप में अपने मूल व्यावसायिक लक्ष्यों में परिवर्तन करें किन्तु वे उन्हें इस प्रकार रूपान्तरित करेंगे कि उनमें नवीन बाधाओं को संतुष्ट करना परिलक्षित हो । अमेंरिकन एकाउन्टिंग एसोसिएसन की समाजिक लागतों के मापन पर गठित समिति ने कम्पनी उपक्रमों के परिचालनात्मक उद्देश्यों पर जोर दिया है जैसे वार्षिक लाभों में 8 प्रतिशत वृद्धि, विक्रय में 20 प्रतिशत वृद्धि, प्रदूषण स्तर में 30 प्रतिशत कमी और एक ऐसा कर्मचारी मिश्रण जिसमें प्लाण्ट के स्थान के समुदायों के अल्पसंख्यकों का मिश्रण भी परिलक्षित होता हों, हाल ही में, स्पाईसर के द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह निष्कर्ष व्युत्पादित किया गया है कि कुल एवं प्रणालीगत जोखिम के सम्बन्ध में अत्यधिक लाभप्रद, वृह्त स्तरीय कम्पनियाँ सामान्यतः निवेशकों के द्वारा कम जोखिमपूर्ण समझी गयी हैं। इसके अतिरिक्त, इन कम्पनियों को सामान्यतः उच्च कीमत–आय अनुपात उन कम्पनियों के सापेक्ष प्राप्त हुआ है, जिनका प्रदूषण नियंत्रण का रिकार्ड कमजोर रहा है। सामाजिक लेखांकन निम्नांकित परिकल्पना पर अवलम्बित है :

"एक आर्थिक प्रणाली की तकनीकी , इसके समाज पर एक संरचना स्थापित कर देती है , जो न केवल इसकी आर्थिक क्रियाओं का निर्धारण कर देती है , बल्कि सामाजिक अन्तर्सबंधों और खुशहाली को भी प्रभावित करती है। अतः आर्थिक परिणामों तक सीमित उपाय सम्पूर्ण प्रणाली के कारण–परिणाम सम्बन्धों के मूल्यांकन के लिए अपर्याप्त हैं। यह सामाजिक प्रभावों की उपेक्षा करते है।"

13.2 कम्पनी सामाजिक लेखांकन का अर्थ

'सामाजिक लेखांकन' शब्द का उद्‌गम हाल ही में हुआ है और बहुत से समान शब्द यथा 'सामांजिक अंकेक्षण', 'सामाजार्थिक लेखांकन', 'सामाजिक लागत–लाभ विश्लेषण' 'कम्पनी की सामाजिक नीतियाँ, 'सामाजिक सूचना प्रणाली', 'कम्पनी सामाजिक लेखांकन' 'सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन' आदि इसके लिए परस्पर एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं। आजकल, यह अनुभव किया जा रहा है कि व्यावसायिक इकाई का व्यावसायिक मूल्यांकन, व्यावसायिक इकाई को प्रदत्त कोषों के औचित्य के लिए प्रर्याप्त नहीं है। बल्कि मूल्यांकन तो तब पूर्ण माना जाएगा जब उसके साथ सम्बन्धित सामाजिक लागत एवं लाभों को ध्यान में रखा जाएगा।

'सामाजिक लेखांकन' शब्द को भली भांति समझने के लिए, कुछ जाने–माने लेखांकन प्राधिकारियों के द्वारा प्रदत्त दृष्टिकोंण को यहाँ पर पुनः प्रस्तुत किया जा रहा है।

राल्फ ईट्स ने इस शब्द को **'उपक्रम एवं इसकी क्रियाओं के समाज पर प्रभाव से सम्बन्धित आन्तरिक एवं वाह्य सूचना का मापन एवं प्रतिवेदन'** के रूप में परिभाषित किया है।

इलियट ने 'सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन' शब्द का प्रयोग किया है जो उसके अनुसार, **"कम्पनी की क्रियाओं के उन मार्गों का व्यवस्थित मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन है, जिनका सामाजिक प्रभाव होता है। सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन इस प्रकार, पर्यावरणीय प्रदूषण, गैर नवीनीकृत संसाधनों का उपभोग एवं परिस्थितिकीय कारक, व्यक्तियों एवं समूहों के अधिकारों पर, लोक सेवाओं के रखरखाव पर, सार्वजनिक सुरक्षा पर, स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर और अन्य बहुत सी ऐसी सामाजिक चिन्ताओं पर कम्पनी निर्णयों के प्रभाव का वर्णन करता है।"**

जी0सी0 माहेश्वरी के अनुसार सामाजिक लेखांकन **"कम्पनी गतिविधियों, जो वृहत्तर समाज की संरचना को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करने वाली सामाजिक क्रियाओं के सम्बन्ध में संसूचित निर्णयन की अनुमति दे सके, की पहचान, मापन अभिलेखन एवं प्रतिवेदन करना है जबकि 'सामाजिक अंकेक्षण' का अर्थ एक वाह्य संस्था के द्वारा कम्पनी के सामाजिक लेखांकन अभिलेख की जांच करना है जो ऐसे अभिलेखों एवं प्रतिवेदनों के सत्यापन एवं औचित्य परीक्षण की दृष्टि से अपना विचार प्रदान कर सके।"**

यह कहा जा सकता है कि सामाजिक लेखांकन व्यावसायिक उपक्रम के सामाजिक प्रभाव उत्पन्न करने वाले अर्थपूर्ण एवं परिभाषित करने योग्य क्षेत्र का विवेकपूर्ण मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन करना है।

13.3 कम्पनी सामाजिक लेखांकन के उद्देश्य

कम्पनी समाजिक लेखांकन का उद्देश्य सामान्य जनता को उपक्रम के द्वारा लिए गए सामाजिक कल्याण उपायों तथा उनके समाज पर प्रभाव के विषय में सूचना प्रदान करना है। उपक्रम कहाँ तक सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करने में सफल रहा है, यह सामाजिक लेखांकन से प्रकाश में आता है। सामाजिक लेखांकन के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत है:

- समाज के प्रति व्यक्तिगत फर्मो के योगदान को ज्ञात करना।
- सामाजिक लेखांकन के माध्यम से फर्म की व्यूहनीतियॉ एवं व्यवहार, जिनका सम्बन्धित संसाधनों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, को निर्धारित किया जा सकता हैं।
- फर्म के उद्देश्यों एवं नीतियों पर प्रासंगिक सूचना सामान्य जनता को उपलब्ध करायी जाती है।
- सामाजिक लेखांकन का लक्ष्य मात्रात्मक मॉडलों का विकास एवं उपक्रम के सामाजिक लाभों तथा लागतों का समुचित प्रस्तुतीकरण करना है।

13.4 कम्पनी सामाजिक लेखांकन की आवश्यकता

कम्पनी सामाजिक लेखांकन की पद्धति का अनुसरण सार्वजनिक क्षेत्र के गिने–चुने उपक्रमों के द्वारा किया गया है। विकासशील अर्थ व्यवस्था में सामाजिक लेखांकन की अपेक्षाकृत अधिक आवश्यकता निम्नांकित कारणों से उत्पन्न हुई हैः

- प्रबंध अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करता है और उसके सदस्यों, सरकार एवं सामान्य जनता को इस विषय में सूचित भी करता है।
- प्रबन्ध सामाजिक लेखांकन के माध्यम से पत्रकार जगत एवं सामान्य जनता द्वारा आरोपित आलोचनाओं का सापेक्ष उत्तर देता है।
- कई ऐसे निश्चित वैधानिक उत्तरदायित्व हैं, जिन्हें व्यवसाय द्वारा अनुपालन किया जाना होता है–जैसे सामाजिक सुरक्षा उत्तरदायित्व तथा कल्याणार्थ उपाय इत्यादि प्रबन्ध जनता एवं सरकार को सामाजिक लेखांकन के माध्यम से इस सम्बन्ध में उसके द्वारा उठाये गए कदमों की जानकारी प्रदान करता है।
- प्रबन्ध सामाजिक कल्याण पर लक्षित अपने प्रयासों एवं नीतियों पर फीडबैक प्राप्त कर सकता है।
- कम्पनी सामाजिक लेखांकन जनता के हित समूहों, सामाजिक संगठनों एवं सरकारी संस्थाओं की दृष्टि से आवश्यक है।
- कम्पनी सामाजिक लेखांकन के माध्यम से कम्पनी स्वंय को यह सिद्ध कर सकती है कि मानव मूल्यों, संस्कृति और पर्यावरणीय ह्रास के दृष्टिगत उनका अपना समाज अनैतिक नहीं है।

13.5 कम्पनी सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन के उपयोग

व्यावसायिक उपक्रमों के विषय में सामाजिक उत्तरदायित्व सूचनाऐं मुख्यतः आन्तरिक उपयोगकर्ताओं (प्रबन्ध) वाह्य उपयोगकर्ताओं (अंशधारी एवं अन्य निवेशकर्ता), के लिए तथा कम्पनी के अंश–मूल्यों को प्रभावित करने में उपयोगी होती हैं।

(अ) आन्तरिक उपयोगकर्ता

एक कम्पनी के अन्दर सामाजिक उत्तरदायित्व सूचना की अत्यधिक माँग उच्च प्रबंध या संचालक मण्डल की ओर से होती है। उच्च प्रबन्ध, विशेषतः मुख्य कार्यकारी अधिकारी को सामाजिक प्रदर्शन की सूचना की आवश्यकता आलोचक पत्रकारों को प्रतिक्रिया देने, अंशधारियों के प्रश्नों का उत्तर देने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि कम्पनी की नीतियों का अनुपालन हो रहा है, आदि के लिए होती है। कम्पनी संचालकों को विशेष रूप में उनकी बढ़ती हुई बैधानिक जिम्मेवारियों के कारण, कम्पनी द्वारा संचालित सामाजिक कार्यो और उनके द्वारा अर्जित परिणामों के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए होती है। समाज पर कम्पनी के विषय में संचालकों को पूर्ण सूचना की आवश्यकता होती है। संभवतः यह अधिक आवश्यक है कि उन्हें नकारात्मक प्रभावों के विषय में पूर्णतः सूचित किया जाय क्योंकि यही वह क्षेत्र है, जहाँ आलोचनाऐं निर्देशित होती है और जहाँ निदेशकों को अपना बचाव करना पड़ता है।

श्रम संघों को भी उनकी कम्पनियों के सामाजिक प्रदर्शन की सूचना जानने की अपेक्षा रहती है।

(ब) बाह्य उपयोगकर्ता :

बाह्य उपयोगकर्ताओं की सामाजिक लेखांकन की सूचना की मांग कहीं अधिक वैविध्य पूर्ण होती है। कम्पनी सामाजिक लेखांकन एवं प्रतिवेदन की आवश्यकता वर्तमान एवं भावी निवेशकों, बड़ी संस्थाओं एवं व्यक्तियों को होती है। इस क्षेत्र में किए गये कुछ अध्ययनों में सामाजिक प्रकटीकरण के निवेश निर्णय पर प्रभाव को प्रदर्शित किया गया है। संस्थानात्मक निवेशकर्ताओं के एक सर्वेक्षण में लॉग स्ट्रैथ और रॉजिनब्लूम ने पाया कि 57 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा यह व्यक्त किया गया कि वे निवेश निर्णय लेते समय अर्थिक कारकों के साथ–साथ सामाजिक कारकों को भी ध्यान में रखते थे।

(स) अंश मूल्यों पर प्रभावः

समाजिक सूचना के प्रकटीकरण से निवेशकों को यह अध्ययन करने में सहायता प्राप्त होती है कि प्रति अंश आय पर सामाजिक जागरूकता पर किए गए व्ययों का क्या नकारात्मक प्रभाव हुआ है और विशेष निवेश से जोखिम को कम करने या उसमें अधिक रूचि सृजित करने के लिए क्या कुछ क्षतिपूरक सकारात्मक प्रभाव हुए है?

पूँजी बाजार में प्रतियोगिता करने वाली फर्मो में से जो उच्च प्रत्याशित भावी आयों के साथ ही पर्यावरणीय व अन्य कारणों से न्यूनतम प्रत्याशित जोखिम का पूर्वानुमान करती है, वे ही दीर्घकालीन कोषों को आकर्षित करने में सर्वाधिक सफल रहेंगी। कई अन्य लोग भी यह विश्वास करते हैं कि आचार नीति एवं मूल्यों पर विश्वास रखने वाले निवेशकर्ता एक उपभोक्ता समूह निर्मित करते हैं जो कम्पनी की सामाजिक चिन्ताओं को व्यक्त करता है। इस प्रकार के निवेशक एक विशिष्ट निवेश को पूर्णतया आचार–नीतिगत कारणों से छोड़ना पसन्द करेंगे और अपने निवेश निर्णयों में सामाजिक रूप से उत्तरदायी कम्पनियों का पक्ष लेने को वरीयता देंगे।

13.6 कम्पनी सामाजिक लेखांकन का क्षेत्र

ब्रूमैट ने 5 संभावित क्षेत्रों की पहचान की है, जिनमें कम्पनी सामाजिक लेखांकन उद्देश्य पाये जाते हैं:

1. शुद्ध आय योगदान
2. मानव संसाधन योगदान
3. सार्वजनिक योगदान
4. पर्यावरणीय योगदान
5. उत्पाद या सेवा योगदान

1. शुद्ध आय योगदान

'योगदान' शब्द में एक उपक्रम से संबंधित लाभ एवं लागतें दोनों समाविष्ट हैं। कम्पनी सामाजिक योगदान के क्षेत्र की इस परिभाषा में लेखांकन सूचना का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों से करने वाले अनेक उपयोगकर्ता सम्मिलित हैं। अन्य सामाजिक उद्देश्यों के प्रति निरन्तर बढ़ता हुआ ध्यानाकर्षण आय उद्देश्य की महत्ता को कम नहीं

करता है। अन्य सामाजिक उद्देश्यों के महत्व को मान्यता मिलने से आय उद्देश्य का महत्व ह्रासित नहीं होता है। इसके विपरीत, इससे कम्पनी की शुद्ध आय का महत्व, उन परिस्थितियों पर ध्यान केन्द्रित करने के कारण, जिनमें यह उत्पन्न हुई है, और अधिक बढ़ जाता है। इस अर्थ में, आय और अन्य उद्देश्यों के मध्य स्पष्ट सहसम्बन्ध होता है। एक सामाजिक उत्तरदायित्व को मान्यता न देने की असफलता संगठन की अल्पकालीन एकं दीर्घकालीन आय के प्रर्दशन को अवश्य प्रभावित करती है। इस प्रकार, अत्यधिक घण्टों के काम से बुरी कार्य दशाओं में भी उत्पादन स्तर को बनाए रखने की कामगारों की योग्यता को हानि होती है और उत्पाद की कमजोर गुणवत्ता के प्रति उपभोक्ताओं की प्रतिक्रिया अन्ततः विक्रय और आय को प्रभावित करती है। इस कारण से, कई लोगों के द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि आय उद्देश्य वित्तीय और सामाजिक दोनों लक्ष्यों के सम्बन्ध में, व्यवसाय की कार्यक्षमता का पूर्ण परीक्षण है।

2. मानव संसाधन योगदान

यह योगदान संगठनात्मक क्रियाओं का व्यक्तियों, जो संगठन के मानव संसाधनों को निर्मित करते हैं, पर प्रभाव परिलक्षित होता है। इन क्रियाओं में भर्ती की पद्धतियाँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम; अनुभव निर्माण; कार्य परिवर्तन; कार्य गहनीकरण; मजदूरी एवं वेतन स्तर; निहित लाभ योजनाऐं; प्रबन्ध–श्रम सम्बन्ध; कर्मचारी कौशल; कर्मचारी ज्ञान; कर्मचारी अभिवृत्ति, कर्मचारी स्व साक्षात्कार; कर्मचारी एवं संगठनात्मक उद्देश्यों में सामंजस्य; पारस्परिक विश्वास एवं; कार्य–सुरक्षा; कार्य शक्ति का स्थायित्व; कर्मचारियों के पृथकीकरण एवं पुनः आमंत्रण पद्धतियाँ; स्थानान्तरण एवं प्रोन्नति नीतियाँ; पेशेवर स्वास्थ्य; अवांछित तनाव से मुक्ति; कार्य का भौतिक वातावरण; कार्य पर सुरक्षा इत्यादि सम्मिलित हैं।

3. सार्वजनिक योगदान

यह क्षेत्र संगठनात्मक क्रियाओं के विशेषतः संगठन से वाह्य व्यक्यिों पर प्रभाव पर ध्यान देता है। उदाहरणार्थ, सामान्य दानशीलता–शैक्षणिक, सांस्कृतिक या पुण्यार्थ संस्थाओं के प्रति योगदान, सार्वजनिक परिवहन क्षे़त्र, स्वास्थ्य सेवाऐं, शहरी आवास, दैनिक देखभाल केन्द्र, अल्पसंख्यक व्यवसाय, सामुदायिक समस्या समाधान, अल्पसंख्यक समूह कार्यक्रम एवं सामान्य स्वयं सेवी सामुदायिक क्रियाऐं; समान अवसर रोजगार पद्धतियाँ; दिव्यांग व्यक्यिों को रोजगार एवं करों के भुगतान इत्यादि के लिए वित्तीय या मानव संसाधनों के द्वारा समर्थन। कम्पनी उपक्रम सार्वजनिक हित के लिए जो योगदान कर सकते हैं, उसे सामाजिक लेखांकन की बहस में प्रायः नजरअन्दाज कर दिया जाता है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि रोजगार सृजन और रोजगार का प्रावधान उसी प्रकार सार्वजनिक योगदान है जिस प्रकार लोक सेवाओं का विकास, जिसमें प्रायः कम्पनियों का समुदायों में विस्तारण निहित होता है, सार्वजनिक योगदान की श्रेणी में आता है। दिव्यांगों का प्रशिक्षण एवं रोजगार एक महत्वपूर्ण कम्पनी सामाजिक योगदान है।

4. पर्यावरणीय/वातावरणीय योगदान

इस क्षेत्र में उत्पादन के पर्यावरणीय क्षेत्रों, जिसमें संसाधनों का प्रयोग, उत्पादन प्रक्रिया और उत्पाद, पुर्नउत्पादन चक्र सहित अन्य सकारात्मक पर्यावरणीय गतिविधियाँ आच्छादित होती हैं, को सम्मिलित किया जाता है। हाल के वर्षों में संगठन की क्रियाओं के नकारात्मक पक्ष जैसे वायु, जल, ध्वनि का प्रदूषण तथा पर्यावरण को हानि पहुँचाना इत्यादि की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। इसके अतिरिक्त, औद्योगिक क्रियाऐं गैर प्रतिस्थापनीय संसाधनों के शुद्ध उपयोग तथा ठोस अपशिष्ट के निस्तारण से शुद्ध उत्पादन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। कम्पनी सामाजिक उद्देश्य औद्योगिक उत्पादन के इन नकारात्मक वाह्य सामाजिक प्रभावों को रोकने और गैर प्रतिस्थापनीय संसाधनों के उपयोग एवं अपशिष्ट के उत्पादन को न्यूनतम करने वाली अधिक कार्यक्षमता पूर्ण तकनीकों को अपनाने में पाये गए हैं।

5. उत्पाद या सेवा योगदान

इस क्षेत्र का सम्बन्ध संगठनात्मक उत्पाद या सेवा के गुणात्मक क्षेत्रों से है। उदाहरणार्थ उत्पाद उपयोगिता, उत्पाद जीवन स्थायित्व, उत्पाद सुरक्षा, सेवा प्रदायक योग्यता के साथ–साथ उत्पाद या सेवा की कल्याण में भूमिका इत्यादि इसमें सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें उपभोक्ता सन्तोष, विज्ञापन में सत्यता, उत्पाद संवेष्ठन एवं लेबलिंग में पूर्णता एवं स्पष्टता भी सम्मिलित हैं। इनमें से अनेक बातें विपणन के दृष्टिकोंण से पहले से ही महत्वपूर्ण एवं ध्यान में रखने योग्य हैं। यह स्पष्ट है कि उत्पाद योगदान से सम्बन्धित सामाजिक उत्तरदायित्व क्षेत्र, विपणन के दृष्टिकोंण के लाभ पूर्ण क्षेत्र की तुलना में अधिक विस्तृत है।

13.7 सामाजिक लाभ एवं सामाजिक लागतें

कम्पनी सामाजिक लेखांकन एवं प्रतिवेदन मुख्यतः व्यावसायिक उपक्रम के सामाजिक उत्तरदायित्वों एवं गतिविधियों के कारण उत्पन्न सामाजिक लाभों एवं लागतों के मापन एवं प्रतिवेदन करने पर ध्यान केन्द्रित करता है। यह जानना अवश्यक है कि कौन से सामाजिक लाभ एवं लागतें ऐसे उत्तरदायित्वों एवं गतिविधियों से सम्बन्धित हैं।

सामाजिक लाभ

सामान्यतः 'सामाजिक लाभों' में निम्नांकित लाभ सम्मिलित हैं:

1. **उपलब्ध कराए गए उत्पाद एवं सेवाऐं :** व्यासायिक उपक्रम, सामान्यतः उत्पाद एवं सेवाऐं प्रदान करते है; इन्हें उपभोक्ताओं के द्वारा क्रय किया जाता है जो समाज को लाभ का प्रथम दृष्टया प्रमाण उपलब्ध कराता है। ऐसे लाभों के मूल्यांकन का प्रारंभिक बिन्दु मांग एवं पूर्ति की प्रति क्रिया से उत्पन्न विनिमय मूल्य है। दूसरे शब्दों में, एक मोटरगाड़ी जिसे रू0 1,00,000 में विक्रय किया जाता है, से क्रेता को, जोकि समाज का एक संघटक है, न्यूनतम रू0 1,00,000 रू0 के वर्तमान मूल्य के समान लाभ प्रदान किए जाने की प्रत्याशा मान ली जाती है। इस वर्ग के लाभों में सुविधाऐं, उपकरण तथा समाज के अन्य तत्वों को उपलब्ध स्थान, जिसके लिए किराया प्राप्त होता है, सम्मिलित हैं। किन्तु, उपलब्ध कराए गए उत्पाद एवं सेवाओं से प्रत्यक्ष प्रभावों के मूल्य माप की गणना में सावधानी की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ उपरोक्त वर्णित

मोटरगाड़ी से क्रेता को रू0 120,000 के अनुपात में वर्तमान मूल्य के बराबर उपयोगिता प्राप्त होती है और वह मोटरगाड़ी को अपने कई पड़ोसियों को उनके कार्यस्थल से लाने एवं ले जाने में भी निःशुल्क उपयोग करता है, जिससे उसके पड़ोसियों को (किन्तु स्वामी को नहीं) रू0 15,000 का अतिरिक्त लाभ होता है। विक्रेताफर्म के द्वारा प्रतिवेदित धनराशि, रू0 20,000 की उपभोक्ता की बचत को सम्मिलित करते हुए रू0 1,20,000 होगी न कि रू01,00,000 या रू0 1,35,000 (मोटरगाड़ी का स्वामी रू0 15,000 के सामाजिक लाभ को भी प्रतिवेदित कर सकता था)। महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष लाभों को टिप्पणियों में प्रतिवेदन करना चहिए किन्तु मॉडल में एकीकृत नहीं करना चाहिए, क्योंकि उन्हें प्रतिवेदन करने वाली ईकाई के द्वारा वास्तव में, प्रदान नहीं किया गया हैं।

2. **समाज के अन्य संघटकों को भुगतानः** कम्पनियाँ समाज के विभिन्न संघटकों को, जैसे –जैसे उनके द्वारा वस्तु एवं सेवाओं के लिए भुगतान किया जाता है, लाभ प्रदान करती हैं। प्रदत्त रोजगार का मूल्य पृथक से प्रकटीकृत किया जाना चाहिए; कर्मचारियों को भुगतान उन्हें हस्तान्तरित मुद्रा एवं उसे उनके प्रयोग हेतु उपलब्ध कराए जाने के रूप में सामाजिक लाभ का प्रतिनिधित्व करता है। चूँकि प्रयुक्त मानव संसाधनों के मूल्य को सामाजिक लागत के रूप में पृथक से प्रकटीकरण किया जाता है, प्रयुक्त सेवाओं के मूल्य से कम क्षतिपूरक पारिश्रमिक दिये जाने से शुद्ध सामाजिक आधिक्य में कमी आ जायेगी या सामाजिक कमी प्रकारान्तर से अधिक हो जाऐंगी।

अन्य महत्वपूर्ण भुगतानों में ऋण, योगदान, लाभांश, ब्याज कर एवं निर्धारण इत्यादि सम्मिलित है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि फर्म के द्वारा प्रदत्त मौद्रिक लाभ स्वयं मुद्रा ही है; प्राप्तकर्ता इकाई मुद्रा से क्या करती है, उसे उस पृथक ईकाई को ही क्रेडिट किया जाना चाहिए। ऐसी दशा में अप्रत्यक्ष लाभों को टिप्पणी के रूप में प्रतिवेदित किया जाना चाहिए किन्तु मॉडल में एकीकृत नहीं करना चाहिए।

3. **अतिरिक्त प्रत्यक्ष कर्मचारी लाभ :** अधिकांश निहित लाभों का मूल्य इस वर्ग में प्रतिवेदन करना चाहिए जैसे अनुभव प्रदान करने का मूल्य, प्रशिक्षण कार्यक्रम, विशेष अवसरों को प्रदान किया जाना और कार्य को पुरस्कृत करना जिससे कर्मचारी को मौद्रिक परिश्रमिक से काफी अधिक उपयोगिता प्राप्त होती हैं।

4. **दान की गयी कर्मचारी, उपकरण एवं सुविधाओं की सेवाऐं :** जब व्यावसायिक फर्म अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सेवायें अन्य संगठनों को उपलब्ध कराती हैं, तो कर्मचारियों को प्रदत्त परिश्रमिक से पृथक लाभ प्रदान किए जाते हैं। यह लाभ लागत पर अनुमानित किए जा सकते हैं, जिसे वाहय संगठन के द्वारा तब वहन किया जाता यदि वांछित योग्यता वाले लोगों को उनके द्वारा परिश्रमिक पर संविदान्तर्गत नियोजित किया गया होता।

5. **पर्यावरणीय सुधार** : जब कम्पनियाँ स्वच्छ क्षेत्र उपलब्ध कराती हैं, वृक्षारोपण करती हैं, बंजर भूमि का सुधार करती हैं और प्रदूषित तालाबों की सफाई

करती हैं, तो इससे समाज को लाभ प्राप्त होता है। कम्पनियों से उनके द्वारा किए गए पर्यावरणीय हानि के लिए धनराशि वसूल की जाती है, अतः उन्हें पूर्व में पर्यावरण को हुई क्षति की पूर्ति के माध्यम से प्रदत्त लाभों के लिए क्रेडिट भी दिया जाना चाहिए। इन लाभों का मूल्यांकन एक कठिन कार्य है और संभवतः परिव्यय की धनराशि में विशुद्ध रूप में परिलक्षित नहीं हो पाता है। सामुदायिक सर्वेक्षण, छाया–कीमत निर्धारण एवं आर्थिक अध्ययनों के उपयुक्त अनुमानों के विकास में प्रयुक्त किया जाना चाहिए।

6. **अन्य लाभ :** कम्पनियाँ समाज को ऐसे लाभ भी प्रदान कर सकती हैं, जो उपर्युक्त वर्गों में नहीं आते हैं। इनमें निःशुल्क दैनिक देखभाल केन्द्रों, अल्पसंख्यक उपक्रमों को विशेष सहायता एवं सार्वजनिक रूचि के टेलीविजन कार्यक्रमों को विज्ञापन मूल्य से अधिक पर प्रायोजित करना जैसे कार्यक्रम सम्मिलित किए जाते है।

सामाजिक लागतें :

'सामाजिक लागतों' में सामान्यतया निम्नांकित लागतों को सम्मिलित किया जाता है :

1. **अधिग्रहीत वस्तु एवं सेवाऐं :**एक इकाई के द्वारा कच्ची सामग्री की प्राप्ति समाज के प्रति त्याग की भांति है, क्योंकि ऐसे कच्चे माल को वैकल्पिक रूप में प्रयोग किया जा सकता था।
2. **क्रय किए गए भवन एवं उपकरणः** जब प्रतिवेदन कर रही इकाई किसी भवन या किसी उपकरण को प्राप्त करती है, तो इससे उसकी उपयोगिता शेष समाज के लिए तब तक समाप्त होती है, जब तक वह संबंधित इकाई के द्वारा धारित रहती है। समाज को इस लागत का अनुमान विनिमय कीमत जिसे उत्पादक की बचत हेतु नीचे की ओर समायोजित किया गया हों, से किया जाना चाहिए। वास्तव में, इस दृष्टिकोंण में समाज की कई लागत नहीं होगी क्योकि स्थायी सम्पत्ति का प्रयोग उनके स्वामी द्वारा किया जा रहा है, सम्पूर्ण लागत उस समय उदय हुई मानी जायेगी, जिस समय शेष समाज से प्रतिवेदक ईकाई को संपत्ति हस्तान्तरित होती है, और इसका मापन भावी लाभों के कटौती किए गए वर्तमान मूल्य, जिसे विक्रेता के द्वारा तब प्राप्त किया गया होता, यदि उस संपत्ति को विनिमय में त्याग नहीं किया जाता, के आधार पर किया जाना चाहिए।
3. **प्रयुक्त श्रम एव सेवाऐं :** प्रयुक्त मानवीय सेवाओं की समाज को लागत, कर्मचारियों द्वारा प्रदत्त समय एवं किए गए प्रयास के रूप में त्याग में होती है (कर्मचारियों के द्वारा समाज के संघटक के रूप में); इसे संभवतः उन लाभों के द्वारा अनुमानित किया जा सकता है, जो वह वैकल्पिक रोजगार और अन्य क्रियाओं में प्राप्त कर सकते थें। इससे मापन की कठिन समस्याऐं उत्पन्न होती हैं। जब मापन में अत्यधिक वस्तु परकता समाहित होती है, तो कर्मचारियों की सेवाओं का मूल्य निर्धारण उन्हें प्रदत्त धनराशि के कम उपयोग, लापरवाही,

पक्षपात, उत्पादकों की बचत और इसी प्रकार की विधियों से जाना उचित होगा।

4. **विभेद** : व्यवसायिक इकाइयों की दो प्रकार के विभेद में संलग्नता हो सकती है :

वाह्य विभेद या कार्य में लेने में विभेद और आन्तरिक विभेद या कार्य में तैनाती, प्रोन्नति और प्रशिक्षण में विभेद। वाह्य विभेद उन महिलाओं एवं अल्पसंख्यकों (और विभेद के द्वारा लक्षित कोई अन्यवर्ग) जो अन्यथा कम्पनी के द्वारा कार्य पर लिए जा सकते थे, पर प्रत्यक्ष लागत आरोपित करता है। उसकी समाजिक लागत आय की हानि और वंचित हुए अनुभव के मूल्य का वर्तमान मूल्य है।

आन्तरिक विभेद की सामाजिक लागत एक वर्ष की प्रोन्नति में विलम्ब के कारण जीवन पर्यन्त आय और अनुभव के त्याग का वर्तमान मूल्य है।(सतत विभेद में एक वर्ष के पश्चात की अवधि में उन वर्षो को सामाजिक प्रतिवेदन में दिखाया जायेगा) आन्तरिक विभेद मूल्य निर्धारण में अपेक्षाकृत सरल है क्योंकि एक सीमित मात्रा में विशिष्ट रूप से पहचाने गए व्यक्तियों की संलग्नता होती है ।

5. **कार्य सम्बन्धित चोटें एवं बीमारियाँ** : व्यावसायिक इकाई एवं उसकी क्रियाओं से सम्बन्धित कोई भी चोट या/अथवा बीमारियाँ सामाजिक लागत की तरह प्रतिवेदित होनी चाहिए। चोट या बीमारी की लागत का अनुमान आय की हानि के साथ परेशानी, नैराश्य एवं विलम्बित अनुभव के लिए वृद्धि को जोड़कर आयी धनराशि के वर्तमान मूल्य के रूप में लगाया जाना चाहिए। यह लागत, वास्तव में, सुरक्षा उपकरणों की स्थापना, अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों के उन्मूलन, स्वाथ्य अनुश्रवण एवं समान उपायों के द्वारा कम की जा सकती है।

6. **प्रयुक्त सार्वजनिक सेवाऐं एवं सुविधाऐं** :इस वर्ग में पुलिस एवं अग्नि शमन, वैधानिक एवं न्यायिक प्रणाली तथा समस्त स्तरों पर सरकारी गतिविधियों में प्रतिवेदक इकाई का अंश सम्मिलित होता हैं। इनमें से बहुत सी सेवाऐं इतनी मिश्रित होती हैं कि एक इकाई के अंश का पृथक अनुमान अपवाद पूर्ण रूप से कठिन होता है। कर भुगतान की धनराशि को प्रारंभिक बिन्दु के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, औद्योगिक अध्ययनों को मार्गनिर्देशों के निर्माण एवं उद्योग के भीतर समायोजन कारकों की स्थापना के लिए आयोजित किया जा सकता है।

7. **पर्यावरणीय क्षति** : व्यावसायिक इकाई उत्पादन एवं अपक्षय वस्तुओं के निस्तारण की प्रक्रियाओं के माध्यम से स्पष्टतः पर्यावरणीय क्षति पहुँचाती हैं किन्तु क्षति सुपुर्दगी वाहनों, विक्रयकर्ताओं के वाहनों, निर्माण कार्यों एवं कुछ विज्ञापनों से भी पहुँचती है। क्षति कई प्रकारों में होती है जैसे वायु एवं जल प्रदूषण, शोर, प्लांट के जीवन की क्षति, भौगौलिक सतहों की क्षति, गन्दगी एवं मल–मूत्र और दृश्य प्रदूषण के कारण भी हो सकती है। पर्यावरणीय क्षति के मापन में उद्देश्य समाज को इकाई की क्रियाओं एवं भूलों के कारण उपयोगिता

की हानि को अनुमानित करना है। जल प्रदूषण की दशा में, मनोरंजन उपयोगिता की हानि, नष्ट हुए पेड़–पौधे एवं मत्स्य जीवन के मूल्य की हानि, नदी के प्रवाह को ठीक करने की बढ़ी हुई लागत और जलधारा के मार्ग के निकटवर्ती जीवन दशाओं में अवरोध के अनुमान वांछित हो सकते है। वायु प्रदूषण के लिए प्रदूषण जनित बीमारी के कारण (चिकित्सा लागतें, उत्पादकता की क्षति, जीवन प्रत्याशा में कमी और परेशानी) वाह्य परिवेश को क्षति, जीवन की दशाओं की क्षति एवं वनस्पति जीवन की क्षति या नष्ट होने के कारण उपयोगिता की हानि के अनुमानों की आवश्यकता हो सकती है।

8. **समाज के अन्य संघटकों के लिए भुगताान :** उपभोक्ता, ऋणदाता, विनियोजक एवं अन्य प्रतिवेदक इकाई को भुगतान करते हैं; ऐसा करने में वे उस उपयोगिता का त्याग कर रहे होते हैं जो ऐसी क्रय शक्ति में निहित होती है। ऐसा त्याग समाज को अर्थात प्रतिवेदक ईकाई की लागत होती है, उपभक्ताओं से भुगतानों को प्रदत्त वस्तु एवं सेवाओं के मूल्य के सापेक्ष रखा जा सकता है, किन्तु प्रस्तावित सकल प्रकटीकरण तब अधिक सूचना पूर्ण होंगे जब बाजार अपूर्णताओं से उत्पाद या सेवाओं के मूल्य और उनके लिए किए भुगतान के बीच महत्वपूर्ण अन्तर उत्पन्न हो।

13.8 सामाजिक लागतों एवं लाभों का मापन

सामाजिक लेखांकन एवं प्रतिवेदन में सबसे बड़ी समस्या वैध एवं विश्वसनीय मूल्यांकन तकनीकों का स्पष्टतया अभाव है। सामाजिक मापन में प्रायः वस्तुओं एवं सेवाओं और प्रभावों जिनको बाजार में विनिमय नहीं किया गया है, के मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है, और परिणाम स्वरूप उनका कोई अभिलिखित विनिमय या बाजार मूल्य नहीं होता है। विनिमय मूल्यों को व्यावसायिक लेखांकन का आधार माना जाता है। किन्तु विनिमय मूल्य प्रायः उपलब्ध नहीं होते और सामाजिक मूल्य के बहुत अच्छे संकेतक नहीं होते हैं। अतः, सामाजिक लाभों एवं लागतों के कुछ अन्य मापों को विकसित करने की आवश्यकता है। सामाजिक मापन में एक ईकाई के द्वारा प्रदत्त लाभ या उपयोगिता तथा समाज पर आरोपित लागत या त्याग अनुमानित करने की आवश्यकता होती है। सामाजिक मापन के लिए अनेक दृष्टिकोणों का उपयोग किया जा सकता है। :

1. **'सरोगेट' मूल्यांकन :** जब कोई वांछित मूल्य प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता है, तो एक 'सरोगेट' मूल्य को अनुमानित करने की आवश्यकता होती है अर्थात कोई मद या घटना जिसमें प्रश्नगतमद के लगभग समान उपयेगिता या त्याग के होने की तर्कपूर्ण प्रत्याशा है। उदाहरणार्थ माना कि हम एक कम्पनी के द्वारा किसी सामुदायिक समूह को ऋण के रूप में प्रदत्त भवन सुविधा के मूल्य को अनुमानित करना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में, यदि किराए पर प्रदत्त वाणिज्यिक सुविधा की समान उपयोगिता है, तो ऐसे समूह के द्वारा देय किराए की धनराशि के निर्धारण के द्वारा एक 'सरोगेट' मूल्यांकन प्राप्त किया जा सकता है। सरोगेट मूल्यांकन की अपनी कमियॉ हैं; एक गलत मापन हो सकता है या एक त्रुटिपूर्ण सरोगेट का चयन हो सकता

है, जो प्रश्नगत मद के मूल्य से पर्याप्त रूप में सम्बन्धित नहीं है। इन कमियों के बावजूद, सरोगेट मूल्यांकन कम्पनी सामाजिक लेखांकन में सर्वाधिक उपयोगी उपकरणों में से एक है।

2. **सर्वेक्षण तकनीकें :** सर्वेक्षण तकनीकों में समाज के प्रभावित संघटक जो त्याग करते हैं या जो उपयोगिता प्राप्त करते हैं, से सामाजिक लागत एवं लाभों के मापन के लिए सूचनायें प्राप्त करना सम्मिलित है। इसमें, एक साधारण दृष्टिकोंण, व्यक्तियों से प्रत्यक्ष रुप से यह पूछना है कि उनके लिए कोई कितना मूल्यवान है । इस प्रत्यक्ष पूछताछ में अनेक मापदण्डों की पूर्ति हो जाती है :
   (अ) प्रभावित व्यक्ति के उपयोगकर्ता को प्रश्नगत मद के उस पर प्रभाव की स्पष्ट समझ होनी चाहिए।
   (ब) इस प्रभाव को मौद्रिक इकाइयों से सम्बन्धित करने की उसमें योग्यता होनी चाहिए (या तो प्रत्यक्ष रूप में या सरोगेट के उपयोग के माध्यम से)
   (स) उसे एक सत्य उत्तर देने हेतु तत्पर होना चाहिए या कम से कम असत्य बोलने के लिए कोई महत्वपूर्ण कारण नही होना चाहिए।

3. **पूर्व स्थिति में लाने या छोड़ देने की लागत :** अनेक सामाजिक लागतें क्षति को हटाने या रोकने के लिए आवश्यक मौद्रिक परिव्यय के अनुमान के द्वारा मूल्यांकित की जा सकती हैं। कुछ सामाजिक प्रभाव हटाये नहीं जा सकते हैं और ऐसी दशाओं में, पूर्व स्थितियों में लाने की लागत के अनुमान को ऐसी अतिरिक्त क्षति के अनुमान के साथ पूरित किया जाता है। एक उदाहरण, वर्षाकाल में सड़कों से वाहनों को हुई क्षति का हो सकता है। इस क्षति को रोका जा सकता है यदि समुचित सावधानी का प्रयोग किया जाय। माना कि कार को रू0 3000 की क्षति हुई, किन्तु रोकथाम के उपायों की लागत मात्र रू0 1500 होती, अतः रू0 1500 का मूल्य समुचित रूप से सामाजिक लागत को आवंटित किया जा सकता है।

4. **मूल्यांकन :** कुछ निश्चित वस्तुओं, भवनों और भूमि के मूल्य निर्धारण के लिए स्वतन्त्र मूल्यांकनों का प्रयोग उपयोगी होता है। इनसे प्रायः बाजार मूल्य के विशेषज्ञ अनुमान से कुछ अधिक ज्ञात नहीं होता है और इस प्रकार यह वाह्य विशेषज्ञ के द्वारा किए गए सरोगेट मूल्यांकन जैसा ही है। जब मूल्यांकनों का उपयोग किया जाता है, यह आवश्यक है कि हम उनके लिए आधार को समझें और तद्नुसार परिणामों का निर्वचन करें।

5. **विश्लेषण :** कई बार उपलब्ध समंकों का एक आर्थिक और सांख्यिकीय विश्लेषण मूल्य के एक वैध और विश्वसनीय माप को उत्पन्न करता है, शिक्षा की बढ़ती आय अर्जन मूल्य का अनुमान तुलनात्मक आय अर्जन दरों और जीवन प्रत्याशा के वर्तमान मूल्य विश्लेषण पर निर्भर करता है।

उपरोक्त मापन दृष्टिकोंण सामान्यतया किसी भी सामाजिक मापन समस्या हेतु पर्याप्त चयन समूह उपलब्ध कराते हैं। किन्तु इनका उपयोग

सावधानी एवं समुचित समझ के साथ प्रत्येक दृष्टिकोण की कमजोरियों को पूर्ण रूप से मान्यता देते हुए और मापन किए जाने वाले गुणों पर सावधानीपूर्वक ध्यान देते हुए किया जाना चाहिए। सच्चर समिति के प्रतिवेदन ने यह सुझाव दिया है कि कम्पनी सामाजिक प्रतिवेदनों को मात्रात्मक एवं मौद्रिक दोनों रूपों में विकसित किए जाने की आवश्यकता है।

13.9 कम्पनी सामाजिक लेखांकन के दृष्टिकोंण

कम्पनी सामाजिक लेखांकन में कई विभिन्न दृष्टिकोंण उपयोग किए जाते हैं। किन्तु, कोई भी एक दृष्टिकोंण व्यापक रूप में सामाजिक लेखांकन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त दृष्टिकोंण के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है। सामाजिक लेखांकन में इन दृष्टिकोणों में से कुछ निम्नवत हैः

(i) लागत – लाभ विश्लेषण दृष्टिकोंण
(ii) सामाजिक आर्थिक परिचालन विवरण दृष्टिकोंण
(iii) समेकित कल्याण सैद्धान्तिक दृष्टिकोंण
(iv) वर्णनात्मक दृष्टिकोंण
(v) लक्ष्योन्मुख दृष्टिकोंण
(vi) मूल्य सम्वर्द्धनदृष्टिकोंण
(vii) पिक्टोरियल या दृश्यात्मक दृष्टिकोंण
(viii) नियामक आवश्यकताऐं

(1) लागत – लाभ विश्लेषण दृष्टिकोंण :

यह दृष्टिकोंण अमेरिका के ए0बी0टी0 एसोसिएट्स द्वारा विकसित एवं उपयोग में लाया गया, इस दृष्टिकोंण के अन्तर्गत सामाजिक सूचना को मात्रात्मक प्रारूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके दो भाग होते हैं जैसे :

(i) सामाजिक आय विवरण और
(ii) सामाजिक आर्थिक चिट्ठा

इस दृष्टिकोंण का उद्देश्य कम्पनी गतिविधियों का इसके विभिन्न संघटकों पर पूर्ण प्रभाव को निर्धारित करना हैं। सामाजिक आय विवरण भाग कर्मचारियों, स्थानीय समुदाय एवं सामान्य जनता को सामाजिक लाभ एवं सामाजिक लागतें प्रदान करता है। सामाजिक आर्थिक चिट्ठे का द्वितीय भाग संपत्ति पक्ष में पूंजीगत प्रकृति के सामाजिक विनियोग जैसे– शहरी क्षेत्र, जल संक्षरण, सड़कें, भवन, अस्पताल, एम्बुलैन्स, स्कूल, क्लब इत्यादि को प्रदर्शित करता है और दायित्व पक्ष में संगठन की समता पूॅजी एवं सामाजिक समता पूॅजी को प्रदर्शित करता है।

इस दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में कम्पनी गतिविधियों के सम्पूर्ण प्रभाव का निर्धारण करना है। सामाजिक आय विवरण का प्रारूप तालिका संख्या 13.1 मे दिया गया हैं। यह व्याख्या करता है–(1) कर्मचारियों को सामाजिक लाभ एवं लागत (2) समुदाय को सामाजिक लाभ एवं लागत और (3) सामान्य जनता को सामाजिक लाभ एवं लागत। अन्ततः यह कर्मचारियों, समुदाय और सामान्य जनता को हुई शुद्ध सामाजिक आय का प्रकटीकरण करता है ।

सामाजिक आय विवरण फर्म के सामाजिक लाभों के लिए मौद्रिक लाभों का मात्राकरण उपलब्ध कराता हैं। इन लाभों को सकारात्मक प्रभावों अथवा समाज के संसाधनो में अभिवृद्धि करने वाली कम्पनी गतिविधियों के द्वारा सृजित संसाधनो के रूप में परिभाषित किया जाता हैं। सामाजिक लागतें कम्पनी की गतिविधियों के परिचालन में लागतों के त्याग पर प्रयुक्त संसाधन हैं। शुद्ध सामाजिक आय फर्म की गतिविधियों के कारण समाज के संसाधनों को हुआ शुद्ध लाभ या हानि है।
सामाजिक आर्थिक चिटठे के प्रारूप को तालिका संख्या 13.2 में प्रदर्शित किया गया है।

सामाजिक लेखांकन के आर्थिक चिटठे वाले भाग में सामाजिक सम्पत्तियों एवं सामाजिक दायित्वों की सूचना समाविष्ट होती हैं। इस दृष्टिकोंण की उपयोगिता प्रदत्त मात्रात्मक सूचना के प्रस्तुतीकरण पर निर्भर करती है। किसी अतिरिक्त सूचना को टिप्पणी में दिया जाता है।

तालिका 13.1 31 मार्च............................ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए
एक्स0वाई0जेड0 का सामाजिक आय विवरण

विवरण	धनराशि
(i)<u>कर्मचारियो को लाभ एवं लागतें</u>	
(अ) कर्मचारियों को सामाजिक लाभ	
1. स्वास्थ्य एवं अस्पताल सुविधाऐं	XXX
2. शैक्षणिक सुविधाऐं	XXX
3. कैन्टीन सुविधाऐं	XXX
4. मनोरंजन एवं सांस्कृतिक कियाऐं	XXX
5. गृह निर्माण एवं शहरी क्षेत्र सुविधाऐं	XXX
(ब) <u>कर्मचारियों को सामाजिक लागत</u>	
1. छँटनी एवं ऐच्छिक बर्खास्तगी	XXX
2. कार्यकारी अधिकारियों के द्वारा अतिरिक्त कार्य के घण्टे जिनका भुगतान नहीं किया गया	XXX
<u>कर्मचारियों को शुद्ध सामाजिक लाभ</u>	
(ii) समुदाय को सामाजिक लाभ एवं लागतें	
(अ) समुदाय को सामाजिक लाभ	
1. पंचायत / नगरपालिका को स्थानीय करों का भुगतान	XXX
2. पर्यावरणीय सुधार	XXX
3. रोजगार क्षमता का सृजन	XXX
4. व्यवस्था का सृजन	XXX
(ब) समुदाय को सामाजिक लागत	
1. कम्पनी के प्लाण्ट के कारण आसपास के क्षेत्र में जीवन की लागत में वृद्धि	XXX
समुदाय को शुद्ध सामाजिक लाभ	
(iii) सामान्य जनता को सामाजिक लागत एवं लागतें	
(अ) सामान्य जनता को सामाजिक लाभ	
1. राज्य सरकारों को कर एवंशुल्क का भुगतान	XXX
2. केन्द्र सरकार को कर एवं शुल्क का भुगतान	XXX

(ब) सामान्य जनता को सामाजिक लागतें 1. राज्य सेवाओं का उपभोग– विद्युत सेवाऐं 2. केन्द्रीय सेवाओं का उपभोग– टेलीफोन/टेलीग्राम डाक एवं बैंकिग सेवाऐं सामान्य जनता को शुद्व सामाजिक लाभ शुद्व सामाजिक आय (i)+(ii)+(iii)	xxx xxx xxx xxx

तलिका 13.2 : 31 मार्च को समाप्त होने वाले वर्ण में एक्स0वाई0जेड0 का सामाजिक आर्थिक चिटठा

दायित्व	धनराशि	सम्पत्तियॉ	धनराशि
1. संगठनात्मक समता 2. कर्मचारियों द्वारा योगदान की गयी सामाजिक समता	xxx xxx	1- सामाजिक पूॅजी विनियोग शहरी क्षेत्र भूमि भवन (I) शहरी क्षेत्र (आवासीय एवं जन कल्याण भवन (II) कैन्टीन भवन (III) शहरी क्षेत्र जलापूर्ति एवं सीवरेज (IV) शहरी क्षेत्र सडकें (V) शहरी क्षेत्र विद्युतीकरण 2.अन्य सामाजिक सम्पत्तियॉ (I) उपकरण (II) अस्पताल उपकरण (III) अस्पताल वाहन एवं एम्बुलैन्स (IV) स्कूल उपकरण (V) क्लब खेल का मैदान/पार्क (VI) स्कूल बसें (VII) अन्य 3. मानवीय सम्पतियॉ	xxx xxx xxx xxx xxx xxx xxx xxx xxx xxx xxx xxx xxx
	xxx		xxx

(ii) **सामाजिक परिचालनात्मक विवरण दृष्टिकोंण**: यह दृष्टिकोण डेबिन लिनोवैस एवं राल्फ डब्ल्यू ईस्टस के द्वारा सुझाया गया। लिनोवैस ने सामाजिक प्रतिवेदन जिसका लक्ष्य एक ओर कम्पनी ने समाज के लिए क्या किया है और दूसरी ओर यह क्या करने में असफल रही हैं, पर केन्द्रित है के लिए सामाजार्थिक परिचालनात्मक विवरण के विकास को प्रस्तावित किया।

उनका सुझाव था कि एक फर्म को कम्पनी के आर्थिक चिटठे और आय विवरण के साथ सावधिक रूप में एक सामाजिक विवरण भी बनाना चाहिए। इसमें कम्पनी के कर्मचारियों जनता या पर्यावरण को लाभ पहुॅचाने के लिए कम्पनी के ऐच्छिक व्ययों का सारणीयन सम्मिलित होगा, जिसे उस कार्यक्रम की लागत के सापेक्ष समायोजित किया

जा सकता है जिसे संचालित नहीं किया गया किन्तु जिससे सुधार हो सकता था, यदि उसे लागू किया होता ।

ईस्टस ने एक उपक्रम के लिए प्रतिवेदन करने के विस्तृत मॉडल तथा उसके द्वारा समाज के प्रति योगदान के रूप में समस्त प्रत्यक्ष लाभों और लागतों के प्रकटीकरण को अनुमति प्रदान करना प्रस्तावित किया। इस मार्डल के अन्तर्गत मुख्य मान्यता यह थी कि एक फार्म समाज को कुछ देती है और समाज का कुछ उपयोग करती है और इस अर्न्तक्रिया को एक विवरण के रूप में जिसे सामाजिक आर्थिक परिचालनात्मक विवरण (एस0 ई0 ओ0 एस0) कहा जाता है, में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोंण के अनुसार फर्म सामाजिक गतिविधियों के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं का प्रस्तुतीकरण करती है। सकारात्मक पहलुओं को सामाजिक लाम और नकारात्मक पहलुओं को सामाजिक लागत कहा जाता है।

फर्म के शुद्व योगदान सामाजिक लाभों ओर सामाजिक लागतों के बीच अन्तर के द्वारा व्यक्त किया जाता हैं। यह दृष्टिकोण यह सलाह देता है कि एक फर्म को निश्चित समय अंतरालो में एक फर्म को सामाजिक क्षेत्रो में किए गये व्यय, कार्यक्रमों की लागत की क्षतिपूर्ति, जो संचालित न किए गये हों, किन्तु जिनसे सुधार आ सकता था, को प्रदर्शित करते हुए एक सामाजिक विवरण तैयार करना चाहिए।

एस0 ई0 ओ0 एस0 को बनाने के लिए विशिष्ट मूलभूत मार्ग निर्देश निम्नवत है :

- यदि एक सामाजिक लाभ की कार्यवाही के कानून को लागू करने या केन्द्र के नियमन की आवश्यकता है तो इसे एस0 ई0 ओ0 एस0 में सम्मिलित नहीं करना चाहिए।
- यदि एक सामाजिक लाभ की कार्यवाही कानून के द्वारा आवश्यक है किन्तु उसे ध्यान में नही रखा जाता है, तों ऐसी मद की लागत वर्ष की हानि है। यही व्यवहार उस मद को भी प्रदान किया जायेगा जिसे सरकारी अनुमोदन के बाद भी स्थगित रखा गया है।
- एक ऐसा कर्मचारी, जो सामाजिक लाभ की गतिविधियों अथवा सामाजिक संगठनों को समय देता हो, के वेतन ओर संबंधित व्ययों का समानुपातिक भाग सम्मिलित किया जाता है।
- सामाजिक संस्थानों को नकद और वस्तुओं के रूप में योगदान सम्मिलित किया जाता है। सामान्य जनता के अथवा कर्मचारियों के साधारण हित में सुविधाऐं स्थापित करने की लागत , यदि संघ अथवा सरकार के कार्यक्रम के बिना स्वैच्छिक रूप में किया जाता है, को सम्मिलित किया जाता है।
- भवनों या वस्तुओं पर लगाए गये सुरक्षा उपकरणों की स्थापना में स्वैच्छिक व्यय, जो कानून अथा संविदा के द्वारा आवश्यक न हो, सम्मिलित किया जाता है।
- एक खेल का मैदान या कर्मचारियों के लिए नर्सरी सुविधा और पड़ोंसियों के लिए की स्वैच्छिक लागत को सम्मिलित किया जाता है। प्रत्येक लागू अनुवर्ती वर्षो के लिए इकाई की परिचालनात्मक लागत को सम्मिलित किया जाता है।

- स्वास्थ्य सुन्दरता अथवा सुरक्षा को बढ़ाने के लिए डिजाइन और व्यावसायिक भवन को सुविधाओं पर अतिरिक्त लागत को सम्मिलित किया जाता है । सामाजिक आर्थिक परिचालनात्मक विवरण का प्रारूप सारिणी 13.3 में दिया गया है। बाद में ली शीडलर ने सामाजिक लेखांकन एवं प्रतिवेदन के एक नए मॉडल का विकास किया और दो आय विवरण प्रारूपों का सुझाव दिया। एक लाभ प्राप्त करने वाली संस्थाओं के लिए और दूसरा लाभ न प्राप्त करने वाली संस्थाओं के लिए, जिसका शुद्व परिणाम समाज को ईकाई के शुद्व योगदान – शुद्व सामाजिक लाभ या हानि के रूप में प्रतिबिम्बित होता है।

तलिका 13.3 : 31 मार्च 2012 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए एक्स0वाई0जेड0 लिमिटेड का सामाजिक आर्थिक परिचालनात्मक विवरण

(1) सामाजिक कार्यवाही– व्यक्ति सम्बन्धी	
(अ) सुधार	
अल्पसंख्यक उपक्रम तकनीकी सहयोग कार्यक्रम	4000
आपातकालीन (अति आवश्यक) बाढ़ सहायता	3000
दिव्यांग कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	8000
अधिशासीसमय–अस्पताल ट्रस्टी शिप	5000
अल्पसंख्यक भर्ती कार्यक्रम–अतिरिक्त प्रतिशत एवं टर्नओवर लागत	6000
दैनिक देखभाल केन्द्र (बच्चों एवं कर्मचारियों हेतु) स्थापना एवं रखरखाव लागत (स्वैच्छिक रूप में स्थापित)	11000
	37000
(ब) घटाया : हानियॉ	16000
हाइड्रोलिक सुरक्षा नियंत्रण प्रणाली के स्थगन की लागत	
	16000
वर्ष में शुद्व सुधार	21000
(2) सामाजिक कार्यवाही– पर्यावरण सम्बन्धी	
(अ) सुधार	22000
प्रदूषण नियंत्रण हेतु जल गुणवत्ता अनुश्रवण प्रणाली की स्थापना की लागत	41000
कम्पनी के स्वामित्व में विद्यमान उजड़े एवं गंदगी प्रभावित क्षेत्र की भूमि को साफ करने लागत	4000
राज्य पर्यावरण संरक्षण एजेन्सी को प्रदत्त अधिशासी निःशुल्क विमर्श सेवा	
	67000
(स) घटाया : हानियां	
तरल अपशिष्ट निपटान सुविधा के स्थगन की लागत	60000
वायु प्रदूषण के न्यूनीकरण धुॲारहित उपकरण को स्थगन की लागत	19000

वर्ष में शुद्व कमी	79000
(3)सामाजिक कार्यवाही– उत्पाद सम्बन्धी	
(अ) सुधार	12000
गृह उपयोग में आने वाले असुरक्षित उत्पाद के उत्पादन को बन्द करना	
प्रक्षेपित वार्षिक शुद्वआय	23000
सरकारी उत्पाद सुरक्षा समिति को प्रदत सुरक्षा इन्जीनियर का वेतन	21000
	44000
(ब) घटायाः हानियॉ	
सुरक्षा समिति द्वारा संस्तुत– निर्माणी क्रिया से उत्पन्न विध्वंश को कम करने की प्रक्रिया को पुनः डिजाइन करने की लागत , जिसका क्रियान्वयन स्थागित कर दिया गया है।	36000
	08000
वर्ष में शुद्व सुधार (2011–12)	
जोड़ा : 1/04/2011 को शुद्व संचयी सामाजिक आर्थिक सुधार	170000
31 मार्च 2012 तक शुद्व संचयी सामाजिक आर्थिक सुधार	178000

(iii) एकीकृत कल्याण सैद्वान्तिक दृष्टिकोण : यह दृष्टिकोण उन समस्त गतिविधियों को ध्यान में रखता है, जिन्हें एक व्यावसायिक इकाई द्वारा संचालित किए जाने की अपेक्षा होती हैं। इस विचारधारा की अवधारणात्मक दृष्टिकोण को एचहॉर्म (1974) ने अपनी पुस्तक सामाजिक लेखांकन में भली–भांति सारांकित किया है। यह व्यावसायिक उपक्रमों की समस्त गतिविधियों का समाज की दृष्टि से एकीकृत मूल्यांकन को विकसित करने का उद्देश्य निर्धारित करता है।

इस विचारधारा में सामाजिक लाभ एवं सामाजिक लागतों से युक्त सामाजिक प्रतिवेदन की तैयारी निहित है। इन सामाजिक लागतों एवं सामाजिक लाभों को तालिका 13.4 में प्रस्तुतीकृत किया गया है, जिससे यह समझा जा सकता है कि कम्पनी सामाजिक लेखाकंन संरचना में सामाजिक लागतें जैसे श्रम, सामग्री, स्थायी सम्पत्तियॉ एवं पूँजी लागतें सम्मिलित होती है।

तालिका 13.4 : सामाजिक विवरण

समाजिक लागतें	₹	समाजिक लाभ	₹
(1)उत्पादन आधिक्यः		(1)उपभोक्ता की बचत/आधिक्यः	
1. श्रम प्रदर्शन	XXX	1. उत्पाद'अ'	XXX
2. स्थायी सम्पत्तियॉ	XXX	2. उत्पाद'ब'	XXX
3. सामग्री	XXX	3. उत्पाद'स'	XXX
4. पूँजी	XXX	4. उत्पाद'द'	XXX
5. उद्यमिता प्रदर्शन	XXX		
6. अग्रिम में प्रदर्शन परिणामों का भुगतान	XXX		

(2)नकारात्मक वाह्य प्रभावों का मूल्यः 1. कर्मचारी 2. जनसंख्या 3. कम्पनियां 4. सार्वजनिक उपक्रम		(2)उपभोक्ता की बचत/आधिक्यः 1. कर्मचारी 2. जनसंख्या 3. कम्पनियां 4. सार्वजनिक उपक्रम	
	XXX		XXX
शुद्ध सामाजिक लाभ	XXX XXX XXX XXX	शुद्ध सामाजिक लागत	XXX XXX XXX XXX
	XXX		XXX
	XXX		XXX
	XXX		XXX

उसी प्रकार, शुद्ध सामाजिक लाभों को गुणवत्तापूर्ण उत्पादों, उत्पाद सुरक्षा, उचित कीमतों और उत्पादों की नियमित आपूर्ति के रुप में भी प्रदान किया जाता है। यह व्यावसायिक कम्पनियों के लिए नकारात्मक बाह्य प्रभावों का निवारण करने तथा सकारात्मक वाह्य प्रभावों को प्रवर्तित करता है।

(iv) वर्णनात्मक अथवा विवरणात्मक दृष्टिकोण : अमेरिकन एकाउन्टिंग एसोसिएसन की समिति ने 'संगठनात्मक व्यवहार के पर्यावरणीय प्रभाव' पर प्रस्तावित इस विधि में कुछ निश्चित पर्यावरणीय प्रकटीकरणों को सम्मिलित किया है।ऐसे वर्णनात्मक प्रकटीकरणों की प्रकृति मात्रात्मक नहीं होती है। इन प्रकटीकरणों को वार्षिक वित्तीय विवरणों के साथ संलग्न किया जाता है। इस दृष्टिकोण में, एक फर्म अपनी सामाजिक गतिविधियों के सकारात्मक पहलुओं को रेखांकित करती है। समिति ने यह संस्तुत किया है कि प्रस्तावित प्रतिवेदन मॉडल को निम्नांकित के लिए पूर्णतया उपयोग किया जा सकता है :

(अ) आय विवरण में एक पृथक लाइन में पर्यावरणीय नियंत्रण व्ययों का प्रदर्शन।

(ब) कोष विवरण में पर्यावरणीय नियंत्रण व्ययों का पृथक से प्रकटीकरण।

(स) आर्थिक चिट्ठे में पर्यावरणीय नियंत्रण सुविधाओं का पृथक वर्गीकरण।

(द) पर्यावरणीय दायित्वों के लिए उपार्जन लेखांकन का अनुप्रयोग।

समिति ने आगे यह भी संस्तुत किया कि वर्तमान प्रतिवेदन प्रणाली को संगठन के द्वारा सामना की जा रही पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान और कम्पनी की वित्तीय स्थिति, आय अर्जन और व्यावसायिक गतिविधियों पर महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभावों के प्रकटीकरण में सहायता करनी चाहिए।

इस विधि में, कर्मचारी लाभ एवं सेवाओं, सामाजिक उपरिव्ययों, बस्ती/कस्बे के रखरखाव इत्यादि को प्रदर्शित करने वाली अनुसूचियां को तैयार किया जाता है और वार्षिक रिपोर्ट से संलग्नकों में प्रदर्शित किया जाता है। सामाजिक उपरिव्ययों में स्वास्थ्य शिक्षा, कैन्टीन, परिवहन सुविधाऐं इत्यादि सम्मिलित होते हैं। बस्ती रखरखाव की अनुसूचियों में भवन, जल, सीवरेज, इत्यादि पर व्यय सम्मिलित होते हैं। इसमें फर्म के सामाजिक संलग्नता पर मात्रात्मक मापन निहित होते हैं। वार्षिक रिपोर्ट के वित्तीय विवरण के भाग में इसे एक अतिरिक्त टिप्पणी के रुप में दिखाया जाता है।

(v) लक्ष्योन्मुख दृष्टिकोण :यह दृष्टिकोण इस तथ्य को मान्यता प्रदान करने पर आधारित है कि प्रायः कम्पनियों के विस्तृत सामाजिक आर्थिक उद्देश्यों का वर्णन करने वाले लक्ष्य एवं उद्देश्य हो हैं ,जिन्हें कम्पनियां अपने लिए निर्धारित करती हैं। इस प्रकार, इसमें दो पहलू सम्मिलित होते हैं :

(अ) सामाजिक लक्ष्यों का चयन एवं

(ब) इन लक्ष्यों के अनुसार कम्पनी के प्रदर्शन का प्रतिवेदन और मूल्यांकन।

अन्य सामाजिक दृष्टिकोणों की तुलना में, इस अवधारणा के लाभ हैं, क्योंकि कम्पनी के प्रदर्शन को प्रतिवेदित करने वाले संकेतकों का चयन मनमाने ढ़ंग से नहीं होता बल्कि उन्हें आलोच्य विशिष्ट लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से व्युत्पादित किया जाता है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विस्तृत गतिविधियों का मापन एवं विश्लेषण किया जाता है। परम्परागत वित्तीय प्रतिवेदन एवं सामाजिक प्रतिवेदन प्रणालियों को एकीकृत करने का लाभ भी इसमें प्राप्त होता है।

(vi) मूल्य सम्वर्द्धन दृष्टिकोण : मूल्य सम्वर्द्धन लेखांकन के अन्तर्गत, वाह्य भुगतानों के पश्चात उपक्रम की उपार्जित आय को ध्यान में रखा जाता है। इसमें वस्तु एवं सेवाओं में प्रबन्ध एवं कर्मचारियों के प्रयासों के परिणामस्वरुप, उपक्रम द्वारा वांछित मूल्य संवर्द्धन परिलक्षित होता है।

(vii) चित्रमय दृष्टिकोण : इस दृष्टिकोण में, स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र, स्कूल, अस्पताल आदि, जो फर्म के द्वारा संचालित होते हैं, का चित्रमय प्रदर्शन वार्षिक प्रतिवेदनों में किया जाता है।

(viii) नियामक आवश्यकताऐं :यह प्रतिवेदन अन्य विधियों के द्वारा भी प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनमें उपक्रम की सामाजिक गतिविधियों को अध्यक्ष के प्रतिवेदन, निदेशकों या अंकेक्षकों के प्रतिवेदनों में प्रदर्शित किया जाता है। इस विधि का प्रयोग अनेक सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के उपक्रमों के द्वारा किया जाता है क्योंकि यह प्रस्तुत करने में सरल है।

कम्पनी (निदेशक मण्डल के प्रतिवेदन में विवरणों का प्रकटीकरण) नियम, 1988 के द्वारा उर्जा संरक्षण, तकनीकी के संविलयन एवं विदेशी आय अर्जन तथा उसे देश से बाहर ले जाने से संबंधित इस नियम के आवश्यक प्रकटीकरण के माध्यम से भी सामाजिक प्रतिवेदन के कुछ पहलू आच्छादित होते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था लोकतन्त्र एवं समाजवाद के सिद्धान्तों पर आधारित है और इस प्रकार देश में सामाजिक अंकेक्षण का अत्यधिक महत्व है। इस कारण से सामाजिक अंकेक्षण के लिए भारत सरकार ने कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा

227(4ए) के संशोधन तथा अन्य कम्पनियॉ (अंकेक्षण रिपोर्ट) आदेश, 1988 के द्वारा एक आदेश भी निर्गत किया है।

13.10 कम्पनी सामाजिक प्रतिवेदन के लाभ

एक सामाजिक विवरण के प्रकाशन से किसी संगठन को अनेक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। इनमें निम्नांकित सम्मिलित है :

- समाज एवं प्रबन्ध को सम्पूर्ण चित्र का प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है, जिससे सभी सही निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।
- प्रबन्ध को उचित नीतियों एवं प्राथमिकताओं के निर्धारण में सहायता करता है।
- विपरीत प्रचार से बचा जा सकता है।
- बेहतर छवि स्थापित होने से सरकार एवं जनता से अधिक समर्थन प्राप्त होता है।
- विपणन एवं अधिक उपभोक्ता समर्थन में सहायता प्राप्त होती है।
- सामाजिक प्रतिबद्धता का साक्ष्य उपलब्ध होता है।
- कर्मचारियों का मनोबल सुधरता है।
- समस्त संबंधित पक्षकारों जैसे बैंक, बीमा, सरकार से बेहतर व्यावसायिक सम्बन्ध बनते हैं।
- सामाजिक समस्याओं के समाधान से संगठन के दीर्घकालीन विकास में सहायता प्राप्त होती है।
- उच्च गुणवत्तापूर्ण कर्मचारियों को आकर्षित करने एवं धारित रखने में सहायता प्राप्त होती है।
- साधारण जनता से प्राप्त फीडबैक से आवश्यक परिवर्तनों पर ध्यान केन्द्रित होता है।
- अंशधारियों या सदस्यों के अत्मविश्वास में सुधार आता है।
- अनेक कम्पनियां यह अनुभव कर रही हैं कि सामाजिक रुप में उत्तरदायी संगठन कर्मचारियों में उत्पादकता, मनोबल और प्रतिबद्धता के लिए अच्छा होता है।

व्यक्तिगत संगठनों द्वारा प्राप्त लाभों के अतिरिक्त अन्य अनेक रुचि रखने वाले पक्षकारों जैसे सरकारी अभिकरण, उपभोक्ता परिषदें, व्यापार परिषदें, नवीन मीडिया, इत्यादि भी सूचना की तत्काल उपबल्धता से लाभान्वित होते हैं।

13.11 कम्पनी सामाजिक प्रतिवेदन की सीमायें

यद्यपि सामाजिक उत्तरदायित्व और प्रतिवेदन करने के महत्व को अनेक भारतीय कम्पनियों मान्यता प्रदान की जा रही है, किन्तु इसकी प्रगति एवं प्रदर्शन निम्नांकित कारणों से बाधित हो रहा है :

- **अनिवार्य नहीं** : निजी क्षेत्र की कम्पनियों के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व की सूचना का प्रकटीकरण अनिवार्य नहीं है। सार्वजनिक उपक्रमों की इकाइयों की

दशा में भी 'सामाजिक उपरिव्ययों की अनुसूची का आदेश' सामाजिक अंकेक्षण की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है।

- **कोई प्रमापित प्रारुप नहीं** :सामाजिक लेखाकार के पास अपने लेखों तथा लेखांकन प्रतिवेदनों के मार्गदर्शन हेतु कोई सुस्थापित अवधारणाऐं, परम्परायें, मान्यताऐं और स्वयंसिद्ध सिद्धान्त नहीं होते हैं।
- **सामाजिक प्रतिवेदन की सुस्पष्ट परिभाषा का अभाव** : प्रत्येक उपक्रम सामाजिक उत्तरदायित्व के मापन, प्रतिवेदन एवं मूल्याकंन की विभिन्न विधियों को अपनाता है, क्योंकि सामाजिक प्रतिवेदन की कोई सुस्पष्ट परिभाषा एवं कार्यविधियां नहीं है।
- **सामाजिक अंकेक्षकों का कोई संवर्ग नहीं** : सामाजिक अंकेक्षकों का कोई पृथक संवर्ग नहीं होता है और यह स्पष्ट नहीं होता कि ऐसा अंकेक्षण कैसे और किसके द्वारा किया जाएगा।
- **सामाजिक लागत एवं लाभों का अंकेक्षण एक जटिल कार्य** : यह अत्यधिक संशयपूर्ण है कि केवल लेखांकन विशेषज्ञ ही व्यावसायिक व्यवहार के बहुआयामी प्रभावों को सम्पन्न करने के योग्य हैं।

13.12 भारत में कम्पनी सामाजिक प्रकटीकरण कार्य पद्धतियॉ

भारत में कम्पनी अधिनियम, 1956 आर्थिक चिट्ठे एवं लाभ और हानि खाते को तैयार करने से सम्बन्ध रखता है। अधिनियम के द्वारा धारा 227 के अन्तर्गत सदस्यों (अंशधारियों) को अंकेक्षकों के द्वारा एक प्रतिवेदन देना तथा यह विचार अभिव्यक्त करना कि कम्पनी का आर्थिक चिटठा एवं लाभ और हानि खाता कम्पनी की गतिविधियों की स्थिति का 'सही एवं सत्य' चित्र उपस्थित करते हैं, को आवश्यक किया गया है।। यद्यपि यह अधिनियम समय–समय पर संशोधित किया जाता रहा है, किन्तु इसमें कम्पनियों के लिए अपनी वार्षिक रिपोर्टों में सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रकटीकरणों का कोई विशिष्ट प्रावधान नहीं किया गया है। भारत सरकार ने न्यायाधीश राजिन्दर सच्चर की अध्यक्षता में अधिनियम के प्रारुप एवं संरचना में किए जाने वाले आवश्यक परिवर्तनों पर विचार करने एवं प्रतिवेदन देने हेतु एक समिति का गठन किया गया था। समिति ने संस्तुत किया कि निदेशकों के प्रतिवेदन में निम्नांकित सम्मिलित किए जाने चाहिए :

"समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में कम्पनी के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उठाये गए कदमों का अधिकतम सम्भव और मौद्रिक रुप में मात्राकरण किया जाय। बोर्ड को कम्पनी द्वारा अपने सामाजिक उत्तदायित्व को पूर्ण करने के प्रति भावी योजनाओं पर भी प्रतिवेदन देना चाहिए।"

1981 में, भारतीय चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस संस्थान ने एक सर्वेक्षण के उपरान्त यह पाया कि 202 कम्पनियों में से 123 ने अपने निदेशको की रिर्पोटों में कम्पनी के सामाजिक उत्तरदायित्वों के योगदान के विषय में कुछ सूचना प्रदान की थी। 'टिस्कों' ने प्रथम सामाजिक अंकेक्षण आयोजित किया जो किसी भी निजी या सार्वजनिक कम्पनी के द्वारा भारत में सर्वप्रथम किया गया था (कम्पनी ने ही सामाजिक अंकेक्षण का प्रयोग

किया था)। अंकेक्षण का उद्देश्य यह परीक्षण एवं प्रतिवेदन करना था कि क्या और किस सीमा तक कम्पनी ने उपभोक्ता, कर्मचारियों, अंशधारियों, समाज और स्थानीय समुदाय के प्रति उसके सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्वों के सम्बन्ध में अपने निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण किया है। अपनी 65 पृष्ठों की रिपोर्ट में, अंकेक्षण समिति ने इस विचार (सामाजिक अंकेक्षण) की पृष्ठभूमि दी है और यह व्याख्या की है कि कम्पनी की प्रतिक्रियाऐं (कार्यवाही और कार्यवाही से विरत रहना) जमशेदपुर, प्रदूषण, नियोक्ता कर्मचारी सम्बन्धों, उपभोक्ताओं, अंशधारियों, सामुदायिक विकास एवं सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों इत्यादि में क्या रही है। कम्पनी के द्वारा सम्पन्न सामाजिक अंकेक्षण का प्रतिवेदन अत्यधिक वर्णनात्मक है किन्तु संरचनापूर्ण तथा लेखांकन उन्मुख नहीं है।

कुछ भारतीय कम्पनियों ने प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनों में अपने सामाजिक उत्तरदायित्व पर सूचना प्रदान करने के प्रयास किए हैं। ऐसी कुछ कम्पनियों ने अपने वार्षिक प्रतिवेदनों में सामाजिक आय–विवरण एवं सामाजिक आर्थिक चिट्ठे को प्रदान किया है; कुछ ने अपने प्रकटीकरणों में वर्णनात्मक प्रकटीकरण देने को प्राथमिकता दी है। साथ ही, भारतीय कम्पनियों की सामाजिक प्रतिवेदन नीति भी सुसंगत नहीं रही है। कुछ भारतीय कम्पनियों ने कुछ वर्षों के लिए सामाजिक प्रतिवेदन देने के पश्चात, इस सम्बन्ध में बिना कोई कारण प्रकट किए, इसे प्रदान करना बन्द कर दिया है।

13.13 सारांश

कम्पनी सामाजिक लेखांकन के प्रति अवधारणात्मक सोच, इसके व्यावहारिक उपयोग की तुलना में अधिक तीव्र गति से बढ़ी है। व्यावसायिक उपक्रम के विषय में सामाजिक लेखांकन सूचना वाह्य उपयोगकर्ताओं, सार्वजनिक रुचि लेने वाले समूहों इत्यादि के लिए महत्वपूर्ण है , बल्कि नियोजन एवं निर्णयन के क्षेत्र में प्रबन्ध के लिए भी है। समस्त संगठनों की अपने मूलभूत उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ एक सामाजिक प्रतिबद्धता भी होती है। कम्पनी सामाजिक प्रतिवेदन के एक समुचित मॉडल की बहस जारी है। वर्तमान में, व्यावसायिक उपक्रम का प्राथमिक उद्देश्य उनकी अपने समाज से संबंधित क्रियाओं के विषय में प्रकटीकरण प्रदान करना है। यदि एक व्यावसायिक उपक्रम एक आर्दश मॉडल, पूर्णतया विश्वसनीय मापों, सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन प्रतिवेदन मानकों और गुणात्मक विशेषताओं आदि, जो सामाजिक सूचनाओं पर लागू हों, की प्रतीक्षा करना तय कर लेता है, तो वह एक स्थायी एवं प्रगतिशील नियोक्ता एवं एक अच्छे नागरिक के रुप में अपने उत्तरदायित्वों के पालन में असफल हो रहा है। व्यावसायिक संगठनों को सामाजिक लेखांकन एवं प्रतिवेदन के क्षेत्र में बढ़ती हुई नवीन चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए।

13.14 शब्दावली

- **सामाजिक लेखांकन :** यह सामाजिक प्रभाव वाली व्यावसायिक उपक्रम की क्रियाओं के अर्थपूर्ण एवं परिभाषित किए जा सकने योग्य क्षेत्र का विवेकापूर्ण मूल्यांकन एवं

- **<u>शुद्ध सामाजिक आय :</u>** शुद्ध सामाजिक आय, फर्म की क्रियाओं से समाज के संसाधनों पर सामाजिक लाभ या हानि है।
- **<u>शुद्ध सामाजिक विनियोग :</u>** एक फर्म का शुद्ध सामाजिक योगदान सामाजिक लाभों एवं सामाजिक लागतों के बीच अन्तर को अभिव्यक्त करता है।
- **सरोगेट :** जब कोई वांछित मूल्य प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता है, तो एक 'सरोगेट' मूल्य को अनुमानित करने की आवश्यकता होती है।
- **पिक्टोरियल या दृश्यात्मक दृष्टिकोंण:** इस दृष्टिकोण में, स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र, स्कूल, अस्पताल आदि, जो फर्म के द्वारा संचालित होते हैं, का चित्रमय प्रदर्शन वार्षिक प्रतिवेदनों में किया जाता है।

13.15 बोध प्रश्न

(A) रिक्त स्थान की पूर्ति करे

(अ) सामाजिक लेखांकन सूचना की वाह्य उपयोगकर्ताओं की मांग कहीं .... वैविध्य पूर्ण होती है।

(ब) सामाजिक उत्तरदायित्व को मान्यता न देने की असफलता से अल्पकाल अथवा दीर्घकाल में संगठन का ....प्रदर्शन प्रभावि होता है।

(स) .... विभेद की सामाजिक लागत एक वर्ष की प्रगति में बिलम्ब के कारण जीवन पर्यन्त आय और अनुभव के त्याग का वर्तमान मूल्य है।

(द) .... मूल्याकंन निश्चित माल, भवन एवं भूमि के मूल्यांकन के लिए उपयोगी है।

(B) <u>सत्य या असत्य लिखिए –</u>

1. लक्ष्योन्मुखी दृष्टिकोण इस तथ्य की मान्यता पर आधारित है कि कम्पनियों के प्रायः विस्तृत लक्ष्य एवं उद्देश्य अपने सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों के वर्णन करते हुए होते हैं, जिन्हें वे अपने लिए निर्धारित करती है।
2. चित्रमय दृष्टिकोण में एक उपक्रम को वाह्य भुगतानों के पश्चात् आय अर्जन को ध्यान में रखा जाता है।
3. 'टिस्को' ने भारत में किसी भी सार्वजनिक या निजी कम्पनी में से अब तक प्रथम बार सामाजिक अंकेक्षण (कम्पनी के द्वारा अंकेक्षण शब्द का प्रयोग किया गया है) सम्पन्न किया है।
4. समाजिक आर्थिक परिचालनात्मक दृष्टिकोण को डेबिड लिनोवीस और राल्फ डब्ल्यू0 ईस्ट्स के द्वारा प्रतिपाति किया गया।

13.16 बोध प्रश्नों के उत्तर

(A)

1. अधिक 2. आय 3. आन्तरिक 4. स्वतन्त्र

(B)

1. सत्य	2. असत्य	3. सत्य	4. सत्य

13.17 स्वपरख प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. सामाजिक लेखांकन से आप क्या समझते हैं? सामाजिक लेखांकन के उद्देश्यों एवं आवश्यकता को समझाइए।

2. सामाजिक लागतों एवं सामाजिक लाभों के मापन की विभिन्न विधियों को समझाइए।

3. प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनों में सामाजिक लेखांकन सूचना किस प्रकार प्रतिवेदित की जाती है? आपकी राय में, प्रकटीकरण की कौन सी विधि सर्वाधिक उपयुक्त होगी

4. एक कम्पनी के अंशों की कीमतों पर सामाजिक प्रकटीकरण के प्रभाव को समझाइए। सामाजिक प्रतिवेदन की सीमाओं को भी समझाइए।

13.18 सन्दर्भ पुस्तकें

1. के0वी0 रामनाथन, टूवार्ड्स ए थियरी ऑफ कार्पोरेट सोशल एकाउन्टिंग, एकाउन्टिंग रीव्यू।
2. सच्चर कमेटी रिपोर्ट ऑन दि हाई पावर्ड एक्सपर्ट कमेटी ऑन कम्पनीज एण्ड एम0आर0टी0पी0 एक्ट, मिनिस्ट्री ऑफ लॉ, जस्टिस एण्ड कम्पनी अफेयर्स।
3. आर0एल0गुप्ता, एडवान्स्ड एकाउन्टिंग, सुल्तान चद एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
4. ए0बैलकोई, सोशियोइकॉनामिक एकाउन्टिंग, कोरम् बुक्स, बैस्टपोर्ट।
5. लॉग स्ट्रैथ एण्ड रॉजीन ब्लूम, कार्पोरेट सोशियल एकाउन्टिंग एण्ड इन्सटीट्रयूसनल इन्वैस्टर, प्रीयेगर, न्यू यार्क।
6. एम0सी0 शुक्ला एण्ड टी0एस0ग्रेवाल, एडवान्स्ड एकाउन्टिंग, एस0चान्द एण्ड सन्स, नई दिल्ली।

इकाई 14 मानव संसाधनों का मापन

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना
14.2 मानव संसाधन लेखांकन की अवधारणा
14.3 मानव संसाधन लेखांकन के उद्‌देश्य
14.4 मानव संसाधन लेखांकन की आवश्यकता
14.5 मानव संसाधन लेखांकन की मान्यताऐं
14.6 मानव संसाधन लेखांकन के लाभ
14.7 मानव संसाधन लेखांकन की विधियां
14.8 कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत आवश्यकताऐं
14.9 वित्तीय विवरणों में अभिलेखन एवं प्रकटीकरण
14.10 मानव संसाधन लेखांकन की समस्याऐं एवं सीमाऐं
14.11 सारांश
14.12 शब्दावली
14.13 बोध प्रश्न
14.14 बोध प्रश्नों के उत्तर
14.15 स्वपरख प्रश्न
14.16 सन्दर्भ पुस्तकें

उदद्‌ेश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- मानव संसाधन लेखांकन का अर्थ एवं अवधारणा को समझ सकें।
- मानव संसाधन लेखांकन के उद्‌देश्य एवं लाभों को समझ सकें।
- मानव संसाधन लेखांकन की विभिन्न विधियों की व्याख्या कर सकें।
- वित्तीय विवरणों में मानव संसाधन लेखांकन के अभिलेखन एवं प्रकटीकरण व्यवहारों का विवेचन कर सकें।

14.1 प्रस्तावना

यह सर्वमान्य तथ्य है कि मानव संसाधन अन्य उत्पादक संसाधनों की तुलना में कम महत्वपूर्ण नहीं है। किन्तु उत्पादक संसाधनों के रूप में संगठनों में व्यक्तियों के महत्व को लेखाकारों के द्वारा मान्यता प्रदान किया जाना हाल ही में हुआ है। पारम्परिक लेखांकन व्यवहारों में मानवीय कार्यशक्ति एक मूल तत्व के रूप में अपना स्थान नहीं बना पाई। कर्मचारियों की प्राप्ति, चयन, पदमुक्ति, प्रशिक्षण, प्रोन्नति एवं विकास आदि के संबंध में किये गये व्ययों को आयगत व्यय माना जाता है, जो एक उपक्रम को मानव शक्ति के द्वारा प्रदत्त सेवाओं के रूप में लाभ पहुंचाते हैं और ऐसे व्ययों को मात्राकृत एवं पूंजीकृत किया जाना चाहिये तथा आर्थिक चिट्ठे में प्रदर्शित किया जाना चाहिये किन्तु प्रबंधक इन्हें वित्तीय विवरणों में मान्यता प्रदान करने तथा सम्पत्ति के रूप में मानने में असफल रहे हैं।

यह केवल 1960 में हुआ, जबकि व्यवहारवादी वैज्ञानिकों ने पारम्परिक लेखांकन व्यवहारों पर उनके द्वारा संगठन के मानव संसाधनों को अन्य उत्पादक साधनों के साथ–साथ मूल्य प्रदान करने में असफल रहने की आलोचना की तथा यह उल्लिखित किया कि प्रभावी प्रबंधन में यह एक गम्भीर दोष है। परिणामस्वरूप मानव संसाधनों के मूल्यांकन को व्यापक मान्यता प्राप्त हुई। समय के साथ–साथ संगठन के मानव संसाधनों के मूल्यांकन एवं प्रतिवेदन हेतु अनेक लेखांकन मॉडलों का विकास हुआ। प्रबंधकीय शब्दावली में इसे मानव संसाधन लेखांकन (एच0आर0ए0) कहा जाता है। भौतिक संसाधनों की अपेक्षा मानव संसाधनों में कुछ निश्चित विशिष्टताऐं होती हैं। जैसे व्यक्तित्व, आत्मनियंत्रण, प्रतिबद्धता, गुणवत्ता, कौशल, योग्यता, वफादारी, अनुकरणशीलता आदि। आज के समय में एक संगठन की आधारभूत आवश्यकता, उत्पादकता में सुधार करना है जिसे मानव शक्ति के द्वारा सुधार किया जा सकता है। अतः उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये उनके हितार्थ प्रगतिशील निर्णय लेना आवश्यक है। एच0आर0ए0 के समर्थक संगठन में इस तत्व के महत्व एवं इसे एक सम्पत्ति के रूप में लेने में प्रारम्भिक लेखांकन की असफलता पर जोर देते हैं। अपने साधारण स्वरूप में, एच0आर0ए0 में भर्ती, प्रशिक्षण और एक इकाई की मानवीय समपत्तियों की लागत की पहचान सम्मिलित होती है।

एच0आर0ए0 के सिद्धांत की आधारभूत मान्यताऐं निम्न हैं :

- व्यक्ति किसी उपक्रम के मूल्यवान संसाधन हैं।
- एक संगठनात्मक संसाधन के रूप में मानव शक्ति की उपयोगिता उस विधि से निर्धारित होती है जिसके द्वारा इसका प्रबंध किया जाता है।
- मानव संसाधनों पर विनियोग एवं मानव संसाधनों का मूल्य उपक्रम में निर्णयन में उपयोगी होता है। वित्तीय पूंजी संरचना की तरह, जिसमें विभिन्न प्रकार की पूंजी सम्मिलित होती है, मानव संरचना में संगठन में विभिन्न प्रकार के नियोजित कर्मचारी सम्मिलित होते हैं। कर्मचारी अधिशासी पर्यवेक्षक, दस्तकार, लिपिकीय प्रशिक्षित कर्मचारी या अर्द्ध–प्रशिक्षित कर्मचारी हो सकते हैं। विभिन्न प्रकार के कर्मचारियों की संरचना एवं अनुपात एक संगठन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते है। मानव पूंजी संरचना एच0आर0ए0 तथा मानव संसाधन मूल्यांकन तकनीकी से अत्यधिक संबंधित होती है।

14.2 मानव संसाधन लेखांकन की अवधारणा

मानव संसाधन लेखांकन एक संगठन के मानव संसाधनों के मापन एंव प्रतिवेदनों की प्रक्रिया है। यह संगठन में व्यक्तियों एवं व्यक्तियों के समूह के विषय में संगठन के अंदर एवं बाहर के निर्णयकर्ताओं को सूचना प्रदान करने की प्रक्रिया है।मानव संसाधन लेखांकन पर अमेरिकन एकाउण्टिंग ऐसोशियेसन की समिति 1973 ने **"मानव संसाधन लेखांकन को मानव संसाधनों के विषय में आंकड़ों की पहचान और मूल्यांकन तथा इस सूचना को रूचि रखने वाले पक्षों को सम्प्रेषित करने की प्रक्रिया"** के रूप में परिभाषित किया है। फ्लेमहॉल्ट्ज के अनुसार **"मानव संसाधन लेखांकन को संगठनात्मक संसाधनों के रूप में व्यक्तियों की लागत एवं मूल्य का मापन एवं**

प्रतिवेदन करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें व्यक्तियों में विनियोग तथा उनकी प्रतिस्थापन लागत का लेखांकन संन्निहित होता है। इसमें एक संगठन में व्यक्तियों के आर्थिक मूल्य का लेखांकन भी संन्निहित होता है।"

डेविडसन एवं वील के अनुसार **"यह संगठन की मानवीय गत्यात्मकता के मापन एवं प्रतिवेदन करने की प्रकिया है। यह एक संगठन के भीतर मानवीय संसाधनों की दशाओं का मूल्यांकन और समय के साथ इन दक्षताओं में परिवर्तन का मापन है।"**

उपरोक्त परिभाषओं से मानव संसाधन लेखांकन की निम्नांकित आवश्यकताऐं परिलक्षित होती हैं :

1. मानव संसाधनों का मूल्यांकन
2. लेखांकन सिद्धांतों के अनुसार मानव संसाधनों का अभिलेखन
3. वित्तीय विवरणों में मानव संसाधन सूचना का प्रकटीकरण एच0आर0ए0 संगठन के लिये व्यक्तियों की लागत एवं मूल्य का मापन है।

एच0आर0ए0 मानव संसाधनों के मूल्य से संबंधित लेन–देनों का व्यवस्थित अभिलेखन है। एक उत्पादक संसाधन के रूप में व्यक्तियों के महत्व को प्रबंध के द्वारा उपेक्षित किया गया है। किन्तु अब एच0आर0ए0 की प्रणाली को विकसित करने के लिये इस पर लगातार अधिक ध्यान एवं व्यापक रूचि ली जाने लगी है।

एक कम्पनी के विनियोग की उत्पादकता को प्रत्याय की दर के नाम से जाना जाता है। जिसकी भौतिक सम्पत्तियों के विनियोग के आधार पर गणना की जाती है। किसी भी संगठन में मानवीय विनियोग की उत्पादकता को ज्ञात करने की भी आवश्यकता है। यह निर्णयन के लिये एक प्रभावी उपकरण है।

भौतिक संसाधनों की अपेक्षा मानव संसाधनों में कुछ निश्चित विशिष्टताऐं होती हैं। जैसे व्यक्तित्व, आत्मनियंत्रण, प्रतिबद्धता, गुणवत्ता, कौशल, योग्यता, वफादारी, अनुकरणशीलता आदि। आज के समय में एक संगठन की आधारभूत आवश्यकता, उत्पादकता में सुधार करना है जिसे मानव शक्ति के द्वारा सुधार किया जा सकता है। अतः उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये उनके हितार्थ प्रगतिशील निर्णय लेना आवश्यक है।

14.3 मानव संसाधन लेखांकन के उद्‌देश्य

मानव संसाधन लेखांकन को मूलतः मानव संसाधन को एक सम्पत्ति बनाने, मानवीय संसाधनों के विषय में आंकड़ों का संकलन करने, मानवीय संसाधनों को मूल्य आवंटित करने तथा आर्थिक चिट्‌ठे में मानवीय सम्पदा को प्रदर्शित करने के लिये अपनाया गया है। मानव संसाधन लेखांकन प्रणाली के मुख्य उद्‌देश्य निम्नवत् हैं –

1. मानव संसाधनों की प्राप्ति, आवंटन, विकास एवं प्रतिधारण के विषय में प्रबंधकीय निर्णयन हेतु लागत मूल्य की सूचना उपलब्ध कराना ताकि लागत की दृष्टि से प्रभावी संगठनात्मक उद्‌देश्य को प्राप्त किया जा सके।
2. मानव संसाधन के उपयोग का प्रभावी अनुश्रवण करने के लिये प्रबंधकीय कार्मिकों को अनुमति प्रदान करना

3. सम्पत्ति नियंत्रण का निर्धारण करना अर्थात् क्या मानव सम्पदा को संरक्षित, रिक्त अथवा इसमें अभिवृद्धि की गयी है।
4. विभिन्न व्यवहारों के वित्तीय परिणामों का वर्गीकरण करके प्रबंधकीय सिद्धांतों के विकास में सहायता करना।
5. फर्म के द्वारा प्रयुक्त अथवा विकसित समस्त संसाधनों की प्रकृति को मान्यता देना तथा मानवीय संसाधनों के प्रबंधन में सुधार करना ताकि वस्तु एवं सेवाओं की गुणवत्ता एवं मात्रा में वृद्धि हो सके।
6. मानवीय संसाधनों की कार्यक्षमतापूर्ण प्रबंधन की सुविधा प्रदान करना ।
7. मानवीय संसाधनों में विनियोगों की प्रत्याय का मूल्यांकन करना।

14.4 मानव संसाधन लेखांकन की आवश्यकता

एक संगठन में एच0आर0ए0 को निम्नांकित कारणों से कियान्वित करने की आवश्यकता पड़ती है :

1. जब तक मानव संसाधनों सहित समस्त संसाधनों एवं सम्पत्तियों को उचित प्रकार से प्रदर्शित नहीं किया जाता, तब तक फर्म का आर्थिक चिट्ठा एवं लाभ और हानि खाता इसकी गतिविधियों का सही एवं उचित चित्र प्रदर्शित नहीं कर सकता है।
2. आजकल मानवीय तत्वों की भर्ती, प्रशिक्षण एवं अनुभव तथा कार्यक्षमता की प्राप्ति पर व्यय अत्यधिक मात्रा में होता है। फर्म कुशल कर्मचारियों, तकनीकि कार्मिकों, लेखाकारों और प्रबंधकों के प्रशिक्षण एवं विकास पर बड़ी धनराशियां व्यय करती हैं। यह आवश्यक है कि इन व्ययों की प्रकृति और इनकी भूमिका के संबंध में सही स्थिति को समस्त संबंधित पक्षों के लाभ के लिये प्रमुख रूप में उल्लिखित किया जाये।
3. प्रबंध को कार्मिकों के संबंध में नियुक्ति, प्रोन्नति, प्रशिक्षण, आंतरिक स्थानांतरण, कार्य वितरण, योग्यता स्तरीकरण, कार्यमूल्यांकन, पदमुक्ति, काम से हटाने इत्यादि के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने की आवश्यकता होती है। उचित लेखांकन आंकड़ों के अभाव में निर्णय त्रृटिपूर्ण हो जाते हैं और संगठन को इस कारण हानि उठानी पड़ती है।
4. कर्मचारी को भी नियोक्ता के द्वारा उस पर किये गये विनियोग एवं संगठन में उसके सही मूल्य के विषय में सही जानकारी रहती है ताकि वह स्वयं के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णयों का सामना करते समय चेतना जागृत अभिवृत्ति को अपना सके तथा सुमचित प्रतिकिया कर सके।
5. हड़ताल, तालाबंदी, धीमे कार्य करना, शासन करने हेतु कार्य करना, अनुपस्थिति, उच्च श्रम आवर्त दर इत्यादि जो उद्योग को हानि पहुचाते हैं, एक ऐसी प्रणाली में स्वाभाविक है, जहां मानव संसाधन का उचित मूल्यांकन नहीं किया जाता है और पुस्तकों में प्रमुख रूप में नहीं दिखाया जाता है। उपरोक्त के कारण एक बड़ी सीमा तक मानव संसाधनों एवं उनके समय के क्षय को रोका जा सकता है, यदि विभिन्न पक्षों के लिये इसकी लागत की गणना की जाती है। यह सूचना मजदूरी समझौतों का आधार भी बनती है।

6. मानव शक्ति के व्यापक स्टॉक की आवश्यकता मानव संपदा की भावी आवश्कताओं के संबंध में मानवशक्ति नियोजन के लिये होती है और संगठन में उसके विकास या उन्हें वाह्य श्रोतों से भर्ती करना तभी संभव होता है जबकि समुचित अभिलेखों का रखरखाव किया गया हो।
7. सम्पूर्ण देश के प्रसंग में , जहां अकुशल कर्मचरियों की कोई कमी नहीं है और अंतर–फर्म गतिशीलता भी कम है। वहीं पर कुशल और तकनीकि मानव शक्ति जैसे तकनीकि कर्मचारियों, इंजीनियरों, लेखाकारों, प्रबंधकों इत्यादि की सापेक्षिक कमी है। इन दुर्लभ मानव संसाधनों के मूल्य के सारांकित अनुमानों की इनके व्यवस्थित विकास हेतु आवश्यकता है।

14.5 मानव संसाधन लेखांकन की मान्यताऐं

मानव संसाधन लेखांकन के मूल में निम्नांकित मान्यताऐं निहित हैं :

1. मानव संसाधन संगठन को उसी रूप में लाभ पहुंचाते हैं जिस रूप में वित्तीय और भौतिक संसाधन लाभ प्रदान करते हैं।
2. पारम्परिक सम्पत्तियों और मानव संसाधनों दोनों के लाभ संगठन के लिये महत्वपूर्ण है, क्योकि इन लाभों से संगठनात्मक उद्‌देश्यों की प्राप्ति में समान रूप से योगदान किया जाता है।
3. मानव संसाधनों की प्राप्ति में विशेषतः इन संसाधनों की आर्थिक लागत एवं संबंधित लाभों के प्रत्याशित रूप में आर्थिक प्रभावोत्पादकता के लिये योगदान कर सकना सम्मिलित होता है। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि यह लाभ आर्थिक प्रकृति के हैं और उनका मापन वित्तीय रूप में होता है।
4. चूंकि एक सम्पत्ति की लेखांकन परिभाषा में भावी आर्थिक लाभों को प्राप्त करने का अधिकार निहित होता है। अतः मानवीय सम्पत्ति को लेखांकन संपत्ति की तरह वर्गीकृत किया जाना उचित होता है।
5. संगठन के भीतर मानवीय संसाधनों की लागतों और लाभों की पहचान किया जाना सैद्धांतिक रूप में सम्भव है।
6. मानव संसाधनों की लागतों एवं लाभों के संबंध में सूचना नियोजन, नियंत्रण, मूल्यांकन एवं संगठनात्मक प्रदर्शन को पूर्वानुमानित करने की प्रक्रिया में उपयोगी होती है।

14.6 मानव संसाधन लेखांकन के लाभ

मानव संसाधन लेखांकन की अवधारणा व्यक्तियों को आच्छादित करती हैं जो एक उद्यम के मूल्यवान संसाधनों के संघटक हैं और आंतरिक एवं वाह्य निर्णयन में ऐसे संसाधनों में विनियोग एवं इनके मूल्य की सूचना उपयोगी है। ऐसा लेखांकन राष्ट्र एवं व्यक्तिगत संगठनों के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मानव संसाधन लेखांकन के निम्नांकित लाभ हैं :

1. **विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय के समुचित निर्वचन में सहायक** :मानव संसाधन के मूल्य का प्रकटीकरण करता है। इससे विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय के उचित प्रकटीकरण में सहायता प्राप्त होगी। ऐसी सूचना व्यवसाय का

दीर्घकालीन दृष्टिकोंण प्रदान करेगी, जो शुद्ध लाभ आधारित विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय से अधिक विश्वसनीय होगा।

2. **प्रबंधकीय निर्णयन में सुधार करता है :** आंतरिक मानवीय संसाधनों जैसे कर्मचरियों से संबंधित विस्तृत अभिलेख का रखरखाव प्रबंधकीय निर्णयन विशेषतः प्रत्यक्ष भर्ती बनाम प्रोन्नति, स्थानांतरण बनाम संधारण, छँटनी, मूक्ति बनाम संधारण, लागत में कमी करने के कार्यक्रमों की मानव संसाधनों और संगठनात्मक व्यवहार पर सम्भावित प्रभाव के दृष्टिगत उपयोगिता तथा संयन्त्र के पुनर्स्थानीयकरण, वर्तमान इकाइयों को बन्द करने, विदेशी सहायक कम्पनियों को विकसित करने इत्यादि में सुधार करेगा। इस प्रकार, एच0आर0ए0 प्रबंध की गुणवत्ता में निश्चित सुधार करेगा।

3. **सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति करता है :** यह मूल्यांकन सम्पत्ति के रूप में मानव संसाधनों की पहचान करके सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है, जो अविवेकपूर्ण स्थानांतरणों, पदावनतियों, छंटनी, प्रशासनिक पदसोपानक्रम को रोकने में पर्यवेक्षकों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ दिन–प्रतिदिन के व्यवहार के कारण मानव संसाधनों के दुरूपयोग या कार्य में कम उपयोग, अर्थव्यवस्था में संसाधनों के कार्यक्षमतापूर्ण आवंटन, मानव संसाधनों के उपयोग में मितव्ययिता एवं कार्यक्षमता तथा आंतरिक मानव संसाधनों के गुणवत्ता पर त्याज्य श्रम असंतोष/विवादों के दुष्प्रभावों को उचित रूप में समझाने इत्यादि में सहायता करता है।

4. **उत्पादकता में वृद्धि करता है :**इसमें मानव संसाधनों की उत्पादकता को बढ़ाने की विधियां निहित हैं। क्योंकि मानव संसाधनों के साथ मौद्रिक मूल्य संबद्ध होता है, और मानव संसाधनों में प्रतिबद्धता एवं कौशल को मूल्यवान सम्पत्तियां माना जाता है और उन्हें संगठन के वित्तीय विवरणों में एक स्थान भी आवंटित किया जाता है जिससे कर्मचारियों का उत्साह, लगााव एवं पहल करने की भावना में वृद्धि होती है। उनके मस्तिष्क में संगठन के प्रति जुड़ने की भावना सृजित होती है और यह उत्पादकता को बढ़ानें में एक बड़ी प्रेरणा की भांति कार्य करता है।

5. **मानवता के प्रति अमूल्य योगदान करना :** एच0आर0ए0 लेखांकन से मानवता के लिये अमूल्य योगदान करता है और इससे जहां मानवीय प्रतिष्ठा एवं सम्मान का संरक्षण होता है वही मानवीय कार्यक्षमता में अभिवृद्धि होती है। इसके लिये व्यक्तिगत व्यवहार, अभिवृत्ति एवं सोच में एक आधारभूत परिवर्तन की आवश्यकता होती है। एच0आर0ए0 मानव संसाधनों के मूल्य को अनुभव कराने में सहायता करता है और इस प्रकार व्यक्तिगत व्यवहार, अभिवृत्ति एवं सोच को वांछित दिशा में प्रभावित करता है।

6. **जहां मानवीय तत्व प्रमुख कारक है, यह आवश्यक है :**एच0आर0ए0 ऐंसे संगठनों में अत्यंत आवश्यक है जहां मानवीय तत्व प्रमुख कारक होता है। जैसे एक पेशेवर लेखांकन फर्म, एक नाटक कम्पनी, एक कानूनी सलाहकार एवं एटॉर्नी फर्म, एक शैक्षणिक संस्थान आदि।

7. **प्रबंधकीय सूचना प्रणाली (एम0आई0एस0) को पूर्ण करता है :** मानव संसाधन समंक अधिक पूर्ण प्रबंधकीय सूचना प्रणाली का सृजन करते हैं क्योंकि यह अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन निर्णयन एवं प्रदर्शन मापन दोनों के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करते हैं। यह संसाधनों के आवंटन जैसे बजटन, पूंजी व्यय निर्णयों और संगठन के संसाधनों का बेहतर मापन करने के लिये समुचित एवं पर्याप्त आधार प्रदान करते हैं। प्रदर्शन मापन संगठन की शक्तियों एवं कमजोरियों के मूल्यांकन करने तथा बेहतर प्रोन्नति नीतियां बनाने में सहायता करते हैं।
8. **एक संगठन के सफल संचालन में सहायक है :** एक संगठन की सफलता सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण कार्यों को स्थापित करने पर अत्यधिक निर्भर करती है। बी0एच0ई0एल0, आई0टी0सी0, हिन्दुस्तान लीवर, लार्सन एवं टूब्रो और कई अन्य उपक्रमों की सफलता मानव संसाधनों के विकास पर जोर देने के कारण हुई है। यदि इस महत्वपूर्ण सम्पत्ति को आर्थिक चिट्ठे में प्रदर्शित नहीं किया जाता है तो उस सीमा तक जनता एवं निवेशकर्ता अक्षम हो जाते है।

14.7 मानव संसाधन लेखांकन की विधियां

परम्परागत लेखांकन प्रणाली मानव संसाधन को चालू लागत मानती है। ऐंसी लागतों को आयगत प्रकृति की तरह वसूल करती है। संविदात्मक दायित्व के आधार पर, संगठन मानव संसाधनों के लिये वेतन, मजदूरी और संबंधित निहित लाभों का भुगतान करता हैअर्थात लेखांकन की सामान्य विधियों के अंतर्गत संगठन को भुगतान करता है। वह केवल आय से वसूल किया जाता है और आर्थिक चिट्ठे में किसी भी मानव संसाधन को आगे नहीं लाया जाता है। एच0आर0ए0 में नवीनतम विचार ऐसे संसाधनों जो मानव संसाधन से संलग्न होते हैं, को पूंजीगत मदद मानता है।

निम्नांकित इस संबंध में प्रासंगिक है :

(अ) वे भावी सेवाऐं प्रदान करते हैं जिनका आर्थिक मूल्य होता है।

(ब) मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि संसाधनों का उपयोग कैसे किया गया है।

विभिन्न प्रबंधकीय कार्यवाहियां जैसे प्रशिक्षण, विकास और तकनीकि प्रगति का प्रभाव, मानव संसाधनों के मूल्य का संरक्षण, संवर्द्धन और ह्रास होता है। अन्य सम्पत्तियों के लेखांकन की भांति एच0आर0ए0 में निम्नांकित सम्मिलित होते है :

1. मानव संसाधनों का पूंजीकरण एवं उन्हें विनियोग की तरह अभिलिखित करना।
2. संसाधनों के विलीनीकरण के आधार पर नैतिक समाप्ति का अभिलेखन।
3. अप्रचलन एवं श्रमआवर्त के कारण संसाधनों की हानि का अभिलेखन।
4. समायोजन के पश्चात मानव संसाधनों का मूल्यांकन समय समय पर मानव संसाधनों के मूल्यांकन के विभिन्न विधियाँ सुझायी जाती हैं। इन विधियों को व्यापक रूप में लागत विधि एवं वर्तमान मूल्य विधियों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

लागत विधियां :

लागत पर आधारित एच0आर0ए0 विधियों का संबंध संगठन में मानव संसाधनों की लागत की गणना से होता है। लागत पर अधारित एच0आर0ए0 मॉडलों का निम्नवत् वर्णन किया गया है :

1. ऐतिहासिक लागत मॉडल
2. प्रतिस्थापन लागत मॉडल
3. अवसर लागत मॉडल
4. प्रमाप लागत मॉडल

1. **ऐतिहासिक अथवा अधिग्रहण लागत मॉडल :** इस मॉडल को अधिग्रहण लागत मॉडल के नाम से भी जाना जाता है। मानव संसाधन लेखांकन के इस मॉडल का सर्वप्रथम प्रतिपादन रैनेसिस लिकर्ट ने 1967 में अमेरिका में ओहियो कोलम्बिया के आर0 जी0 वैरी कार्पोरेशन में किया। इस मॉडल में संगठन के मानव संसाधनों के विकास में किये गये वास्तविक लागतों का पूंजीकरण सम्मिलित होता है। इस ऐतिहासिक लागत में भर्ती, चयन, किराये पर लेना, प्रशिक्षण एवं विकास आदि सम्मिलित होते हैं। यही नहीं, ऐतिहासिक लागतों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है– 1. प्राप्त करने की लागत या अधिग्रहण लागत और 2. अधिगम लागत, भर्ती की लागत, चयन की लागत, किराये पर लेने की आदत, तैनाती की लागत, अधिग्रहण लागत के उदाहरण हैं।प्रशिक्षण एवं विकास लागतें अधिगम लागतों के उदाहरण हैं। संगठन के समस्त कर्मचारियों हेतु ऐसी लागतों का योग, संगठन के मानव संसाधन के मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है। इस मूल्य को व्यक्तिगत कर्मचारियों की प्रत्याशित सेवा अवधि में अपलिखित किया जाता है। असमाप्त लागतों को मानव संसाधनों में विनियोग माना जाता है। यदि एक कर्मचारी संगठन को त्यागपत्र, मृत्यु, बर्खास्तगी इत्यादि के कारण छोड़ देता है तो, अपलिखित न हो पायी समस्त धनराशि को चालू आय के सापेक्ष वसूल किया जाता है।

इस विधि में एक कर्मचारी के भर्ती, चयन, प्रशिक्षण एवं विकास को उसकी सेवा अवधि में पूँजीकृत एवं अपलिखित किया जाता है। यदि एक कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है या वह अपनी सेवा अवधि में संगठन को छोड़ देता है तो अवशेष मूल्य को आय के सापेक्ष वसूल किया जाता है।

लाभ : ऐतिहासिक लागत पर आधारित एच0आर0ए0 के लाभ चूंकि वह कई वर्षों से सामान्यतया प्रयोग में आ रही लेखांकन तकनीकियों को प्रमुखतः प्रयोग करते हैं। अतः यह विधि अपेक्षाकृत सरलता से विकसित एवं उपयोग की जा सकती है। साथ ही प्रबंध को लागत आधारित प्रणाली के द्वारा प्रदत्त सूचना को समझने में बहुत कम कठिनाई होगी। क्योंकि प्रश्नगत् अवधारणाऐं परम्परागत (ऐतिहासिक) लेखांकन समंकों जिन पर प्रबंध बहुधा विश्वास करता है, से संगतिपूर्ण होती है। एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ यह है कि व्यक्तियों में मानव संसाधन विनियोगों की लागत का संचयीकरण इन व्यक्तियों के मूल्य के मापन के प्रयासों की तुलना में कहीं अधिक सरल कर दिया है।

इस प्रकार ऐतिहासिक लागत आधारित दृष्टिकोंण कुछ व्यवहारवादी समस्याओं को छोड़ देता है, जो एच0आर0ए0 में पाये जाते हैं।

ऐतिहासिक लागत आधारित एच0आर0ए0 से सेविवर्गीय नियंत्रण, मूल्यांकन और न्यून श्रम आवर्त में रूचि रखने वाले व्यवसायिक प्रबंधकों के उपयोगी होता है। मानव संसाधन लागतों की उपलब्धता प्रबंधकों को संबंधित विभाग के कार्मिकों में विनियोजित धनराशि एवं सामान्य योग्यता/दक्षता के स्टाफ के प्रतिस्थापन की लागतों के विषय में जानकारी प्रदान करती है। इस दृष्टिकोंण का उपयोग लागत नियंत्रण कार्मिकों में किया जा सकता है, जहां विभागों को एक बजटीय प्रणाली में परिचालन करना आवश्यक होता है।

दोष : ऐतिहासिक लागत आधारित एच0आर0ए0 के निम्नांकित दोष हैं :

(अ) ऐतिहासिक लागत दृष्टिकोंण की प्रमुख कमी का संबंध ऐतिहासिक लागत आधारित किसी भी लेखांकन प्रणाली में आवश्यक रूप में पायी जाने वाली परिसीमाओं से है। जैसे– भूतकालीन लागतें वर्तमान और भावी निर्णयों से विशिष्ट रूप में प्रासंगिक नहीं होती हैं। मानव संसाधनों के लिये ऐतिहासिक लागत आधारित लेखांकन की निर्णयन के उद्देश्य हेतु गम्भीर सीमाऐं है। ठीक उसी प्रकार से जैसा यह वित्तीय अथवा भौतिक संसाधनों के लिये करता है। यह तर्क दिया जा सकता है कि आर्थिक चिट्ठे को संगठन की सम्पत्तियों के आर्थिक मूल्य और तत्संबंधी दावों को प्रदर्शित करना चाहिये और आय के मापन को विशिष्ट समयावधियों के लिये इन आर्थिक मूल्यों में परिवर्तनों का मूल्यांकन करना चाहिये।

(ब) एच0आर0ए0 के ऐतिहासिक लागत दृष्टिकोंण में मापन की समस्याओं को निम्नवत् सारांकित किया जा सकता हैः

प्रथम उन मदों को परिभाषित एवं पहचान करना आवश्यक है जो वास्तव में मानव संसाधन लागतें हैं। एक दूसरी मापन की समस्या में पूंजीकृत की जाने वाली लागतों और उन लागतों को जिन्हें उस अवधि में व्यय माना जाता है, जिसमें वह की गयी है, के बीच अंतर करना है। एक अतिरिक्त मापन की कठिनाई पूंजीकृत मानव संसाधन लागतों के अपलेखन की उचित प्रक्रिया के चयन से संबंधित है। यद्यपि लागत आधारित प्रणाली के मापन से संबंधित समस्याओं के महत्व को कम करके नहीं आंकना चाहिये, किन्तु इन समस्याओं का एक व्यवहारिक उद्देश्यों के लिये समाधान किया जा सकता है।

(स) ऐतिहासिक लागत समंकों को मापन प्रणाली जिससे समंक सृजित किये गये हैं, के क्षेत्र एवं कार्यों के दृष्टिगत सदैव सावधानीपूर्वक निर्वचन किया जाना चाहिये।

2. प्रतिस्थापन लागत मॉडल :

मानव संसाधनों के मूल्यांकन की इस विधि को एरिक जी0 फ्लेमहॉल्टी ने रेनेसिस लिकर्ट के द्वारा सुझायी गयी प्रतिस्थापन लागत की अवधारणा के आधार पर विकसित किया। प्रतिस्थापन लागत से आशय उस त्याग से है जो वर्तमान में स्वामीगत विनियोजित संसाधनों के प्रतिस्थापन में वहन करनी पड़ती है। यह फर्म की वर्तमान मानवीय सम्पत्ति को प्रतिस्थापन करने की लागत का मापन है। इन लागतों में नये कर्मचारी को विद्यमान कर्मचारियों की दक्षता के स्तर तक पहुंचाने के लिये

उनके चयन, भर्ती, किराये पर लेने, प्रशिक्षण, तैनाती एवं विकास की लागत सम्मिलित है।

इसमें कर्मचारी मूल्य को चालू बाजार मूल्य से समायोजित करने का लाभ होता है। उस दृष्टिकोंण को सम्पत्ति के आर्थिक मूल्य हेतु एक अच्छा **सरोगेट**इस दृष्टि में माना जाता है कि एक अन्तिम धनराशि तक पहुचने के लिये बाजार कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है। ऐसी अंतिम धनराशि अवधारणात्मक रूप में सामान्यतया व्यक्ति के आर्थिक मूल्य के समान होना अपेक्षित होती है।

यह विधि चालू मूल्य या प्रतिस्थापन लागत पर आधारित है। इस प्रणाली में एक संगठन एक कर्मचारी का मूल्यांकन समान योग्यता वाले एक नये कर्मचारी को प्रतिस्थापित किये जाने की अनुमानित लागत पर होता है। किन्तु इस विधि का अनुप्रयोग प्रतिस्थापन लागतों को परिभाषित एवं मापन करने की समस्याओं के कारण कठिन हो गया है।

मानव संसाधनों के प्रसंग में इसका आशय उस लागत से है जो वर्तमान में नियुक्ति मानव संसाधनों के प्रतिस्थापन पर व्यय की जानी होगी। फ्लेमहॉल्टी ने प्रतिस्थापन लागत की अवधारणा के दो प्रकारों का उल्लेख किया है, जैसे व्यक्तिगत प्रतिस्थापन लागत और स्थिति प्रतिस्थापन लागत।

(अ) **व्यक्तिगत प्रतिस्थापन लागत** : फ्लेमहॉल्टी के द्वारा प्रतिपादित अवधारणा के अनुसार एक संगठन में व्यक्तियों के प्रतिस्थापन लागत में निम्नांकित सम्मिलित है :

1. वर्तमान कर्मचारियों के सामान्य उत्पादकता स्तर तक व्यक्तियों को कार्य पर लेने, प्रशिक्षण प्रदान करने एवं विकास करने की वर्तमान अनुमानित लागत अर्थात इसमें निम्नांकित मूलभूत लागत तत्व सम्मिलित हैं।

- भर्ती परिव्यय लागत
- अधिग्रहण लागत
- औपचारिक प्रशिक्षण एवं अभिमुखीकरण लागत
- अनौपचारिक प्रशिक्षण लागत
- कार्यक्षमता वसूली लागत
- अतिरिक्त पर्यवेक्षण लागत
- परिचयात्मक लागत
- प्रशिक्षण के दौरान उत्पादकता की हानि की लागत
- विनियोग करने की अनुभव लागत
- विकास लागत
- अन्य

2. वर्तमान पदधारकों के या तो संगठन से चले जाने या संगठन के भीतर नये पदों पर पदस्थापित होने से संबंधित लागत अर्थात–

- एक उपयुक्त प्रतिस्थापन के द्वारा रिक्ति को भरे जाने तक रिक्ति को बनाये रखने की लागत अर्थात जब तक रिक्तियां नहीं पूरी की जाती है, उस अवधि तक प्रत्याशित योगदान की लागत।
- कार्य छोड़ कर चले जाने और विस्थापन की लागत ।
- पृथकीकरण से पूर्व कर्मचारी एवं उनके सहकर्मियों की उत्पादकता की हानि।
- अन्य कर्मचारियों पर रिक्तियों का प्रभाव।

(ब) **पदस्थिति प्रतिस्थापन लागत :** व्यक्तियों की प्रतिस्थापन लागत के अतिरिक्त ऐसी लागत की मद जो विशिष्ट व्यक्तियों की अपेक्षा संगठन की विभिन्न पदस्थितियों के संदर्भ में अनुमानित की जाती है, पदस्थिति प्रतिस्थापन लागत कहलाती है। एक संगठन में एक व्यक्तिगत कार्मिक का उपयुक्त प्रतिस्थापन कठिन हो जाता है। 20 वर्षों के पश्चात् स्नातक प्रशिक्षु अभियंताओं के एक बैच से एक अच्छा डिजाईन अभियंता निकल सकता है। इस तथ्य को मान्यता देते हुए फ्लेमहॉल्ट्ज ने प्रतिस्थापन लागत के सीमांत मूल्यकी अवधारणा एवं पूर्ण प्रतिस्थापन लागत की अवधारणा का प्रतिपादन किया।

प्रतिस्थापन लागत का सीमांत मूल्य निम्नांकित के योग से निकाला जाता है।

(i) प्रवेश स्तर पर एक व्यक्ति की भर्ती की लागत

(ii) प्रवेश स्तर पर एक व्यक्ति के चयन की लागत

(iii) प्रत्येक मध्यवर्ती स्तर पर एक व्यक्ति के विकास की लागत

(iv) क्रान्तिक स्तर पर एक व्यक्ति के पृथक्करण की लागत

पूर्ण विस्थापन लागत से आशय न केवल एक व्यक्ति की लागत के ऐसे समस्त तत्वों के योग से है बल्कि एक व्यक्ति के प्रतिस्थापन के लिये आवश्यक कई व्यक्तियों के लागत के योग से भी है।

<u>**सीमाऐं :**</u> प्रतिस्थापन लागत मॉडल के संबंध में निम्नांकित सीमाऐं है :

(अ) यह मॉडल वर्ष की समाप्ति पर अपने वार्षिक खातों में कम्पनी के मानव संसाधनों के चालू मूल्य को सम्मिलित करने का दावा करता है। किन्तु इसकी व्यवहारिक उपयोगिता सीमित है, क्योंकि व्यक्तियों का सही प्रतिस्थापन खोज पाना अत्यंत कठिन एवं योग्यताओं के संबंध में कोई दो व्यक्ति एक समान नहीं हो सकते हैं।

(ब) व्यक्तियों के प्रतिस्थापन लागत अथवा मानवीय संगठन को पुनर्निर्मित करने की लागत का प्राक्कलन या अनुमान तथ्यों और आंकडों के स्थान पर प्रबंधकों के सर्वोत्तम निर्णय पर अवलम्बित होता है जो विषय परक प्रकृति का होने के कारण पारम्परिक लेखाकारों को स्वीकार्य नहीं हो सकता है।

(स) व्यक्तियों की प्रतिस्थापन लागत उनके व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप में प्रभावित कर सकती है और वह स्वयं को अपरिहार्य अनुभव कर सकते हैं जिससे उन्हें प्रतिधारित करने की लागत में अतिरिक्त वृद्धि हो सकती है।

(द) मानवीय संगठन को पुनर्निर्मित करने की लागत में कमी कर्मचारियों के लिये चिन्ता का कारण हो सकती है।

(य) बाजार अपूर्णताऐं विशिष्ट कौशल वाले व्यक्तियों के प्रतिस्थापन को महंगा कर सकती है। इसके अतिरिक्त लागतें स्फीतिकारी दशाओं और अन्य प्रभाव डालने वाले तत्वों जैसे श्रमसंघ समझौते, सरकारी विनियमनों और वाह्य बाजार दशाओं के कारण बढ़ सकती है।

(र) प्रतिस्थापन/पुनर्निर्माण लागत के बढ़ने के कारण पूंजीकृत मूल्य में वृद्धि दिखावटी संगठनात्मक लाभों को प्रदर्शित कर सकती है, जो मुख्यतया परिचालनात्मक अक्षमता, स्फीतिक प्रभाव, वाह्य कारकों और दबाव के कारण उत्पन्न हुए हैं। जबकि लागत में कमी स्पष्ट रूप से दृष्टव्य हानियों को प्रदर्शित कर सकती है, जो परिचालनात्मक कार्यक्षमता एवं मानव संसाधनों के बेहतर प्रबंध के कारण हुई है।

3. अवसर लागत मॉडल :

एच0आर0ए0 का यह मॉडल अवसर लागत की आर्थिक अवधारणा के आधार पर मानव संसाधन के मूल्य का मापन करना चाहता है। इस मॉडल का प्रतिपादन हैकीमैन और जोन्स के द्वारा प्रतिस्थापन लागत मॉडल सीमाओं को दूर करने के लिये किया गया। इस मॉडल को प्रतियागितात्मक कीमत प्रस्ताव मॉडल के नाम से भी जाना जाता है।

यह मॉडल प्रतियोगितात्मक कीमत प्रस्ताव की प्रक्रिया के माध्यम से एक संगठन के भीतर आंतरिक श्रमबाजार की स्थापना के द्वारा मानव संसाधनों के मूल्यांकन को अनुमानित करने का प्रयत्न करता है। इस मॉडल में लाभ केन्द्रों के प्रबंधकों को किसी भी दुर्लभ कार्मिक जिसे वह चाहते हैं, की कीमत को प्रस्तावित करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। यह व्यापक रूप में एक कृत्रिम विधि है जिसमें प्रतियोगितात्मक कीमत प्रस्ताव प्रक्रिया की अवधारणा निहित होती है।

प्रतियोगितात्मक कीमत प्रस्ताव में एक विभाग में एक कर्मचारी अथवा कर्मचारियों के समूह की अवसर लागत की गणना अन्य विभागों के द्वारा अन्य कर्मचारियों के लिये डाले गये कीमत प्रस्ताव के आधार पर की जाती है। इस प्रकार, मानव संसाधन का मूल्य वैकल्पिक प्रयोग में व्यक्तिगत कार्मिक के मूल्य के आधार पर निर्धारित होता है।

इस प्रणाली में लाभ केन्द्र के प्रबंधकों को दुर्लभ कर्मचारियों के कीमत प्रस्ताव डालने हेतु प्रस्ताव प्रोत्साहित किया जाता है। सफल कीमत प्रस्ताव को संगठन के मानव संसाधन विनियोग में सम्मिलित किया जाता है। कर्मचारियों की योग्यताऐं लाभों के सृजन से संबंधित होती है और मानव संसाधनों की प्रभावपूर्ण आवंटनों को सुनिश्चित करती है। कर्मचारी को प्रभागीय प्रबंधकों में से उच्चतम प्रस्तावित कीमत डालने वाले प्रबंधक को आवंटित कर दिया जाता है और प्रस्तावित कीमत को प्रभाग के विनियोग आधार में सम्मिलित कर दिया जाता है। उच्चतम प्रस्तावित कीमत उस सीमा तक जा सकती है, जहां तक अधिशासी प्रबंधकों की योग्यता एवं दक्षता के द्वारा सृजित प्रत्याशित अतिरिक्त लाभों का पूंजीकृत मूल्य हो सकता है।

<u>उदाहरण 1 :</u>एक्स0 वाई0 जेड0 लिमिटेड का पूंजीगत आधार रू0**10,00,000**का है और यह रू0**1,00,000** का लाभ अर्जित करता है। यदि एक विशिष्ट अभियंता की सेवाओं

की आवश्यकता होगी तो लक्षित लाभ के ऊपर लाभ में रू0 **30,000**की वृद्धि होने की प्रत्याशा है।

12% प्रत्याय की दर पर रू0 30,000 का पंजीकृत मूल्य –30000 x 100/12 =रू0 2,50,000

वह सीमा जहां तक कम्पनी एक अभियंता का कीमत प्रस्ताव रख सकती है =रू0 2,50,000

नवीन पूंजीकृत आधार = 10,00,000 +2,50,000 = रू0 12,50,000

नवीन पूंजीकृत आधार पर आवश्यक प्रत्याय 12% की दर से = 12,50,000 x 12 /100 = रू0 1,50,000

पुरानी पूंजीकृत आधार पर सृजित लाभ = रू0 1,00,000

अभियंता के द्वारा अतिरिक्त लाभ का सृजन रू0 1,50,000–रू0 1,00,000 = रू0 50,000

अतः अधिकतम प्रस्तावित कीमत, अतिरिक्त लाभ के पूंजीकृत मूल्य अर्थात 50000 x 100/12 = रू0 4,16,667 तक जा सकती है।

लाभ :इस दृष्टिकोंण के समर्थक यह दावा करते हैं कि प्रस्तावित मूल्य डालने की प्रक्रिया निम्नवत् रूप में लाभदायक होती है :

- मानव संसाधनों का अधि अनुकूलतम आवंटन और
- एक व्यवसाय के मानव संसाधनों का नियोजन, विकास एवं मूल्यांकन करना क्योंकि यह निर्णयन हेतु मात्रात्मक आधार प्रदान करता है।

सीमाऐं : अवसर लागत मॉडल की निम्नांकित सीमाऐं हैं :

- इसमें उन कर्मचारियों का मूल्य सम्मिलित नहीं होता है, जिन्हें तत्काल काम पर लिया जा सकता है। दूसरे शब्दों में यह उन कर्मचारियों पर ध्यान नहीं देता है, जो दुर्लभ नहीं हैं।
- एक कार्य में विशष्ट एक व्यक्ति जिसका कोई वैकल्पिक कार्य नहीं होता है, शून्य मूल्यांकन प्राप्त कर सकता है।
- सम्पूर्ण संगठन के आधार पर संकलित की गयी सूचनाओं को यह भ्रमित कर सकता है।

4. प्रमाप लागत विधि :

इस दृष्टिकोंण का प्रतिपादन डेविड वाटसन के द्वारा किया गया। इस विधि में, भर्ती, कार्य पर लेने, प्रशिक्षण और विकास की प्रमाप लागत प्रत्येक ग्रेड के कर्मचारियों हेतु प्रतिवर्ष संचयीकृत की जाती है। किन्तु यह विधि नियंत्रण के उद्देश्य तथा विचरणांश विश्लेषण के लिये उपयुक्त पायी गयी है। इसमें अपलेखन आदि के दोष भी सम्मिलित है।

वर्तमान मूल्य मॉडल :

वर्तमान मूल्य मॉडल मानव संसाधनों के मूल्यांकन के लिये पूंजी बजटन तकनीकों का प्रयोग करते हैं, जिसके पीछे यह तर्क है कि फर्म के कर्मचारियों का

मूल्य उनकी भावी आयों का कटौतीकृत मूल्य है। वर्तमान मूल्य विधियां सामान्यतया मानव ससांधनों में विनियोग की ऐतिहासिक प्रतिस्थापन लागत के अभिलेखन के स्थान पर आर्थिक मूल्य के मापन का प्रयास करती है।

वर्तमान मूल्य मॉडल संगठन के कर्मचारी द्वारा भविष्य में सृजित की जाने वाली सेवाओं के वर्तमान मूल्य के आधार पर मानव संसाधनों का मूल्यांकन करना चाहते हैं। इस उद्देश्य के लिये निम्नांकित दो दृष्टिकोंण सुझाये गये हैं :

- भावी वेतनों तथा कर्मचारियों से संबंधित पूंजीकृत लागतों (जैसे भर्ती, प्रशिक्षण, विकास की लागत) को कटौती की एक निश्चित दर से कटौतीकरण और
- एक निश्चित उपयुक्त दर से एक निश्चित तिथि पर संगठन की भावी आयों को कटौतीकृत करके तथा ऐसे वर्तमान मूल्य के ऐसे भाग को मानव संसाधनों को आवंटित करके ।

इन मान्यताओं के आधार पर एच0आर0ए0 के निम्नांकित मॉडलों को विकसित किया गया है :

1. लेव एवं स्वार्ट्ज मॉडल
2. हरमेन्सन का मॉडल
3. स्टॉकास्टिक पुरस्कार मूल्यांकन मॉडल
4. जग्गी एवं लॉव मॉडल
5. मोर्स मॉडल
6. चक्रवर्ती मॉडल
7. दास गुप्ता मॉडल

1. लेव एवं स्वार्ट्ज मॉडल :

इस मॉडल का विकास ब्रूच लेव एवं एवा स्वार्ट्ज ने 1971 में किया। उनका मत था कि फर्म की श्रमशक्ति के कुल मूल्य का निर्धारण, संगठन के प्रति व्यक्तिगत मूल्य के मापन की कार्यविधि का एक सरल विस्तारण है। इस मॉडल को भावी आयों के वर्तमान मूल्य का मॉडल भी कहा जाता है।

यह मॉडल एक वेतन आधारित मॉडल है। यह कुछ निश्चित मान्यताओं पर आधारित है। एक प्रमुख महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि कर्मचारी अधिवर्षता (रिटायरमैण्ट) तक संगठन को नहीं छोड़ेंगे। विभिन्न समूहों का कुल वर्तमान मूल्य सम्पूर्ण फर्म की भावी आयों के पूंजीकृत मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने कर्मचारियों की भावी आयों के वर्तमान मूल्यों को पूंजीकृत करने के उद्देश्य से पूंजी की लागत को दर के रूप में प्रयोग करने का समर्थन किया । उनके अनुसार एक्स0 आयु के व्यक्ति द्वारा प्रतिनिधित्व किये गये मानव संसाधनों का मूल्य, उसके रोजगार की अवशेष भावी आयों का वर्तमान मूल्य होता है। उन्होंने निम्नांकित सूत्र व्यक्तिगत मूल्य की गणना हेतु प्रदान किया :

वी आर0= Σ[आई0 (टी0)] / (1+आर0) टी0–आर0

जहां वी आर0 = आर0 वर्ष की आयु के व्यक्ति का मूल्य

आई0(टी) = अधिवर्षता तक व्यक्ति की वार्षिक आय

टी0 = अधिवर्षता आयु

आर0 = कटौती दर

किन्तु यह मॉडल निम्नांकित सीमाओं से ग्रस्त हैं :

(अ) एक व्यक्ति के एक संगठन के प्रति मूल्य का निर्धारण उस व्यक्ति की निहित योग्यताओं, गुणों और कौशलों से ही नहीं होता बल्कि उस संगठनात्मक भूमिका से भी होता है जो वह व्यक्ति को दी गयी है। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति का कौशल एवं ज्ञान अपने पृथक स्वरूप में संगठन के लिये मूल्यवान नहीं होता है। वह तब ही मूल्यवान होता है, जबकि ऐसे गुणों से संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति होती है।

(ब) यह मॉडल एक व्यक्ति द्वारा संगठन को मृत्यु अथवा अधिवर्षता के अतिरिक्त अन्य कारणों से छोड़े जाने की सम्भावना एवं प्रायिकता की अवहेलना करता है। व्यक्ति एक संगठन को कई कार्यों से छोड़ सकते है।

(स) यह निहित दलभावना के सही मूल्यांकन में असफल रहता है। दलभावना व्यक्तियों के मूल्यों के योग से कहीं अधिक होती है। यह मूल्यवान दल के सम्पूर्ण योगदान को प्रदर्शित नहीं करता है।

(द) यह मॉडल सुरक्षा, सौदाकारी क्षमता, कौशल एवं अनुभव इत्यादि की अवहेलना करता है, जो उच्चतर एवं निम्न वेतनों के भुगतान को प्रभावित कर सकता है। फिर कर्मचारियों को भुगतान किया गया वेतन संगठन के कर्मचारियों के वास्तविक मूल्यों को परिलक्षित नहीं करता है।

2. हरमेन्सन का मॉडल :

राबर्ट एच0 हरमेन्सन के द्वारा मानव संसाधनों के मापन के दो मॉडलों को सुझााया गया है :

(अ) कय की गयी ख्याति का मॉडल और (ब) समायोजित कटौतीकृत भावी मजदूरी का मॉडल।

(अ) कय की गयी ख्याति का मॉडल :

इस माडल में, यह तर्क दिया गया है कि फर्म के अधिलाभ (सामान्य से अधिक लाभ) मानव संसाधनों की उपस्थिति के संकेतक हैं। मॉडल प्रत्येक फर्म के संबंध में कर के पश्चात् शुद्ध आय (ई0ए0टी0) का कुल सम्पत्तियों (मानव संसाधनों को सम्मिलित करते हुए) से अनुपात की गणना को आवश्यक करता है। बाद में, इसकी तुलना सम्पूर्ण उद्योग के अनुपात से की जाती है। फर्म के मानव संसाधनों के मूल्यों की तत्पश्चात गणना भिन्नात्मक दरों की सहायता से की जाती है।

इस मॉडल में संगठन के मानव संसाधन मूल्य की गणना उद्योग अथवा उस कम्पनी समूह, जिसका फर्म एक भाग है, के सामान्य लाभों से अधिक आय को पूंजीकृत करके की जाती है। यह मान्यता की गयी है कि उपकम के द्वारा अर्जित अधिक लाभ कर्मचारियों की अतिरिक्त योग्यता के कारण प्राप्त किया गया है।

उदाहरण 2 : ए0बी0सी0 लिमिटेड में किया गया विनियोग रू0 5,00,000 है। सामान्य आय 10% हैं। कम्पनी 15% की दर से आय अर्जित कर रही है।

कम्पनी की वास्तविक आय (5,00,000 x 15/100)	75000
घटाया : सामान्य आय (5,00,000 x 10/100)	50,000
आधिक्य आय	25000
आधिक्य आय का पूंजीकृत मूल्य (25000x100/15)	1,66,167

अतः आधिक्य आय का पूंजीकृत मूल्य रू0 1,66,167 इस मॉडल के अनुसार मानव सम्पत्तियों का मूल्य है।

(ब) समायोजित कटौतीकृत भावी मजदूरी मॉडल :

यह मॉडल क्षतिपूर्ति को फर्म के प्रति व्यक्ति के मूल्य के मापन के लिये **सरोगेट** माप की तरह उपयोग करता है। क्षतिपूर्ति का अर्थ फर्म के कर्मचारियों की मजदूरी एवं वेतन की भावी श्रृंखला का वर्तमान मूल्य है। कटौतीकृत भावी मजदूरी श्रृंखला को **कार्यक्षमता अनुपात** के द्वारा समायोजित किया जाता है, जो समस्त फर्मों के साथ फर्म की विनियोग पर प्रत्याय के अनुपात का एक निश्चित अवधि में सामान्यतया चालू वर्ष और विगत 4 वर्षों का भारित औसत है।

भारों को विपरीत क्रम में आवंटित किया जाता है। जैसे चालू वर्ष को 5 और विगत चौथे वर्ष को 1 आवंटित किया जायेगा :

निम्नांकित सूत्र प्रयुक्त किया जायेगा :

आर0 एफ0(0)आर0 एफ0(1)आर0 एफ0(2) आर0 एफ0(3)आर0 एफ0(4)

कार्यक्षमता अनुपात = 5+ 4+ 3 +2 +1

आर0 ई0(0)आर0 ई0(1) आर0 ई0(2)आर0 ई0(3)आर0 ई0(4)

जहां,

आर0 एफ0 (0) = चालू वर्ष के लिये फर्म के स्वामित्व की सम्पत्तियों पर लेखांकन आय की दर

आर0 ई0 (0) = चालू वर्ष के लिये अर्थव्यवस्था में समस्त फर्मों के स्वामित्व की सम्पत्तियों पर लेखांकन आय की दर

आर0 एफ0 (4) = चौथे गत वर्ष के लिये फर्म के स्वामित्व की सम्पत्तियों पर लेखांकन आय की दर

आर0 ई0 (4) = चौथे गत वर्ष के लिये अर्थव्यवस्था में समस्त फर्मों के स्वमित्व की सम्पत्तियों पर लेखांकन आय की दर

कार्यक्षमता अनुपात 5 वर्षों की अवधि में एक दिये हुए उपक्रम में कार्यरत् मानव संसाधनों की प्रभावोत्पादकता की दर का मापन करता है। एक से अधिक का अनुपात यह व्यक्त करता है कि फर्म की प्रत्याय की दर, अर्थव्यवस्था की सभी फर्मों की प्रत्याय की औसत प्रत्याय दर से अधिक है। कई लेखकों ने कार्यक्षमता अनुपात की, इसके विषयपरक होने के आधार, पर आलोचना की है, क्योंकि इसमें भार देने की मनमानी प्रणाली है और यह मूल्यांकन अवधि को 5 वर्षों की अवधि में सीमित कर देता है।

इस दृष्टिकोंण का मुख्य दोष कार्यक्षमता अनुपात की गणना की विधि में विषयपरकता का होना है। कार्यक्षमता अनुपात की गणना करते समय हरमेंसन ने यह परिकल्पना की है कि फर्म का प्रदर्शन पूर्णतः कर्मचारियों के प्रयास के कारण होता है और अन्य बाह्य कारणों से नहीं होता है।

3. स्टॉकॉस्टिक पुरस्कार मूल्यांकन मॉडल :

इस मॉडल को फ्लेमहॉल्ट्ज के द्वारा सुझाया गया है, यह उन मुख्य चरों की पहचान करता है जो संगठन में व्यक्ति के मूल्य अर्थात् उसके प्रत्याशित वसूली मूल्य को निर्धारित करते हैं। एक व्यक्ति का प्रत्याशित वसूली मूल्य उसके द्वारा संगठन में प्रत्याशित रूप से बने रहने की अवधि में प्रदान की जाने वाली प्रत्याशित भावी सेवाओं का वर्तमान मूल्य है। यह मॉडल इस मान्यता पर आधारित है कि एक व्यक्ति का संगठन के प्रति मूल्य उस व्यक्ति के द्वारा संगठन में धारित पदस्थिति पर निर्भर करता है। व्यक्तियों का एक संगठनात्मक भूमिका से दूसरे की ओर गतिमान होना पुरस्कार के साथ एक स्टॉकॉस्टिक अर्थात अनेक संभावनाओं में से चयन की प्रक्रिया है। जैसे जैसे लोग एक संगठनात्मक भूमिका से विभिन्न भूमिकाओं की ओर गतिमान होते हैं एवं उन्हें धारण करते है, वे संगठन के प्रति सेवाऐं (अर्थात पुरस्कार) प्रदान करते हैं। किन्तु भविष्य में उनके द्वारा ग्रहण की जाने वाली भूमिकाऐं प्रत्येक व्यक्ति के लिये प्रायिकता के अनुसार निर्धारित की जायेगी। मॉडल संगठन के प्रति व्यक्ति के मूल्य का मूल्यांकन करने के लिये पांच चरणों का सुझाव देता है :

(अ) उस अवधि का निर्धारण जिसमें एक व्यक्ति संगठन में रहेगा अर्थात उसका प्रत्याशित सेवा काल।

(ब) सेवा की स्थितियों की पहचान अर्थात वह भूमिकाऐं जो वह धारण करेगा तथा वह समय जब संगठन को छोड़ कर चला जायेगा।

(स) संगठन के द्वारा व्युत्पादित मूल्य का अनुमान लगाना जब एक व्यक्ति एक निर्धारित समय के लिये एक विशिष्ट पदस्थिति को धारित करता है।

(द) निर्धारित भावी समयावधियों में प्रत्येक परस्पर अपवर्जी सेवा स्थितियों को धारण करने की प्रायिकता का अनुमान।

(य) मानव संसाधनों के वर्तमान मूल्य को प्राप्त करने हेतु कटौती की एक पूर्व निर्धारित दर से कटौतीकृत करना।

4. जग्गी एवं लॉव मॉडल :

जग्गी एवं लॉव के द्वारा प्रतिपादित मॉडल व्यक्तियों की अपेक्षा समूह के मूल्यांकन पर आधारित है। एक समूह कर्मचारियों के सजातीय समूह को व्यक्त करता है जो समान विभाग या प्रभाग के हो सकते हैं अथवा उनसे संबंधित नहीं भी हो सकते हैं। संगठन में एक व्यक्ति की प्रत्याशित सेवावधि या एक विशिष्ट स्तर या पदस्थिति पर सेवावधि का पूर्वानुमान कठिन हो सकता है किन्तु एक समूह आधार पर एक विशिष्ट समूह के द्वारा प्रत्येक आगामी अवधि के अंतर्गत या तो फर्म को छोड़ कर चले जाने या उच्च स्तरों को प्रोन्नत हो जाने के प्रतिशत को निश्चित करना अपेक्षाकृत सरल है।

संगठन के भीतर कर्मचारियों की भूमिकाओं में परिवर्तन पर ध्यान देते समय **मारकोव श्रृंखला प्रतिनिधित्व**का प्रयोग किया जा सकता है। मॉडल रैंक के ट्रांजिसनल मैट्रिक्स और सेवा के प्रत्येक रैंक के लिये प्रत्याशित मात्राओं के निर्धारण को आवश्यक करता है। मैट्रिक्स को संगठन में उपलब्ध कर्मचारियों के ऐतिहासिक कार्मिक अभिलेख से तैयार किया जा सकता है। सेवा की मात्राओं के मापन के उद्देश्य हेतु एक निश्चित सेवा या प्रदर्शन मापदण्ड का उपयोग किया जा सकता है। एक भावी सेवावधि में संगठन के विद्यमान कर्मचारी की प्रदत्त सेवाओं के मूल्य की, विद्यमान कर्मचारियों की वर्तमान संख्या, जो उस अवधि में प्रत्येक सेवास्थिति में होंगे, को प्रत्येक कर्मचारी की सेवा स्थिति या रैंक के मूल्य से गुणा करके , गणना की जा सकती है।

एक संगठन के मानव संसाधनों के मूल्य की गणना के लिये जग्गी एवं लॉव मॉडल का सूत्र निम्नवत् है :

टी0 वी0 –(एन0)आर0 एन0 (टी0) एन0 (वी0)

जहां,

टी0 वी0 – कॉलम वैक्टर जो प्रत्येक रैंक में वर्तमान कर्मचारियों के चालू मूल्य का संकेतक है।

(एन0) – कॉलम वैक्टर वर्तमान में प्रत्येक रैंक के कर्मचारियों का संकेतक है।

एन0 – समयावधि

आर0 – कटौती दर

(टी0) – रैंक ट्रांजिसनल मैट्रिक्स यह प्रायिकता उल्लिखित करते हुए कि एक कर्मचारी संगठन के भीतर प्रत्येक रैंक में रहेगा या उसके दिये हुए रैंक में अगली अवधि में पदावनत कर दिया जायेगा।

(वी0) – कॉलम वैक्टर प्रत्येक अवधि में रैंक 1 के कर्मचारी के आर्थिक मूल्य को उल्लिखित करते हुए

जग्गी एवं लॉव के द्वारा प्रदत्त मॉडल में मानव संसाधनों के मूल्य की गणना को कर्मचारियों के समूह को मूल्यांकन का आधार रखने के द्वारा सरलीकृत करने का प्रयास किया है। किन्तु यह मॉडल व्यवहार में प्रयोग करने में कठिन है क्योंकि विश्वसनीय आंकड़ों को प्राप्त करना कठिन है।

यह मॉडल मानवीय सम्पत्त्यिों का मूल्यांकन व्यक्तिगत आधार पर करने के स्थान पर समूह आधार पर करता है। उस मॉडल में **समूह** का आशय कर्मचायियों के सजातीय समूह से है, जिसका उसी समान विभाग में कार्यरत रहना आवश्यक नहीं है। एक व्यक्तिगत आधार पर भावी समयावधियों में सेवा में बने रहने और प्रोन्नति की सम्भावनाओं के अनुमान लगाना भी कठिन है।

5. मोर्स मॉडल :

इस विधि के अन्तर्गत मानव संसाधनों का मूल्य, कर्मचारियों की सेवाओं से उपक्रम के द्वारा व्युत्पादित शुद्ध लाभों के वर्तमान मूल्य के बराबर होता है। इस दृष्टिकोंण में निम्नांकित चरण सम्मिलित होते हैं :

(अ) कर्मचारियों द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप में भविष्य में प्रदान की जाने वाली सेवाओं का सकल मूल्य।

(ब) कर्मचारियों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष भावी भुगतानों का मूल्य निर्धारित किया जाता है।

(स) भावी मानव संसाधनों के मूल्य (उपरोक्त (अ) के अनुसार) का भावी भुगतानों (उपरोक्त (ब) के अनुसार) पर आधिक्य को निश्चित किया जाता है। यह उपक्रम को मानव संसाधनों के कारण अर्जित शुद्ध लाभों का प्रतिनिधित्व करता है।

(द) शुद्ध लाभों के प्रति पूर्व निर्धारित कटौती दर (प्रायः पूंजी की लागत) का प्रयोग करके, वर्तमान मूल्य निर्धारित किया जाता है। यह धनराशि उपक्रम के मानव संसाधनों के मूल्य का प्रतिनिधित्व करती है।

6. **चक्रवर्ती मॉडल :**

इस मॉडल को एकीकृत भुगतान मॉडल के नाम से भी जाना जाता है। इसे प्रो0 एस0 के0 चक्रवर्ती, जो एक उपक्रम के मानव संसाधनों पर मॉडल सुझाने वाले प्रथम भारतीय हैं, के द्वारा प्रतिपादित किया गया । इस मॉडल में, उन्होंने मानव संसाधनों को व्यक्तिगत रूप में नहीं बल्कि एकीकृत योग के रूप में मूल्यांकित किया है। किन्तु, प्रबंधकीय और गैर प्रबंधकीय मानव शक्ति को पृथक रूप से मूल्यांकित किया जा सकता है। समूह आधार पर, समूह के औसत वेतन को उस समूह के कर्मचारियों की औसत समयावधि से गुणा करके मानव संसाधनों के मूल्य को ज्ञात किया जा सकता है। आगामी कुछ वर्षों के लिये वेतन के भुगतान के औसत को संगठन की वेतन संरचना एवं प्रोन्नति योजना से ज्ञात किया जा सकता है। उन्होंने आगे सुझाया कि प्रत्येक कर्मचारी की भर्ती, भाड़े पर कार्य में लेने, चयन, विकास और प्रशिक्षण की लागत को पृथक से अभिलिखित किया जा सकता है। इन्हें स्थगित आयगत व्ययों की तरह संगठन में कर्मचारियों के बने रहने की प्रत्याशित औसत अवधि में अपलिखित किया जा सकता है। स्थगित भाग को संगठन के स्थिति विवरण में प्रदर्शित किया जाना चाहिये। यदि मृत्यु, छँटनी आदि के कारण कोई स्थायी रिक्ति रहती है तो उस वर्ष के लिये उस व्यक्ति से संबंधित स्थगित आयगत व्यय के शेष को उस वर्ष की ऐसी आय के सापेक्ष अपलिखित किया जाना चाहिये, जो उस वर्ष में विद्यमान होती है।

भावी अनुमानित आयों के वर्तमान मूल्य को निर्धारित करने के उद्देश्य हेतु कटौती दर को उस समयावधि में प्रत्याशित करने के पश्चात औसत विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय के रूप में लिया जाना चाहिये। उन्होंने प्रत्याय की परिवर्तनशील दरों के कारण होने वाले उच्चावचनों को दूर रखने के लिये ऐसी दीर्घकालीन दर को अपनाने का सुझाव दिया।

7. **दासगुप्ता मॉडल :**

इस दृष्टिकोण का सुझाव प्रो0 एन0 दास गुप्ता (1978) ने दियज्ञं पिछले पृष्ठों पर बताये गये विभिन्न दृष्टिकोणों में केवल उन लोगों को ध्यान में लिया गया है, जो रोजगार में नियोजित हैं और बेरोजगारों को छोड दिया गया है। उनके अनुसार

रोजगार प्राप्त और बेरोजगार दोनों प्रकार के व्यक्तियों को राष्ट्र के मानव संसाधनों के मूल्य के निर्धारण की परिधि में सम्मिलित किया जाना चाहिये। इस प्रकार, राष्ट्र का आर्थिक चिट्ठा बनाने के लिये ऐसी प्रणाली होनी चाहिये ताकि वह एक फर्म के ही नहीं बल्कि समस्त राष्ट्र के मानव संसाधनों के अनुरूप हो एवं उन्हें प्रदर्शित कर सकें, इसके अनुसार, व्यक्ति पर व्यय की गयी लागत संगठन में उस स्थिति तक व्यक्ति के मूल्य के रूप में ली जानी चाहिये जिसे उसके बौद्धिक स्तर से आगे समायोजित किया जाता है। इसमें व्यक्ति द्वारा उसकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर किये गये व्यय सम्मिलित होंगे बल्कि संगठन में नियुक्त मानव संसाधनों के भर्ती, प्रशिक्षण, परिचय और विकास पर संगठन द्वारा किये गये व्यय भी सम्मिलित किये जायेंगे। मूल्यांकन समूह के अनुसार किया सकता है यदि कर्मचारियों की संख्या अधिक है। इस प्रकार, निर्धारित मूल्य को आगे पुनः संगठन के द्वारा वर्ष के अन्त में आयु, वरिष्ठता, स्थिति, प्रदर्शन, अनुभव, नेतृत्व, प्रबंधकीय, दक्षताओं आदि के आधार पर समायोजित किया जाता है। मनोवैज्ञानिक एवं अन्य संबंधित विशेषज्ञ ऐसे मापन में सहायक होते हैं। संशोधित मूल्य वर्ष के अंत में कर्मचारियों का मूल्य होगा।

सैद्धांतिक रूप में यह मॉडल सुदृढ़ प्रतीत हो सकता है। किन्तु इसका व्यावहारिक उपयोग कठिन है। क्योंकि इसमें कई कारक सम्मिलित होते हैं, जिन्हें सारांकित रूप में और उद्देश्य परक ढंग से मौद्रिक रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

इस मॉडल के अनुसार मानव संसाधनों को आर्थिक चिट्ठे के सम्पत्ति एवं दायित्व दोनों पक्षों में प्रदर्शित किया जाना चाहिये। सम्पत्ति पक्ष में इसे स्थायी सम्पत्तियों के पश्चात मानव सम्पत्तियों के रूप में दिखाया जाना चाहिये, जिन्हें दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है :

1. व्यक्तियों का मूल्य 2. फर्म के विनियोग का मूल्य। दायित्व पक्ष में इन्हें पूंजी के पश्चात मानव सम्पत्तियों के रूप में दिखाया जाना चाहियें, जिसे सम्पत्ति पक्ष में व्यक्तियों के सापेक्ष मूल्य की तरह दिखाया गया है। इसे निम्नांकित उदाहरण से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है :

उदाहरण 3 :एक फर्म ने अपना व्यवसाय रू0 5,00,000 की पूंजी से प्रारम्भ किया। इसने रू0 2,50,000 की स्थायी सम्पत्तियां नकद क्रय की। इसने रू0 1,30,000 कार्यशील पूंजी के रूप में रखा और रू0 1,20,000 अभियंताओं एवं कुछ कामगारों की भर्ती, प्रशिक्षण एवं विकास में व्यय किये। अभियंताओं एवं कामगारों का मूल्य रू0 4,00,000 पर मूल्यांकित किया गया। इन मदों को आर्थिक चिट्ठे में दर्शाइये।

आर्थिक चिट्ठा

(मानव संसाधनों को सम्मिलित करते हुए)

दायित्व	धनराशि	सम्पत्तियां	धनराशि
पूंजी	5,00,000	स्थायी सम्पत्तियां	2,50,000
मानव सम्पत्तियां	4,00,000	मानव सम्पत्तियां	
		व्यक्तिगत सम्पत्तियां	4,00,000
		फर्म के विनियोग का	1,20,000

		मूल्य चालू सम्पत्तियां घटाया : चालू दायित्व	1,30,000
	9,00,000		9,00,000

14.8 कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत आवश्यकताऐं

वर्तमान में, भारत में कम्पनियों को अपने कर्मचारियों के विषय में सूचनाऐं जैसे नाम, आयु, योग्यता, पदनाम, कर्तव्यों की प्रकृति, पारिश्रमिक, नियुक्ति की तिथि, अनुभव इत्यादि कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 217 (2A) जिसे कम्पनियां (कर्मचारियों का विवरण) संशोधन विनियम 1988 के साथ पढ़ा जाना है, के अनुसार देना अपेक्षित है, जो निदेशकों के प्रतिवेदन का भाग होता है।

अपने कर्मचारियों के संबंध में कम्पनियों के द्वारा प्रदत्त सूचनाऐं केवल विशिष्ट प्रकृति की होती है। अन्य शब्दों में, प्रबंधकीय कर्मचारियों के द्वारा आहरित पारिश्रमिक का विस्तृत विवरण मात्र ही वार्षिक प्रतिवेदनों में प्रदर्शित होता है और गैर प्रबंधकीय कर्मियों के पारिश्रमिक का विवरण प्रदर्शित नहीं होता है। प्रावधान केवल उन कर्मचारियों को सम्मिलित करता है, जिनका पारिश्रमिक कुछ निश्चित सीमाओं में आता है। साथ ही, केवल उन कम्पनियों को जिनके कर्मचारियों ने निर्दिष्ट सीमा से अधिक पारिश्रमिक आहरित किया है, को ही इस संबंध में कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 217(2A) के द्वारा आवश्यक विवरण देना पड़ता है।

14.9 वित्तीय विवरणों में अभिलेखन एवं प्रकटीकरण

मानव संसाधनों के सम्पत्ति के रूप में मूल्यांकन के विभिन्न मॉडलों को समझाया जा चुका है। भारत में मानव संसाधन लेखांकन अब तक एक प्रणाली के रूप में सम्मिलित नहीं की गयी है। भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 वित्तीय विवरणों में मानव संसाधनों के विषय में किसी महत्वपूर्ण सूचना को प्रदर्शित करने का कोई क्षेत्र प्रदान नहीं होता है। इसके परे, कम्पनी अधिनियम, 1956 की ओर से मानव संसाधनों के मूल्य और लेखांकन वर्ष के अंतर्गत उनके प्रदर्शन के परिणामों के विषय में सूचनाऐं संलग्न करने का कोई कठोर निर्देश नहीं है। भारत में, मानव संसाधनों के मापन और प्रतिवेदन के प्रति, विशेषतः सार्वजनिक क्षेत्र में, एक उभरती हुई प्रवृत्ति विगत वर्षों में दिखायी दे रही है। भारत में लगभग 12 कम्पनियां ऐसी हैं, जिन्होंने अब तक मानव संसाधन लेखांकन को अपनाया है। केवल 4 कम्पनियों के आंकड़े तुलना के योग्य हैं। यह कम्पनियां निम्नलिखित हैं :

1. **भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लि0 (बी0 एच0 ई0 एल0)** : पहली भारतीय कम्पनी है, जो 1974–75 से मानव संसाधन लेखें प्रकाशित कर रही है; और यू0एस0ए0 से बाहर सूचीकृत ‘फार्चून 500’ कम्पनियों में से एक है।
2. **स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड (एस.ए.आई.एल.)** : जो पाँच स्टील प्लाण्टों के एकीकरण से निर्मित सार्वजनिक क्षेत्र की एक सूत्रधारी कम्पनी है।

3. **मिनरल एण्ड मैटल्स ट्रेडिंग कार्पोरेशन (एम.एम.टी.सी.)** : जो भारत में सबसे बडा व्यापारिक संगठन है।
4. **सदर्न पेट्रोकेमिकल्स इन्डस्ट्रीज कार्पोरेशन लिमिटेड (एस.पी.आई.सी.)** : जो संयुक्त क्षेत्र में सबसे बडे विविधीकृत संगठनों में से एक उर्वरक, रसायन एवं इलेक्ट्रॉनिक उत्पादक है।

अधिकांश भारतीय उपक्रम लेव और स्वार्टज मॉडल को इस अर्थ में उपयोग करते हुए अवलोकित किये गये हैं कि उन्होंने मानव संसाधनों के मूल्यांकन की आधारभूत संरचना के रुप में अपने कर्मचारियों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष भावी भुगतानों के वर्तमान मूल्य की गणना की है।

14.10 मानव संसाधन लेखांकन की समस्यायें एवं सीमायें

इसमें कोई संदेह नहीं है कि एच.आर.ए. प्रबंध एवं बाह्य पक्षों दोनों को मूल्यवान सूचना उपलब्ध करा सकता है। फिर भी विभिन्न उद्योगों एवं संगठन में इसका विकास एवं अनुप्रयोग बहुत उत्साह वर्धक नहीं रहा है। यह सामाजिक लेखांकन की लेखांकन अवधारणा की तरह बहुत लोकप्रिय नहीं हुई क्योंकि यह तत्काल एवं मूर्त लाभों को नहीं दे पाती है और लेखाकारों तथा अन्य संबन्धित पक्षों के बीच मानव संसाधनों के मापन के आधार के विषय में मतैक्य न होने का तथ्य भी इसके लिए उत्तरदायी है। एच.आर.ए. की प्रणाली को प्रारम्भ करने में संगठनों की उदासीनता के लिए निम्नलिखित कारणों को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है :

1. एक संगठन में मानव संसाधनों की लागत एवं मूल्य को ज्ञात करने हेतु कोई विशिष्ट एवं स्पष्ट मार्ग निर्देश नहीं हैं।विद्यमान मूल्यांकन प्रणाली कई कमियों से ग्रस्त है।
2. मानव संसाधनों का सेवा काल अनिश्चित होता है और इस प्रकार उनका मूल्यांकन भी अनिश्चित एवं यथार्थ से परे होता है।
3. यह संभव है कि एच.आर.ए. से कर्मचारियों में अमानवीयता एवं गड़बड़ी आ सकती है । उदाहरणार्थ एक कम मूल्यवान व्यक्ति हतोत्साहित अनुभव कर सकता है, जिसके परिणाम स्वरुप उसकी दक्षता प्रभावित हो सकती है।
4. यहपरिकल्पना कि एच.आर.ए. एक प्रबंधकीय उपकरण के रुप में मानव संसाधनों के बेहतर एवं प्रभावी प्रबंधन की सुविधा प्रदान करता है, के पक्ष में मूलभूत साक्ष्यों को ज्ञात करने की अत्यंत आवश्यकता है।
5. भौतिक सम्पत्तियों के विपरीत मानव संसाधन संगठन की इच्छानुसार अपनाने, संधारित करने एवं उपयोग करने में सक्षम नहीं होते हैं। अतः उन्हें सम्पत्ति शब्द की परिभाषा में कठोरता से प्रयोग किया जाना उपयुक्त नहीं हो सकता है।
6. श्रम संघों से विरोध का डर लगातार बना रहता है। कार्मिकों का मूल्य निर्धारण उन्हें मूल्यांकन के आधार पर पुरस्कार एवं क्षति पूर्ति करने हेतु उत्प्रेरित कर सकता है।
7. कर संबन्धी कानून मानव संपदा को सम्पत्ति नहीं मानते हैं। अतः मानव संसाधन लेखांकन केवल एक सैद्धान्तिक अवधारणा बन कर रह गयी है।

14.11 सारांश

मानव संसाधन लेखांकन (एच.आर.ए.) संगठन का लेखा पुस्तकों में मानव संसाधनों के कार्य को व्यवस्थित ढंग से मूल्यांकन, अभिलेखन एवं प्रस्तुतीकरण की कला है। एच.आर.ए. का उद्देश्य सामान्य जनता को उपक्रम के द्वारा मानव पूँजी और मानव संसाधनों पर उसके प्रभाव की सूचना प्रदान करना होता है। एच.आर.ए. विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय का उचित निर्वचन करने में सहायता करता है, प्रबंकीय निर्णयन में सुधार करता है, उत्पादकता में वृद्धि करता है, सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। विनियोग निर्णयों मे सहायता करता है, पूर्ण प्रबंधकीय सूचना प्रणाली का सृजन करता है और मानवीय कार्य क्षमता में अभिवृद्धि करता है। मानव संसाधनों के मूल्यांकन की अनेक विधियाँ विकसित की गयी हैं और जिन्हें व्यापक रुप में लागत मॉडल एवं वर्तमान मूल्य मॉडलों में वर्गीकृत किया जा सकता है। लागत विधियों पर आधारित एच.आर.ए.मॉडलों में संगठन के प्रति मानव संसाधनों की लागत की गणना निहित होती है, जबकि वर्तमान मूल्य विधियाँ मानव संसाधनों के मूल्यांकन के लिए पूँजी बजटन तकनीकों का प्रयोग करती हैं । भारत में कई कम्पनियों ने इन मॉडलों को भारतीय परिस्थितियों के अनूरुप संशोधित कर अपनाया है। मानव संसाधनों के मूल्यांकन हेतु सामान्यतया स्वीकृत मापदण्डों का अभाव इसके व्यापक अंगीकरण की दिशा में एक बडी बाधा ळें किन्तु, जैसे – जैसे विभिन्न मॉडलों के प्रयोग में और अधिक अनुभव एकत्रित होता जायेगा, यह अपेक्षा है कि आने वाले वर्षों में कम्पनी प्रतिवेदन व्यवहारों में लेखांकन के इन उभरते हुए विचरणात्मक पहलुओं को अधिक महत्व प्रदान किया जायेगा।

14.12 शब्दावली

मानव संसाधन लेखांकन : मानव संसाधनों के विषय में आंकडों के पहचान करने तथा मापन करने की प्रक्रिया तथा रुचिकर्ता पक्षों को इस जानकारी को सम्प्रेषित करना।

. **प्राप्त करने की लागतः**कर्मचारियों के कार्य हेतु प्रतिवेदन करने के चरण तक की गयी लागत प्राप्त करने की लागत कहलाती है।

. **श्रम आवर्त** : यह संगठन में और इसके बाहर की ओर व्यक्तियों का गतिमान होना है।

एच0आर0ए0–मानव संसाधन लेखांकन,

एस0ए0आइ0एल0–स्टील अथॉरिटी आफ इण्डिया लिमिटेड,

स्टॉकॉस्टिक –अनेक संभावनाओं में से चयन की प्रक्रिया,

कार्यक्षमता अनुपात– समस्त फर्मों के साथ फर्म की विनियोग पर प्रत्याय के अनुपात का एक निश्चित अवधि में सामान्यतया चालू वर्ष और विगत 4 वर्षों का भारित औसत

14.13 बोध प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. विभिन्न प्रकार के कर्मचारियों का संयोजन एव अनुपात संगठन में .... महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

2. मानव संसाधन संगठन को ठीक उसी प्रकार लाभ पहुँचाते हैं जिस प्रकार .... संसाधन लाभ पहुँचाते हैं।
3. परम्परागत लेखांकन प्रणाली मानव संसाधनों को चालू लागत की तरह मानती है और ऐसी लागतों को .... से .वसूल करती है ।
4. .... में लाभ केन्द्रों के प्रबंधकों को किसी भी दुर्लभ कर्मचारी ,जिसे वह चाहते हैं, के लिए मूल्य प्रस्ताव डालने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।
5. वर्तमान मूल्य मॉडल मानव संसाधनों के मूल्यांकन हेतु .... तकनीकों का उपयोग करता है।
6. विभिन्न समूहों के वर्तमान मूल्यों का योग सम्पूर्ण फर्म के पूँजीकृत .... का प्रतिनिधित्व करता है।
7. समायोजित कटौतीकृत भावी मजदूरी मॉडल .... को फर्म के व्यक्तियों के मूल्य के सरोगेट मापन की तरह प्रयोग करती है।
8. मोर्स मॉडल में, मानव संसाधनों का मूल्य कर्मचारियों की सेवाओं से व्युत्पादित शुद्ध लाभों के .... बराबर होता है।
9. भौतिक सम्पत्तियों के विपरीत , मानव संसाधन संगठन की .... अपनाने, संधारित करने एवं उपयोग करने में सक्षम नहीं होते हैं।

14.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. विकास	2. वित्तीय एवं भौतिक	3. आगम
4. अवसर लागत मॉडल	5. पूंजी बजटन	6. भावी आय अर्जन
7 क्षतिपूर्ति	8 वर्तमान मूल्य	9. इच्छानुसार

14.15 स्वपरख प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. मानव संसाधन लेखांकन से आप क्या समझाते हैं? इस प्रणाली के उद्देश्य बतायें।
2. मानव संसाधन लेखांकन की विभिन्न विधियों की व्याख्या कीजिये। वर्तमान परिस्थितियों में भारत में अपनाने हेतु आप इनमें से किस विधि को संस्तुत करेंगे? कारण दीजिये।
3. मानव संसाधन लेखांकन की सूचना प्रबंध हेतु किस तरह उपयोगी होती है? समझाइये।
4. मानव संसाधन लेखांकन की मुख्य समस्याऐं एवं सीमाऐं दीजिये।
5. मानव संसाधन लेखांकन के लेव एवं स्वार्ट्ज मॉडल की तुलना फ्लेमहॉल्ट्ज मॉडल से कीजिये। इसकी कमियां बताइये।

14.16 सन्दर्भ पुस्तकें

1. ई0सी0 फ्लेमहॉल्ट्ज, ह्यूमन रिसोर्स एकाउण्टिंग, डिकिन्सन पब्लिशिंग कम्पनी, कैलीफोर्नियां।

2. अमेरीकन एकाउण्टिंग ऐसोसियेसन, रिपोर्ट ऑन एकाउण्टिंग फॉर ह्यूमन रिसोर्सेज, द एकाउण्टिंग रिव्यू सप्लीमैण्ट्स।
3. रोजर एच0 हरमैंसन, एकाउण्टिंग फॉर ह्यूमन एसैट्स मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, मिशिगन।
4. अमेरिकन एकाउण्टिंग ऐसोसियेसन्स कमेटी ऑन ह्यूमन रिसोर्स एकाउण्टिंग, द एकाउण्टिंग रिव्यू सप्लीमैण्ट्स।
5. बिक्की जग्गी एण्ड एच0 एस0 लॉव, टूवार्ड्स ए मॉडल फॉर ह्यूमन रिसोर्स वेल्यूएसन,एकाउण्टिंग रिव्यू।
6. ई0 सी0 फ्लेमहॉल्ट्ज, द इम्पैक्ट ऑफ ह्यूमन रिसोर्स वेल्यूएसन ऑन मनैजमैण्ट डिसीजन्स, एकाउण्टिंग, आर्गनाइजेसन्स एण्ड सोसायटी।

इकाई 15 अमूर्त सम्पत्तियों के लिये लेखांकन

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना
15.2 अमूर्त सम्पत्तियां
15.2.1 पेटेन्ट
15.2.2 डिजाइन
15.2.3 व्यापारिक चिन्ह
15.2.4 कॉपीराइट
15.2.5 तकनीकी ज्ञान
15.2.6 फ्रैंचाइजी अथवा तकनीकी ज्ञान के प्राधिकार
15.2.7 काल्पनिक सम्पत्तियां
15.2.8 ख्याति
15.3 अमूर्त सम्पत्तियों का उपयोगी जीवन काल
15.4 ख्याति का मूल्यांकन
15.4.1 लाभों/आवर्त के गुणनफल की विधि
15.4.2 प्रत्याशित प्रत्यायों के पूँजीकरण की विधि
15.4.3 अधिलाभ की वर्तमान मूल्य विधि
15.5 ख्याति का लेखांकन
15.6 अमूर्त सम्पत्तियों के कुछ आधुनिक स्वरूप
15.7 भारतीय अनुभव
15.8 सारांश
15.9 शब्दावली
15.10 बोध प्रश्न
15.11 बोध प्रश्नों के उत्तर
15.12 स्वपरख प्रश्न
15.13 सन्दर्भ पुस्तकें

उददेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- अमूर्त सम्पत्तियों की अवधारणा को समझ सकें और अमूर्त सम्पत्तियों के सामान्य उदाहरणों को समझ सकें।
- अमूर्त सम्पत्तियों के उपयोगी जीवन काल की व्याख्या कर सकें ।
- ख्याति का मूल्यांकन एवं लेखांकन कर सकें।

15.1 प्रस्तावना

'सम्पत्ति' शब्द से मस्तिस्क में किसी ऐसे वस्तु की परिकल्पना होती है, जिसे देखा अनुभव, प्रयुक्त, अधिकार और त्याग किया जा सकता है। भूमि, भवन, मशीनरी, प्लांट, संयंत्र, वाहन, उपकरण इत्यादि सभी इस अर्थ में सम्पत्तियां हैं। हम

सामान्यतया सम्पत्तियों का वस्तुओं से संबंध स्थापित करते हैं, जिनका भौतिक अस्तित्व होता है। एक अर्थशास्त्री की दृष्टि में जो सम्पत्ति है वह लेखाकार की दृष्टि में बिल्कुल भिन्न होती है। वह उन व्ययों को जो व्यवसाय में एक वर्ष से अधिक की अवधि में आय अर्जित करने में योगदान करते हैं, को सम्पत्तियां मानता है। चाहे व्ययों से भौतिक रूप से पहचानने जा सकने वाली वस्तुऐं जिसमें प्रत्यक्ष रूप में आय का सृजन होता है, उत्पन्न होतें हों, अथवा विशेषाधिकार, दावे या पूर्वाधिकार प्राप्त होते हों और अप्रत्यक्ष रूप से आय में भी योगदान होता हो, किन्तु वह लेखाकार के लिये तब तक अप्रासंगिक हैं, जब तक वह आय उत्पन्न नहीं करते हैं। भौतिक रूप में पहचाने जा सकने वाले व्ययों के प्रथम समूह को मूर्त सम्पत्तियां कहा जाता है और दूसरे वर्ग को अमूर्त सम्पत्तियों के नाम से जाना जाता है।

15.2 अमूर्त सम्पत्तियां

अमूर्त सम्पत्तियां विशेषाधिकारों, दावों एवं पूर्वाधिकारों को प्राप्त करने के लिये किये गये ऐंसे व्यय होते हैं, जो व्यवसाय को उसके उपयोगी जीवन काल में अप्रत्यक्ष रूप में योगदान करते हैं। एक अमूर्त सम्पत्ति अदृश्य होती है और उनके लक्षणों, दावों, उपयोगिता एवं अवधि का नियमन उनके लिए विशेष रूप से निर्मित विधान के द्वारा किया जाता है।

यह विधान अधिकार, दावों एवं पूर्वाधिकारों के उपयोगकर्ताओं को अधिकार और उत्तरदायित्व प्रदान करते हैं। अमूर्त सम्पत्तियों के सामान्य उदाहरण पेटेंट, डिजाईन, व्यापारिक चिन्ह, कॉपीराइट, तकनीकी ज्ञान, फ्रैंचाइजी या प्राधिकार, ख्याति इत्यादि हैं।

15.2.1 पेटेंट

पेटेंट एक व्यक्ति को स्वीकृत एकाधिकार है, जिसने एक नवीन या उपयोगी वस्तु का आविष्कार या वर्तमान वस्तु का सुधार या एक नयी वस्तु को आविष्कारक द्वारा स्वयं या उसके द्वारा निर्धारित व्यक्ति के द्वारा व्यापारिक विदोहन के लिये बनाने की नई प्रक्रिया का आविष्कार किया है। यह आविष्कारक को उसके प्रयासों के लिये एक सीमित अवधि हेतु लाभान्वित करने का निरपेक्ष अधिकार है। भारतीय पेटेंट अधिनियम 1970 पेटेंट से संबंधित कानून का नियमन करता है। अधिकार की वैधता की अवधि खाद्य प्रसंसकरणों हेतु पेटेंट की तिथि से 7 वर्ष एवं दवाओं के लिये पेटेंट की तिथि 14 वर्ष है। आविष्कार को भावी अवधियों हेतु नवीनीकृत भी कराया जा सकता है। नवीनीकरण न कराने की दशा में इस अवधि के समाप्त होने पर कोई भी आविष्कार का उपयोग कर सकता है।

निर्धारित शुल्क के भुगतान के द्वारा पेटेंट को पेटेंट नियंत्रक के पास पंजीकृत कराया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो पेटेंट प्रक्रिया का अतिक्रमण करता है, को कानूनी कार्यवाही के लिये उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।

15.2.2 डिजायन (प्रकल्प) :

डिजायन औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा किसी वस्तु पर प्रयुक्त कोई स्वरूप संरचना, बनावट या प्रतिरूप है, जो निर्मित वस्तु में नजर को आकृष्ट करते हैं और मात्र नजर के द्वारा जांच किये जाते हैं। यह अधिकार नवीन एवं मूल डिजायनों के स्वमियों की

अतिक्रमक्ष से सुरक्षा करते हैं। रूचिकर्ता व्यक्ति अपने डिजायनों को भारतीय पेटेंट एवं डिजायन अधिनियम 1911 के अंतर्गत डिजायनों के महानियंत्रक के पास पंजीकृत करा सकते हैं।

15.2.3 व्यापारिक चिन्ह या ट्रेडमार्क :

व्यापारिक चिन्ह शब्द, यंत्र, नाम, अक्षर, ब्राण्ड, शीर्षक, हस्ताक्षर या वर्णनात्मक चिप्पी, जो उस व्यापारिक चिन्ह के स्वामी के साथ वस्तु के सम्बन्ध के संकेतक हैं, के दृश्य प्रतीक होते हैं। व्यापारिक चिन्ह का उद्देश्य व्यापारिक चिन्ह से अंकित माल को, दूसरे समान माल से अंतर कराना है और इस प्रकार उपभोक्ताओं की विशिष्ट मांगों को आकृष्ट करना है। व्यापारिक चिन्हों को वर्ष 2003 तक व्यापार एवं व्यापारिक चिन्हअधिनियम 1958 के अंतर्गत पंजीकृत कराना पड़ता था। अधिनियम के अंतर्गत माल के मात्र 34 वर्ग पंजीकृत थे। चिन्हों को पंजीकृत नहीं किया जाता था। वैश्वीकरण के पश्चात अर्थव्यवस्था में सेवाक्षेत्र के द्वारा अग्रणी भूमिका का निर्वहन किये जाने पर, एक नया अधिनियम, ट्रेडमार्क अधिनियम 1999 पारित किया गया। अधिनियम वर्ष 2003 से लागू हुआ। अधिनियम के अनुसार सेवा के 10 वर्गों में सेवा चिन्हों का पंजीकरण अनुमन्य किया गया। पंजीकरण के उद्देश्य से चिन्हों को किसी भी सेवा व्यवसाय में प्रयुक्त चिन्हों के रूप में परिभाषित किया गया। जहां वास्तविक मूर्त वस्तु का उस सेवा चिन्ह के अंतर्गत व्यापार नहीं किया जाता था। विज्ञापन, बीमा, भूमि–भवन, भवन–निर्माण, दूरसंचार, परिवहन, शिक्षा, मनोरंजन, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियां, विज्ञान एवं तकनीकि सेवाऐं, शोध, कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर का डिजायन एवं विकास, विधिक, चिकित्सकीय एवं सुरक्षा सेवाऐं इत्यादि समूहों की सेवाऐं अनुमन्य की गयी हैं।

15.2.4 कॉपीराइट :

कॉपीराइट बौद्धिक एवं कलात्मक कृत्यों की सृजनकर्ताओं को प्रदत्त प्राथमिकतापूर्ण अधिकार है। यह साहित्य, नाटक, संगीत या कलात्मक कार्यों या दक्षताओं में रचनाकारों के परिश्रम के फल को, बिना उसकी अनुमति प्राप्त किये अन्य व्यक्तियों के द्वारा प्रयोग किये जाने से रोकता है। लेखक एवं कलाकार अपने कार्य को कॉपीराइट अधिनियम 1954 के अंतर्गत कापीराइट के रजिस्ट्रार के कार्यालय में कॉपीराइट कर सकते हैं। पंजीकरण लेखकों एवं कलाकारों और उनके उत्तराधिकारियों, वैधानिक प्रतिनिधियों को लेखक के जीवनकाल में तथा उसकी मृत्यु के 60 वर्ष तक उनके कार्यों का निरपेक्ष स्वामित्व प्रदान करता है।

15.2.5 तकनीकी ज्ञान :

तीव्र परिवर्तनों के इस दौर में शोध एवं विकास एक महत्वपूर्ण कम्पनी कार्य है। उत्पादों का एक जीवनचक्र होता है जो विकास, संवृद्धि, परिपक्वता एवं पतन की अवस्थाओं से निर्मित होता है। अतः स्वयं के अस्तित्व को बचाये रखने के लिये कम्पनियों को विद्यमान उत्पाद रेखाओं में सुधार करने एवं नवीन उत्पाद श्रेणियों को प्रारम्भ करने की सतत् आवश्यकता होती है। वर्तमान प्रथा यह है कि सृजनशील उपक्रमों को नवीन उत्पादों को प्रारम्भ करना चाहिये तथा अपने स्वये के उत्पादों को अप्रचलित कर देना चाहिये अन्यथा उनके प्रतियोगी ऐसा करने लगेगें। यह एक

सामान्य ज्ञान है कि इस प्रक्रिया में विकसित तकनीकि ज्ञान संबंधित संगठन का निरपेक्ष अधिकार है।

15.2.6 फ्रैंचाइजी अथवा तकनीकी ज्ञान के प्राधिकार :

तकनीकि ज्ञान के प्राधिकार उपक्रम के द्वारा तकनीकि ज्ञान के विकासकर्ताओं से एक सहमत अवधि के लिये एक प्रक्रिया उत्पाद या सेवा के विदोहन हेतु प्राप्त अधिकार है। प्राधिकार की प्रकृति तकनीकि ज्ञान की व्यवस्था करने से मिलती जुलती है। किन्तु प्राधिकार की दशा में अपवाद यह है कि प्राधिकारी को अन्वेषणकर्ता के ब्राण्ड नाम के प्रयोग का अधिकार सदैव प्रदान किया जाता है। यह सहयोग समझौते की दशा में आवश्यक नहीं हो सकता है, जहां ब्राण्ड नाम को प्रयोग करने का अधिकार तकनीकी ज्ञान के आपूर्तिकर्ता के विवेकाधीन होता है और प्रयोगकर्ता सामान्यतया यह उल्लिखित करता है कि उत्पाद का निर्माण अमुक कम्पनी के सहयोग से किया गया है। दूसरे, प्राधिकार में एक बहुप्रचलित व्यवहार तकनीकी ज्ञान की आपूर्ति प्राधिकार के स्थान पर आवश्यक उपकरणों की स्थापना के साथ की करने है। प्राधिकार के व्ययों में इस प्रकार तकनीकी ज्ञान के प्रयोग के बदले में अधिकार शुल्क के अतिरिक्त उपकरणों का किराया भी सम्मिलित किया जाता है। मूर्त सम्पत्तियों की भांति अमूर्त सम्पत्तियों को भी उनके प्रभावी जीवनकाल में अपलिखित किया जा सकता है। अमूर्त सम्पत्तियों के अपलेखन के लिये अंतिम समायोजन प्रविष्टि को तालिका संख्या 1 में दिया गया है।

तालिका संख्या 1 : गोस्वामी कम्पनी का रोजनामचा

विवरण	खाताबही पृ0सं0	डेबिट	केडिट
लाभ–हानि खाता डेबिट		50,000.00	
पेटेंट को			25000.00
कापीराइट को			15000.00
तकनीकि प्राधिकार को			10000.00

उपरोक्त वर्णित अमूर्त सम्पत्तियों के अतिरिक्त, एक लेखांकन अवधि में हम कुछ ऐसे किये गये व्ययों के सम्पर्क में आते हैं, जो आय के अर्जन में प्रत्यक्ष रूप में योगदान नहीं करते हैं। ऐसे व्ययों को एक साथ स्थगित व्ययों के रूप में समूहीकृत किया जाता है और पूंजी निर्गमन व्यय, प्रारम्भिक व्यय, आगे लायी गयी हानियों के शेष और स्थगित विज्ञापन व्यय उनकी सामान्यतया ज्ञात मदें है। पूंजी निर्गमन व्यय वह है जिन्हें एक कम्पनी अंशपूंजी या ऋणपूंजी के निर्गमन के समय करती है। जैसे ब्राण्ड्स, ऋणपत्र और जमाये वर्तमान में निर्गमन व्यय, बड़े निर्गमनों के 15 से 25 प्रतिशत के बीच में और मध्यस्तरीय कम्पनियों में 25 प्रतिशत से अधिक होते है। जहां निर्गमन व्यय अधिक होते हैं वह एक लम्बी अवधि तक आय के अर्जन में योगदान करते हैं। ऐसी स्थिति में व्यय होने के वर्ष में ही समस्त व्ययों को वसूल करना उचित नही है। अतः ऐसे व्ययों का अपलेखन केवल एक वर्ष में नहीं किया जाता है। बल्कि इन्हे स्थगित करके उस अवधि के अंतर्गत अपलिखित किया जाता है, जिसमें यह

उपयोगी होते हैं। उदाहरणार्थ– 5 वर्षीय ब्राण्डों में, निर्गमन के व्ययों को 5 वर्षों की अवधि में अपलिखित किया जा सकता है। अंशपूंजी की दशा में, जिसे व्यवसाय के द्वारा तब तक प्रयुक्त किया जाता है जब तक कम्पनी अस्तित्व में रहती है, तो व्ययों के अपलेखन के लिये एक उचित अवधि को परिकल्पित किया जा सकता है। प्रारम्भिक व्यय जिनपर पूर्व के अध्याय में विस्तृत विवेचन किया जा चुका है, ऐसे वैधानिक व्यय हाते हैं, जिन्हें समान किस्तों में वैधानिक रूप में 10 वर्षों की अवधि में अपलिखित किया सकता है। वृहत् विज्ञापन व्ययों के संबंध में, जिनसे विज्ञापन के वर्ष की अपेक्षा आगे अनेक वर्षों में लाभ होना प्रत्याशित होता है, उन्हें स्थगित आयगत व्यय माना जाता है और उस अवधि के अंतर्गत अपलिखित किया जाता है, जिनमें विज्ञापन का प्रभावी होना मान लिया जाता है।

15.2.7 काल्पनिक सम्पत्तियां :

आर्थिक चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में गत वर्षों में व्यवसाय के द्वारा वहन की गयी, आगे लायी गयी हानियां सम्मिलित रहती हैं। यह लायी गयी हानियों के अमूर्त शेष होते हैं, किन्तु यह सम्पत्तियां नहीं हैं, क्योंकि यह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में आय के अर्जन में योगदान नहीं करते हैं। इन्हें काल्पनिक सम्पत्तियां कहा जाता है। यद्यपि सम्पत्तियों से पहले काल्पनिक का उल्लेख करना भ्रमपूर्ण है। हम उन्हें साधारण रूप में अमूर्त सम्पत्तियां कह सकते हैं। सामान्यतया इन शेषों को व्यवसाय की पूंजी एवं संचय से समायोजित किया जाता है और तत्पश्चात स्वामीगत पूंजी, जिसे शुद्ध मूल्य भी कहा जाता है, प्राप्त की जा सकती है। वार्षिक रूप में इसका एक भाग लाभ एवं हानि खाते से, निम्नांकित तालिका 2 में उल्लिखित रोजनामचा प्रविष्टि से समायोजित करके अपलिखित किया जाता है :

तालिका संख्या 2 : ए0 लिमिटेड का रोजनामचा

विवरण	खाताबही पृ0सं0	डेबिट	केडिट
लाभ–हानि खाता डेबिट		11,500.00	
स्थगित आयगत व्यय को			6250.00
प्रारम्भिक व्यय को			6250.00

आगे लायी गयी हानियों के शेषों को व्यवसाय की भावी आयों से आठ वर्षों के भीतर वसूल किया जाना होता है। निर्दिष्ट अवधि में इनके अवशोषित न हो पाने की दशा में, शेषों को स्वामीगत पूंजी के सापेक्ष समायोजित किया जाता है। व्यवसाय के भावी लाभों से हानियों को अपलिखित करने का औचित्य व्यवसाय के परिवर्तनशील अवसरों को अनुमन्य करने में निहित है। किन्तु यदि व्यवसाय निर्दिष्ट 8 वर्षों की अवधि में स्थगित लागत को समायोजित करने में सक्षम नहीं हैं, तो व्यवसाय के स्वामी को अपनी अक्षमता के लिये दण्डस्वरूप इस हानि को स्वयं वहन करना पड़ता है।

15.3.8 ख्याति :

ख्याति उपकम की एक महत्वपूर्ण अमूर्त सम्पत्ति है। यद्यपि कई व्यवसायिक उपकम समान या मिलती जुलती वस्तु या सेवाओं में व्यवहार करते हैं, जिनकी

गुणवत्ता, कीमत, सेवा पश्चात् विक्रय आदि समान रहती है और उपभोक्ता एक उपक्रम के विशिष्ट उत्पाद को दूसरे की अपेक्षा प्राथमिकता देते हैं। इस प्राथमिकता को प्रदान करने से उपक्रम की प्रतिष्ठा उत्पन्न होती है और इसे ख्याति कहा जाता है। संबंधित उपक्रम, उपभोक्ताओं के इस विशेष लगाव के परिणामस्वरूप, असाधारण लाभ अर्जित करने में सक्षम हो जाते हैं। उपभोक्ताओं के इस लगाव के फलस्वरूप व्यवसाय को अर्जित अतिरिक्त लाभ ख्याति है। ख्याति को इस प्रकार, "व्यवसाय के समान वर्गों में आने वाले उपक्रमों द्वारा अर्जित सामान्य स्तर के लाभ के ऊपर और अधिक प्रभावी प्रत्याशित लाभों के संबंध में व्यवसाय की प्रतिष्ठा के मूल्य" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। प्रो0 डिक्सी ने अपनी पुस्तक **ख्याति एवं लेखों में इसका व्यवहार** में ख्याति को लाभार्जन में सहायता के रूप में वर्णित किया है। उनके अनुसार ख्याति के लिये भुगतान का औचित्य है। **"जब एक व्यक्ति किसी ऐसे वस्तु के लिये भुगतान करता है जो उसे ऐसी स्थिति में पहुंचाते हैं, जिसमें वह अपने स्वयं के असहायतित प्रयासों से जितना धनार्जन कर सकता था, उससे अधिक करने के योग्य हो जाता है।"**उपरोक्त परिभाषओं से यह स्पष्ट होता है कि ख्याति व्यवसाय के द्वारा अपनी मूर्त सम्पत्तियों से जितना अर्जित किया जा सकता है उससे अधिक अतिरिक्त लाभ अर्जित करने की प्रतिष्ठा का मात्रात्मक मूल्य है। यह प्रतिष्ठा, जो उपभोक्ताओं के अधिमान पर निर्भर करती है, निम्नांकित विशिष्टताओं में से एक या अधिक के द्वारा उत्पन्न हो सकती है –जैसे इसकी स्थानीयता, व्यवसायी की व्यक्तिगत संलग्नता, वास्तविक अथवा काल्पनिक उत्पाद विभिन्नीकरण आपूर्ति पर निर्भरता, और अपने व्यवसाय को प्रतियोगिता को दूर रखने की व्यवसाय की योग्यता इत्यादि। ख्याति से स्वाभाविक रूप में ब्राण्ड समता सृजित होती है।

अमूर्त सम्पत्तियां या तो सृजित होती हैं अथवा उनसे प्राप्त की गयी होती है। जिन्होंने उन्हें सर्वप्रथम सृजित किया है। शोध, विकास एवं नवाचार अमूर्त सम्पत्तियों का सृजित करते हैं। अमूर्त सम्पत्तियों की लागत व्यवसाय के द्वारा इनके सृजन में प्रयुक्त संसाधन होती है। यदि अमूर्त सम्पत्तियों को प्राप्त किया गया है तो इनका मूल्य ऐसी प्राप्ति के लिये भुगतान किया गया क्रय मूल्य होता है। क्रय मूल्य, अमूर्त सम्पत्तियों के उपयोगी जीवनकाल में उनके द्वारा आय अर्जित करने के प्रत्याशित योगदान पर आधारित होता है। जब सृजन अथवा प्राप्ति की लागत महत्वहीन होती है तो इसे व्यय की अवधि के लिये आयगत व्यय माना जाता है और उस अवधि के लिये व्यवसाय की लाभदायकता के सापेक्ष वसूल किया जाता है। दूसरी ओर यदि लागत महत्वपूर्ण है तो व्यवसाय की एक अवधि में ही लाभदायकता से सम्पूर्ण लागत को वसूल करने से उस अवधि के परिचालनात्मक परिणाम वास्तविकता से परे हो जायेंगे। अतः लागत को पूंजीकृत करके और उसे एक सम्पत्ति के रूप में पुस्तकों में प्रदर्शित किया जायेगा, जिसे इसके उपयोगी जीवनकाल के अंतर्गत आय अर्जन, में इसके योगदान के परिकल्पित अनुपात में अपलिखित किया जायेगा।

15.3 अमूर्त सम्पत्तियों का उपयोगी जीवनकाल

अमूर्त सम्पत्तियों का अधिकतम उपयोगी जीवनकाल उन वैधानिक परिनियमों के द्वारा सीमित किया गया है, जिनसे उनका नियमन होता है। उदाहरणार्थ पेटेंट का उपयोगी जीवनकाल 14 वर्ष है। 14 वर्षें की अवधि पंजीकरण से प्रारम्भ होती है। इस प्रकार यदि एक पेटेंट इसके पंजीकरण के 4 वर्षों के पश्चात दूसरे व्यवसाय के द्वारा प्राप्त किया गया है तो इसका अवशेष जीवनकाल प्राप्तकर्ता के लिये 10 वर्षों का होगा। अपने उपयोगी जीवनकाल में बेहतर उत्पाद या प्रक्रियाओं के कारण आय सृजित करने की पेटेंट की योग्यता नष्ट हो जाने पर यह अप्रचलित हो जाता है, और सम्पूर्ण अदत्त धनराशि को उसी वर्ष में अपलिखित किया जाता है।

15.4 ख्याति का मूल्यांकन

ख्याति का मूल्यांकन अन्य अमूर्त सम्पतियों की अपेक्षा भिन्न प्रकार से होता है । भौतिक संसाधनों को ख्याति के विकास में विस्तारित नहीं किया जाता है। ख्याति उद्यमिता की उत्कृष्टता का मात्राकरण है। और यह अत्यधिक विषयपरक है। जब तक व्यवसाय के ढॉचे में कोई परिवर्तन प्रत्याशित नहीं होता है, ख्याति सुसुप्त बनी रहती है और इसके मूल्य को व्यवसाय के लेखे में प्रदर्शित नहीं किया जाता है। एकल व्यवसायी की दशा में, व्यवसाय के स्वामित्व में परिवर्तन के समय इसे लेखों में सम्मिलित किया जाता है। जब एकल व्यवसायी अपना व्यवसाय किसी अन्य को विक्रय करता है या किसी को व्यवसाय में साझेदार की तरह प्रवेश कराता है, वह उन प्रयत्नों को नवीनीकृत करता है, जो उसने व्यवसाय के नाम के सृजन में किये हैं। अतः वह ख्याति का मूल्यांकन करता है और इसे पूँजी के भाग के रुप में लेता है। इस संबन्ध में, ख्याति व्यवसाय को वर्तमान स्थिति में लाने हेतु व्यवसायी के गुणात्मक आगतों को परिलक्षित करती है। इस प्रकार ख्याति को व्यक्तियों की पसीने की पूँजी की तरह लिया जा सकता है। कम्पनी की दशा में ख्याति तब उत्पन्न होती है, जब उसके अंशधारण का ढांचा परिवर्तित होता है। यह जनता को अंशों के नवीन निर्गमन से पहले हो सकता है। किन्तु प्रायः यह अन्य कम्पनी को दूसरी कम्पनी के द्वारा अधिग्रहण का समय होता है। यदि 'अ' साझेदारों के रुप में 'ब' एवं 'स' को लेना चाहता है और वह रु. 2,50,000 के मूल्य की ख्याति सृजित करना चाहता है, तो आवश्यक रोजनामचा प्रवृष्टि निम्नवत होगी :

तालिका 3 –'अ' का रोजनामचा

विवरण	**खाता बही पृष्ट सं.**	**डेविट**	**क्रेडिट**
ख्याति खाता **डेविट** 'अ' की पूँजी को		2,50,000	 2,50000

ख्याति का मूल्यांकन कोई सरल कार्य नहीं है। व्यवसाय के नाम के सृजन के विभिन्न कारण होते हैं और प्रत्येक व्यवसाय ख्याति के मूल्यांकन के लिए विभिन्न मापदण्ड अपना सकता है। क्योंकि ख्याति का मूल्य जिसे उत्पन्न करना हो , क्रेता को स्वीकार्य भी होना चाहिए, अतः निर्णय वास्तव में जटिल होता है। सामान्यतया , ख्याति उपक्रम के लिए प्रदत्त सम्पूर्ण कीमत तथा सम्पत्तियों का दायित्वों पर शुद्ध आधिक्य

के बीच अन्तर के बराबर मूल्यांकित की जाती है। उदाहरणार्थ एक व्यवसाय की शुद्ध सम्पत्तियाँ (स्थायी एवं चालू सम्पत्तियाँ दोनों) रु. 27.50 लाख हैं। और व्यवसाय के लिए क्रय मूल्य रु. 33.5 लाख है। ख्याति का मूल्य रु. 17.50 लाख होगा।

ख्याति का मूल्य विषय परक होने के कारण, सौदाकारी मूल्य पर निर्भर करता है। अतः संबन्धित पक्षों की सौदाकारी शक्ति को परिलक्षित करता है। मूल्यांकन मनमाने प्रकृति का होता हुआ प्रतीत हो सकता है। अतः ख्याति के लिए एक सहमत मूल्य पर आने से पूर्व, क्रेता एवं विक्रेता दोनों निम्नांकित विधियों में से किसी एक अथवा अधिक पर आधारित ख्याति के प्रत्याशित मूल्य की गणना करते हैं :

- विगत वर्षों के औसत लाभों /अथवा आवर्त को निश्चित संख्या से गुणा करके ।
- निर्दिष्ट वर्षों की संख्या के अन्तर्गत प्रत्याशित भावी लाभों के पूँजीकरण के द्वारा ।
- व्यवसाय के द्वारा संभावित रुप में अर्जित किये जाने वाले अधिलाभों के वर्तमान मूल्य के द्वारा ।

15.4.1 लाभों / आवर्त के गुणनफल की विधि :

यह व्यवसाय के प्रदर्शन के ऐतिहासिक आंकडों पर आधारित है। इसके अन्तर्गत विगत पाँच से सात वर्षों का औसत शुद्ध लाभ या आवर्त की गणना की जाती है और ख्याति के मूल्य को उसके निश्चित गुणनफल से अनुमानित किया जाता है। उदाहरणार्थ विगत पाँच वर्षों हेतु हरी के व्यवसाय के औषत लाभ रु. 2,75,000 हैं और ख्याति को तीन वर्षों के गुणनफल के द्वारा अनुमानित किया जाता है, तो ख्याति का मूल्य रु. 8,25,000 होगा। अनेक सेवा उद्योगों जैसे वकीलों और डाक्टरों की दशा में, गुणनफल औसत आवर्त के आधार पर होंगे और औसत लाभों पर आधारित नहीं होंगे।

15.4.2 प्रत्याशित प्रत्यायों के पूँजीकरण की विधि :

इस विधि में, एक समयावधि में (सामान्यतया मुख्य सम्पत्ति के अवशेष जीवन काल में) प्रत्याशित रोकड. अर्न्तप्रवाहों की श्रंखला को अनुमानित किया जाता है। रोकड. प्रवाहों को क्रेता की वांछित दर से कटौतीकृत किया जाता है। कटौतीकृत रोकड. प्रवाहों के योग में से, सम्पत्ति के चालू पुस्तकीय मूल्य को घटाया जाता है। आधिक्य, यदि कोई हो, ख्याति का मूल्य माना जाता है। उदाहरणार्थ, ए की सम्पत्तियों का चालू पुस्तकीय मूल्य रु. 51 लाख है। सम्पत्तियों का अवशेष जीवन काल 6 वर्ष है। प्रत्याशित वार्षिक रोकड. अर्न्तप्रवाह मुख्य सम्पत्तियों के अवशेष जीवन काल के अन्तर्गत रु. 25 लाख, रु. 27 लाख, 24 लाख , रु. 22 लाख, रु. 20 लाख और रु. 18 लाख क्रमशः हैं। क्रेता की प्रत्याय की वांछित दर 18% है। 6 वर्षों के लिए भावी आयों का वर्तमान मूल्य होगाः

$$\Sigma \quad (25/1.18 + 27/1..18^2 + 24/1.18^3 + 22/1.18^4 + 20/1.18^5 + 18/1.18^6)$$

= 81.88 लाख रुपये

वर्तमान मूल्य को संलग्नक में प्रदत्त कटौती सारणियों के प्रयोग के द्वारा भी निकाला जा सकता है। इस प्रकार निकाले गये वर्तमान मूल्य के योग में से सम्पत्तियों के मूल्य

रु. 51 लाख को घटाकर , रु. 30.88 लाख का अवशेष रहता है, जो प्रत्याशित प्रत्यायों के पूँजीकरण की विधि के अन्तर्गत ख्याति का मूल्य है।

15.4.3 अधिलाभ की वर्तमान मूल्य विधि

मूल्यांकन की अगली विधि इस परिकल्पना पर आधारित है कि ख्याति का मूल्य असामान्य लाभों या अधिलाभों, जिन्हें व्यवसाय के द्वारा आगामी कुछ वर्षों में अर्जित करना प्रत्याशित है, के वर्तमान मूल्यों के समरुप होगा। क्योंकि एक आय अर्जित करने योग्य सम्पत्ति के रुप में ख्याति की उपयोगिता उपभोक्ताओं की इच्छा और प्राथमिकता में परिवर्तन , प्रतियोगियों की तकनीकी उन्नति आदि पर निर्भर करती है, अतः क्रेता सामान्यतया अधिलाभों को यथासंभव न्यूनतम अवधि जैसे 3 या 4 वर्ष के लिए प्राथमिकता देगा। व्यवसाय के प्रत्याशित अधिलाभों के कटौतीकृत रोकड. प्रवाहों का योग ख्याति का उचित मूल्य माना जायेगा। उदाहरणार्थ, रामदास के आगामी तीन वर्षों के अधिलाभों से प्रत्याशित रोकड. प्रवाह रु. 47 लाख ,रु. 45 लाख और रु. 43 लाख क्रमशः हैं। समान उद्योगों में पूँजीकरण की बाजार दर 25 प्रतिशत है। तीन वर्षों के लिए कटौतीकृत रोकड. प्रवाहों का योग रु. 88.4 लाख रु. है, जो इस विधि के अन्तर्गत ख्याति का मूल्य है।

15.5 ख्याति का लेखांकन

जब ख्याति सृजित हो जाती है, तो इसे अमूर्त सम्पत्ति के रुप में प्रदर्शित किया जाता है। क्योंकि सम्पत्ति का एक भाग वार्षिक रुप में अपलिखित किया जाता है, जो उस वर्ष की आय को अर्जित करने में उनके योगदान को परिलक्षित करता है, यह तर्कपूर्ण है कि ख्याति को भी अपलिखित किया जाय। किन्तु अन्य सम्पत्तियों (मूर्त एवे अमूर्त दोनों) तथा ख्याति के बीच अन्तर होता है। अन्य सम्पत्तियों की एक लागत होती है जो या तो व्यवसाय के द्वारा या विक्रेता के द्वारा विकास की लागत होती है। किन्तु ख्याति का सृजन व्यवसाय के द्वारा विना किसी मौद्रिक लागत को वहन करके, किया जाता है। अतः कर प्राधिकारी ख्याति को एक अनुमन्य लागत की तरह अपलिखित करने की अनुमति नहीं देंगे ।

इस प्रकार ख्याति को मालिकों या स्वामियों के वितरण योग के लाभों के सापेक्ष समायोजित किया जाना होता है। अथवा अन्य शब्दों में, यह स्वामियों के धन में कमी करेगा, जिन्होंने व्यवसाय को क्रय किया है। किन्तु, एक बार इसे अमूर्त सम्पत्ति मान लेने पर इसका अपलेखन किया जाना होगा। ख्याति के अभिलेखन की विधि के संबंध में, अमेरिका के लेखांकन सिद्धांत परिषद द्वारा स्थापित स्वीकृत लेखांकन परम्पराओं में निम्नांकित विकल्पों को निर्दिष्ट किया गया है :

- ख्याति को इसके पूर्ण मूल्य पर प्रतिधारित करना जब तक कि इसमें कमी या अपलेखन वांछित न हों।
- लागत को सम्पत्ति की तरह प्रतिधारित करना और इसके एक भाग को एक कल्पित जीवनकाल में अपलिखित करना। (ख्याति को इसके सृजन के 40 वर्षों के भीतर अपलिखित किया जा सकता है)।

- ख्याति के मूल्य को स्वामियों की समता से कम करना। तीसरी विधि, ख्याति को समता (अर्थात व्यवसाय के संकलित संचयों एवं आधिक्यों से) से इसके सृजन के वर्षों में कम करना एक आदर्श विकल्प होता है, बशर्ते कि कम्पनी की प्रतिधारित आय ख्याति के मूल्य के अवशोषण हेतु पर्याप्त मात्रा में है। ऐसी दशा में निम्नांकित रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगी।

तालिका –4 : एक्स0 का रोजनामचा

विवरण	खाताबही पृष्ठ संख्या	डेबिट	केडिट
संचय एवं आधिक्य **डेबिट**		7,50,000	
ख्याति खाता को			7,50,000

15.6 अमूर्त सम्पत्तियों के कुछ आधुनिक रूप

वैश्विक प्रतिस्पर्धा और इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं के शक्तिशाली हो जाने से अमूर्त सम्पत्तियों का क्षेत्र व्यापक हुआ है। विश्व स्तर पर व्यवसायी यह निरंतर अनुभव करते रहे हैं कि मूर्त सम्पत्तियों और पारम्परिक अमूर्त सम्पत्तियों के अतिरिक्त कुछ गैर पारम्परिक अमूर्त सम्पत्तियां भी व्यवसाय की आय अर्जित करने की क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान करती है। जाने–माने शोधकर्ताओं के द्वारा इन अमूर्त सम्पत्तियों की पहचान करने तथा इनके मात्राकरण हेतु प्रयास किये गये हैं। हम अमूर्त सम्पत्तियों के कुछ महत्वपूर्ण आधुनिक अवधारणाओं पर विचार कर सकते हैं।

1. **बौद्धिक पूंजी :**

गैर परम्परागत अमूर्त सम्पत्तियों का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करने वाली प्रथम बौद्धिक पूंजी अवधारणा है। स्टीवर्ट ने बौद्धिक पूंजी को **"बौद्धिक सामग्री जिसमें ज्ञान, सूचना, बौद्धिक सम्पदा और अनुभव सम्मिलित हैं, जिसे धन के सृजन के लिये उपयोग में लाया जाता है"** के रूप में वर्णित किया है। यह एक सामूहिक मस्तिष्क शक्ति है, जिसे मानव, संसाधन, संरचनात्मक पूंजी एवं उपभोक्ता पूंजी में से किसी एक के कारण उत्पन्न हुआ नहीं माना जा सकता है। यह इन समस्त कारकों के द्वारा सामूहिक रूप से सृजित एकीकृत शक्ति है। एन0आर0आई0 रिसर्च, इवॉन्सटन, इलिनॉयस के द्वारा इस अवधारणा को प्रतिपादित किया गया। उन्होंने परिगणित बौद्धिक मूल्य मॉडल (सी0आई0वी0एम0) नामक तकनीकी विकसित की, जो उद्योग में समान मूर्त सम्पत्तियों वाले व्यवसायों पर बौद्धिक पूंजी की योग्यता से विजय पाने की व्यवसाय की योग्यता का मापन करते हैं। सी0आई0वी0एम0 एक सरल तकनीक है जो सम्पत्तियों पर औद्योगिक प्रत्याय–इण्डस्ट्रियल रिटर्न ऑन एसैट्स (आर0ओ0ए0) को व्यवसाय की मूर्त सम्पत्तियों पर लागू करती है, जिसमें व्यवसाय की सम्पत्तियों पर सामान्य औद्योगिक प्रत्याय ज्ञात की जा सके। इस प्रकार से ज्ञात प्रत्याय में से व्यवसाय के वास्तविक लाभ को घटा दिया जाता है। आधिक्य प्रत्याय को बौद्धिक पूंजी के कारण उत्पन्न माना जाता है। उदाहरणार्थ, जेड लि0 का विगत 3 वर्षों का औसत परिचालन लाभ 46.20 करोड़ रू0 है। इसकी सम्पत्तियां का 3 वर्षों का औसत रू0 378.12 करोड़ रूपया है। सम्पत्तियों पर औसत औद्योगिक प्रत्याय 10% है।

सी0ए0वी0एम0 तकनीक को जेड लि0 द्वारा प्रदत्त सूचनाओं पर लागू करने से इसकी बौद्धिक पूंजी का मूल्यांकन रू0 56 करोड़ पर किया गया है, जिसे निम्नांकित तालिका 5 में प्रदर्शित किया गया है :

तालिका – 5 : जेड लिमिटेड

बौद्धिक पूंजी का मूल्यांकन (करोड़ रू0 में)

1. औसत मूर्त सम्पत्तियां	378.12
2. उद्योग का औसत आर0ओ0ए0	10%
3. औद्योगिक मापदण्ड के अनुप्रयोग के आधार पर प्रत्याशित लाभ	37.8
4. वास्तविक लाभ	46.2
5. बौद्धिक पूंजी के योगदान से लाभ	8.4
6. पूंजी की लागत	15%
7. जेड लि0 की बौद्धिक पूंजी का पूंजीकरण	56.0

(ब) मानव संसाधन सम्पत्तियों के रूप में :

बौद्धिक पूंजी के सृजन में योगदान देने वाले अनेक कारक हैं। इनमें, सर्वाधिक योगदान अकेले मानव संसाधन के द्वारा होता है। प्रबंध गुरू पीटर ड्रकर ने बहुत समय पहले से 'ज्ञान कार्मिक' और उनके द्वैध योगदान– कम्पनी के स्वामी के रूप में और कर्मचारी के रूप में, पर जोर दिया है। मानव पूंजी के मापन का प्रयास अनेक अर्थशास्त्रियों के द्वारा किया गया है, इसमें लेव एवं स्वार्ट्ज उल्लेखनीय है। उनके नाम से प्रतिपादित उनका मॉडल मानता है कि कर्मचारियों को उनके पदावनत होने तक वार्षिक पारिश्रमिक कम्पनी की लागत है और व्यवसाय की मानव पूंजी है। भारत में प्रमुख आई0टी0 कम्पनियों ने मूल्यांकन को अपने प्रतिवेदनों में सम्मिलित किया है। किन्तु यह प्रक्रिया बहुत पहले सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियों जैसे– भारतीय इस्पात प्राधिकरण और भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लि0 के द्वारा प्रारम्भ कर दी गयी थी। व्यापक रूप में, मानव पूंजी के मूल्यांकन के दो दृष्टिकोंण हैं – लागत आधारित एवं आर्थिक दृष्टिकोंण। लागत दृष्टिकोंण को आगे तीन और उपवर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है– ऐतिहासिक लागत, प्रतिस्थापन लागत और अवसर लागत। उपरोक्त एल0 एण्ड एस0 मॉडल अन्य विधियों जैसे – लिकर्ट फ्लेमबोल्ट्ज और जग्गी आर्थिक दृष्टिकोंण के भाग हैं। यद्यपि इसमें स्पष्टता नहीं है कि विभिन्न मानव पूंजी मूल्यांकन मॉडलों में कौन प्रभावशाली है, भारत में लेव एण्ड स्वार्ट्ज मॉडल दूसरों से अधिक प्रभावशाली प्रतीत होता है। एच0 आर0 विशेषज्ञ मानते हैं कि यह उनके मानव संसाधन की कार्यक्षमता को बैंचमार्क करने का अवसर प्रदान करता है। जैसा कि कई भारतीय कम्पनियों ने इस दृष्टिकोंण को अपनाया है। दूसरे, यह मूल्यांकन कम विषयपरक हैं, क्योंकि इसमें सीमित मान्यताऐं हैं। इसका विस्तृत विवरण पूर्व इकाई में दिया गया है।

(स) ब्राण्ड नामः

ब्राण्ड नाम कम्पनियों की आय एवं मूर्त सम्पत्तियों से आगे आय अर्जन करने में योगदान करते हैं। ब्राण्डों की आय अर्जित करने की क्षमता का इतना अधिक दावा

किया जाता है कि ब्राण्डों को समता के समान माना जाता है और सामान्य प्रयोग में ब्राण्ड समता का प्रयोग किया जाता है। ब्राण्डों को अमूर्त सम्पत्तियां माना जाता है और इनका मूल्यांकन कई दृष्टिकोंणो के उपयोग द्वारा किया जाता है। इस दृष्टिकोंण के अंतर्गत एक कम्पनी की ब्राण्ड सुदृढ़ता का निर्धारण 7 कारकों–**नेतृत्व, स्थायित्व, बाजार, अंतर्राष्ट्रीयता, प्रवृत्ति, समर्थन एवं संरक्षण** के आधार पर किया जाता है। इन कारकों को ब्राण्ड क्षमता के सृजन में उनके योगदान के महत्व के अनुसार उपयुक्त ढंग से भारांकित किया जाता है। संचयी भारित औसत ब्राण्ड का मूल्य होता है। चूंकि प्रत्येक कारक के योगदान का अंश कम्पनी से कम्पनी तक परिवर्तित होना मान लिया जाता है, अतः ब्राण्डों का मूल्यांकन अत्यधिक विषयपरक हो जाता है। इस प्रकार ब्राण्ड समता के मूल्यांकन के लिये कोई समान मापदण्ड नहीं अपनाया जा सकता है।

15.7 भारतीय अनुभव

यह हर्ष का विषय है कि भारतीय कम्पनियां भी धीरे–धीरे इन अमूर्त सम्पत्तियों को मान्यता देने की ओर गतिमान हो रही हैं। कुछ ब्लू चिप कम्पनियों जैसे– इन्फोसिस, सत्यम कम्प्यूटर्स एवं डा0 रेड्डीज लैब और सार्वजनिक क्षेत्र की वृहत स्तरीय कम्पनी बी0एच0ई0एल0 ने इन अमूर्त सम्पत्तियों को मूल्यांकित करने के प्रयास किये गये हैं। अपनी नवीनतम वार्षिक प्रतिवेदनों में उन्होंने अमूर्त सम्पत्तियों जैसे बौद्धिक पूंजी, बाजार मूल्य संवर्द्धन, ब्राण्ड मूल्यांकन, मानव संसाधन पूंजी एवं आर्थिक मूल्य संवर्द्धन इत्यादि का मूल्यांकन किया है।

इन्फोसिस ने लेव एवं स्वार्ट्ज मॉडल को मानव संसाधनों के मूल्य की गणना हेतु अपनाया है। इन्फोसिस ने अपने 36750 कर्मचारियों का मूल्यांकन रू0 28,334 करोड़ (6.4 मिलियन डॉलर) पर किया है। अपनी वार्षिक प्रतिवेदन (2004–05) में कम्पनी ने 34,747 के साफ्टवेयर वितरण स्टाफ को रू0 26,550 करोड़ तथा 2003 के सपोर्ट स्टाफ को रू0 1,784 करोड़ के मूल्य पर मूल्यांकित किया है। विगत वर्षों में, इन्फोसिस ने मानव पूजी को रू0 21,139 मूल्यांकित किया है। इसके तब 25,634 कर्मचारी थे, जिसमें 24,110 साफ्टवेयर स्टाफ एवं 1,524 सपोर्ट कर्मचारी थे। वर्ष 2005 में इन्फोसिस को साफ्टवेयर से आय रू0 7,129.65 करोड़ थी। जबकि इसके कुल कर्मचारियों की लागत रू0 3,539.11 करोड़ थी। इन्फोसिस ने अपनी कम्पनी ब्राण्ड के मूल्यांकन के लिये जैनरिक ब्राण्ड अर्जन–मल्टिपल मॉडल को अपनाया है। यह अवधारणा माईकल बिर्किन द्वारा लिखित लेख 'वेल्यूएसन ऑफ ट्रेड मार्क्स एण्ड ब्राण्ड नेम्स' जो जौन मर्फी के द्वारा सम्पादित पुस्तक ब्राण्ड वेल्यूएसन में प्रकाशित एवं वर्णित की गयी है।

ब्राण्ड अर्जन मल्टिपल मॉडल का प्रयोग करते हुए इन्फोसिस ने अपने मूल्यांकन को अन्य के साथ मान्यताओं पर आधारित किया है– आय अर्जित करने की लागत को समायोजित करने के पश्चात कुल आय जिसमें अन्य आयें सम्मिलित नहीं हैं, स्फीति की वार्षिक दर का 5% होना, ब्राण्ड प्रवर्तन के अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों के लिये औसत पूंजी विनियोजन का 5% का प्रयोग करना तथा कर दर 33.66% होना इत्यादि।

इन्फोसिस के वार्षिक प्रतिवेदन में कहा गया है कि इसने आर्थिक चिट्ठे से बाहर की सम्पत्तियों के मूल्यांकन में विभिन्न मॉडलों को वित्तीय प्रतिवेदन करने में नवीनतम प्रवृत्तियों को लाने हेतु किया गया है। "इन्फोसिस के प्रबंध को ऐसे अभ्यास से ख्याति का निर्माण करने वाले घटकों को समझाने में सहायता प्राप्त हुई है। इस प्रकार की मॉडलिंग का उद्देश्य आगामी शताब्दी में आर्थिक चिट्ठे पर बहस को आगे ले जाना है।"

कम्पनी के गुण जैसे मूल दक्षताऐं, बाजार नेतृत्व, कॉपीराइट्स, ट्रेडमार्क्स, ब्राण्ड, उत्कृष्ट आय अर्जन शक्ति, उत्तम कार्यदल के प्रबंधन में उत्कृष्ट प्रतियोगिता, उत्तरजीविता, इत्यादि को इस अवधारणा में स्थापित किया गया है। इसे उक्त वार्षिक प्रतिवेदन में कहा भी गया है। इन्फोसिस का विश्वास है कि मुवक्किलों का आधार ही उनकी सर्वाधिक मूल्वान अमूर्त सम्पत्ति है। मर्की क्लाइण्ट्स या छवि में अभिवृद्धि करने वाले मुवक्किल इन्फोसिस की कुल आगमों के 48% का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्फोसिस का कथन है कि "मर्की क्लाइण्ट्स हमारे आगमों को स्थायित्व प्रदान करते हैं और विपणन लागत में कमी भी करते हैं।"

यहां पर सावधानी रखने के लिये भी कुछ उल्लेख आवश्यक है। **इन मूल्यांकनों को लेखों की पुस्तकों में नहीं प्रविष्ट किया जाता है किन्तु इनका कम्पनियों के अन्तिम खातों में पूरक सूचनाओं के रूप में प्रस्तुतीकरण किया जाता है।** यह अमूर्त सम्पत्तियां, निःसंदेह, दीर्घ काल में व्यवसाय के लिये ख्याति का सृजन एवं इसे सुदृढ़ता प्रदान करती है।

15.8 सारांश

अंतिम खातों को वास्तव में तैयार करने से पूर्व एक व्यवसाय जो कदम उठाने होते हैं, उन पर यह अंतिम अध्याय है। अधिकांश अमूर्त सम्पत्तियां, यद्यपि भौतिक अस्तित्व में नहीं होती है, किन्तु व्यवसाय के संसाधनों के उपयोग के द्वारा सृजित अथवा क्रय की जाती है। वे उस व्यय का प्रतिनिधित्व करती है, जो व्यवसाय की आय अर्जित करने में योगदान करते हैं। यह व्यय आर्थिक चिट्ठे में मूर्त सम्पत्तियों की तरह लेखाकृत किये जाते हैं। पेटेन्ट, डिजाईन, ट्रेडमार्क्स, तकनीकी ज्ञान, कॉपीराइट, तकनीकी ज्ञान के प्राधिकार और ख्याति अमूर्त सम्पत्तियों के उदाहरण हैं , जो व्यवसाय के आय अर्जित करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में योगदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, पूंजी निर्गमन, विज्ञापन आदि के संबंध में किए गए स्थगित आयगत व्यय आय अर्जित करने में अप्रत्यक्ष स्प में योगदान करते हैं और इस कारण अमूर्त सम्पत्तियां हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य अमूर्त सम्पत्तियां हैं, जिसे त्रुटिपूर्ण रूप में काल्पनिक सम्पत्तियां कहा जाता है। जैसे– प्रारम्भिक व्यय आगे लायी गयी हानियों के शेष, जो न तो प्रत्यक्ष रूप और न ही अप्रत्यक्ष रूप में व्यवसाय की आय सृजन क्षमता में योगदान करते हैं। किन्तु व्यवसाय की परिचालन के प्रति सांयोगिक होते हैं। आज भी उन्हें अर्थिक चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में प्रदर्शित किया जाता है और निश्चित समय अंतरालों में अपलिखित किया जाता है। अमूर्त सम्पत्तियों के लिये विशिष्ट विधानों में उनके प्रभावी जीवन–काल और वह अवधि जिसमें अमूर्त सम्पत्तियों को

अपलिखित किया जाता है, का प्रावधान होता है। अमूर्त सम्पत्तियों का प्रभावी काल जो भी हो, एक बार उनके अप्रचलित होने पर उनके सम्पूर्ण अदत्त मूल्य को उस वर्ष में अपलिखित किया जाता है जब वह अप्रयोज्य हुई है। ख्याति को छोड़कर अपलेखन लाभ हानि खाते में लागत की तरह अनुमन्य किया जाता है। ख्याति को व्यवसाय के स्वामी की समता के सापेक्ष अपलिखित किया जाता है।

अमूर्त सम्पत्तियों को उस लागतपर मूल्यांकित किया जाता है जिस पर उन्हें सृजित या प्राप्त किया गया है। चाहे सृजन या प्राप्त करने की लागत महत्वहीन हो, उन्हें आयगत व्ययों की तरह उस वर्ष में अपलिखित किया जाता है, जिसमें लागत वहन की गयी है। किन्तु, जब व्यय की धनराशि पर्याप्त अधिक हो, और व्यय के वर्ष में सम्पूर्ण व्यय को अपलिखित करने से व्यवसाय के परिचालन परिणाम भ्रमपूर्ण हो सकते हैं, इन व्ययों को पूंजीकृत किया जाता है और व्यवसाय में उनकी आय अर्जन क्षमता के कल्पित अनुपात के अनुसार अपलिखित किया जाता है। अमूर्त सम्पत्तियों की आधुनिक अवधारणा ने पारम्परिक विचारों को परिमार्जित कर दिया है। बौद्धिक पूंजी, मानवीय संसाधन पूंजी और ब्राण्ड समता को अमूर्त सम्पत्तिया माना जाता है जो व्यवसाय की आय अर्जित करने की क्षमता में भौतिक सम्पत्तियों से अधिक योगदान करने में सक्षम होतीं हैं।

15.9 शब्दावली

- **अमूर्त सम्पत्तियां** :यह वह व्यय है जो विशेषाधिकारों, दावों और पूर्वाधिकारों जो उनके जीवनकाल में व्यवसाय की आय अर्जन क्षमता में अप्रत्यक्ष रूप में योगदान करते हैं।
- **पेटेन्ट** : पेटेंट एक व्यक्ति को स्वीकृत एकाधिकार है, जिसने एक नवीन या उपयोगी वस्तु का आविष्कार या वर्तमान वस्तु का सुधार या एक नयी वस्तु को आविष्कारक द्वारा स्वयं या उसके द्वारा निर्धारित व्यक्ति के द्वारा व्यापारिक विदोहन के लिये बनाने की नई प्रक्रिया का आविष्कार किया है।
- **ट्रेडमार्क** : यह एक शब्द, उपकरण, नाम, अक्षर, ब्राण्ड, शीर्षक हस्ताक्षर या चिप्पी के रूप में एक दृश्यचिन्ह या प्रतीक है, जिसे वस्तु के ट्रेडमार्क के पंजीकृत स्वामी के साथ वस्तु के सम्बन्ध को संकेत करने के लिये प्रयोग किया जाता है।
- **कॉपीराइट** : यह बौद्धिक एवं कलात्मक कार्यों के उत्पादकों को उनके निरपेक्ष प्रयोग हेतु अनुमन्य पूर्वाधिकार है।
- **फेंचाइज** :फेन्चाइज उपक्रम के द्वारा तकनीकी ज्ञान के विकासकर्ताओं से प्राप्त प्राधिकार है, जिन्हें एक समझौता मूल्य पर विशिष्ट क्षेत्रों में प्रक्रिया, उत्पाद या सेवा के विदोहन हेतु प्रयोग किया जाता है।
- **ख्याति** :ख्याति को व्यवसाय के समान वर्गों में आने वाले उपक्रमों द्वारा अर्जित सामान्य स्तर के लाभ के ऊपर और अधिक प्रभावी प्रत्याशित लाभों के संबंध में व्यवसाय की प्रतिष्ठा के मूल्यके रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

- **बौद्धिक पूंजी** : से आशय बौद्धिक सामग्री से है, जिसमें ज्ञान, सूचना, बौद्धिक सम्पदा और अनुभव सम्मिलित हैं, जिसे धन के सृजन के लिये उपयोग में लाया जाता है।
- **आर0ओ0ए0**–रिटर्न ऑन एसैट्स,
- **सी0आई0वी0एम0**–परिगणित बौद्धिक मूल्य मॉडल

15.10 बोध प्रश्न

सत्य अथवा असत्य लिखिये :

1. पेटेंटों को एक निर्धारित शुल्क के भुगतान के द्वारा पेटेंट नियंत्रक के पास पंजीकृत किया जाता है।
2. ख्याति मूर्त सम्पत्तियों की अपेक्षा अतिरिक्त लाभ अर्जित करने की व्यवसाय की छवि का मात्रात्मक मूल्य है।
3. सी0आई0वी0एम0 व्यवसाय की सम्पत्तियों पर सामान्य औद्योगिक प्रत्याय प्राप्त करने के लिये व्यवसाय की मूर्त सम्पत्तियों के प्रति औद्योगिक सम्पत्तियों पर प्रत्याय (आर0ओ0ए0) का एक सामान्य अनुप्रयोग है।
4. अमूर्त सम्पत्तियों का अधिकतम जीवनकाल उस विधान के द्वारा सीमित होता है, जो उन्हें विनियमित करते हैं।
5. ख्याति व्यवसाय के द्वारा कोई मौद्रिक लागत वहन कर सृजित की जाती है।
6. मूर्त सम्पत्तियों की भांति अमूर्त सम्पत्तियों को उनके प्रभावी जीवनकाल में अपलिखित नहीं किया जाता है।
7. यह सामान्य ज्ञान है कि प्रक्रिया में विकसित तकनीकि ज्ञान प्रत्येक संगठन का निरपेक्ष अधिकार है।
8. ट्रेडमार्किंग का उद्देश्य व्यापार चिन्हांकित माल को उसके समान माल से अंतर करना और इस प्रकार उपभोक्ताओं की विशिष्ट मांगों को आकृष्ट करना है।

15.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. असत्य 6. असत्य
7. असत्य 8. सत्य

15.12 स्वपरख प्रश्न

1. अमूर्त सम्पत्तियों से आप क्या समझते हैं? अमूर्त सम्पत्तियों के सामान्य उदाहरणों को समझाइये।
2. ख्याति के मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का अलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।
3. क्या भारत में अमूर्त सम्पत्तियों का कोई उपयोगी जीवनकाल है? समझाइये।
4. लेखापुस्तकों में ख्याति को कैसे प्रदर्शित किया जाता है? समझाइये।
5. अमूर्त सम्पत्तियों पर भारतीय अनुभव पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

15.13 संदर्भ पुस्तकें

1. एस.एन.माहेश्वरी ,एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी

2. आर.एल.गुप्ता , एडवान्स्ड एकाउन्टैन्सी
3. शुक्ला. एवं ग्रेवाल, एडवान्स्ड एकाउन्ट्रस
4. अग्रवाल एवं जैन, एडवान्स्ड फाइनेन्सियल एकाउन्टिंग
5. एस.एन.माहेश्वरी ,कार्पोरेट एकाउन्टिंग

इकाई 16 प्रदर्शन मूल्यांकन के व्यवहारवादी पहलू

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 प्रदर्शन की अवधारणा एवं प्रदर्शन मूल्यांकन

16.3 प्रदर्शन मूल्यांकन का महत्व

16.4 प्रदर्शन मूल्यांकन की तकनीकें

16.4.1 उत्तरदायित्व लेखांकन

16.4.2 बजटरी नियंत्रण एवं प्रतिवेदन

16.4.3 संतुलित स्कोर कार्ड

16.4.4 विचरणांश विश्लेषण

16.4.5 दत्तांश मार्जिन

16.4.6 विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय या विनियोग पर प्रत्याय

16.4.7 अवशिष्ट आय

16.4.8 मूल्य संवर्द्धन

16.4.9 बैंच मार्किंग

16.4.10 गैर–वित्तीय गुणवत्ता प्रदर्शन मापक

16.5 सारांश

16.6 शब्दावली

16.7 बोध प्रश्न

16.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.9 स्वपरख प्रश्न

16.10 सन्दर्भ पुस्तकें

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- प्रदर्शन मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व को जान सकें।
- उत्तरदायित्व लेंखांकन की तकनीक का वर्णन कर सकेंगे।
- बजटरी नियंत्रण एवं प्रतिवेदन की विधियों को समझ सकें।
- वित्तीय प्रदर्शन के विभिन्न मापकों की व्याख्या कर सके।
- गैर वित्तीय प्रदर्शन के मापकों की पहचान कर सकें।

16.1 प्रस्तावना

दीर्घकालीन नियोजन एवं प्रबंधकीय नियंत्रण के लिए एक कम्पनी अपने व्यापक लक्ष्यों को स्थापित करती है। ऐसे लक्ष्य उच्च प्रबन्ध के द्वारा विकसित किए जाते हैं और इनमें प्रायः सामान्य कथन अथवा सामान्य कथनों की एक श्रृंखला, जो यह व्यक्त करती है कि कम्पनी क्या उपलब्धि प्राप्त करना चाहती है, सम्मिलित होते है। कभी–कभी, निर्धारित लक्ष्यों को ऐसे व्यापक शब्दों में व्यक्त किया जाता है जैसे कम्पनी का लक्ष्य यह है कि उच्च स्तरीय कार्यक्षमता से लाभ प्राप्त करें, उद्योग में

तकनीकी के क्षेत्र में नेतृत्व करें। प्रदर्शन एवं नियंत्रण के उद्देश्य के लिए यह आवश्यक है कि उद्देश्य एवं लक्ष्य अपेक्षाकृत अधिक सारांकित शब्दों में निर्धारित हो। लक्ष्य प्रायः मात्रात्मक शब्दों में और समय संरचना में निर्धारित होते हैं। एक निर्णय के परिणाम का मापन और भावी निर्णयन हेतु उन परिणामों का फीडबैक, संभवतः उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के पुनरावलोकन के माध्यम से, निर्णयन प्रक्रिया का अन्तिम चरण होता है। इस प्रकार प्रदर्शन मापन प्रबंधकीय नियन्त्रण का आवश्यक यंत्र है। इससे यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि परिणामों का मापन कैसे किया जाय और इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि कम्पनी के उद्देश्यों के मुद्दे की ओर लौटा जाय। यदि इसे स्वीकार किया जाता है कि प्राथमिक उद्देश्य लाभ का अधिकतमीकरण है, तो मापन का आधार लाभ के शब्दों में होना चाहिए। यदि उद्देश्यों में भिन्नता है, तब निर्णय का मापदण्ड भी महत्वपूर्ण रूप में परिवर्तित होना चाहिए।

16.2 प्रदर्शन की अवधारणा एवं प्रदर्शन मूल्यांकन

एक प्रबंधकीय लेखाकार चार प्रमुख क्षेत्रों–नियोजन, नियंत्रण, निर्णयन एवं प्रदर्शन मूल्यांकन में संलग्न रहता है। जहाँ प्रथम तीन क्षेत्रों को पूर्व की इकाइयों में समझाया जा चुका है, इस इकाई में प्रदर्शन मूल्यांकन में प्रयुक्त उपकरणों एवं तकनीकों का पुनरावलोकन दिया जा रहा है। प्रबंधकीय लेखाकार के द्वारा सामना किए जाने वाले अत्यधिक कठिन कार्यों में से एक बहुधा अपने स्वयं के संगठन और कभी–कभी दूसरे संगठन के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना है। 'प्रदर्शन' शब्द को 'वह कार्य करना जिसे किया जाना है' की तरह समझा जा सकता है। परिणाम स्परूप, प्रदर्शन मूल्यांकन का अर्थ यह निर्णय करना होगा कि क्या कुछ ऐसा किया गया है, जिसे किया जाना अपेक्षित था। औद्यौगिक प्रबन्ध के प्रसंग में, इस प्रकार प्रदर्शन मूल्यांकन का अर्थ यह ज्ञात करना है कि संगठन ने अपने उद्देश्यों को पूर्ण किया है अथवा नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक अभ्यास के रूप में प्रदर्शन मूल्यांकन में तीन तत्व–अपेक्षित प्रदर्शन, वास्तविक प्रदर्शन और एक ऐसी प्रणाली जिसके द्वारा अपेक्षित और वास्तविक का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाय, सम्मिलित है। ऐसी प्रणाली में आवश्यक रूप में प्रदर्शन के मापदण्डों का निर्धारण, वास्तविक प्रदर्शन के आंकड़ों की प्राप्ति तथा इसके अतिरिक्त संबंधित व्यक्तियों को फीडबैक देने की प्रणाली जो बाद में प्रदर्शन के सुधार के प्रति कार्यवाही प्रारम्भ कर सकें।

इस दृष्टिकोंण से, एक अभ्यास के रूप में प्रदर्शन मूल्यांकन बजटन एवं बजटरी नियंत्रण अभ्यास के समान है, किन्तु, बजटन और बजटरी नियंत्रण आवश्यक रूप में नियोजन एवं नियंत्रण उपकरण हैं, न कि प्रदर्शन मूल्यांकन के उपकरण हैं, यद्यपि कभी –कभी बजटरी नियंत्रण अभ्यास के परिणामों का उपयोग प्रबंधकीय प्रदर्शन के मूल्यांकन में किया जा सकता हैं, इसके अतिरिक्त, प्रदर्शन के लेखांकन और गैर लेखांकन दोनों माप है और प्रबन्धकीय लेखाकार को इन समस्त महत्वपूर्ण मापों का समुचित ज्ञान होना चाहिए तथा प्रदर्शन का मूल्यांकन करते समय उपयुक्त मापों के प्रयोग में सक्षम होना चाहिए।

16.3 प्रदर्शन मूल्यांकन का महत्व

प्रदर्शन मूल्यांकन प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली का आधार है। वास्तविक लागतों, आय एवं विनियोगों का बजटीय लागतों, आय एवं निनियोगों से निश्चित समय अंतरालों में तुलना से प्रबन्ध को भावी आवंटनों के विषय में निर्णय लेने में सहायता प्राप्त हो सकती है। प्रदर्शन मूल्यांकन का उपयोग समस्त उत्तरदायित्व केन्द्रों (जैसे लागत केन्द्र, लाभ केन्द्र एवं विनियोग केन्द्र) के सम्बन्ध में उनके प्रदर्शन स्तर के निर्धारण में किया जाना चाहिए। प्रबन्धकों को प्रदर्शन के वांछित स्तर को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने का सर्वोत्तम उपाय उनके अपने प्रदर्शन की बजटीय परिणामों से तुलना करना है। कर्मचारियों का प्रदर्शन मूल्यांकन उनके वेतन, प्रोन्नति एवं भावी कार्य आवण्टन हेतु आवश्यक प्रशिक्षण के विषय में निर्णय लेने हेतु उपयोग में लाया जाता है। प्रदर्शन मूल्यांकन एक लागत केन्द्र, लाभ केन्द्र अथवा विनियोग केन्द्र का किया जाता है। अतः यह उचित होगा कि प्रदर्शन मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों का विवेचन करने से पूर्व इनकी एक संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ली जाय।

1. **लागत केन्द्र :** एक लागत केन्द्र किसी क्रिया, क्षेत्र या उत्तरदायित्व का सबसे छोटा भाग होता है जिसके सापेक्ष लागत को संचित किया जाता है। एक प्रकार से लागत केन्द्र विभाग होते हैं, किन्तु कुछ दशाओं में एक विभाग में कई लागत केन्द्र हो सकते हैं। यह लागत केन्द्र विभाग या उप विभाग होते हैं अथवा संगठन हो सकते हैं, जिनके संदर्भ में लागत को लागत निर्धारण एवं लागत नियंत्रण हेतु संकलित किया जाता है। उदाहरणार्थ, एक असेम्बली विभाग कापर्यवेक्षण एक फोरमैन के द्वारा हो सकता है, किन्तु इसमें कई असेम्बली लाइनें हो सकती हैं। कभी–कभी एक असेम्बली लाइन को एक पृथक लागत केन्द्र माना जा सकता है, जिसका अपना एक सहायक फोरमैन होता है। एक लागत केन्द्र, एक स्थान जैसे विभाग के स्थान का क्षेत्र, विक्रय क्षेत्र या एक उपकरण की मद जैसे लेथ मशीन, सुपुर्दगी वाहन या एक व्यक्ति जैसे विक्रयकर्ता, फोरमैन आदि हो सकता है।

लागत निर्धारण एवं लागत नियंत्रण के लिए एक उपयुक्त लागत केन्द्र का निर्धारण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। लागत केन्द्र का प्रभारी प्रबन्धक अपने लागत केन्द्र की लागतों के नियंत्रण के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। यह ऐसी समस्त लागतों के एक स्थान पर संचयीकरण को संभव बनाता है, जिसके लिए वसूली का एक सामान्य आधार प्रयोग किया जा सकता है।

लागत केन्द्रों के प्रकार

लागत केन्द्रों को निम्नवत वर्गीकृत किया जा सकता है :

(i) **व्यक्तिगत एवं अव्यक्तिगत लागत केन्द्र :** व्यक्तिगत लागत केन्द्र वह है जो एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूहों से निर्मित होता है, जबकि दूसरी ओर अव्यक्तिगत लागत केन्द्र एक मशीन, एक विभाग या एक प्लाण्ट से निर्मित होते हैं।

(ii) **परिचालन और प्रक्रिया लागत केन्द्र** : परिचालन लागत केन्द्र उन व्यक्तियों एवं/अथवा मशीनों से निर्मित होता है जो समान प्रकार का

परिचालन करते हैं। जबकि दूसरी ओर एक लागत केन्द्र जिसमें क्रियाओं का सतत क्रम हो, प्रक्रिया लागत केन्द्र कहलाता हैं।

(iii) **उत्पाद एवं सेवा लागत केन्द्र** : उत्पाद लागत केन्द्र से आशय ऐसे केन्द्र है, जिससे उत्पाद होकर गुजरता है और यह सामान्यतया उत्पाद विभाग के समान होता है। ऐसे केन्द्रों में कच्चा माल, निर्मित माल में परिवर्तित होता है। सेवा केन्द्र एक विभाग होता है या ऐसा केन्द्र जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लागतें करता है किन्तु उत्पादों पर प्रत्यक्ष रूप में कार्य नही करता है। रखरखाव विभाग एवं सामान्य कारखाना कार्यालय ऐसे केन्द्रों के उदाहरण है।

2. लाभ केन्द्र

लाभ केन्द्र एक व्यवसाय की क्रिया का वह भाग है जो आय एवं व्यय दोनों के लिए उत्तरदायी होता है और एक क्रिया के विशिष्ट भाग के लाभ को प्रकट करता है। लाभ केन्द्रों को व्यक्तियों को उत्तरदायित्व प्रत्यायोजित करने तथा उनके प्रदर्शन का मापन करने के लिए सृजित किया जाता है। लाभ केन्द्र एवं लागत केन्द्र में मुख्य अन्तर निम्नवत है :

(i) लागत केन्द्र क्रिया अथवा उत्तरदायित्व क्षेत्र की सबसे छोटी इकाई है जो लागत को संकलित करती है, जबकि एक लाभ केन्द्र व्यवसाय की क्रिया का एक भाग है जो आय एवं व्यय दोनों के लिए उत्तरदायी है।

(ii) लागत केन्द्रों को लागतों एवं लागत नियंत्रण को लेखांकन सुविधा के लिए सृजित किया जाता है, जबकि लाभ केन्द्र इसलिए सृजित किए जाते है, क्योंकि क्रियाओं का विकेन्द्रीयकरण अर्थात व्यक्तियों, जिन्हे स्थानीय परिस्थितियों आदि की अधिक जानकारी होती है, को उत्तरदायित्व का प्रत्यायोजन करना होता है।

(iii) लागत केन्द्र स्वायत्तशासी नहीं होते, जबकि लाभ केन्द्र स्वायत्तशासी होते है।

(iv) एक लागत केन्द्र में लक्ष्य लागतें नहीं होती, किन्तु लागत को न्यूनतम रखने के प्रयास किए जाते है, किन्तु प्रत्येक लाभ केन्द्र का लाभ का एक लक्ष्य होता है और वह इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ऐसी नीतियों को अपनाने के प्राधिकार का उपयोग करते है।

(v) एक लाभ केन्द्र में कई लागत केन्द्र हो सकते हैं, जैसे एक उत्पादन या सेवा लागत केन्द्र अथवा व्यक्तिगत या अव्यक्तिगत लागत केन्द्र किन्तु एक लाभ केन्द्र एक कम्पनी के प्रभाग या समूह के भीतर एक सहायक कम्पनी हो सकती है।

3. विनियोग केन्द्र

यह एक केन्द्र है जिसमें प्रबन्धक न केवल आय एवं लागतों को बल्कि विनियोगों को भी नियंत्रित कर सकता है। ऐसे केन्द्र के प्रबन्धक को केन्द्र पर प्रयोग की जा रही सम्पत्तियों के समुचित उपयोग का दायित्व दिया जाता है। उससे केन्द्र

पर लगायी गयी सम्पत्तियों पर उचित प्रत्याय अर्जित करने की प्रत्याशा की जाती है। विनियोग पर प्रत्याय को विनियोग केन्द्र के प्रदर्शन को मूल्यांकन के आधार की भांति प्रयोग किया जाता है। कई अमेरिकन वृहतस्तरीय फर्मे जैसे जनरल मोटर्स आदि प्रबंधकीय नियंत्रण की इस प्रणाली को अपनाती है। एक विनियोग केन्द्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन केवल लाभ से नहीं होता, बल्कि लाभ का सम्बन्ध केन्द्र पर लगाये गए विनियोग से होता है। एक विनियोग केन्द्र के प्रबन्धक को केन्द्र पर विनियोजित पूँजी से संतोषजनक आय अर्जित करना आवश्यक होता है।

एक विनियोग केन्द्र का प्रदर्शन प्रतिवेदन पूर्णतः मौद्रिक रूप में एक लाभ केन्द्र के प्रदर्शन प्रतिवेदन की भांति होगा, किन्तु इसके अतिरिक्त प्रतिवेदन में विनियोग केन्द्र पर लगाए गए विनियोग का वर्णन भी करना होगा। प्रदर्शन प्रतिवेदन में विनियोग केन्द्र पर लगायी गयी पूँजी पर प्रत्याय के साथ प्रत्याय की वांछित दर का भी उल्लेख करना चाहिए।

एक विनियोग केन्द्र को व्यवसाय के एक पृथक केन्द्र की तरह माना जाना चाहिए जहाँ एक प्रबंधक का आगतों (जैसे व्यय या लागतों), उत्पादन (जैसे आय) एवं विनियोग के प्रबंधन का सम्पूर्ण उत्तरयित्व है। सहायक कम्पनियों के प्रबन्धकों को विनियोग केन्द्र के प्रबन्धकों की तरह लागतों, लाभों एवं विनियोजित पूँजी के लिए उत्तरदायी माना जाना चाहिए।

16.4 प्रदर्शन मूल्यांकन की तकनीकें

निम्नांकित वित्तीय उपायों को लागत केन्द्रों ,लाभ केन्द्रों एवं विनियोंग केन्द्रों के मूल्यांकन के लिए प्रयोग किया जा सकता है :

16.4.1 उत्तरदायित्व लेखांकन

उत्तरदायित्व लेखांकन में लागतों का संचयीकरण एवं प्रतिवेदन व्यक्तिगत प्रबन्धक के आधार पर होता है, जिसके पास दिन–प्रतिदिन के निर्णयन का प्राधिकार होता है। उत्तरदायित्व लेखांकन के अन्तर्गत प्रबन्धक के प्रदर्शन का उन विषयों पर आधारित होता है, जो प्रत्यक्ष रूप में प्रबन्धकीय नियंत्रण के अन्तर्गत होती हैं। इस प्रणाली में, जबाबदेही को विभिन्न प्रबंधकीय स्तरों को प्रत्यायोजित उत्तरदायित्व के अनुसार स्थापित किया जाता है और उन्हें प्रत्यायोजित उत्तरदायित्व के अनुसार पर्याप्त फीडबैक देने के लिए उत्तरदायी बनाया जाता है। उत्तरदायित्व लेखांकन के पीछे मूलभूत विचार यह है कि प्रत्येक प्रबन्धक के प्रदर्शन को इस आधार पर मूल्यांकन करना चाहिए कि वह किस प्रकार उन मदों का जो उसके नियंत्रण में होती हैं, प्रबन्धन करता हैं। प्रबन्धकों को वांछित प्रदर्शन का स्तर प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय बजटीय परिणामों की तुलना में उनके प्रदर्शन का मापन करना है। वास्तविक लागतों, आय एवं विनियोगों की बजटीय लागतों, आय एवं विनियोगों से जो व्यक्तिगत प्रबंधक से सम्बन्धित हों, निश्चित समय अन्तरालों में तुलना करने से प्रबन्ध को प्रदर्शन को निश्चित करने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

उत्तरदायित्व लेखांकन उत्तरदायित्व को लागत नियंत्रण के उद्देश्यों के लिए निश्चित करता है। उत्तरदायित्व लेखांकन एक लेखांकन विधि है, जिसमें लागतों और आयों की पहचान उत्पादों एवं कार्यों के स्थान पर उन व्यक्तियों के साथ की जाती है,

जो उनके नियंत्रण के लिए उत्तरदायी होते है। लेखांकन की यह विधि लागतों एवं आयों को उत्तरदायित्व केन्द्रों के अनुसार वर्गीकृत करती है, जो लागतों एवं आयों को उत्तरदायित्व केन्द्रों के अनुसार करने के लिए उत्तरदायी हैं। संगठन में उत्तरदायित्व केन्द्र प्राधिकृत निर्णयन बिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक वृहतस्तरीय फर्म को सामान्यतया सार्थक भागों, विभागों अथवा प्रभागों में प्रभावशाली नियंत्रण के लिए विभाजित किया जाता है। इन भागों, विभागों अथवा प्रभागों को उत्तरदायित्व केन्द्र कहा जाता हैं। इस प्रकार एक उत्तरदायित्व केन्द्र संगठन में एक प्रबंधक को आंबटित एक विशिष्ट इकाई है, जो इसके परिचालन के लिए उत्तरदायी होता है। **एन्थोनी और रीस** के शब्दों में, **"उत्तरदायित्व केन्द्र एक ईंजन की भांति है, जिसमें इसकी आगतें होती है, जो सामग्री की भौतिक मात्राऐं हैं, विभिन्न प्रकार के श्रम के घण्टे और विभिन्न प्रकार की सेवाऐं हैं; यह इन संसाधनों से सामान्यतः कार्य करता हैं; कार्यशील पूँजी और स्थायी सम्पत्तियों की भी आवश्यकता होती हैं। परिणाम स्वरूप, यह उत्पादन को उत्पादित करता है, जिन्हें या तो माल के रूप में, यदि वह मूर्त हैं या सेवाओं के रूप में यदि वह अमूर्त हैं, वर्गीकृत किया जाता है। यह वस्तऐुं एवं सेवाऐं या तो उत्तरदायित्व केन्द्रों में कम्पनी के भीतर अथवा वाह्य विश्व में ग्राहकों को चली जाती हैं।"**

उत्तरदायित्व लेखांकन उत्तरदायित्व केन्द्र के आगतों एवं उत्पादन दोनों का मौद्रिक रूप में, जहाँ उपयुक्त हो, मापन करने में प्रयुक्त होता है। सभी विभिन्न आगतों का योग लागत कहलाता है जबकि उत्पादन के कुल योग को आय कहा जाता है। जहाँ उत्पादन का मौद्रिक मापन संभव नहीं है (जैसे संगठन के लेखांकन विभाग के द्वारा प्रदत्त सेवायें), तो इसे वस्तुओं या हस्तांतरित सेवाओं की कुल लागत या उत्पादन की इकाइयों की संख्या की भांति मापित किया जा सकता है।

उत्तरदायित्व लेखांकन की आवश्यक विशेषताऐं :

उत्तरदायित्व लेखांकन की विशेषतायें निम्नवत है :

1. संसाधनों के उत्पादन और आगतों दोनों की सूचनायें अर्थात वित्तीय सूचना हेतु लागत एवं आय के आकड़ों पर आधारित।
2. नियोजित एवं वास्तविक प्रदर्शन हेतु सूचनायें।
3. उत्तरदायित्व केन्द्र की पहचान किया जाना।
4. हस्तांतरण कीमत नीति।
5. प्रदर्शन प्रतिवेदन।
6. मूल योजना से विचलन के कारणों और उसकी सीमा को प्रतिवेदन करना।

उत्तरदायित्व लेखांकन के मुख्य लाभ :

उत्तरदायित्व लेखांकन के मुख्य लाभ निम्नांकित हैः

(i) यह नियंत्रण के सुदृढ़ आधार की स्थापना करता है, क्योंकि इससे उच्च प्रबन्ध उत्तरदायित्व केन्द्र को प्राधिकार का प्रत्यायोजन करने एवं सम्पूर्ण नियंत्रण अपने पास रखने में सक्षम हो जाता है।

(ii) यह प्रबन्धन को संगठनात्मक संरचना को प्राधिकार के प्रभावी हस्तांतरण और उत्तरदायित्व के आवंटन के अनुरूप बनाने हेतु ध्यान

देने पर जोर देता है। व्यक्तिगत प्रबंधको के लिए यह कठिन होगा कि वह प्रतिकूल परिणामों को अन्यत्र हस्तांतरित करें। इस प्रकार, यह निर्णयन के विकेन्द्रीयकरण की सुविधा प्रदान करता है।

(iii) यह बजटीय आंकड़ों से वास्तविक उपलब्धियों की तुलनात्मक बजटिंग को प्रोत्साहित करता है। यह प्रबंध को वास्तविक बजट निर्धारित करने के लिए विवश करता है।

(iv) यह पर्यवेक्षणीय कर्मचारियों में रूचि एवं चेतना जागृत करता है क्योंकि उन्हें उन विचलनों की व्याख्या करने के लिए बुलाया जाता है जिसके लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं।

(v) यह प्रतिवेदनों के प्रारूप का सरलीकरण करता है और तत्काल प्रतिवेदन को ऐसी मदों को हटाकर, जो व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के क्षेत्र से बाहर हों, सुलभ बनाता है।

(vi) यह अपवादों द्वारा प्रबन्ध को अपनाने में सहायक है क्यों कि इसमें उच्च प्रबन्ध को अपवादपूर्ण प्रकरणों को प्रतिवेदित करने पर जोर दिया जाता है और परिणाम स्वरूप उच्च प्रबन्ध समस्त प्रकार के नैत्यिक कार्यो के भार से मुक्त हो जाता है।

उत्तरदायित्व लेखांकन को प्रारंभ करने में सामने आने वाली प्रमुख कठिनाइयाँ :

उत्तरदायित्व लेखांकन की एक प्रणाली को प्रारम्भ करने में सामने आने वाली प्रमुख कठिनाइयाँ निम्नवत हैं :

(i) सामान्यतः सफल उत्तरदायित्व लेखांकन योजना की पूर्ण आवश्यकताऐं जैसे एक सुपरिभाषित संगठन संरचना, कार्य एवं उत्तरदायित्व का समुचित प्रत्यायोजन, लागत का समुचित आवंटन, प्रतिवेदन की एक उपयुक्त प्रणाली का प्रायः अभाव होता है और यह उत्तरदायित्व लेखांकन की प्रणाली को अपनाना कठिन कर देती है।

(ii) व्ययों के परंपरागत वर्गीकरण की तुलना में व्ययों का इससे आगे का उच्चतर विश्लेषण कठिन हो जाता है। उदाहरणार्थ, कर्मचारियों की मजदूरी नियंत्रण योग्य है, किन्तु इसमें सम्मिलित वेतन के अतिरिक्त लाभ को कानून के अन्तर्गत या मजदूर संघों के साथ हुए समझौते के अनुसार भुगतान किया जाता है।

(iii) इस प्रणाली को प्रांरभ करते समय पर्यवेक्षणीय कर्मचारियों को अतिरिक्त प्रशिक्षण विशेषतः उत्तरदायित्व प्रतिवेदनों में प्रशिक्षण आवश्यक होता है। उन्हें नई प्रणाली के उद्देश्य एवं लाभों को उचित रूप में समझाना चाहिए।

16.4.2 बजटरी नियंत्रण एवं प्रतिवेदन

बजट को तैयार करना बजटरी नियंत्रण प्रणाली का प्रथम चरण है। बजट का क्रियान्वयन द्वितीय चरण है, जिसमें छोटे–छोटे समय अन्तरालों में बजट प्रदर्शन के सतत प्रतिवेदन की आवश्यकता होती है, मात्रबजट तैयार करने से कुछ भी अधिक उपलब्धि प्राप्त नहीं हो सकेगी, जब तक वास्तविक प्रदर्शन एवं बजटरी प्रदर्शन के बीच नियमित रूप में तुलना नहीं की जाती है। इस प्रकार बजटरी नियंत्रण में उचित

प्रतिवेदन एक आवश्यक तत्व है। विभिन्न कार्यों के परिणामों में संलग्न दैनिक/साप्ताहिक/मासिक प्रतिवेदन जो कार्यों की प्रकृति पर निर्भर करते हैं, प्रबंध को नियमित रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं और सुधारात्मक कार्यवाही तत्काल करनी पड़ती है। इस परिप्रेक्ष्य में, निम्नांकित सूचनाओं को प्रदर्शित करने वाले बजट प्रतिवेदन उपयोगी सिद्ध होगें :

(अ) क्रिया का बजटीय स्तर एवं उसकी बजटीय लागत
(ब) क्रियाओं के वास्तविक स्तर की बजटीय लागत
(स) वास्तविक क्रियाओं की वास्तविक लागत
(द) बजटीय एवं वास्तविक आंकड़ो में विचरणांश
(य) विचरणांश के कारण

प्रतिवेदन का महत्व इस तथ्य पर निर्भर करता है कि यह उन क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है जिसमें प्रबधकों के ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। यह सुधारात्मक उपाय करने के लिए समय से कार्यवाही करने में सहायता करता है। इस प्रकार प्रतिवेदन से उन व्यक्तियों का प्रकटीकरण होगा, जो विचरणांश के लिए उत्तरदायी है। यह भी सम्भव है कि विचरणांश कर्मचारियों के कारण न हुआ हो बल्कि वाह्य कारकों के कारण हो सकता है। (जैसे मजदूरी दरों में परिवर्तन, सामग्री की कीमतें, बाजार की मन्दी इत्यादि) जो नियन्त्रणीय नहीं है और जिनके लिए किसी परिचालक या अधिशासी को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

उच्च प्रबन्ध को बजट प्रतिवेदनों को लाभ योजना के अनुसार लाभ एवं वास्तविक लाभ के बीच मात्रात्मक एवं वित्तीय शब्दों में व्यक्त अंतर को निहित कारकों का उल्लेख करते हुए इस सम्बन्ध में हुए कोषों के प्रवाह एवं प्रक्षेपण को प्रदर्शित करना चाहिए और फर्म के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की उपलब्धियों के विषय में फीडबैक प्रदान करना चाहिए।

विभिन्न बजट प्रतिवेदन जैसे विक्रय बजट प्रतिवेदन, उत्पादन बजट प्रतिवेदन, क्रय बजट प्रतिवेदन, श्रम बजट प्रतिवेदन, व्यय बजट प्रतिवेदन, रोकड़ बजट प्रतिवेदन, पूँजीगत व्यय बजट प्रतिवेदन, शोध एवं विकास बजट प्रतिवेदन इत्यादि को विभिन्न क्रियात्मक बजटों की क्रियाओं को रेखांकित करते हुए बनाया जा सकता है।

16.4.3 सन्तुलित स्कोर कार्ड

यह एक ऐसा दृष्टिकोंण है जो वित्तीय एवं गैर वित्तीय प्रदर्शन मापों दोनों को, जोड़ता है। यह दृष्टिकोंण प्रबंध को पर्याप्त जानकारी प्रदान करने में सहायता करता है, जो उन्हें व्यूहनीतिक नीतियों के निरूपण एवं क्रियान्वयन में सहायता करता है, संतुलित स्कोरकार्ड, इस प्रकार प्रदर्शन के समस्त क्षेत्रों पर एक उद्देश्यपरक एवं पक्षपातरहित ढंग से ध्यान देता है और उच्च प्रबन्ध को संगठन के सम्बन्ध में तीव्र गति से एवं इसका विस्तृत चित्र प्रदान करता है।

संतुलित स्कोरकार्ड के विभिन्न दृष्टिकोंण जो प्रबन्धक को व्यवसाय के अवलोकनकरने एवं तत्संबंधी उत्तर प्राप्त करने की अनुमति देते हैं, निम्नवत वर्णित किये गए है:

(i) **ग्राहकों का दृष्टिकोंण (उपभोक्ता हमें कैसे देखते है ?):**इस दृष्टिकोंण में प्रबन्धकों को उपभोक्ताओं एवं उनके विपणन क्षेत्रों, जिनमें व्यवसायिक इकाई

प्रतियोगिता करेगी, की पहचान करनी चाहिए। यह दृष्टिकोंण प्रतिनिधिक रूप में कई मूल एवं जैनेटिक मापों को सम्मिलित करता है, जो उपभोक्ताओं की निष्ठा एवं लक्षित क्षेत्र में व्यूहनीतिक परिणाम को जोड़ती हैं। इनमें बाजार अंश, उपभोक्ता संधारण, नवीन उपभोक्ताओं की प्राप्ति, उपभोक्ता सन्तोष एवं उपभोक्ता लाभदायकता इत्यादि सम्मिलित होते है।

(ii) आन्तरिक व्यवसाय दृष्टिकोंण (हम किसमें श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते है ?): आन्तरिक व्यवसाय प्रक्रिया दृष्टिकोंण में, प्रबन्धक महत्वपूर्ण आन्तरिक प्रक्रियाओं जिन्हें संगठन को उसकी व्यूहनीति के क्रियान्वयन में श्रेष्ठता प्राप्त करनी चाहिए, की पहचान करते हैं। प्रमुख व्यवसायिक आन्तरिक प्रक्रियाओं में निम्नांकित सम्मिलित हैः

(अ) उपभोक्ता की आवश्यकताओं की खोज करने हेतु नवाचार आधारित प्रक्रियाऐं।

(ब) वस्तु/सेवा की समय से सुपुर्दगी हेतु सुसंगत प्रभावशाली प्रबंध को प्रदान करने की दृष्टि से परिचालनात्मक प्रक्रियाऐं।

(स) सेवा के पश्चात विक्रय प्रक्रियाऐं।

(iii) अधिगम एवं संवृद्धि दृष्टिकोंण (क्या हम सतत सुधार एवं मूल्य सृजन कर सकते है?): यह अवस्थापना सुविधाओं की पहचान करता है जिसे व्यवसाय की दीर्घकालीन संवृद्धि एवं सुधार हेतु निर्मित करना चाहिए। इसमें कार्मिक क्षमता, कार्मिक उत्पादकता, कार्मिक सन्तोष, कार्मिक संधारण जैसे कारकों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। वर्तमान व्यावसायिक परिदृश्य के अन्तर्गत कम्पनीं को एक उत्कृष्ट सूचना प्रणाली की आवश्यकता पड़ती है।

16.4.4 विचरणांश विश्लेषण

नियंत्रण प्रबन्ध का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। नियंत्रण के माध्यम से प्रबन्ध यह सुनिश्चित करता है कि संगठन का प्रदर्शन उसकी योजना एवं उद्देश्यों के अनुरूप है। विचरणांश विश्लेषण प्रदर्शन के नियंत्रण एवं नियोजित लाभों की प्राप्ति में अत्यंत सहायक है।

लाभ अथवा विक्रय की प्रमाप लागत तथा लाभ अथवा विक्रय की वास्तविक लागत के बीच अन्तर विचरणांश कहलाता है और वह प्रक्रिया जिसके द्वारा लाभ अथवा विक्रय को प्रमाप लागत तथा लाभ अथवा विक्रय की वास्तविक लागत के बीच कुल अन्तर को विभिन्न भागों में उपविभाजित किया जाता है, उसे विचरणांश विश्लेषण कहा जाता हैं। जब वास्तविक लागत प्रमापित लागत से कम होती है या वास्तविक लाभ प्रमापित लाभ से बेहतर होता है, तब इसे अनुकूल विचरणांश के नाम से जाना जाता है और ऐसा विचरणांश सामान्यतया कम्पनी संगठन की कार्यक्षमता का प्रतीक होता है । दूसरी ओर, जब वास्तविक लागत या प्रमापित लाभ या प्रमापित विक्रय की तुलना में प्रमापित लागत या वास्तविक लाभ या विक्रय कम रहता है तो इसे प्रतिकूल विचरणांश कहा जाता है और यह संगठन की न्यून कार्यक्षमता का संकेतक होता है अनुकूल एवं प्रतिकूल विचरणांशों को क्रमशः क्रेडिट एवं डेबिट विचरणांश के रूप में भी जाना जाता है। विभिन्न मदों या लागत के विचरणांश लागत नियन्त्रण की कुंजी होते

हैं, क्योंकि वह यह प्रकट करते हैं कि क्या और किस सीमा तक निर्धारित प्रमाप प्राप्त किए गए हैं।

विचरणांशों के वर्गीकरण का एक और तरीका नियंत्रणीय एवं अनियंत्रणीय या दैव विचरणांश हो सकता है। जब विचरणांश एक लागत केन्द्र (जैसे व्यक्तिगत या विभाग) की कार्यक्षमता के कारण होते है, तो इसे नियंत्रणीय विचरणांश कहते हैं। ऐसे विचरणांशों को उपयुक्त कार्यवाही के द्वारा सही किया जा सकता है। उदाहरणार्थ यदि प्रयुक्त सामग्री की वास्तविक मात्रा, प्रमापित मात्रा से अधिक है, तो इसके लिए फोरमैन उत्तरदायी होगा। किन्तु, यदि सामग्री का अधिक प्रयोग सामग्री की दोषपूर्ण आपूर्ति या त्रुटिपूर्ण प्रमाप निर्धारण के कारण हुआ है तो क्रय विभाग या लागत लेखांकन विभाग इसके लिए उत्तरदायी होगा। दूसरी ओर, एक अनियंत्रणीय या दैव विचरणांश एक व्यक्ति या विभाग से संबंधित नहीं होता है, बल्कि वाह्य कारणों जैसे सामग्री की कीमत में वृद्धि के कारण उत्पन्न होता है। इस प्रकार के विचरणांश नियंत्रणीय नहीं हैं और इनके लिए किसी व्यक्ति विशेष को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

ऐसे कई कारण हैं, जिनसे विचरणांश उत्पन्न होते हैं और विचरणांश विश्लेषण ऐसे कारणों और विशिष्ट विचरणांश के लिए उत्तरदायी व्यक्तिया विभाग को चिन्हित करने में सहायक होता हैं। प्रबन्ध को दो मदों या विभागीय प्रक्रियाओं पर निर्धारित प्रमापों के अनुसार ध्यान देने की आवश्ययकता नहीं होती है। केवल प्रतिकूल मदों की दशा में ही उन्हें नियंत्रण करना पड़ता हैं। इस प्रकार की प्रबंधन की तकनीकी को **'अपवादों के द्वारा प्रबन्ध'** कहा जाता है। इस प्रकार की तकनीक को नियंत्रण करने का एक प्रभावशाली तरीका समझा जाता है क्योंकि प्रबंध अपने सीमित समय को समस्त मदों पर नहीं लगा सकता है। कुल वास्तविक लागत का कुल प्रमापित लागत से विचलन कुल लागत विचरणांश कहलाता है। यह शुद्ध विचरणांश है, जो लागत के विभिन्न तत्वों के समस्त विचरणांशों –अनुकूल और प्रतिकूल दोनों का, योग होता है।

विचरणांश विश्लेषण लागत एवं विक्रय के प्रत्येक तत्व के सम्बन्ध में निम्नवत शीर्षकों में किया जाता हैः

(अ) प्रत्यक्ष सामग्री विचरणांश,
(ब) प्रत्यक्ष श्रम विचरणांश,
(स) उपरिव्यय विचरणांश,
(द) विक्रय विचरणांश।

16.4.5 दत्तांश मार्जिन

दत्तांश मार्जिन को विक्रय और उस विक्रय की परिवर्तनशील लागत के बीच के अन्तर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह स्थायी लागतों एवं लाभ के प्रति योगदान करता हैं। एक लाभ केन्द्र या विनियोग केन्द्र, जो अधिक दत्तांश देता है, को प्राथमिकता दी जाती है, क्योंकि स्थिर लागतों को अपरिवर्तित मानते हुए यह उच्चतर लाभ की धनराशि प्रदान करेगा। यह दुर्लभ एवं सीमित संसाधनों के उपयोग को अधिकतम करने के लिए एक अच्छा उपकरण है। दत्तांश लाभ से भिन्न होता है क्योंकि लाभ किसी क्रिया से शृद्ध प्राप्ति है और यह कुल दत्तांश में से स्थिर व्ययों को

घटाने के बाद अवशेष रहता है। दत्तांश मार्जिन प्रदर्शन मूल्यांकन की एक अच्छी तकनीक है, क्योंकि यह उत्पाद, विभाग या प्रयाग की लाभदायकता को ज्ञात करने में सहायक है, जिससे बेहतर उत्पाद मिश्रण उपलब्ध होता है, कर–नियोजन में सहायता मिलती है और फर्म के लाभ का अधिकतमीकरण हो सकता है। प्रदर्शन के मापन की तकनीक के रूप में इसका मुख्य दोष यह है कि यह स्थिर व्ययों पर उचित ध्यान नहीं देती है। तकनीकी के विकास के साथ स्थिर व्ययों में वृद्धि हुई है और उनका उत्पादन पर प्रभाव परिवर्तनशील व्ययों से कहीं अधिक हुआ है। अतः प्रदर्शन मूल्यांकन की एक तकनीक, जो स्थिर व्ययों की उपेक्षा करती है, कम प्रभावशाली होती है क्योंकि स्थिर व्ययों के द्वारा प्रतिनिधित्व की गयी लागत का एक महत्वपूर्ण भाग पर ध्यान नहीं दिया गया है।

दत्तांश मार्जिन दृष्टिकोंण की एक महत्वपूर्ण सीमा यह है कि एक प्रतियोगितापूर्ण उद्योग में फर्म को ऐसे मूल्य पर विक्रय करना पड़ सकता है जो परिवर्तनशील व्ययों को अच्छादित करे एवं दत्तांश प्रदान करे, किन्तु स्थायी सम्पत्तियों पर विनियोग पर पर्याप्त प्रत्याय प्राप्त करने में असफल रहे। प्रदर्शन मूल्यांकन की एक तकनीकी को एक विभाग या प्रभाग में विनियोजित पूँजी पर पर्याप्त प्रत्याय अर्जित करने की आवश्यकता पर जोर देना चाहिए।

दत्तांश मार्जिन की तकनीक में, कार्य को पूर्ण करने में लिए गए समय पर ध्यान नहीं दिया जाता है क्योंकि सीमान्त लागत में स्थिर व्यय सम्मिलित नहीं होते हैं, जिनका सम्बन्ध समय से होता है। यदि दो कार्यों के बीच उपयुक्त तुलना करनी है, तो स्थिर व्ययों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

उदाहरण–1

एक कम्पनी के दो प्रभाग ए0 और बी0 हैं। प्रभाग ए0 वर्तमान में पूर्ण क्षमता पर कार्य कर रहा है। इसे प्रभाग बी0 को अपने उत्पाद की पूर्ति हेतु कहा गया है। प्रभाग ए0 अपने नियमित ग्राहकों को अपना उत्पाद रू. 30 प्रति पर बेचता है। प्रभाग बी0 (वर्तमान में क्षमता के 50% पर कार्य कर रहा है) प्रभाग ए0 के द्वारा उत्पादित उपकरणों के लिए रू. 20 प्रति भुगतान हेतु तैयार है (यह प्रभाग ए0 पर कम्पोनेन्ट की प्रति इकाई लागत के पूर्ण अवशोषण को व्यक्त करता है)

प्रभाग बी0 के द्वारा उपकरण को अपने मुख्य उत्पाद के विशेष आदेश की आवश्यकता की पूर्ति के लिए पूरक रूप में मुख्य उत्पाद में प्रयोग किया जाना है, विक्रय के अनुबन्ध के अनुसार क्रेता को प्रभाग बी0 की पूर्ण लागत और 10%की प्रतिपूर्ति करनी है।

प्रभाग ए0 की परिवर्तनशील लागत 17 रू0 प्रति उपकरण है। प्रभाग बी0 की प्रति इकाई लागत प्रभाग ए0 से उपकरण क्रय करने के पश्चात निम्नवत अनुमानित की गयी है।

	रू0
उपकरणो ंका क्रय – वाह्य विक्रेता	90
उपकरण क्रय – प्रभाग ए0	20
अन्य परिवर्तनशील लागत	50

स्थिर उपरिव्यय एवं प्रशासन	40
	200

कम्पनी प्रभाग के प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए दत्तांश मार्जिन तकनीक का प्रयोग करती है।

आपसे अपेक्षा की गयी है कि :

(अ) प्रभाग ए0 के प्रबन्धक के रूप में क्या आप अपने उत्पाद को प्रभाग बी0 को निर्धारित 20रू. की कीमत पर विक्रय करना संस्तुत करेंगे?

(ब) क्या यह कम्पनी के सम्पूर्ण हित में होगा कि प्रभाग ए0 आपने उत्पादन को प्रभाग बी0 को विक्रय करे ?

उत्तरः

(अ) प्रभाग ए0 के उत्पादन के प्रति इकाई दत्तांश की गणना यदि उत्पादन का विक्रय वाह्य रूप में किया जाता है :

	रू0
प्रति इकाई विक्रय मूल्य (प्रभाग ए0 के उत्पादन का)	90
उपकरण क्रय–प्रभाग ए0	77
प्रति इकाई दत्तांश	13

दत्तांश यदि उत्पादन प्रभाग बी0 को हस्तान्तरित किया जाता है :

	रू0
हस्तांतरण कीमत प्रति इकाई प्रभाग ए0 से बी0 को	20
घटाया : परिवर्तनशील लागत प्रति इकाई	17
दत्तांश प्रति इकाई	03

प्रभाग ए0 के प्रबन्धक के रूप में, बी0 को 20 रू0 प्रति इकाई पर विक्रय, संस्तुत नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि प्रति इकाई दत्तांश 13 रू0 से कम होकर 03 रू0 रह जाएगा। प्रभाग ए0 पहले ही पूर्ण क्षमता पर कार्यरत है और बाजार इसके समस्त उत्पादन को 30रू0 प्रति इकाई पर अवशोषित करने को तैयार है। प्रभाग बी0 को आन्तरिक हस्तांतरण से प्रभाग ए0 का दत्तांश एवं लाभ 10 रू0 प्रति इकाई से कम हो जाएगा।

(ब)

विवरण	वाह्य विक्रय की दशा में	प्रभाग बी0 को हस्तांतरण की दशा मे
	रू0	रू0
1 प्रभाग ए0 के उत्पादन का प्रति इकाई विक्रय (प्रभाग के प्रति इकाई विक्रय मूल्य) (रू. 200+ रू. 200 का 10%)	30	220
2. घटाया परिवर्तनशील लागत प्रति इकाई (प्रासंगिक वृद्धिमान लागत) (17+90+50)	17	157

3. दत्तांश प्रति इकाई	13	63

यह कम्पनी के सम्पूर्ण हित में होगा कि हस्तान्तरण किया जाय जिससे फर्म का दत्तांश रू0 50 से बढ़ जाएगा।

16.4.6 विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय (आर0 ओ0 सी0 ई0) अथवा विनियोग पर प्रत्याय (आर0 ओ0 आई0) :

विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय या विनियोग पर प्रत्याय व्यवसाय में विनियोजित पूँजी की आय अर्जन क्षमता का एक संकेतक है। विनियोग पर प्रत्याय एक विनियोग केन्द्र की कार्य क्षमता या इसके विपरीत होने का संकेत देता है, क्योंकि अनुपात की एक विशिष्ट विनियोंग केन्द्र के लिए गणना की गयी है। विनियोग केन्द्र के प्रदर्शन के मापन के लिए विनियोग केन्द्र पर विनियोजित पूँजी से अर्जित लाभ की तुलना आवश्यक है। विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की निम्नवत गणना की जाती है :

1. आर0 ओ0 आई0 $= \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{विनियोजित पूँजी}} \times 100$

अथवा

2. आर0 ओ0 आई0 $= \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{विक्रय}} \times \frac{\text{विक्रय}}{\text{विनियोजित पूँजी}} \times 100$

प्रथम विधि की तुलना में,आर0 ओ0 आई0 की गणना की वैकल्पिक विधि, विनियोजित पूँजी की परिचालन कार्यक्षमता का बेहतर संकेत प्रदान करती है, क्योंकि यह परिचालन लाभ मार्जिन तथा सम्पत्ति आवर्त पर प्रकाश डालती है। परिचालन लाभ का विक्रय से अनुपात फर्म की कीमत नीति और लागत नियंत्रण का परिणाम है। यह अनुपात उच्चतर होगा, यदि लागत के विभिन्न तत्वों पर कठोर नियंत्रण किया जाय और/अथवा ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण वस्तुऐं प्रदान कर उच्चतर विक्रय मूल्य प्राप्त किया जाय। यदि लाभ मार्जिन अनुपात कम है तो यह बढ़ती लागत और/अथवा निम्नतर विक्रय कीमत के विषय में संकेत देता है। सम्पत्ति आवर्त या पूँजी आवर्त अनुपात उपलब्ध सम्पत्तियों या विनियोजित पूँजी के द्वारा सृजित विक्रय की धनराशि को प्रदर्शित करता है और यह संकेत देता है कि सम्पत्तियों का समुचित उपयोग हो रहा है या नहीं। पूँजी आवर्त अनुपात जितना अधिक होगा, यह फर्म के लिए भी उतना ही अच्छा होगा।

आर0 ओ0 आई0 को सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुपात माना जाता है, क्योंकि यह प्रयुक्त पूँजी की सम्पूर्ण कार्यक्षमता को प्रदर्शित करता है। यह अनुपात विनियोग निर्णय लेने हेतु सहायक उपकरण है। एक परियोजना जिसे विनियोग पर उच्चतर प्रत्याय मिल रहा हो, उसे प्राथमिकता दी जाती है। आर0 ओ0 आई0 को निम्नांकित कारकों में से किसी के भी द्वारा सुधारा जा सकता है, बशर्ते अन्य सभी कारक स्थिर बने रहे हों:

(i) परिचालन लागत में कमी,

(ii) विक्रय कीमत में वृद्धि,

(iii) विक्रय की मात्रा में वृद्धि,

(iv) विनियोजित पूँजी की धनराशि में कमी।

प्रदर्शन के मापन के लिए विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय की उपयुक्तता पर विचार करते समय, परिचालन लाभ एवं विनियोजित पूँजी को स्पष्टतया परिभाषित किया जाना चाहिए ताकि कठिन प्रभागों या वर्षों के परिचालन प्रदर्शन के तुलनात्मक परिणाम प्राप्त हो सकें।

परिचालन लाभ =दीर्घकालीन ऋणों पर ब्याज एवं कर से पूर्ण लाभ

विनियोजित पूँजी = समता अंश पूँजी + पूर्वाधिकार अंश पूँजी + अवितरित लाभ +संचय एवं आधिक्य +दीर्घकालीन दायित्व –काल्पनिक सम्पत्तियां–गैर व्यावसायिक सम्पत्तियाँ

वैकल्पिक रूप में = मूर्त स्थायी और अमूर्त सम्पत्तियाँ + चालू सम्पत्तियाँ – चालू दायित्व

आर0 ओ0 आई0 की सीमाऐं :

आर0 ओ0 आई0 की निम्नलिखित सीमाऐं हैं :

1. लाभ एवं विनियोजित पूँजी की संतोषजनक परिभाषा उपलब्ध नहीं हो पाती है। लाभ की कई अवधारणाऐं हैं –जैसे कर एवं ब्याज के पूर्ण लाभ, ब्याज के पश्चात किन्तु कर से पूर्व लाभ, ब्याज एवं कर के पश्चात लाभ, स्थिर व्ययों को घटाने से पूर्व लाभ इत्यादि। इसी प्रकार, विनियोजित पूँजी को सकल विनियोजित पूँजी (फर्म में विनियोजित केवल दीर्घकालीन कोष), अमूर्त सम्पत्तियों को सम्मिलित करके या इसके बिना संपत्तियाँ, सम्पत्तियों को पुस्तक मूल्य या इसे चालू लागत पर लेना आदि के रूप में लिया जा सकता है।
2. तुलनात्मक प्रदर्शन के लिए विभिन्न फर्मो की आर0 ओ0 आई0 का विश्लेषण अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाता है, यदि वह भिन्न–भिन्न लेखांकन नीतियाँ एवं विधियाँ, सम्पत्तियों के मूल्यांकन, रहतिये के मूल्यांकन, उपरिब्ययों के अभिभाजन एवं अवशोषण आदि में अपनाते है।
3. आर0 ओ0 आई0 अल्पकालीन प्रदर्शन के विश्लेषण के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती है। प्रारंम्भिक वर्षो में, एक नया विनियोग बहुत कम आर0 ओ0 आई0 दे सकता है, जिससे प्रबन्ध भ्रमित हो सकता है और विनियोग न करने का एक त्रुटिपूर्ण निर्णय ले सकता है। यह सम्भव है कि आर0 ओ0 आई0 में समय बीतने के साथ सुधार हो सकता है, जबकि प्रारम्भिक बाधाऐं पार कर ली जाती हैं।
4. यह भी अत्यधिक संभव है कि आर0 ओ0 आई0 एक प्रभागीय प्रबन्धक को अपनी लक्षित आर0 ओ0 आई0 प्राप्त करने के लिए केवल उन विनियोगों के चयन हेतु प्रभावित करे जो उच्चतर प्रत्याय देती हैं। अन्य विनियोग जो उसके प्रभाग की आर0 ओ0 आई0 को कम करते हैं किन्तु फर्म के मूल्य में अपेक्षितवृद्धि कर सकते हैं, को प्रभागीय प्रबंधक के द्वारा अस्वीकृत किया जा सकता है।?

16.4.7 अवशिष्ट आय (आर0 आई0)

अमेरिका की जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी ने आर0 ओ0 आई0 के विकल्प के रूप में अवशिष्ट आय की अवधारणा को विकसित किया।

अवशिष्ट आय (आर0 आई0) को विनियोग पर प्रत्याशित प्रत्याय हेतु प्रावधान करने के पश्चात कर से पूर्व के अवशेष लाभों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। प्रत्याशित प्रत्याय को पूँजीगत चार्ज माना जाता है। अवधारणा यह है कि संगठन के द्वारा प्रभाग के प्रयोग हेतु प्रदत्त सम्पत्तियों पर व्ययभार (चार्ज) को सम्बन्धित प्रभाग छोड़ देता है।

अवशिष्ट आय = लाभ – पूँजीगत चार्ज

= लाभ – (प्रत्याशित प्रत्याय की दर × विनियोग)

इसे प्रभागीय प्रदर्शन के मूल्यांकन हेतु उपयोग में लाया जाता है।

यहाँ पर, पूँजीगत चार्ज व्यवसाय में कोषों के धारित हो जाने के कारण ब्याज की हानि को व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में, त्याग किया गया ब्याज व्यवसाय में विनियोजित कोषों की अवसर लागत है। फर्म या प्रभाग के प्रदर्शन का मूल्यांकन अवशिष्ट आय को अधिकतम करना होना चाहिए। जब तक फर्म या प्रभाग विनियोग हेतु त्याग किए गए ब्याज के चार्ज की तुलना में अधिक आय की दर अर्जित करता है, तब तक फर्म या प्रभागीय प्रबन्धक कों केवल उन विनियोगों के चयन हेतु प्रेरित करता है, जो उच्च प्रत्याय देते हैं, जो लक्षित आर0 ओ0 आई0 के समान या अधिक होती है। अन्य विनियोग जो प्रभाग के द्वारा लक्षित आर0 ओ0 आई0 को कम करते है, किन्तु सम्पूर्ण फर्म के मूल्य को बढ़ाते हैं, को प्रभागीय प्रबन्धक के द्वारा अस्वीकृत किया जा सकता है। किन्तु यदि प्रभागीय प्रबंधक के प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए अवशिष्ट आय का मापदण्ड अपनाया जाता है, तो ऐसी स्थिति नहीं होगी। फर्म के मूल्य में कुल मिलाकर अभिवृद्धि का उद्देश्य तब प्राप्त होने की संभावना होगी जब प्रभागीय प्रबन्धक के प्रदर्शन की माप हेतु आर0 ओ0 आई0 के स्थान पर अवशिष्ट आय का मापदण्ड प्रयोग किया जाएगा।

अवशिष्ट आय के लाभः

अवशिष्ट आय के लाभ निम्नांकित है :

1. यह फर्म के सम्पूर्ण मूल्य और संवृद्धि को अधिकतम करती है और उन विनियोंगों को स्वीकृत कर, जो पूँजी की लागत से अधिक प्रत्याय दर प्रदान करते हैं, फर्म के अंशधारियों की सम्पदा को बढ़ाती है।
2. प्रभागीय प्रबन्धक कोषों की अवसर लागत के प्रति जागरूक हो जाते हैं और वे उन विनियोगों को स्वीकृत करते है, जो त्याग किए गए ब्याज की दर से अधिक प्रत्याय प्रदान करते हैं।
3. यह कम–अनुकूलतम निर्णयन को उपेक्षित करती है क्योंकि प्रभागीय प्रबन्धों के द्वारा विनियोगों को केवल इस कारण अस्वीकृत नहीं किया जाता कि वे लक्षित आर0 ओ0 आई0 को कम कर रहे हैं।
4. लक्ष्य साम्यता (फर्म का सम्पूर्ण उद्देश्य) को प्राप्त करने की संभावनाऐं प्रदर्शन मूल्यांकन तकनीकी के रूप में आर0 ओ0 आई0 की अपेक्षा अवशिष्ट आय को प्रयोग करने से अधिक हो जाती हैं।

आर0 आई0 की कमजोरियाँ (या सीमायें):

1. आय और विनियोग की संतोषजनक परिभाषा होना कठिन है।
2. त्याग किए गए ब्याज की दर को ज्ञात करना कठिन है क्योंकि यह जोखिम, पूँजी की मांग एवं पूर्ति आदि कारकों पर निर्भर करता है।
3. प्रदर्शन के मापन की अवशिष्ट आय विधि एक निरपेक्ष माप है क्योंकि यह रूपये में व्यक्त होती है, यह संगठनात्मक प्रदर्शन के मूल्यांकन का उचित आधार प्रदान नहीं करेगी, जो संगठन के आकार से प्रभावित होती है। आर0 ओ आई0 के सापेक्ष माप होने के कारण तथा प्रतिशत में व्यक्त किए जा सकने के कारण संगठनात्मक प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए यह अवशिष्ट आय की तुलना में बेहतर तकनीक है।

हार्नग्रेन, फॉस्टर एवं डॉटर के अनुसार, "आर0 ओ0 आई0 एवं अवशिष्ट आय दोनों एकल समय अंतराल (जैसे एक वर्ष) के परिणामों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रबंध वह कार्यवाही कर सकते हैं जिससे आर0 ओ0 आई0 या अवशिष्ट आय में अल्पकालीन वृद्धियॉ घटित हों किन्तु इस कारण वह संगठन के दीर्घकालीन हितों के साथ संघर्षरत रहते हैं। उदाहरणार्थ, प्रबन्धक वार्षिक परिचालन आय के लक्ष्य स्तर को प्राप्त करने के लिए वित्तीय वर्ष के विगत त्रैमास के शोध एवं विकास और प्लाण्ट के रखरखाव में कटौती, कर सकते हैं।"

उदाहरण–2

निम्नांकित सूचना एक निर्माणी कम्पनी के लाभ केन्द्र पी – 1 से सम्बन्धित है:

	रू0
विक्रय	2,00,00,000
घटाया : कुल लागत	1,90,00,000
लाभ	10,00,000

लाभ केन्द्र पी–1 में विनियोजित पूँजी रू. 75,00,000 है और पूँजी की लागत 15%

आपको गणना करनी है : (i) आर0 ओ0 आई0 और (ii) आर0 आई0।

अपनी टिप्पणी भी दीजिए।

उत्तर :

(i) आर0 ओ0 आई0 = $\frac{\text{रू 10,00,000(लाभ)}}{\text{रू 75.00,000(विनियोजित पूँजी)}} \times 100 = 13.33\%$

(ii) आर0 आई0 = लाभ– पूँजी की लागत

= रू0 10,00,000 – रू 75,00,000 का 15%

= रू0 10,00,000 – रू011,25,000 = रू01,25000(ऋणात्मक)

टिप्पणी :

प्रत्याय की वांछित दर 15% है किन्तु लाभ केन्द्र पी–1 13.33% आर0 ओ0 आई0 प्रदान करता है। अवशिष्ट आय रू. 1,25,000 ऋणात्मक है क्योंकि पूँजी की लागत

रू0 11,25,000 लाभ रू0 10,00,000 से अधिक है। अतः लाभ केन्द्र पी–1 का प्रदर्शन बिल्कुल संतोषजनक नहीं है।

16.4.8 मूल्य संवर्द्धन

मूल्य संवर्द्धन एक उत्पाद या सेवा के प्रारूप स्थान और उपलब्धता में परिर्वतन के परिणाम स्वरूप बाजार मूल्य (लगायी गया सामग्री ओर सेवा को छोड़कर) में परिवर्तन है। यह वाह्य पक्षों से क्रय किए गए माल और सेवा को लाने की लागत के ऊपर विक्रय आय एवं सेवाओं से आय का आधिक्य है। इसे व्यवसाय के अन्तर्गत कार्मिकों, पूँजी प्रदान कर्ताओं और सरकार जिन पर, सामाजिक एवं आर्थिक वातावरण, जिसके भीतर व्यवसाय संचालित होता है, को सुचारू करने का दायित्व होता है, के माध्यम से संगठन के द्वारा सृजित सम्पदा के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। इस अर्थ में, इसकी गणना कर्मचारियों की कुल लागत (अर्थात मजदूरी, वेतन, तथा कर्मचारियों को प्रदान अन्य लाभ), ऋणों पर ब्याज, लाभांश, सरकार की प्राप्तियाँ, ह्रास एवं प्रतिधारित लाभों को सम्मिलित करके की जाती है।

मूल्य संवर्द्धन, परम्परागत लाभ एवं हानि खाते द्वारा प्रदर्शित लाभ से भिन्न होता है क्योंकि परंपरागत लाभों की गणना में विक्रय एवं अन्य आयों में से समस्त लागतों को घटा दिया जाता है जबकि मूल्य संवर्द्धन विक्रय एवं अन्य आयों में से लायी गयी सामग्री एवं सेवाओं की लागत को घटाकर प्राप्त किया जाता है। फर्म के द्वारा उत्पादित उत्पाद या प्रादत्त सेवा के मूल्य में अभिवृद्धि के लिए प्रत्येक प्रयास किया जाना चाहिए ताकि संगठन की सम्पदा में और अधिक वृद्धि हो सके। एक उपक्रम के प्रदर्शन के मापन, मूल्यांकन एवं निर्णयन हेतु मूल्य संवर्द्धन की राशि लाभ की राशि से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन समस्त लागतों को छोड़ देती है, जिन पर फर्म का या तो कोई नियंत्रण नहीं है या फिर बहुत कम नियंत्रण है। एक संगठन बिना लाभार्जन के जीवित रह सकता है किन्तु बिना मूल्य संवर्द्धन के अस्तित्व में नहीं रह सकता है। कोई भी व्यवसाय जो लाभार्जन नहीं कर रहा है, वह जोखिम पूर्ण होगा किन्तु ऐसा व्यवसाय जो मूल्य सृजित नहीं कर रहा है, एक बुराई बन जाएगा और समाज की दृष्टि से बिल्कुल भी वांछनीय नहीं होगा।

16.4.9 बैंच मार्किंग

बढ़ती हुई वैश्विक प्रतियोगिता कम्पनियों को उनके अस्तित्व को बचाए रखने के लिए उनके द्वारा उच्च लागत कार्यक्षमता की विशेष सक्षमता प्राप्त किए जाने की मांग करती है। बैंच मार्किंग वह तकनीक है जो कम्पनी को इस तुलनात्मक लागत कार्यक्षमता को प्राप्त करने में सहायता करती है।

बैंच मार्किंग को सूचना को साझा करने वाली एक सतत प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसे संगठन ने आन्तरिक और वाह्य रूप में अपने प्रबल प्रतियोगियों के सापेक्ष अपने सुदृढ़ एवं कमजोर बिन्दुओं की पहचान करने एवं अपने द्वारा संचालित क्रियाओं एवं प्रदत्त सेवाओं के सुधार की दृष्टि सेअपनाया है। कम्पनियाँ, अपने समान व्यावसायिक प्रक्रिया वाली उत्कृष्ट कम्पनियों को बैंच मार्क के रूप में चयन करती है।

एक बैंचमार्क मात्रा, प्रदर्शन का श्रेष्ठ स्तर होती है जिसे संगठन के अन्दर और बाहर पाया जा सकता है। बैंचमार्क की प्रक्रिया में निम्नांकित आवश्यक चरण होते हैं:

(1) बैंच मार्किंग के लिए प्रमुख चरों की पहचान।

(2) तुलनात्मक कम्पनियों का चयन करना (अर्थात उत्कृष्ट कम्पनियों का)।

(3) आवश्यक आंकड़ो का एकत्रीकरण।

(4) विचार सृजन एवं प्रशिक्षण हेतु बढ़ा हुआ बजट।

(5) प्रदर्शन रिक्तता (अन्तराल) का मूल्यांकन एवं निर्वचन।

(6) विश्वस्तरीय परिचालन को प्राप्त करने के लिए प्रदर्शन में सुधार।

बैंच मार्किंग सीखने की एक सतत प्रक्रिया मानी जाती है और यह नवाचारों में रूपान्तरित होती हैं। प्रभावशाली ढंग से बैंच मार्क करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि एक फर्म और व्यावसायिक प्रक्रिया के अग्रणी नेता के बीच वास्तविक अंतर को निर्धारित किया जाय ताकि उसके समान बना जा सके या उसका अनुकरण किया जा सके और कम से कम निम्नांकित क्षेत्र में ऐसी तुलना की जानी चाहिए :

(i) उत्पाद/सेवा की लागत।

(ii) उत्पादकता।

(iii) प्राप्त प्रदर्शनों का मानक ।

(iv) अभिवृत्ति/ लक्षण।

पहलपूर्ण सक्रिता से ओत–प्रोत बैंच मार्किंग समय की आवश्यकता है, जो यह अनुश्रवण करती है कि आगतों की लागत प्रतियोगिता की धार को कमजोर न कर पाए और इसके द्वारा एक कम्पनी को वैश्विक प्रतिभागी बनने के योग्य बनाती है, जो विश्व के श्रेष्ठ प्रतियोगी से आगे निकल सकें।

डेबिड टी0 किर्यन्स जेरॉक्स कम्पनी के पूर्व मुख्य अधिशासी, ने बैंच मार्किंग को सही प्रकार से परिभाषित किया है–"बैंच मार्किंग प्रबलतम प्रतियोगियों या कम्पनियों जिन्हें उद्योग में नेता की मान्यता प्राप्त है, के साथ तुलना के माध्यम से उत्पादों, सेवाओं एवं व्यावसायिक व्यवहारों के मापन की एक सतत प्रक्रिया है।"

यह श्रेष्ठतम प्रतियोगितात्मक प्रदर्शन के लिए एक लगातार जारी रहने वाली तलाश हैं।

बैंच मार्किंग के लाभ

1. बैच मार्किंग संगठन के प्रदर्शन में सुधार करने के लिए बेहतर तरीकों की सतत तलाश है। इसका परिणाम बेहतर उत्पादन प्रक्रियाओं और व्यवसाय प्रबंधन प्रक्रियाओं में होता है और यह उच्चतर लाभों की ओर ले जाती है।
2. यह लागतों में कमी और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार में सहायता करती है।
3. यह उपभोक्ता संतोष के उच्चतर स्तरों की ओर गतिमान करती है क्योंकि इसमें व्यवसायिक नेताओं या अग्रजों की कार्यविधियों के अनुसरण का प्रयास होता है।

16.4.10 गैर–वित्तीय गुणवत्ता प्रदर्शन मापक

विभिन्न केन्द्रों के प्रदर्शन के मापन के लिए मात्र लाभदायकता अपर्याप्त है। इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि वित्तीय माप लागत केन्द्रों, लाभ

केन्द्रों और विनियोग केन्द्रों के प्रदर्शन के मूल्यांकन के महत्वपूर्ण माप हैं। किन्तु यह माप प्रदर्शन के मापन के लिए पूर्णतः पर्याप्त माप नहीं है; साथ ही यह माप फर्म के दीर्घकालीन लाभों की कीमत पर इन तकनीकों के प्रयोग के द्वारा फर्म को अल्पकालीन लाभ पहुँचाने वाले माप हैं। अतः यह वांछनीय है कि वित्तीय मापों के साथ–साथ गैर वित्तीय मापों का प्रयोग प्रदर्शन मूल्यांकन के लिए किया जाय। निम्नांकित गैर वित्तीय मापों को प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए वित्तीय मापों के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए :

(i) प्रत्येक प्रमुख उत्पाद हेतु बाजार–अंश।
(ii) उत्पाद नेतृत्व।
(iii) उत्पाद या सेवा की गुणवत्ता ।
(iv) सुपुर्दगी विश्वसनीयता।
(v) उत्पादकता।
(vi) कार्मिक आवर्त जिसे श्रम आवर्त के नाम से भी जाना जाता है।
(vii) कार्मिक विकास।
(viii) कार्मिक सन्तोष।
(ix) ग्राहक विक्रय के पश्चात सेवा।
(x) उपभोक्ता सन्तोष (गुणवत्ता का अनन्तिम माप)
(xi) रोजगार अवसर।
(xii) क्षय एवं हानियों का न्यूनीकरण।
(xiii) सामाजिक उत्तरदायित्व आदि।

गैर वित्तीय माप फर्म की सम्पूर्ण सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। केवल वित्तीय माप अकेले फर्म के सम्पूर्ण प्रदर्शन का मापन नहीं कर सकते हैं। यह भी कुछ मात्रा में दावा किया गया है कि आर0 ओ0 आई0 और आर0 आई0 जैसे वित्तीय मापों के द्वारा प्रभागीय प्रदर्शन के मूल्यांकन में कमियाँ हैं। क्योंकि एक प्रभाग की सफलता का मापन करने वाले सभी चरों को एक वित्तीय माप में समाहित कर पाना लगभग असंभव है।

उदाहरणार्थ, दो प्रभागीय प्रबन्धकों, जिनका अपने संबंधित प्रभागों में समान मात्रा में विनियोग है, की विनियोग पर प्रत्याय की कुछ दरें हो सकती है। किन्तु, इसका यह अर्थ नहीं है कि उनका प्रदर्शन भी समान है। यह संभव है कि एक प्रभाग ने उत्कृष्ट विक्रय पश्चात सेवाऐं दी हों और इसके द्वारा फर्म की छवि में अभिवृद्धि की हो, जबकि दूसरी ओर, अन्य प्रभाग ने विक्रय पश्चात सेवा की ओर कोई ध्यान न दिया हो। पहले, गैर वित्तीय प्रदर्शन मापों पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था, जबकि बाजार 'विक्रेता बाजार' थे। किन्तु आज कल जबकि तीव्र प्रतिस्पर्धा है और क्रेताओं के पास विस्तृत चयन विकल्प विद्यमान हैं, यह वांछनीय है कि प्रबन्धकों के प्रदर्शन मूल्यांकन के गैर वित्तीय मापों पर उचित ध्यान दिया जाय ताकि बाजार को संधारित करने के लिए वे ग्राहकों को सुविधाऐं प्रदान करने के विषय में जागरूक हो सकें।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि एक प्रभावशाली प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणाली में वित्तीय और गैर वित्तीय दोनों प्रकार के मापों पर जोर दिया जाना चाहिए।

16.5 सारांश

प्रदर्शन मूल्यांकन प्रबंधकीय नियंत्रण प्रणाली का मूलाधार है। वास्तविक लागतों, आयों एवं विनियोगों की बजटीय लागतों, आयों एवं विनियोगों से एक निश्चित समय–अन्तरालों में तुलना करने से प्रबन्ध को भावी आबंटनों के सम्बन्ध में निर्णयन में सहायता प्राप्त होती है। प्रदर्शन मूल्यांकन समस्त उत्तरदायित्व केन्द्रों (अर्थात लागत केन्द्रों, लाभ केन्द्रों एवं विनियोग केन्द्रों) के सम्बन्ध में उनके प्रदर्शन के स्तरों को निर्धारित करने के लिए किया जाना चाहिए। लागत केन्द्रों, लाभ केन्द्रों एवं विनियोग केन्द्रों के मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकें हैं। उत्तरदायित्व लेखांकन के अन्तर्गत प्रबन्धक के प्रदर्शन का मूल्यांकन, प्रबन्धक के प्रत्यक्ष नियन्त्रण के अन्तर्गत मुद्दों/वस्तुओं पर आधारित होता है। उत्तरदायित्व लेखांकन लागत नियंत्रण के उद्देश्य से उत्तदायित्व को निर्धारित करता है। उच्च प्रबंधकों को बजट प्रतिवेदनों में लाभ एवं लाभ–नियोजन में अंतर करना चाहिए और मात्रात्मक एवं वित्तीय शब्दों में निहित कारकों को वर्णित करना चाहिए, कोषों के प्रवाह एवं प्रक्षेपणों को इस संबंध में प्रदर्शित करना चाहिए और फर्म के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की उपलब्धियों के विषय में फीडबैक प्रदान करना चाहिए। संतुलित स्कोरकार्ड प्रदर्शन के सभी क्षेत्रों को उद्देश्यपरक एवं पक्षपात रहित ढ़ंग से ध्यान में रखता है और उच्च प्रबन्ध को संगठन का तीव्रगति से एवं विस्तृत चित्र प्रदान करता है। विचरणांश विश्लेषण प्रदर्शन के नियंत्रण और नियोजित लाभों को प्राप्त करने में बहुत उपयोगी है। कुल वास्तविक लागतों का कुल प्रमाप लागतों से विचलन कुल लागत विचरणांश कहा जाता है। दत्तांश मार्जिन प्रदर्शन के मापन की एक अच्छी तकनीक है जो उत्पाद, विभाग या प्रभाग की लाभदायकता को, बेहतर उत्पाद मिश्रण, लाभ–नियोजन एवं फर्म के लाभों को अधिकतम करने हेतु ज्ञात करने में सहायता करता है। विनियोग पर प्रत्याय एक विनियोग केन्द्र की कार्य क्षमता अथवा इसके विपरीत होने का संकेत प्रदान करता है क्योंकि इस अनुपात की एक विशेष विनियोग केन्द्र हेतु गणना की जाती है। फर्म के मूल्य में कुल मिलाकर वृद्धि करने के उद्देश्य से, एक प्रभागीय प्रबन्धक के प्रदर्शन की माप के लिए आर0 ओ0 आई0 की अपेक्षा अवशिष्ट आय के द्वारा अधिक प्राप्त किये जाने की संभावना होती है। मूल्य वर्धन, विक्रय आय एवं सेवाओं से आय के कुल योग का वाह्य पक्षों से लायी गयी वस्तु एवं सेवाओं की कुल लागत पर आधिक्य है। एक बैंच मार्क मात्रा प्रदर्शन का श्रेष्ठ स्तर है, जिसे संगठन के अन्दर और बाहर पाया जा सकता है। यह वांछनीय है कि प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए वित्तीय मापों के साथ ही गैर वित्तीय मापों का उपयोग किया जाना चाहिए।

16.6 शब्दावली

- **प्रदर्शन मूल्यांकन** : यह निर्णय करना कि संगठन के द्वारा अपने उद्देश्यों को पूर्ण किया गया है अथवा नहीं।
- **लागत केन्द्र** : एक लागत केन्द्र क्रिया या क्षेत्र या उत्तरदायित्व जिसके लिए लागता संचयीकरण किया गया हो, का सबसे छोटा भाग है।

- **लाभ केन्द्र** : यह व्यवसाय की क्रिया का वह भाग है जो आय एवं व्ययों के लिए उत्तरदायी है और क्रिया के एक विशेष भाग के लाभ का प्रकटीकरण करता है।
- **विनियोग केन्द्र** : यह वह केन्द्र है जिसमें प्रबन्धक न केवल आयों एवं लागतों को बल्कि विनियोगों को भी नियंत्रित करता है।
- **उत्तरदायित्व लेखांकनः** इसका आशय लेखांकन प्रक्रिया से है जो यह प्रतिवेदन करती है कि कहाँ तक प्रबन्धकों के द्वारा अपने दायित्वों को पूर्ण किया गया है।
- **संतुलित स्कोरकार्ड :** प्रदर्शन के सभी क्षेत्रों को उद्देश्यपरक एवं पक्षपात रहित ढ़ंग से ध्यान में रखता है और उच्च प्रबंध को संगठन का चित्र तीव्र गति से एवं विस्तृत रूप में प्रदान करता है।
- **विचरणांश विश्लेषण** : एक प्रक्रिया जिसके द्वारा प्रमाप लागत या विक्रय और वास्तविक लागत या विक्रय के अन्तर को इसके विभिन्न भागों में उपविभाजित किया जाता है, विचरणांश विश्लेषण कहलाता है।
- **दत्तांश मार्जिन** : इसे विक्रय और उस विक्रय की परिवर्तनशील लागत के बीच के अंतर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- **विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय** : यह व्यवसाय में विनियोजित पूंजी की आय अर्जन की क्षमता का संकेतक है।
- **अवशिष्ट आय** : इसे विनियोग पर प्रत्याशित प्रत्याय के लिये प्रावधान करने के पश्चात करों से पूर्व लाभ में से अवशेष आय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- **मूल्य संवर्द्धन** : मूल्य संवर्द्धन एक उत्पाद या सेवा के प्रारूप, स्थान अथवा उपलब्धता में परिवर्तन के परिणामस्वरूप बाजार मूल्य में, लायी गयी सामग्री एवं सेवाओं को सम्मिलित किये बिना, परिवर्तन है।
- **बैंच मार्किंग** : एक सतत् सूचना को साझा करने की प्रणाली है, जिसे संगठन के द्वारा आंतरिक और वाह्य रूप में अपने प्रबलतम प्रतियोगियों के सापेक्ष अपने सुदृढ़ या कमजोर बिन्दुओं की पहचान के लिये अपनाया जाता है।

16.7 बोध प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

1. इस प्रकार प्रदर्शन का मापन ....के लिये एक आवश्यक उपकरण है।
2. प्रबंधकों को वांछित स्तर का प्रदर्शन प्राप्त करने के लिये प्रेत्साहित करने का सर्वोत्तम उपाय उनके प्रदर्शन का मापन ....परिणामों की तुलना में करना है।
3. एक लागत केन्द्र एक स्थान या एक उपकरण की मद या एक...................हो सकता है।

4. एक विनियोग केन्द्र के प्रबंधक को केन्द्र में एक संतोषजनक ....अर्जित करना आवश्यक होता है।
5. संतुलित स्कोरकार्ड एक दृष्टिकोण हैं जो प्रदर्शन के .... को जोड़ता है।
6. जब वास्तविक लागत प्रमापित लागत से कम होती है या वास्तविक लाभ प्रमापित लाभ से बेहतर होता है, तो इसे .... विचरणांश के नाम से जाना जाता है।
7. .... प्रदर्शन मापन की एक अच्छी तकनीक है क्यांकि यह एक उत्पाद, विभाग की लाभदायकता को, एक बेहतर उत्पाद मिश्रण, लाभ नियोजन और फर्म के लाभ को अधिकतम करने के लिये ज्ञात करने में सहायता करती है।
8. परिचालन लाभ का विक्रय से अनुपात फर्म की .... एवं इसके लागत नियंत्रण का परिणाम है।
9. फर्म के द्वारा उत्पादित उत्पाद या प्रदत्त सेवा के मूल्य में अभिवृद्धि हेतु प्रत्येक प्रयास किया जाना चाहिये ताकि इससे संगठन की ....में और अभिवृद्धि हो सके।
10. बैंच मार्किंग को सीखने की एकसतत् प्रक्रिया माना जाना चाहिये और इसका परिणाम .... होना चाहिये।

16.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. प्रबंध नियंत्रण 2. बजटीय 3. व्यक्ति
4. विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय 5. वित्तीय एवं गैर वित्तीय दोनों माप
6. अनुकूल 7. दत्तांश मार्जिन 8. कीमत नीति
9. धन 10. नवाचार

16.9 स्वपरख प्रश्न

1. एक लागत केन्द्र, लाभ केन्द्र और एक विनियोग केन्द्र में अंतर कीजिये।
2. लागत केन्द्र, लाभ केन्द्र और विनियोग केन्द्र में सामान्यतया प्रदर्शन का मापन कैसे होता है?
3. अवशिष्ट आय को कैसे परिभाषित किया जाता है? आर0ओ0आई0 की तुलना में अवशिष्ट आय को प्रदर्शन मूल्यांकन में प्रयोग करने के क्या लाभ हैं?
4. "आर0ओ0आई0 का माप पुराने प्लान्ट एवं उपकरणों वाले प्रभागों के पक्ष में आधारित हो सकता है।" समझाइये।
5. विभिन्न गैर वित्तीय गुणवत्ता प्रदर्शन मापों को समझाइये।
6. प्रदर्शन के मापन के समय बैंच मार्किंग को उपयोग करने का क्या औचित्य है?
7. उत्तरदायित्व लेखांकन की विशेषताओं, लाभों एवं सीमाओं का विवेचन कीजिये।

16.10 सन्दर्भ पुस्तकें

1. राबर्ट एन0 एन्थोनी, ग्लीवॉन ए0 वैल्स एण्ड जेम्स एस0 रीस, फण्डामैंटल्स ऑफ मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, हार्वर्ड बिजनैस स्कूल प्रैस।
2. ग्राह्म मॉट, मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग फॉर डिसीजन मेकर्स, पिटमैन।
3. रवि एम0 किशोर, एडवांस्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, टैक्समैन एलाइड सर्विसेज लि0।
4. के0 एस0 शास्त्री एण्ड नन्द धमीजा, द प्रैक्टिस ऑफ मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, व्हीलर पब्लिशिंग।
5. मधु विज, मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, एक्सैल बुक्स।
6. एम0 ई0 तुकाराम राव, कास्ट एझड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, न्यू एज इण्टरनेशनल (प्रा0) लि0।
7. एम0 ईज्जामेल एण्ड एच0 हार्ट, एडवांस्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, एन आर्गनाइजेशनल इमफैसिस, कैसेल।
8. विलियमसन इंकेन, कॉस्ट एण्ड मैनेजमैण्ट एकाउण्टिंग, प्रोन्टिस हॉल।